CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

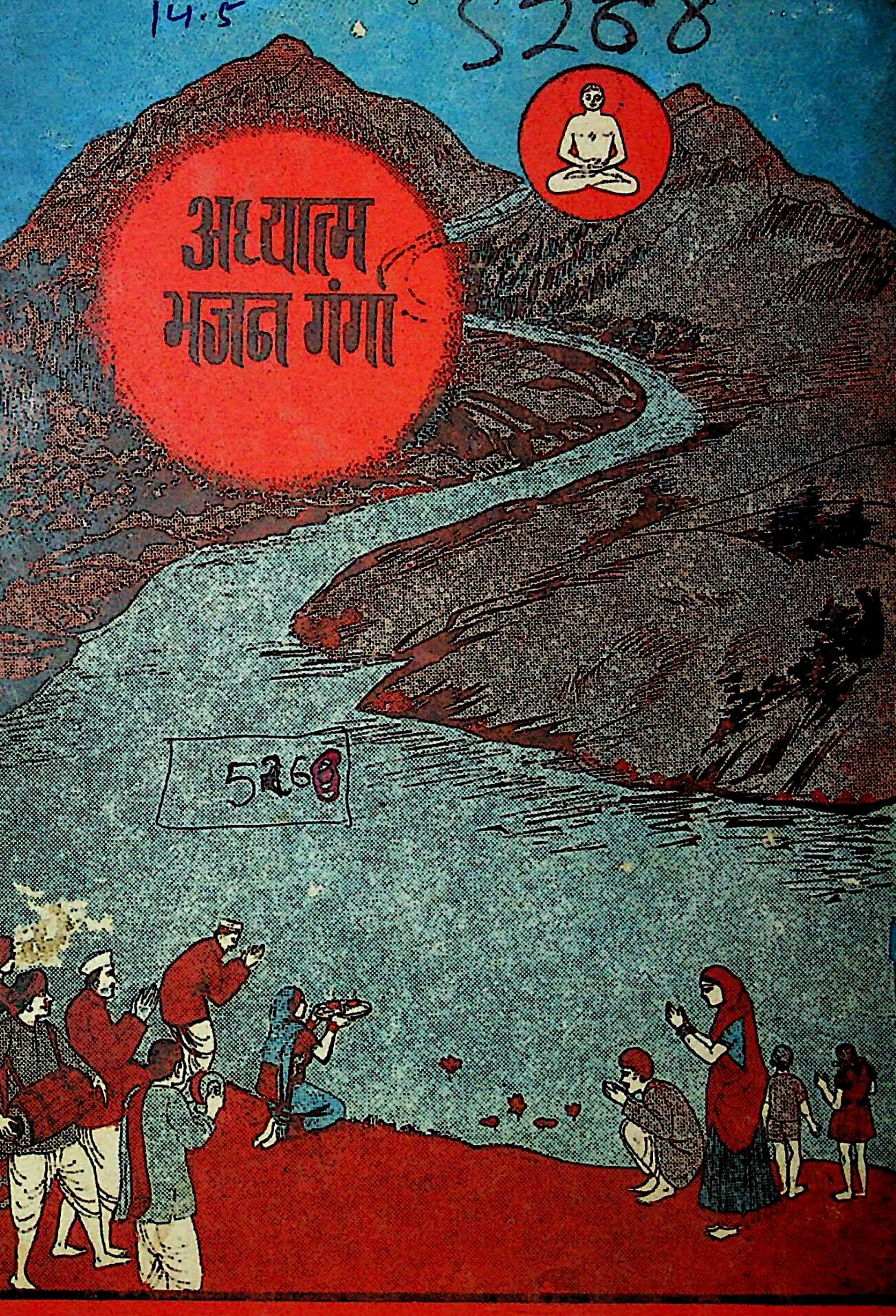

संकलनकर्त्ता: पं० ज्ञान चन्द जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अध्यात्म भजन गंगा

संकलन :
पण्डित ज्ञानचन्द जैन
ज्ञानानन्द निवास, किला अन्दर
विदिशा (म.प्र.)

प्रकाशक :
श्री दि. जैन स्वाध्याय मण्डल, कानपुर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री दि. जैन स्वाध्याय मण्डल
कानपुर का प्रथम पुष्प

प्रथमावृत्ति : ५०००
माघ शुक्ला ११, सोमवार
दिनांक ९ फरवरी १९८७
(आध्यात्मिक कविवर बनारसीदासजी की
४०० वीं जन्म-जयन्ती के अवसर पर)

लागत मूल्य से कम : सात रुपये मात्र

प्राप्ति स्थान :
१. श्री दि. जैन स्वाध्याय मण्डल (रजि.)
४८/८९, जनरल गंज, पचकूचा, कानपुर (उ.प्र.)
२. पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट
ए-४, बापूनगर, जयपुर ३०२०१५ (राज.)
३. श्री कुन्दकुन्द-कहान स्मृति प्रकाशन ट्रस्ट
ज्ञानानन्द निवास, किला अन्दर, विदिशा (म.प्र.)

मुद्रण व्यवस्था :
राकेश जैन शास्त्री
प्रिन्टिग हाउस, बैसाखिया मार्केट, गुड़गंज,
इतवारी, नागपुर – ४४० ००२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

5268

प्रकाशकीय

पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी द्वारा प्रतिपादित आध्यात्मिक रहस्यों से प्रभावित होकर आध्यात्मिक तत्व को आत्मसात करने के निमित्त कानपुर में एक स्वाध्याय मण्डल की स्थापना कुछ समय पूर्व की गई थी । जिसका नाम **श्री दि. जैन स्वाध्याय मण्डल, कानपुर** रखा गया था।

अपने अल्प समय के जीवनकाल में ही इस मण्डल ने अनेक रचनात्मक गतिविधियों का प्रारम्भ किया । जिनमें विद्वान मनीषियों का सत्समागम, प्रवचन व सत्साहित्य विक्रय तो पहले से ही गतिशील हैं । अब सत्साहित्य प्रकाशन का महान कार्य भी अपने हाथ में लिया है।

श्री दि. जैन स्वाध्याय मण्डल, कानपुर का यह प्रथम पुष्प "**अध्यात्म भजन गंगा**" प्रकाशित करते हुए हमें अपार प्रसन्नता हो रही है।

प्राचीन ज्ञानी महापुरुषों ने अनुभव की कलम को आत्मा में डूबो-डूबोकर जिस काव्य जगत का सृजन किया, वह प्रत्येक आत्मार्थी/मुमुक्षु को शुद्धात्मा तक पहुँचाने में बड़ा सम्बल/सहायक जान पड़ता है। हमारा सबका यह महान सौभाग्य ही है है कि आत्मानुभवी विद्वानोंका स्वानुभव प्रसूत एक-एक शब्द काल के गर्त में कवलित न होकर शास्त्र के रूप में पूज्य हो गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इन्हीं आध्यात्मिक भजनों के प्रति आदरणीय पण्डित ज्ञानचन्दजी की रुचि प्रारम्भ से ही रही है। यही कारण है कि प्राचीन व अर्वाचीन आध्यात्मिक भजनों का अपूर्व संकलन तैयार होकर "अध्यात्म भजन गंगा" प्रवाहित हो गई। एतदर्थ मैं उनका तो आभारी हूँ ही, साथ ही उनके होनहार सुपुत्रद्वय विनोद 'चिन्मय' शास्त्री, जैनदर्शनाचार्य व मुकेश 'तन्मय' शास्त्री का भी आभारी हूँ, जिन्होंने इसमें पूर्ण सहयोग प्रदान किया है।

इसी के साथ आभारी हूँ मैं पण्डित राकेशकुमार शास्त्री जैनदर्शनाचार्य, एम.ए., नागपुरवालों का; जिन्होंने अपने व्यस्त समय में से भी समय निकाल कर सुन्दर शुद्ध प्रेस कापी तैयार की और स्वयं की देख-रेख में पुस्तक का शुद्ध, सुन्दर, साफ मुद्रण कराया।

इसे हमारा सौभाग्य ही कहेंगे कि माघ शुक्ला ११, सोमवार ९ फरवरी १९८७ को एक आध्यात्मिक काव्य प्रतिभा के धनी कविवर पण्डित बनारसीदासजी की ४०० वीं जन्म जयंती के मंगल अवसर पर उनके काव्य, पद, भजनों से ही प्रारम्भ होकर यह "अध्यात्म भजन गंगा" प्रवाहित हो रही है।

अन्त में इसी मंगल भावना के साथ विराम लेता हूँ कि समस्त लोक इस "अध्यात्म भजन गंगा" में डुबकी लगाकर चैतन्य के शांतरस में सदा-सदा के लिए मग्न हो जावे।

— सन्तोष कुमार जैन, सर्राफ
मंत्री, श्री दि. जैन स्वाध्याय मण्डल, कानपुर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपनी बात

श्रमण संस्कृति के सुन्दरतम इतिहास की एक लम्बी परम्परा रही है। जिसमें अनेक कवि, लेखक, विद्वान, मनीषी और ज्ञानी-ध्यानी महापुरुषों ने प्राणीमात्र के हित के लिए अनवरत अथक् साधना से अन्वेषित रत्नों को करुणार्द्र होकर खुले दिल से परोसा है।

श्रुतपरम्परा का प्रारंभ आचार्य भूतबलि-पुष्पदंत से प्रारंभ होकर आचार्य कुन्दकुन्द व अमृतचन्द्र से होकर आते-आते काफी समृद्ध हो गया था। इसमें संदेह नहीं कि पिछले दो-तीन सौ वर्षो में अनुभवी विद्वान मनीषियों ने जिस सहज सुगम भाषा में पुरातन वीतरागी महर्षियों का हार्द प्राणीमात्र के सामने रखा है, उससे एक अपूर्व क्रांति हुई है।

श्रीयुत कविवर बनारसीदास, भूधरदास, द्यानतराय, बुधजन, दौलतराम, भागचन्द आदि महान उद्भट विद्वान उसी श्रृंखला की एक-एक कडी हैं : जिन्होंने सांसारिक वैभव की क्षणिक माया को चुनौती देकर **"सादा जीवन–उच्च विचार"** को जीवन का अभिन्न अंग बनाते हुये संपूर्ण ज़ीवन माँ सरस्वती (जिनवाणी) के चरणों में अर्पण कर दिया ।

साहित्य की गद्य और पद्य दोनों ही विधाओं में उन्होंने अध्यात्म को उत्कीर्ण किया है। चूंकि मानव की प्रकृति संगीत प्रिय होने से तथा स्मृति में भी आसानी होने से सीमित क्षमता होने पर भी गद्य की अपेक्षा पद्य अधिक रुचिकर रहा है।

अध्यात्म की मस्ती में मस्त रहनेवाले ये गृहस्थ ज्ञानी निर्भय होकर मोहनृप की सेना पर विजय पाने के लिए सिंह गर्जना करते हैं– **"अब हम अमर भये न मरेंगे"** कितनी वजनी है यह गर्जना, जिसके आगे आधुनिक फिल्मी गीतों और फिल्मी धुनों पर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आधारित धार्मिक गीतों की आवाज दबकर रह जाती है।

आध्यात्मिक काव्यों की महत्ता इसी से आंकी जा सकती है कि सहस्त्रों बार भी उनका वाचन/मनन/चिंतवन करने पर भी मन थकता नहीं , वरन् उससे एक अपूर्व मानसिक शांति प्राप्त होती है।

आध्यात्मदृष्टा पूज्य श्री कानजी स्वामी के योग से जव अध्यात्मिक दुनियाँ में मेरा मंगल प्रवेश हुआ तो अनेक वीतरागी ऋषि मुनियों द्वारा रचित सत्साहित्य को पढ़ने के साथ-साथ ज्ञानी गृहस्थ पुरुषों की काव्य चेतना ने भी अत्यधिक प्रभावित किया। फिर क्या था, जब व्याख्यान का विशिष्ट उपक्रम प्रारंभ हुआ तो व्याख्यान में भी काव्य चेतना के स्वर सहज में फूट पड़े।

मुमुक्षु समाज में भी आध्यात्मिक रुचि बढ़ने के साथ-साथ इन आध्यात्मिक भजनों के प्रति भी रुचि बढ़ी है।

प्रस्तुत पुस्तक के पूर्व "अध्यात्म भजन संग्रह" का संकलन भी किया था, जो सीमित समय में समाप्त हो गया और मांग निरन्तर बनी रही। चूँकि मुझे भी आध्यात्मिक भजनों से अगाध स्नेह रहा है और समाज में भी इसके प्रति विशेष उत्साह दिखा, अतः सहज ही "**अध्यात्म भजन गंगा**" प्रवाहित हो गई है।

प्रस्तुत पुस्तक में आप देखेंगे कि प्राचीन आध्यात्मिक कवियों की प्रमुखता से उनके पूर्ववर्ती काल क्रमानुसार उनकी अध्यात्म गर्भित रचनाओं को स्थान दिया गया है। रचनाओं के साथ-साथ उन संक्षिप्त जीवन परिचय भी दिये गये हैं, इनके अतिरिक्त विविध प्राचीन एवं आधुनिक कवियों की आध्यात्मिक रचनाओं का समावेश करके पुस्तक को जनसामान्य के लिए उपयोगी वनाने का प्रयास किया गया है।

आशा है, पाठकगण "**अध्यात्म भजन गंगा**" में स्नान कर अमृता मुक्ति को शीघ्र वरण करेंगे- इसी पवित्र भावना के साथ।

— पण्डित ज्ञानचन्द जैन

ज्ञानानन्द निवास, किला अन्दर, विदिशा (म.प्र.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्णानुक्रमानुसार अनुक्रमणिका

भजन	पृष्ठ
कविवर बनारसीदास	(१४ २४)
ऐसे यों प्रभु पाइये, सुन पंडित प्राणी	२३
ऐसे क्यों प्रभु पाइये सुन मूरख प्राणी	२३
चेतन उलटी चाल चले	१८
चेतन तू तिहूँकाल अकेला	१९
जगत में सो देवन को देव	१६
दुविधा कब जैहे या मन की	१५
देखो भाई! महाविकाल संसारी	२०
भोंदू भाई! देखि हिये की आंखे	१८
भोंदू भाई! समुझ सबद यह मेरा	१९
मूलन बेटा जायो रे साधो	१७
मेरा मन का प्यारा जो मिले	२१
मगन ह्वै आराधो साधो	२४
सो चेतन की सब सुधि गई	२३
रे मन! कर सदा सन्तोष	१५
रंग भयो जिनद्वार	२०
विराजै रामायण घट माँहि	१६
वा दिन को कर सोच	१७
हम बैठे अपनी मौन सौं	१५
कविवर द्यानतराय	(२५ ४५)
अब हम अमर भये न मरेंगे	२६
अरहन्त सुमर मन बावरे	२७
अज्ञानी जन समझत क्यों नहिं वाणी	३४
अब हम आतम को पहिचाना	३६
अब हम आतम को पहिचान्यौ	३८
आपा प्रभु जाना मैं जाना	३०
आतम अनुभव कीजै हो	३३
आनम जानो रे भाई	३८
आतम रूप अनुपम है	४१
कर रे, कर रे, कर रे	३५
कर-कर आनम हिन रे प्रानी	३६
कहिवे को मन सूरमा	३७
कंग्ज एक ब्रह्म ही सेती	४४
कलि में ग्रन्थ बड़े उपकारी	४५
गुरू समान दाता नहिं कोई	३०
गलता नमता कब आवैगा	३९

भजन	पृष्ठ
ग्यान बिना दुख पाया रे भाई	४[illegible]
चेतन खेले होरी	[illegible]
जान, आतम जान रे जान	२६
जीवा! शूं कहिये तने भाई	२८
जिया तैं आतम हित नाही कीना	३१
जगत में सम्यक् उत्तम भाई	३३
जो तै आतम हित नहिं कीना	३८
जानत क्यों नहिं रे	४०
जिनके हिरदै प्रभु नाम नहिं	४०
जीव तैं मूढ़पना कित पायो	४१
'जिन'नाम सुमर मन बावरे	४४
तू तो समझ समझ रे भाई	३१
देखे सुखी सम्यक्वान	२६
दुनियाँ मतलब की गरजी	३२
धिक धिक जीवन समकित बिना	२८
धनि धनि ते मुनि गिरिवन वासी	३४
धनि ते साधु रहत वन माँहि	३६
नहिं ऐसो जनम बार-बार	३१
परमगुरू बरसत ज्ञान झरी	३०
प्राणीलाल! धरम अगाऊ धारो	३२
बसि संसार में मैं पायो दुख अपार	३४
भाई! आतम अनुभव करना रे	२७
भाई! अब मैं ऐसा जाना	३३
भाई! ज्ञानी सोई कहिये	३३
भाई! ज्ञान का गह महेला	३५
मैं निज आतम कब ध्याऊँगा	२७
मगन रहु रे शुद्धातम में	२८
मन मेरे! राग भाव निवार	३७
मोहि कब ऐसा दिन आया है	३९
रे मन! भज भज दीनदयाल	२९
री! मेरे घट ज्ञान घना मम छायो	३२
रे जिय! काहे क्रोध करे	३७
रे मन! काहे को सोचत	३९
सो ज्ञाता मेरे मन माना	४०
साधो छोड़ो विषै विकारी	४२
हम लागै आतम राम सौं	२९
हम न किसी के कोइ न हमारा	२९
हो भविजन! ज्ञान सरोवर सोई	४१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हमारो कारज कैसे होई ४२
हमारो कारज ऐसे होइ ४३

कविवर भूधरदास (४६ ५५)

अब मेरे समकिंत सावन आयो ४७
अज्ञानी पाप धतूरा न बोय ४९
अहो दोऊ रंग भरे खेलत होरी ५०
आयो रे बुढ़ापो मानी ५५
ऐसो श्रावक कुल तुम पाय ५१
ऐसी समझ के सिर धूल ५५
गरब नहीं कीजै रे ५२
ज़गत जन जुआ हार चले ४७
जग में श्रद्धानी जीव ५३
ते गुरू मेरे मन बसो ५४
देखो भाई आतम देव विराजै ४८
देख्या बीच जहान में ५२
पानी में मीन प्यांसी ५०
भगवन्त भजन क्यों भूला रे ४७
भाई अन्तर उज्ज्वल करना रे ४८
मन हंस! ले हमारी शिक्षा ४८
रखता नहीं तन की खबर ५३
वे मुनिवर कब मिली है ५१
सो ज्ञानी प्राणी श्री गुरू सीख ४९
सो मत सांचो हे मन मेरे ४९
सुन ठगनी माया ५२
होरी खेलूंगी घर आये ५०
हे नर निपट गंवार ५१

कविवर बुधजन (५६ ७१)

अब घर आये चेतन राय ६८
अजी हो जीवाजी थांने ६८
आगे कहा करसी भैया ६९
उत्तम नरभव पाय कैं ६०
ऐसा ध्यान लगावो ६०
और ठैर क्यों हेरत प्यारा ६६
और सबै मिलि होरि रचावै ६६
काल अचानक ही ले जायेगा ६२
गुरू ने पिलाया जो ज्ञान ६५
गुरूदयाल तेरा दुख लखकैं ६९
चेतन खेल सुमति संगहोरी ५९
जगत में होनहार सो होवे ६९
तन देख्या अथिर घिनावना ५७
तो को सुख नहीं होगा ६३
तू मेरा कहचा मान रे ६६
तेरी बुद्धि सुनि मूढ़ अज्ञानी ६७
तेरो गुन गावत हूं मैं ७०
ते क्या किया नादान ७१
धर्म बिन कोई नही अपना ६४
धनि सरधानी जग में ६६
निजपुर में आज मची होरी ५९
नर भव पाय फेरि दुख भरना ६३
बाबा मैं न काहू का ५९
बन्यो म्हारै या घर मेरा ६४
भजन बिन यों ही जनम ५७
भवदधि तारक नव़का जगमाहीं ६१
मेरा सांई तो मो में नाही न्यारा ६०
मैं देखा आतमरामा ६१
मति भोगन राचौ जी ६४
मैं देखा अनोखा ज्ञानी वे ६५
मेरो मनुवा अति हरषाय ६५
मेरी अरज कहानी सुन केवलज्ञानी ६७
मनि वन आये जीवना ६८
या नित चितवै उठी कै भोर ६२
रे मन मेरा तू मेरो कहचो मान ६३
वानी सुनि मन के हरष अपार ५७
श्रीजिनपूजन को हम आये ७१
शिवधानी निशासानी जिनवानी हो ६७
सारद! तुम परसाद तैं ५८
सम्यक् ज्ञान बिना तेरो जनम ६१
सनिल्यो जीव सुजान ७०
हमको कछु भय न रे ५८
हो मनाजी थारीवानी बुरी है ६३
हे आत्मा! देखि दुति तोरी रे ६७
हूं कब देखूं वे मुनि सई हो ७०
हो जिनवानी जू तुम मोको तारोगे ७१
ज्ञानी! थारी रीति रौ ५२
ज्ञान बिन थान न पावेगे ६५

कविवर दौलतराम (७२ ९८)

अरे! जिया जग धोखे की टाटी ८४
अपनी सुधि भूल आप ८८
आतम रूप अनुपम अद्भुत ७३
आज मैं परम पदारथ पायो ८३
आपा नहीं जाना तूने ८७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसा योगी क्यों न अभय पद पावै	८५	मान लेय सीख मोरी	८७
ऐसा मोही क्यों न अधोगति जावे	८६	मेरो मन खेलत ऐसी होरी	८९
और सबै जगद्वंद मिटावै	८२	मैं आयो जिन सरन तुम्हारी	९८
कबद्यो मिलि मोही श्री गुरू मुनिवर	७८	राचि रहचो परमाहीं तू	७७
गुरू कहत सीख इमिबार बार	७९	शिवमग दरसावन रावरो दरस	८९
घड़ी-घड़ी पल-पल घिन-घिन	९७	शिवपुर की डगर समरस सौ भरी	९०
चिनमूरत दृगधारी की मोहे रीति	७४	सुनि जिन वैन श्रवन सुख पायो	९१
चेतन यह बुधि कौन सयानै	७४	हम तो कबहूं न निज घर आये	७७
चेतन कौन अनिति गही रे	८२	हम तो कबहूं न निज गुण	७९
चिदराय गुन सुनो मुनो प्रशस्त गुरू	९४	हम तो कबहूं न हित उपजायो	७८
चितचिन्त के चिदेशअब	९५	हे हिन वांछक प्राणी रे	८४
चेतन अब धरि सहज समाधि	९६	हमारी वीर हरो भव पीर	८५
छांड़त क्यों नहीं रे	८०	हो तुम सठ अविचारी जियरा	९०
छांड़ि देय बुधि भोरी	८६	हे जिन मेरी ऐसी बुद्धि कीजै	९१
जिन वैन सुनत मोरी भूल भगी	७५	हे जिन तेरे मैं सरनै आया	९२
जिनवानी जान सुजान रे	७५	हे जिन तेरो सुजश उजागर	९३
जानत क्यों नहीं रे	८२	हे नर भ्रम नींद क्यों न छांडत	९४
जब तै आनंद जिननी दृष्टि	८८	ज्ञानी जीव निवार भरम तम	७६
जिन राग द्वेष त्यागा वह सतगुरू	९५	ज्ञानी ऐसी होरी मचायी	९२
जीया तुम चालो अपने देश	८९	**कविवर भागचंद**	(९९
जिनवर आनन भान निहारत	९६		११९
जय-जय जग भरम तिमिर हरन	९७	अहो यह उपदेश माहीं	१०६
जीव तू अनादि हीतैं भूल्यों	९८	अब मैं छांड़चो पर जंजाल	१०६
नोही ममझायो मौ-मौवार	८३	अरे हो अज्ञानी तूने	११०
देख्यो मागत तै जिन पाला	७४	अति संक्लेश विशुद्ध शुद्ध पुनि	११५
देखो जी आदीश्वर स्वामी	९१	अहो यह उपदेश माहीं	११७
धनि मुनि जिनकी लगी शिव	७५	आकुलरहित होय इमि निशदिन	१०७
धुनि मुनि निज आतम हित लीना	७७	आज मैंने प्रभु दर्शन पाये	११३
धन-धन साधर्मीजन मिलन की धरी	९०	आवै न भौगन में तोही गिलान	११९
धनि मुनि जिन भाव पिछाना	९५	ऐसे जैनी मुनि महाराज	१०७
निज पीज्यो धी धारी	७६	ऐसे साधु सुगुरु कब	१०८
निपट अयाना आपा न जाना	८४	ऐसे विमल भाव जग पावै	११२
निरखत जिनचन्द बदन	९७	करो रे भाई तत्त्वारथ सरधान	११२
प्रभु मोरी ऐसी बुधि कीजै	७३	गिरिवनवासी मुनिराज मनवसिया	११५
भाई निज हित कारज करना	७९	चेतन निज भ्रम तैं भ्रमत रहे	११०
भाखूं हित तेरा सुन हो मनमेरा	९३	जब निज आतम अनुभव आवै	१००
मेरे कब ह्वै वा दिन की सुघरी	७३	जे सहज होरी के खिलारी	१००
मत कीज्यो जी यारी	८०	जब निज अनुभव आवै	१०१
मानत क्यों नहीं रे	८१	जान कैं सुज्ञानी जैनीकी	१०४
मत कीज्यो जी यारी	८१	जीव! तू भ्रमत सदैव अकेला	१०७
मानत नहीं जिय निपट अनारी	८३	जीवन के परिणामन की	१०८
मोही जीव भरम तम तैं नहीं	८३	जे दिन तुम विवेक बिन खोये	११०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन-मन्दिर हमको लागे प्यारे १११
जिन स्वपर हिताहित चीना ११६
तुम गुन मनी निधि हे अरहन्त १०४
तू स्वरूप जानें बिनदुखी १११
थांकी तो वानी में हो ११३
धन्य-धन्य है घड़ी आजकी ११५
धनि ते प्रानी जिनके तत्त्वारथ १०५
धन-धन जैनी साधु अबाधित १०९
निज कारज काहे नसाये रे ११७
प्रभु थाको लखी मम चित्त १०२
परमातम सब जीवन की १०३
प्रभु तुम मूरत दृग सौं १०३
प्राणी समकित ही शिवपंथा १११
प्रभु पै यह वरदान सू पाऊं ११२
बरसत आज सुनीर हो १०६
बिन काम ध्यान मुद्राभिराम ११९
भव वन में नहीं भूलिये भाई ११२
महिमा है अगम जिनागम की १०४
म्हाकै जिनमूरति हृदय १०४
मैं तुम सरन लियो तुम सांचे ११३
म्हाकैं निजघर धुनि अब प्रगटी ११५
मेघघटा सम श्री जिनवानी ११७
यही इक धर्म भूल है मीता १०२
यह मोह उदय दुख पावै ११६
लखि कैं स्वामी रूप मेरा मन मया ११८
वीतराग जिन महिया थारी ११४
श्री मुनिराजत समता संग १००
श्री जिनवर पद ध्यावैं जो नर १०८
शान्ति वरन मुनिगई वरलखी १०५
सुमर सदा मन आतमराम १०१
संत निरन्तर चिन्तत ऐसे १०२
सांची तो गंगा यह वीतरागवाणी १०३
सम आराम विहारी साधुजन ११४
सहज अबाध समाध धाम तहां ११६
सफल है धन्य धन्य वा घरी ११८
सत्ता रंगभूमि में नटत ब्रह्म ११९
हरी तेरी मति नर कोने हरी १११
ज्ञानी मुनि छै ऐसे स्वामी १०९
ज्ञानी जीवन के भये ऐसे १०९
पुराने कवि **१२०**
१६७
अरेज़ तैं यह जनम गमायो रे १२१
अब ही हम पायौ विसराम १२५
अन्तर त्याग बिना बाहिजका १३२
अरे मन कर आतम ध्यान १४३
अब मेरे चेतन अनुरूप आयो १५१
अरे हम आतम राम हैं १५३
अपनी शक्ति समार चेतन १५४
अरे मन आतम को पहिचान १५८
अब हम अमर भये न मरेंगे १५८
अरहन्त सा कोई दाता नहीं १६२
आज कोई अद्भूत रचना रची १२६
आयु सब योंहि बीती जाये १३१
आतम ज्ञान भान परकाशक १३२
आतम स्वरूप सार को १४३
आतम अनुभव करना रे भाई १५०
आपने हृदय सदा सुविचार १५५
अपना भाव उर धरना प्यारेजी १५५
आतम रूप निहार सद्नय १६६
यह विधि खेलिये होरी हो चतुरनर १२८
इक तै एक अनेक रोग यह १३१
इक जोगी आसन बनावे १४५
इतनी निगाह रखना १५९
ऐत पर ऐता क्या करना १२०
ऐसे खेल होरी को खेली रे १२८
ऐसे होरी खेलो हो चतुर १४९
एक तुम्हीं हो आधार हो जग में १६०
कहो परसों प्रीति का नहीं १२१
कहा परदेसी को पतियारो १२२
कैसे होरी खेलो खेलीन आवे १२६
की परी इतनी मगरूरी करी १२७
करो कल्याण आतम का १३०
कर-कर ज्ञान अयान अरे नर १३१
क्या सुझी रे जिय थाने १३३
करम जड़ है न इनसे १४०
किस विधि कीने करम चकचूर १४०
करो मन आतमवन में केल १४५
कहां तू वृथा रहचो मन मोही १४८
कहां परदेशी को पतियारो १४९
कहाँसे आये हो चेतन १५०
खेलत फाग महामुनि वनमें १३०
गुरुजी म्हारै मन निपट अजान १२४
चेतन काहे कौ अरसात १२३
चेतन सौ चेतन लौ लाई १२३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चेतन चेति चतुर सुजान	१२३
चेतन अब मोही दग्सन दीजै	१२४
चेतन परस्यौं प्रेम वढ्यो	१२४
चनन नरभव पाय कै हो	१३०
चेतन यह घर नाहीं तेरो	१४७
चेतन अखियां खोलो न	१५७
चेतन ते सव सुधि विसरानी	१६२
चेतन सुमति सखी मिली	१६३
चले जात पायो सरस ज्ञान हीरा	१६५
चेतन अनुभव धन मन भीनो	१६७
छाँडि दे अभिमान जिय रे	१२१
जो जो देखी वीतराग ने	१२०
जिय को मोह महादुखदाई	१२०
जिनराज भजा सो ही जीता रे	१२७
जग में वड़ी अंधेरी छाई	१३३
जे सठ निजपद जोग्य क्रिया तजि	१३४
जो कृषि साधन करत वीज विन	१३५
जो भवितव्य लखी भगवन्त	१३५
जीव तू भ्रमत-भ्रमत भव खोयो	१३६
जिय ऐसा दिन कव आये है	१३९
जगत में कोई नहीं रे मेरा	१४१
जगन जंजाल मे हटना	१४८
जाकौ मन लगो निजरूपही	१४४
जो आनद निजघर म	१४५
जगत में आत्मपावन को	१४७
जनमु अकारथ ही जुगयौ	१४७
जिय तू दुख से काहे डरे	१४९
जिनधर्म ही दाता मुक्ति का	१५२
जाना नहीं निज आतमा	१५३
जिनधर्म रत्न पायाकै	१५६
जतन विनकारज विगरत	१५६
ज्ञान निगो मैं ज्ञान निगो	१५७
जयवन्तो जिनविम्व जगत में	१६०
जगत में आयो न आयो	१६१
जिया तैंने भावलिंग नहि धारो	१६४
जाना धरम का न रूप	१६५
तिहुंपुर के पुरूहूत सब	१२२
दरश-ज्ञान-चारित-तपकारन	१३४
देखो, पुद्गल का परिवारा	१३६
देखो, भूल हमारी हम संकट	१३९
दुनियां में सबसे न्यारा यह	१४८
देखा जब अपने अन्दर में कुछ	१६४
दिनरात मेरे स्वामी	१६६
नहिं गोरो नहिं कारो चेतन	१२५
निपुनता कहां गमाई राज	१३५
निजघर नाहिं पिछान्या रे	१३६
निजरूप को विचार	१४१
निजरूप सजो भवकूप तजो	१४६
नैना लाग रहे मोरे	१५५
परमरस हैं मेरे घट	१४४
प्रभु तुम आतम ध्येय धरो	१६१
भजन सम नहि काज दूजो	१२५
भाई, चेतन चेत सके तो चेत	१३७
भूल्यो रे जीव तू पद तेरो	१३८
भैया, धोखे में मत आना	१५९
भवचक्र से जो भव्यजन को	१६३
मेरी कौन गति होसी हो	१२६
म्हारौ मन लागौजी जिनजी सौं	१२७
मेरो कह्यो मानि ले जीयरा	१२९
मन वीतराग पद वन्द रे	१२९
मढ़ मन! मानत क्यों नहिं	१३९
मझे निर्वाण पहुँचन की	१४४
मेरे मन की उलटी रीति	१४६
यह आतमा क्या रंग दीखाता	१५१
रे भाई! आतम अनुभव कीजे	१३३
रे जिय तेरी कौन भूल यह	१३४
रागद्वेष जाके नहि मन में	१३७
रे नर! विपति में धर धीर	१३८
रे नर! उलटी चाल चले	१३८
रे जिय! जनम लाहो लेह	१६७
वह शक्ति हमें दो दयानिधे	१२९
सुनि सुजन सयाने	१३२
स्वसंवेदन सुज्ञानी जो	१४२
समझि औसर पायो रे जिया	१४६
समझि मन यह औसर	१४८
समझकर देख ले चेतन	१५४
हो चेतन! वे दुख विसरि	१२१
हो मन! जिन जिन क्यों नहि रटे	१२८
आधुनिक कवि	**१६८**
	२०२
अपने घर को देख बावरे	१७२
अब ज्ञाता-दृष्टा रहना रे	१८४
अब के ऐसी दिवाली मनाऊँ	१८६
अपनी सुधि पाय आप	१८८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain, Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अमूल्यतत्त्व विचार	१९५
आचरण तुम्हारा शुद्ध नहीं	१७३
आओ जय-जिनेन्द्र हो जाये	१८७
आचार्य श्री धरसेन जो	१९९
आनंद मंगल आज हमारे	२०१
एक बार बस एक बार	१९०
कहिये जो कहिवे की होय	१७७
कितने भव बीत गये	१८२
कहा मानले ओ मेरे भैया	१९७
चेतन क्यों पर अपनाता है	१७४
चेतन को मिला जब नरतन	१८७
चेतन अनुभव घट प्रतिभास्यौ	२००
जो एक शुद्ध विकार वर्जित	१६९
जो मोह माया मान मत्सर	१७०
जो क्रोध मद माया अपावन	१७०
जिसे खोजता फिरता है	१७७
जो इच्छा का दमन न हो	१७९
जिस विधि कीने करम चकचूर	१८५
जग में अनित्य तामें	१८९
तिल तिल जलकर वैभव जोड़ा	१९८
धन्य धन्य जिनधर्म हमारो	१७३
धर्म बिना बावरे तूने	१७६
धुन-धुन धुनिया अपनी धुन	१८३
ना समझो अभी मित्र कितना अंधेरा	१७८
निज आतम में रम जाओ	१८३
नर से नारायण बनने का	१९१
पुण्य से ही निर्जरा होती अगर	१७८
पुद्गल का क्या विश्वासा	१८९
प्राण मेरे तरसते हैं	१९२
पर्व पर्यूषण आया आनंद स्वरूपी	२०२
भावों में सरलता रहती है	१७९
भेदज्ञान की गिरी बीजुरी	१८१
भाई भविजन! तेरे दुख को	१८५
मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ	१६८
महावीर के पथ पर चलकर	१७१
मेरे शरण समयसार	१७५
मैं कब पाऊँ परम दिगम्बर	१८४
माता प्रियकारिणी ने उपजायो	१८८
यम नियम संयम आप कियो	१६८
या घट में परमात्मा चिन्मूरति	१७५
यदि भला किसी का कर न सको	१९३
वस्तु स्वभाव समझ नहीं पाता	१६८
शुभ अथवा ये अशुभ कामना	१९०
शुभ कर्मों से पुण्य अशुभ से पाप	१९४
सुण सुण रे म्हारा लोभी मनड़ा	१६९
समकित बिन फल नहिं पावोगे	१७१
स्वतः परिणमति वस्तु के	१७२
समझ मन बावरे	१७४
सुन्दर दशलक्षण वृष सेय	१७६
समझ उर धर कहत गुरूवर	१८०
समकित की शीतल वर्षा	१९६
संसारी जीवनां भाव मरणो	२००
सर्वांगी श्रन भाग	२०१
हूँ स्वतन्त्र निश्चल निश्काम	१९७
ज्ञानेश्वर द्रव्य बना है	१८६
भक्तिपरक	**२०३**
	२३९
अकेला ही हूँ मैं	२१८
अमृतझर झुरि झुरि आवै	२२२
अध्यात्म के शिखर पर	२३१
अवसर आया है कीजे कल्याण	२३९
आज हम जिनराज तुम्हारे द्वारे	२०४
आओ जिनमन्दिर में आओ	२०५
आकुलता दुखदायी तजो भवि	२३६
आप में जबतक कि कोई	२३७
आचार्य कुन्द कुन्द जो भारत में	२३७
ऐसे मुनिवर देखे वन में	२३०
केवलिकन्ये वाङ्गमय गंगे	२२०
कर लो आतमज्ञान	२३२
कंकर-पत्थर गले लगाये	२३३
गा रे भैया... गा रे भैया	२०८
गावो कुन्द वचन अनमोल	२२५
गाडी खडी रे खडी	२३५
चिदानन्द चैतन्य प्रभु का	२१०
चरणों में आ पड़ा हूँ	२२१
चलना है कब तक	२३०
छोटा सा मन्दिर बनायेंगे	२१२
जैनधर्म के हीरे मोती	२१२
जय वीतराग सर्वज्ञ प्रभु तुमको	२१३
जिनवाणी मोक्षनसैनी है हम जानी	२१४
जिनवाणी मोक्ष नसैनी है	२१५
जिनवाणी है चेतन हीरा जड़ी	२१५
जिनवाणी जगमैय्या जनम दुख मेट	२१५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाने क्यों अपनी शक्ति पर	२१६
जिनवाणी माता रत्नत्रयनिधि दीजिये	२१७
जिनवाणी मो मन भावे	२१७
जिनवर चरण भक्ति वर गंगा	२१८
जिनवाणी माता दर्शन की	२१९
जिन की वानी अब मन मानी	२२२
जिनवाणी गंगा जनम-मरणहरनी	२२४
जिन स्वानुभूति से खिरी	२२४
जगत गुरू कब निज आतम ध्याऊँ	२३१
जब चले आत्माराम छोड़ धन	२३३
जान जान अब रे हे नर आतमज्ञानी	२३५
तुम्ही हो ज्ञाता-दृष्टा तुम्ही हो	२०३
तुम्हारे दर्शन बिन स्वामी	२११
तुम्हारे ध्यान की मूरत	२११
तू तो सो जा वारे वीर	२३८
दरबार तुम्हारा मनहर है	२०६
धर्म मेरा धर्म मेरा	२०७
धन्य धन्य आज घड़ी	२१०
धन्य धन्य जिनवाणी माता	२१४
धन्य धन्य वीतराग वाणी	२१६
धन्य मुनीश्वर आतम हित में	२३०
निरखो अंग अंग जिनवरके	२०३
नित उठ ध्याऊँ गुण गाऊँ	२०७
नाथ तुम्हारी पूजा में सब स्वाहा	२३४
परम दिगम्बर मुनिवर देखे	२२८
भवतारण शिव सुख कारण	२२६
मुक्तिपुरी का ऋषभ दुलारा	२०८
मेरे मन-मन्दिर में आन	२०९
मिथ्यातम नाशवे को	२२०
मां जिनवाणी मुझ अन्तरमें	२२५
म्हारा परम दिगम्बर मुनिवर	२२९
मोहे आतम कारज करना	२३८
ये शाश्वत सुख का प्याला	२३२
यदि भवसागर दुख से भय है	२२७
लिया प्रभु अवतार	२०४
वीरा प्रभु के ये बोल	२०६
वीर हिमाचल तैं निकसी	२२३
वस्तुतत्त्व दर्शाती जग में	२२४
श्री अरहन्त छवि लखि हिरदै	२०४
श्रीगुरू है उपगारी ऐसे	२३१
सब मिल के आज जय कहो	२०९
सीमंधर मुख से फुलवा खिरे	२२३
स्वाध्याय करो स्वाध्याय करो	२२७
सन्त साधु बन के विचरूँ	२२७
सम्यग्दर्शन प्राप्त करेंगे	२३४
हमें निजधर्म पर चलना सिखाती	२१९
हे जिनवाणी माता तुमको	२२१
हे परम दिगम्बर यति महागुणव्रती	२२८
हे कुन्द कुन्द आचार्य कह गये	२३६
ज्ञानी जिनवाणी आधार	२२६
ज्ञान स्वरूप तेरा तू अज्ञानी हो रहा	२३९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संक्षिप्त परिचय

कविवर बनारसीदास

(विक्रम संवत् १६४३ - १७०१)

अध्यात्म और काव्य दोनों क्षेत्रों में सर्वोच्च प्रतिष्ठा प्राप्त महाकवि पण्डित बनारसीदासजी सत्रहवीं शताब्दी के रससिद्ध कवि और आत्मानुभवी महापुरुष थे। आपका जन्म जौनपुर के श्रीमाल वंश में लाला खरगसेन के यहाँ वि.सं. १६४३ में माघ सुदी एकादशी शनिवार को हुआ था।

आपने अपने जीवन में जितने उतार-चढ़ाव देखे, उतने शायद ही किसी महापुरुष के जीवन में आये हों – पुण्य और पाप का ऐसा संयोग अन्यत्र विरल है।

काव्य प्रतिभा तो आपको जन्म से ही प्राप्त थी । १४ वर्ष की उम्र में ही आप उच्चकोटि की कविता करने लगे थे, प्रारंभ में श्रृंगारिक कविताओं में मग्न रहे, किन्तु बाद में वि. सं. १६८० में ३७ वर्ष की अवस्था में आपके धार्मिक जीवन में एक नई क्रान्ति आई और उसमें भी अनेक उतार-चढ़ाव आये– स्वच्छंदी हुए , सम्हल गये और फिर स्याद्वाद का यथार्थ परिज्ञान होने पर कविराज का चित्त स्थिर और शांत हो गया। क्योंकि वे जो पाना चाहते थे, उन्हें वह मिल गया था।

कविवर बनारसीदासजी की उपलब्ध पद्य रचनाऐं चार हैं। १. बनारसी विलास २. नाम माला ३. अर्द्धकथानक और ४. नाटक समयसार । इसके अतिरिक्त उनकी 'परमार्थ वचनिका' और 'उपादान-निमित्त की चिट्ठी' नामक दो अत्यंत गंभीर एवं मार्मिक गद्य रचनाऐं भी उपलब्ध हैं।

कविवर का देहोत्सर्ग काल तो अविदित ही है, किन्तु तत्संबंध में एक किंवदन्ति प्रसिद्ध है कि अन्तकाल में उनका कंठ अवरूद्ध हो गया था; अत: वे बोल नहीं सकते थे, पर वे ध्यानमग्न और चिन्तनरत अवश्य थे। उससमय समीपस्थ लोगों में इसप्रकार की चर्चा होने लगी कि कवि के प्राण माया व कुटुम्बियों में अटके हैं, उनकी इस आशंका के निवारणार्थ उन्होंने अपने जीवन का अन्तिम छन्द निम्नप्रकार से लिखा था :–

ज्ञान कुतक्का हाथ, मारि अरि मोहना,
प्रगटचो रूप स्वरूप, अनंत सु सोहना।
जा परजै को अन्त, सत्य करि मानना,
चले 'बनारसीदास', फेर नहिं आवना ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

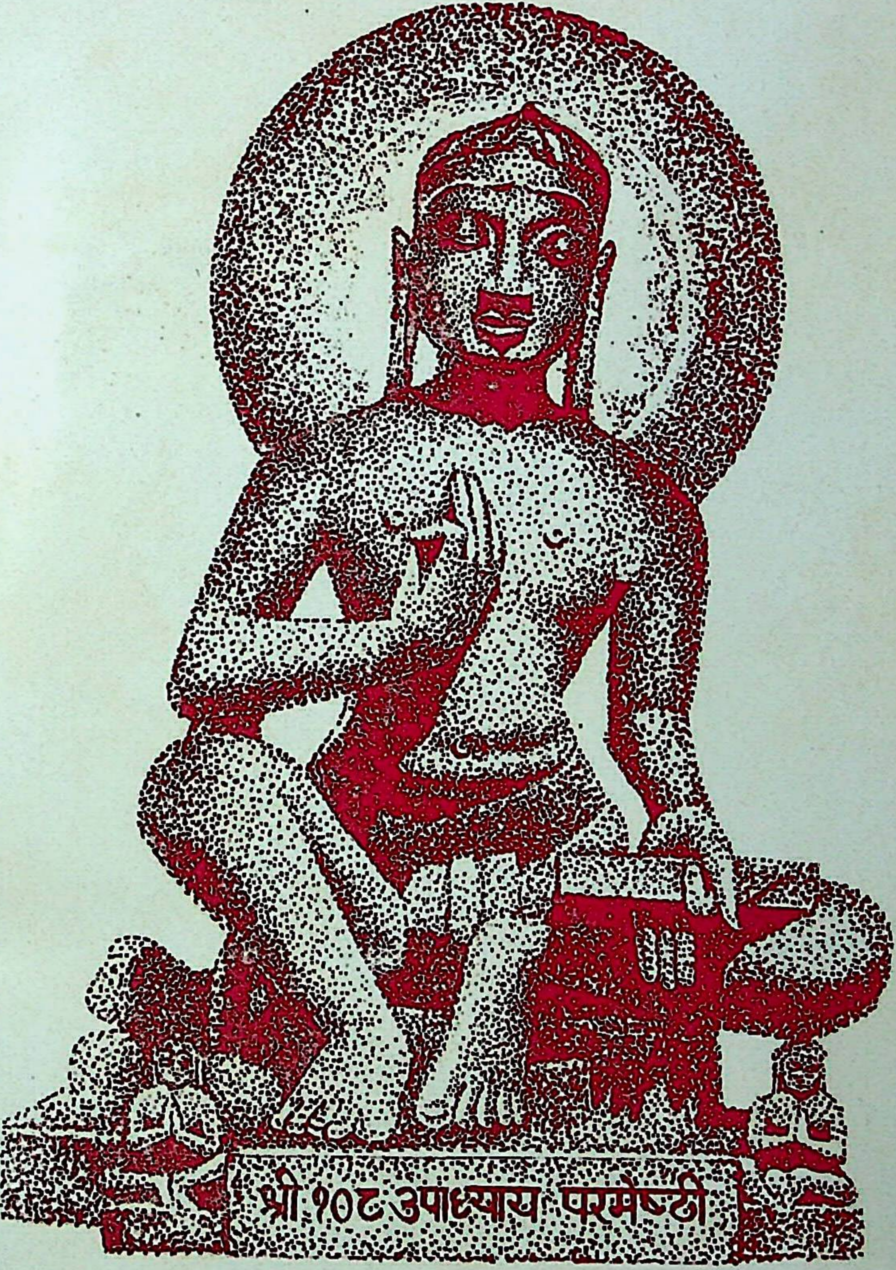

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

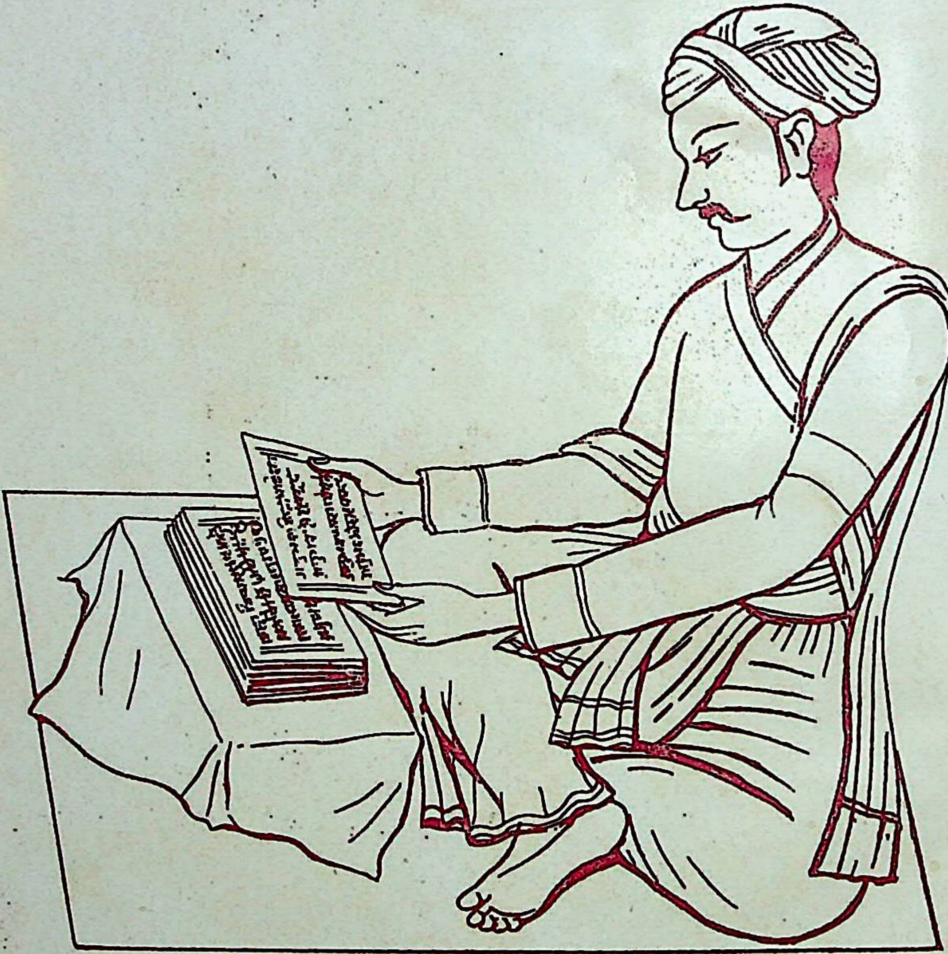

कविवर पण्डित बनारसीदास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हम बैठे अपनी मौन सौं .....

हम बैठे अपनी मौन सौं।।टेक।।
दिन दस के मेहमान जगत जन, बोलि विगारै कौन सौं ।।१।।
गये विलाय भरम के बादर, परमारथ-पथ-पौन सौं ।
अब अन्तर गति भई हमारी, परचे राधा रौन सौं ।।२।।
प्रगटी सुधापान की महिमा, मन नहिं लागै बौन सौं ।
छिन न सुहाय और रस फीके, रुचि साहिब के लौन सौं ।।३।।
रहे अघाय पाय सुख संपति, को निकसै निज भौन सौं ।
सहज भाव सदगुरु की संगति, सुरझै आवागौन सौं ।।४।।

दुविधा कब जैहै या मन की.....

दुविधा कब जैहै या मन की।।टेक।।
कब निजनाथ निरंजन सुमिरों, तज सेवा जन-जन की ।।१।।
कब रुचि सौं पीवौं दृग चातक, बूंद अखयपद धन की ।
कब सुभ ध्यान धरौं समता गहि, करूं न ममता तन की ।।२।।
कब घट अन्तर रहै निरन्तर, दृढता सुगुरु वचन की ।
कब सुख लहौं भेद परमारथ, मिटै धारना धन की ।।३।।
कब घर छाँडि होहुं एकाकी, लिये लालसा वन की ।
ऐसी दशा होय कब मेरी, हौं बलि बलि वा छिन की ।।४।।

रे मन! कर सदा सन्तोष.....

रे मन ! कर सदा सन्तोष, जातैं मिटत सब दुख दोष।।टेक।।
बढत परिग्रह मोह बाढत, अधिक तृषना होंति।
बहुत ईंधन जरत जैंसे, अगनि ऊंची जोंति।।१।।
लोभ लालच मूढ जन सो, कहत कंचन दान।
फिरत आरत नहिं विचारत, धरम धन की हान।।२।।
नारकिन के पाँय सेवत, सकुचि मानत संक।
ज्ञान करि बूझै 'बनारसी' को नृपति को रंक।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विराजै 'रामायण' घटमाहिं.....

विराजै 'रामायण' घटमाहिं।
मरमी होय मरम सो जाने, मूरख मानै नाहिं।।टेक।।
आतम 'राम' ज्ञान गुन 'लछमन', 'सीता' सुमति समेत।
शुभोपयोग 'वानरदल' मंडित, वर विवेक 'रण खेत'।।१।।
ध्यान 'धनुष टंकार' शोर सुनि, गई विषय दिति भाग।
भई भस्म मिथ्यामत 'लंका', उठी धारणा 'आग'।।२।।
जरे अज्ञान भाव 'राक्षसकुल', लरे निकांछित 'सूर'।
जझे राग-द्वेष सेनापति, संसै 'गढ़' चकचूर।।३।।
बिलखत 'कुम्भकरण' भव विभ्रम, पुलकित मन 'दरयाव'।
थकित उदार वीर 'महिरावण', सेतुबंध रूस भाव।।४।।
मूर्छित 'मंदोदरी' दुराशा, सजग चरन 'हनुमान'।
घटी चतुर्गति परणति 'सेना', छुटे छपक गुण 'बान'।।५।।
निरखि सकति गुन 'चक्र सुदर्शनं' उदय 'विभीषण' दान।
फिरै 'कबंध' मही 'रावण' की, प्राण भाव शिरहीन।।६।।
इह विधि सकल साधु घट, अन्तर होय सहज 'संग्राम'।
यह विवहार दृष्टि 'रामायण' केवल निश्चय राम।।७।।

जगत में सो देवन को देव.....

जगत में सो देवन को देव।।टेक।।
जासु चरन परसै इन्द्रादिक, होय मुकति स्वयमेव।।१।।
जो न छुधित, न तृषित, न भयाकुल, इन्द्री विषय न बेव।
जनम न होय, जरा नहिं व्यापै, मिटी मरन की टेव।।२।।
जाकै नहिं विषाद, नहिं बिस्मय, नहिं आठों अहमेव।
राग विरोध मोह नहिं जाके, नहिं निद्रा परसेव।।३।।
नहिं तन रोग, न श्रम, नहिं चिंता, दोष अठारह भेव।
मिटे सहज जाके ता प्रभु की, करत 'बनारसि' सेव।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वा दिन को कर सोच जिय मन में......

वा दिन को कर सोच जिय मन में।
बनज किया व्यापारी तूने, टांडा लादा भारी।।टेक।।
ओछी पूंजी जूआ खेला, आखिर बाजी हारी।
आखिर बाजी हारी, करले चलने की तय्यारी।।
इक दिन डेरा होयगा वन में, वा दिन को कर सोच जिय मन में।।१।।
झूठे नैना उलफत बांधी, किसका सोना किसकी चांदी।
इक दिन पवन चलेगी आंधी, किसकी बीबी किसकी बांदी।।
नाहक चित्त लगावे धन में, वा दिन को कर सोच जिय मन में।।२।।
मिट्टी सेती मिट्टी मिलियो, पानी से पानी।
मूरख सेती मूरख मिलियौ, ज्ञानी से ज्ञानी।।
यह मिट्टी है तेरे तन में, वा दिन को कर सोच जिय मन में।।३।।
कहत 'बनारसि' सुनि भवि प्राणी, यह पद है निरवाना।
जीवन मरन किया सो नांही, सिर पर काल निशाना।।
सूझ पड़ेगी बुढापेपन में, वा दिन को कर सोच जिय मन में।।४।।

मूलन बेटा जायो रे साधो.....

मूलन बेटा जायो रे साधो, जानै खोज कुटुम्ब सब खायो रे।।टेक।।
जन्मत माता ममता खाई, मोह लोभ दोई भाई।
काम क्रोध दोई काका खाये, खाई तृषना दाई।।१।।
पापी पाप परोसी खायो, अशुभ करम दोइ माया।
मान नगर को राजा खायो, फैल परो सब गामा।।२।।
दुरमति दादी खाई दादो, मुख देखत ही मूओ।
मंगलाचार बधाये बाजे, जब यो बालक हूओ।।३।।
नाम धरचो बालक को भोंदू, रूप बरन कछु नाहीं।
नाम धरंते पांडे खाये, कहत 'बनारसि' भाई।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भोंदू भाई! देखि हिये की आंखैं.....

भोंदू भाई! देखि हिये की आंखै ।
जै करषैं अपनी सुख संपति, भ्रम की संपति नाखैं।।टेक।।
जे आंखै अमृतरस बरसैं, परखैं केवलि वानी ।
जिन्ह आंखिन विलोकि परमारथ, होहिं कृतारथ प्रानी ।।१।।
जिन आंखिन्ह मैं दशा केवलि की, कर्म लेप नहिं लागै ।
जिन आंखिन के प्रगट होत घट, अलख निरंजन लागै ।।२।।
जिन आंखिन सों निरखि भेद गुन, ज्ञानी ज्ञान विचारै ।
जिन आंखिन सौं लखि स्वरूप मुनि, ध्यान धारणा धारै ।।३।।
जिन आंखिन के जगे जगत के, लगैं काज सब झूठै ।
जिन सौं गमन होइ शिव सनमुख, विषय-विकार अपूठैं ।।४।।
जिन आंखिन में प्रभा परम की, पर सहाय नहि लेखैं ।
जे समाधि सौं तकै अखंडित, ढकै न पलक निमेखैं ।।५।।
जिन आंखिन की ज्योति प्रगटि कै, इन आंखिन मैं भासैं ।
तब इनहूँ की मिटै विषमता, समता रस परगासैं ।।६।।
जे आंखैं पूरन स्वरूप धरि, लोकालोक लखावैं ।
अब यह वह सब विकलप तजिकैं, निरविकलप पद पावै ।।७।।

चेतन उलटी चाल चले.....

चेतन उलटी चाल चले।।टेक।।
जड संगत तैं जडता व्यापी निज गुन सकल टले ।।१।।
हित सों विरचि ठगनि सों रचि, मोह पिशाच छले ।
हंसि हंसि फंद सवारि आप ही, मेलत आप गले ।।२।।
आये निकसि निगोद सिंधु तें, फिर तिह पंथ चले ।
कैसे परगट होय आग जो, दबी पहार तले ।।३।।
भूले भव भ्रम बीचि, 'बनारसी' तुम सुरज्ञान भले ।
धर शुभ ध्यान ज्ञान नौका चढ़ि, बैठें तें निकले ।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भोंदू भाई! समुझ सबद यह मेरा .....

भोंदू भाई! समुझ सबद यह मेरा ।
जो तू देखै इन आंखिन सौं, तामैं कछू न तेरा।।टेक।।
ए आंखैं भ्रम ही सौं उपजी, भ्रम ही के रस पागी ।
जहँ जहँ भ्रम तहँ तहँ इनको श्रम, तू इन ही कौ रागी ।।१।।
ए आंखैं दोउ रची चाम की, चामहि चाम विलोवै ।
ताकी ओट मोह निद्रा जुत, सुपन रूप तू जोवै ।।२।।
इन आंखिन कौ कौन भरोसौ, एक विनसैं छिन माही ।
है इनको पुदगल सौं परचै, तू तो पुद्गल नाहीं ।।३।।
पराधीन बल इन आंखिन कौ, विनु प्रकाश न सूझै ।
सो परकाश अगनि रवि शशि को, तू अपनौं कर बूझै ।।४।।
खुले पलक ए कछु इक देखहि, मुंदे पलक नहिं सोऊ ।
कबहूं जाहि होंहि फिर कबहूँ, भ्रामक आंखैं दोऊ ।।५।।
जंगम काय पाय एक प्रगटै, नहिं थावर के साथी ।
तू तो मान इन्हें अपने दृग, भयौ भीम को हाथी ।।६।।
तेरे दृग मुद्रित घट-अन्तर, अन्ध रूप तू डोलै ।
कै तो सहज खुलै वे आंखैं, कै गुरु संगति खोलै ।।७।।

चेतन तू तिहुकाल अकेला .....

चेतन तू तिहुकाल अकेला।।टेक।।
नदी नाव संजोग मिले ज्यों, त्यों कुटुंब का मेला ।।१।।
यह संसार असार रूप सब, ज्यों पटपेखन खेला ।
सुख सम्पति शरीर जल बुद बुद, विनसत नाहीं बेला ।।२।।
मोह मगन आतम गुन भूलत, परि तोहि गल जेला ।
मैं मैं करत चहूँ गति डोलत, बोलत जैसे छेला ।।३।।
कहत 'बनारसि' मिथ्यामत तज, होइ सुगुरु का चेला ।
तास वचन परतीत आन जिय, होइ सहज सुरझेला ।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रंग भयो जिन द्वार.....

रंग भयो जिन द्वार, चलो सखी खेलन होरी।।टेक।।
सुमत सखी सब मिलकर आओ, कुमति ने देवो निकार।
केशर चन्दन और अगर्जा, समताभाव धुलाय चलो।।१।।
दया मिठाई, तप बहु मेवा, सित ताम्बूल चबाय।
आठ करम की डोरी रची है, ध्यान अग्नि सु जलाय।।२।।
गुरु के वचन मृदंग बजत है, ज्ञान क्षमा डफ ताल।
कहत 'बनारसी' या होरी खेली, मुक्तिपुरी को राय।।३।।

देखो भाई महाविकल संसारी.....

देखो भाई महाविकल संसारी।
दुखित अनादि मोह के कारन, राग-द्वेष भ्रम भारी।।टेक।।
हिसारंभ करत सुख समझै, मृषा बोलि चतुराई।
परधन हरत समर्थ कहावै, परिग्रह बढ़त बड़ाई।।१।।
वचन राख काया दृढ़ राखै, मिटै न मन चपलाई।
यातैं होत और की औरैं, शुभ करनी दुख दाई।।२।।
जोगासन करि कर्म निरोधै, आतम दृष्टि न जागे।
कथनी कथत महंत कहावै, ममता मूल न त्यागै।।३।।
आगम वेद सिद्धान्त पाठ सुनि, हिये आठ मद आनै।
जाति लाभ कुल बल तप विद्या, प्रभुता रूप बखानै।।४।।
जड सौं राचि परम पद साधै, आतम शक्ति न सूझे।
बिना विवेक विचार दरब के, गुण परजाय न बूझै।।५।।
जस वाले जस सुनि संतोषै, तप वाले तन सोपैं।
गुन वाले परगुन को दोषैं, मतवाले मत पोषैं।।६।।
गुरु उपदेश सहज उदयागति, मोह विकलता छूटै।
कहत 'बनारसि' है करुनारसि, अलख अखय निधि लूटै।।७।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेरा मनका प्यारा जो मिले....

मेरा मन का प्यारा जो मिले, मेरा सहज सनेही जो मिलै।
अवधि अजोध्या आतमराम, सीता सुमति करै परणाम।।टेक।।
उपज्यो कंत मिलन को चाव, समता सखी सों कहै इह भाव।
मैं विरहिन पिय के आधीन, यों तलफों ज्यों जल बिन मीन।।१।।
बाहिर देखूँ तो पिय दूर, घट देखे घट में भरपूर।
घटमहिं गुप्त रहै निरधार, वचन अगोचर मन के पार।।२।।
अलख अमूरति वर्णन कोय, कबधों पिय को दर्शन होय।
सुगम सुपंथ निकट है ठौर, अंतर आड विरह की दौर।।३।।
जउ देखों पिय की उनहार, तन मन सबस डारों वार।
होहुँ मगन मैं दरशन पाय, ज्यों दरिया में बूँद समाय।।४।।
पिय को मिलों अपनपो खोय, ओला गल पाणी ज्यों होय।
मैं जग ढूँढ फिरी सब ठोर, पिय के पटतर रूप न ओर।।५।।
पिय जगनायक पिय जगसार, पिय की महिमा अगम अपार।
पिय सुमिरत सब दुख मिटजाहिं, भोर निरख ज्यों चोर पलाहिं।।६।।
भयभंजन पिय को गुनवाद, गदगंजन ज्यों के हरिनाद।
भागइ भरम करत पियध्यान, फटइ तिमिर ज्यों ऊगत भान।।७।।
दोष दुरह देखत पिय ओर, नाग डरइ ज्यों बोलत मोर।
बसों सदा मैं पिय के गांउ, पिय तज और कहाँ मैं जाउँ।।८।।
जो पिय-जाति जाति मम सोइ, जातहिं जात मिलै सब कोइ।
पिय मोरे घट मैं पियमाहिं, जलतरंग ज्यों द्विविधा नाहिं।।९।।
पिय मो करता मैं करतूति, पिय ज्ञानी मैं ज्ञानविभूति।
पिय सुखसागर मैं सुखसींव, पिय शिवमन्दिर मैं शिवनीव।।१०।।
पिय ब्रह्मा मैं सरस्वति नाम, पिय माधव मो कमला नाम।
पिय शंकर मैं देवि भवानि, पिय जिनवर मैं केवलबानि।।११।।
पिय भोगी मैं भुक्तिविशेष, पिय जोगी मैं मुद्रा भेष।
पिय मो रसिया मैं रसरीति, पिय ब्योहारिया मैं परतीति।।१२।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जहाँ पिय साधक तहाँ मैं सिद्ध, जहाँ पिय ठाकुर तहाँ मैं रिद्ध।
जहाँ पिय राजा तहाँ मैं नीति, जहँ पिय जोद्धा तहाँ मैं जीति।।१३।।
पिय गुणग्राहक मैं गुणपति, पिय बहुनायक मैं बहुभाँति।
जहँ पिय तहँ मैं पिय के संग, ज्यों शशि हरि में ज्योति अभंग।।१४।।
पिय सुमिरन पिय को गुणगान, यह परमारथ पंथ निदान।
कहइ व्यवहार बनारसि नाव.. चेतन सुमति सटी इकठांव।।१५।।

ऐसैं यों प्रभु पाइये, सुन पंडित प्रानी.....

ऐसैं यों प्रभु पाइये, सुन पंडित प्रानी।

ज्यों मथि माखन काढिये, दधि मेल मथानी।।टेक।।
ज्यों रसलीन रसायनी, रसरीति अराधैं।
त्यों घट में परमारथी, परमारथ साधै।।१।।
जैसे वैद्य विथा लहै, गुण दोष विचारैं।
तैसे पंडित पिंड की, रचना निरवारैं।।२।।
पिंड स्वरूप अचेत है, प्रभुरूप न कोई।
जानै मानै रवि रहै, घट व्यापक सोई।।३।।
चेतन लच्छन जीव है, जड लच्छन काया।
चंचल लच्छन चित्त है, भ्रम लच्छन माया।।४।।
लच्छन भेद विलोकिये, सुविलच्छन वेदै।
सत्ता-सरूप हिये धारै, भ्रमरूप उछेदै।।५।।
ज्यों रज सोधै न्यारिया, धन सौ मनकीलै।
त्यों मुनिकर्म विपाक में, अपने रस झीलैं।।६।।
आप लखै जब आपको, दुविधा पद मेटै।
सेवक साहिब एक हैं, तब को किहि भेंटै।।७।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसैं क्यों प्रभु पाइये, सुन मूरख प्रानी.....

ऐसैं क्यों प्रभु पाइये, सुन मूरख प्रानी ।
जैसे निरख मरीचिका, मृग मानत पानी।।टेक।।
ज्यों पकवान चुरैल का, विषयारस त्यों ही ।
ताके लालच तू फिरै, भ्रम भूलत यों ही ।।१।।
देह अपावन खेह की, अपनो करि मानी ।
भाषा मनसा करम को, तें निज कर जानी ।।२।।
नाव कहावति लोक की, सो तो नहीं भूलै ।
जाति जगत की कल्पना, तामैं तू झूलै ।।३।।
माटी भूमि पहार की, तुह संपति सूझै ।
प्रगट पहेली मोह की, तू तउ न बूझै ।।४।।
तैं कबहूँ निज गुन विषै, निज दृष्टि न दीनी ।
पराधीन परवस्तु सों अपनायत कीनी ।।५।।
ज्यों मृगनाभि सुवास सों, ढूंढत बन दौरे ।
त्यों तुझ में तेरा धनी, तू खोजत औरे ।।६।।
करता भरता भोगता, घट सो घट माहीं ।
ज्ञान बिना सद्‌गुरू बिना, तू समझत नाही ।।७।।

या चेतन की सब सुधि गई.....

या चेतन की सब सुधि गई, व्यापत मोहि विकलता गई।।टेक।।
है जड़ रूप अपावन देह, तासौं राखै परम सनेह ।।१।।
आइ मिले जन स्वारथ बंध, तिनहि कुटुम्ब कहै जा बंध ।
आप अकेला जनमै मरै, सकल लोक की ममता धरै ।।२।।
होत विभूति दान के दिये, यह परपंच विचारै हिये ।
भरमत फिरै न पावइ ठौर, ठानै मूढ और की और ।।३।।
बंध हेत को करै जु खेद, जानै नहीं मोक्ष को भेद ।
मिटै सहज संसार निवास, तब सुख लहै 'बनारसीदास' ।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मगन ह्वै आराधो साधो .....

मगन ह्वै आराधो साधो अलख पुरुष प्रभु ऐसा।
जहां जहां जिस रस सौं राचै, तहां तहां तिस भेसा।।टेक।।
सहज प्रवान प्रवान रूप में, संसै में संसैसा।
धरै चपलता चपल कहावै, लै विधान में लैसा।।१।।
उद्यम करत उद्यमी कहिये, उदय सरुप उदैसा।
व्यवहारी व्यवहार करम में, निहचै में निहचैसा।।२।।
पूरण दशा धरे सम्पूरण, नय विचार में तैसा।
दरवित सदा अखै सुखसागर, भावित उतपति खैसा।।३।।
नाहीं कहत होई नाहीं सा, है कहिये तो है सा।
एक अनेक रूप है वरता, कहौं कहां लौं कैसा।।४।।
वह अपार ज्यौं रतन अमोलिक बुद्धि विवेक ज्यौं ऐसा।
कल्पित वचन विलास 'बनारसि' वह जैसे का तैसा।।५।।

भेद विज्ञान जग्यो जिन्हके घट .....

भेद विज्ञान जग्यो जिन्हकै घट शीतल चित्त भयो जिमि चन्दन।
केलि करें शिवमारग में जगमाहीं जिनेसुर के लघुनंदन।।१।।
सत्यस्वरूप सदा जिन्हके, प्रगटचो अवदात मिथ्यात निकंदन।।२।।
शांतदशा तिनकी पहिचानि, करे जोरि बनारसि वंदन।।३।।

चेतन रूप अनुप अमूरत .....

चेतनरूप अनूप अमूरत, सिद्ध समान सदा पद मेरो।।टेक।।
मोह महातम आतम अंग कियो, परसंग महातम घेरो।।१।।
ज्ञानकला उपजी अब मोहि, कहूँ गुण नाटक आगम केरो।।२।।
जासु प्रसाद सधे शिव मारग वेगि मिटे भववास बसेरो।।३।।

उपादान निजगुण जहाँ .....

उपादान निजगुण जहाँ, तहाँ निमित्त पर होय।
भेदज्ञान परवान विधि, विरषा बूझे कोय।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संक्षिप्त परिचय

कविवर द्यानतराय

(विक्रम संवत १७३३ - १७८३)

आध्यात्मिक काव्य धरोहर के एक अनमोल रत्न कविवर द्यानतराय उन महाकवियों में से एक हैं, जिनके द्वारा रचित पूजा, पद, भजन आदि अनेक रचनाओं को समाज में सर्वाधिक पढ़ा और सुना जाता है।

आत्मानुभवी महाकवि का जन्म संवत १७३३ में आगरा में हुआ, आपके बाबा वीरदास और पिता श्री श्यामदास थे।

हिन्दी साहित्य के प्रकांड विद्वान होने के साथ ही आपकी काव्य रचना में भी विशेष रुचि थी। आपके द्वारा रचित 'धर्म विलास' में आपकी प्रायः सभी रचनाओं का संग्रह है। करीब ३० वर्ष में कवि ने इसे पूर्ण किया था। इसमें उनके ३०० से अधिक पद, विभिन्न पूजा-पाठ और ४५ अन्य छोटी-बडी रचनाओं का सुंदर समावेश है। सभी रचनायें एक से एक सुन्दर तथा उत्तम भावों के साथ गुम्फित हैं। कवि के प्रत्येक पद का भाव, शब्द चयन एवं वर्णन शैली किसी भी प्रकार से कम नहीं।

आपकी सभी रचनाओं में विशेष तौर पर पदों में आध्यात्मिक निर्झर बहता हुआ स्पष्ट परिलक्षित होता है। प्रायः सभी रचनाओं में आत्मानुभूति की अमिट छाप प्रत्येक आत्मार्थी को आत्मानुभूति की प्रेरणा देती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अब हम अमर भये न मरेंगे.....

अब हम अमर भये न मरैंगे।।टेक।।
तन कारन मिथ्यात दियो तज, क्यों करि देह धरैंगे।।१।।
उपजै मरै कालतैं प्रानी, तातैं काल हरैंगे।
राग दोष जग बंध करत हैं, इनको नाश करैंगे।।२।।
देह विनाशी मैं अविनाशी, भेदज्ञान पकरैंगे।
नासी जासी हम थिरवासी, चोखे हो निखरैंगे।।३।।
मरे अनन्ती बार बिन समुझैं, अब सब दुःख बिसरैंगे।
'द्यानत' निपट निकट दो अक्षर, बिन सुमरैं सुमरैंगे।।४।।

जान, आतम ज़ान रे जान.....

आतम जान, जान रे जान ।।टेक।।
जीवन की इच्छा करै, कबहुँ न मांगै काल।
सोई जान्यो जीव है, सुख चाहै दुःख टाल।।१।।
नैन बैन में कौन है, कौन सुनत हैं बात।
देखत क्यों नहीं आप में, जाकी चेतन जात।।२।।
बाहिर ढूंढ़े दूर है, अन्तर निपट नजीक।
ढूंढ़नवाला कौन है, सोई जानो ठीक।।३।।
तीन भवन में देखिया, आतम सम नहिं कोय।
'द्यानत' जे अनुभव करैं, तिनकौं शिवसुख होय।।४।।

देखे सुखी सम्यक्वान.....

देखे सुखी सम्यक्वान।
सुख-दुःख को दुखरुप विचारै, धारैं अनुभव ज्ञान।।टेक।।
नरक सात में के दुःख भोगैं, इन्द्र लखैं तिन मान।
भीख मांग कै उदर भरैं न, करैं चक्री को ध्यान।।१।।
तीर्थंकर पद को नहिं चावें, जपि उदय अप्रमान।
कुष्ट आदि बहु व्याधि दहत न, चहत मकरध्वज थान।।२।।
आधि व्याधि निरबाध अनाकुल, चेतन जोति पुमान।
'द्यानत' मगन सदा तिहि माहीं, नाहीं खेद निदान।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भाई! आतम अनुभव करना रे.....

भाई! आतम अनुभव करना रे ।।टेक।।
जबलौं भेद-ज्ञान नहिं उपजै, जनम-मरन दुःख भरना रे ।।१।।
आतम पढ़ नवतत्व बखानै, व्रत तप संजम धरना रे ।
आतम-ज्ञान बिना नहिं कारज, जोनी संकट परना रे ।।२।।
सकल ग्रन्थ दीपक हैं भाई, मिथ्यातम के हरना रे ।
कहा करै ते अन्ध पुरुष को, जिन्हैं उपजना मरना रे ।।३।।
'द्यानत' जे भवि सुख चाहत हैं, तिनको यह अनुसरना रे ।
सोऽहं ये दो अक्षर जप कै, भव-जल पार उतरना रे ।।४।।

मैं निज आतम कब ध्याऊँगा.....

मैं निज आतम कब ध्याऊँगा ।।टेक।।
रागादिक परिनाम त्याग कै, समता सौं लौ लाऊँगा ।।१।।
मन-वच-काय जोग थिर करकै, ज्ञान-समाधि लगाऊँगा ।
कबधौं क्षिपकश्रेणि चढ़ि ध्याऊँ, चारित मोह नशाऊँगा ।।२।।
चारों करम घातिया खन करि, परमातम पद पाऊँगा ।
ज्ञान दरश सुख बल भण्डारा, चार अघाति नसाऊँगा ।।३।।
परम निरंजन सिद्ध शुद्धपद, परमानन्द कहाऊँगा ।
'द्यानत' यह सम्पति जब पाऊँ, बहुरि न जग में आऊँगा ।।४।।

अरहन्त सुमर मन बावरे.....

अरहन्त सुमर मन बावरे ।।टेक।
ख्याति लाभ पूजा तजि भाई, अन्तर प्रभु लौं लाव रे ।।१।।
नरभव पाय अकारथ खोवै, विषय भोग जु बढ़ाव रे ।
प्राण गये पछितैहै मनुवा, छिन-छिन छीजै आव रे ।।२।।
युवती तन-धन सुत-मित परिजन, गज तुरंग रथ चाव रे ।
यह संसार सुपन को माया, आँख मीच दिखराव रे ।।३।।
ध्याय-ध्याय रे अब है अवसर, आतम मंगल गाव रे ।
'द्यानत' बहुत कहाँ लौं कहिये, और न कछु उपाव रे ।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धिक! धिक! जीवन समकित बिना....

धिक्! धिक्! जीवन समकित बिना ।।टेक।।
दान शील व्रत तप श्रुत पूजा, आतंम हेत न एक गिना ।।१।।
ज्यों बिनु कन्त कामिनी शोभा, अंबुज बिनु सरवर् सूना ।
जैसे बिना एकड़े बिन्दी, त्यों समकित बिन सरव गुनां ।।२।।
जैसे भूप बिना सब सेना, नींव बिना मन्दिर चुनना ।
जैसे चन्द बिहूनी रजनी, इन्हें आदि जानो निपुना ।।३।।
देव जिनेन्द्र, साधु गुरु करुना, धर्मराग व्योहार भना ।
निहचै देव धरम गुरु आतम, द्यानत गहि मन वचन तना ।।४।।

मगन रहु रे! शुद्धातम में.....

मगन रहु रे! शुद्धतम में मगन रहु रे ।।टेक।।
राग दोष पर को उत्पात, निहचै शुद्ध चेतना जात ।
विधि निषेध को खेद निवारि, आप-आप में आप निहारि ।।१।।
बंध मोक्ष विकलप करि दूर, आनन्द कन्द चिदातम सूर ।
दरसन ज्ञान चरन समुदाय, 'द्यानत' ये ही मोक्ष उपाय ।।२।।

जीवा ! शूं कहिये तनैं भाई.....

जीवा! शूं कहिये तनैं भाई ।।टेक।।
पोता नूं रूप अनूप तजी नैं, शा माटैं विषयी थाई ।।१।।
इन्द्रीना विषय विषथकी, मोटा ज्ञान नू अमृत गाई ।
अमृत छोड़ीनैं विषय विष पीधा, साता तो नथी पाई ।।२।।
नरक निगोदना दु:ख सह आव्यो, बली तिहनैं मग धाई ।
एहवी बात रूड़ी न छै, तमनैं तीन भवन ना राई ।।३।।
लाख बातनी बात ए छै, मूकीनै विषय-कषाई ।
'द्यानत' ते वारै सुख लाधौ, एम गुरु समझाई ।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हम लागे आतमराम सों.....

हम लागे आतमराम सों।
विनाशीक पुद्गल की छाया, को न रमै धनवान सों।।टेक।।
समता सुख घट में परगास्यो, कौन काज है काम सों।
दुविधा-भाव जलांजुलि दीनौं, मेल भयो निज आतम सों।।१।।
भेदज्ञान करि निज परि देख्यौ, कौन बिलोकै चाम सों।
उरै परै की बात न भावै, लौ लाई गुणग्राम सों।।२।।
विकलपभाव रंक सब भाजे, झरि चेतन अभिराम सों।
'द्यानत' आतम अनुभव करिके, छूटै भव दुःखधाम सों।।३।।

हम न किसी के कोई न हमारा.....

हम न किसी के कोई न हमारा, झूठा है जग का व्योहारा।
तन संबंधी सब परवारा, सो तन हमने जाना न्यारा।।टेक।।
पुण्योदय सुख का बढ़वारा, पापोदय दुःख होत अपारा।
पाप-पुण्य दोऊ संसारा, मैं हूं यह सब देखनहारा।।१।।
मैं तिहुँजग तिहुँकाल अकेला, परसंजोग भया बहुमेला।
थिति पूरी करि खिर-खिर जाहीं, मेरे हर्ष-शोक कछु नाहीं।।२।।
राग भावतैं सज्जन मानैं, दोष भावतैं दुर्जन जानैं।
राग-दोष दोऊ मम नाहीं, 'द्यानत' मैं चेतनपद माहीं।।३।।

रे मन ! भज-भज दीनदयाल.....

रे मन ! भज-भज दीनदयाल।
जाके नाम लेत इक छिन मैं, कटैं कोटि अघजाल।।टेक।।
परम ब्रह्म परमेश्वर स्वामी, देखैं होत निहाल।
सुमरन करत परम सुख पावत, सेवत भाजै काल।।१।।
इन्द्र फनिन्द चक्रधर गावैं, जाको नाम रसाल।
जाको नाम ज्ञान परकासै, नाशै मिथ्याज़ाल।।२।।
जाके नाम समान नहीं कछु, ऊरध मध्य पताल।
सोई नाम जपो नित 'द्यानत', छांड़ि विषय विकराल।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परमगुरु बरसत ज्ञान झरी.....

परमगुरु बरसत ज्ञान झरी ।।टेक।।
हरषि-हरषि बहु गरजि-गरजि कै, मिथ्या तपन हरी ।।१।।
सरधा भूमि सुहावनि लागै, संशय बेल हरी ।
भविजन मन सरवर भरि उमड़े, समुझि पवन सियरी ।।२।।
स्यादवाद मत बिजली चमके, परमत शिखर परी ।
चातक मोर साधु श्रावक के, हृदय सुभक्ति भरी ।।३।।
जप तप परमानन्द बढ़्यो है, सुसमय नींव धरी ।
'द्यानत' पावन पावस आयो, थिरता शुद्ध करी ।।४।।

गुरु समान दाता नहिं कोई.....

गुरु समान दाता नहिं कोई ।।टेक।।
भानु प्रकाश न नाशत जाको, सो अंधियारा डारै खोई ।।१।।
मेघ समान सबन पै बरसै, कछु इच्छा जाके नहिं होई ।
नरक पशू गति आग मांहि तैं, सुरग मुकत सुख थापै सोई ।।२।।
तीन लोक मन्दिर में जानौ, दीपकसम परकाशक लोई ।
दीप तलैं अंधियार भर्‌यो है, अन्तर बाहिर विमल है जोई ।।३।।
तारन-तरन जिहाज सुगुरु हैं, सब कुटुम्ब डोवै जगतोई ।
'द्यानत' निशिदिन निरमल मन में, राखो गुरु-पद पंकज दोई ।।४।।

आपा प्रभु जाना मैं जाना.....

आपा प्रभु जाना मैं जाना ।।टेक।।
परमेसुर यह मैं इस सेवक, ऐसो भर्म पलाना ।।१।।
जो परमेसुर सो मम मूरति, जो मम सो भगवाना ।
मरमी होय सोइ तो जानै, जानै नाहीं आना ।।२।।
जाकौ ध्यान धरत हैं मुनिगन, पावत हैं निरवाना ।
अर्हत् सिद्ध सूरि गुरु मुनिपद, आतमरूप बखाना ।।३।।
जो निगोद में सो मुझ माहीं, सोई है शिवथाना ।
'द्यानत' निहचै रञ्च फेर नहिं, जानै सो मतिवाना ।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

जिया तैं आतमहित नहिं कीना.....

जिया तैं आतमहित नहिं कीना।
रामा रामा धन धन कीना, नरभव फल नहिं लीना।।टेक।।
जप तप करकें लोक रिझाये, प्रभुता के रस भीना।
अन्तर्गत परनाम न सोधे, एकौ गरज सरी ना।।१।।
बैठि सभा में बहु उपदेशे, आप भये परवीना।
ममता डोरी तोरी नाहीं, उत्तम तैं भये हीना।।२।।
"द्यानत" मन वच काय लायके, निज अनुभव चित्त दीना।
अनुभव धारा ध्यान विचारा, मंदर कलश नवीना।।३।।

नहिं ऐसो जनम बारम्बार.....

नहिं ऐसो जनम बारम्बार।
कठिन-कठिन लह्यो मनुष भव, विषय भजि मतिहार।।टेक।।
पाय चिन्तामन रतन शठ, छिपत उदधि मंझार।
अन्धे हाथ बटेर आई, तजत ताहि गंवार।।१।।
कबहुं नरक तिरयञ्च कबहुं, कबहुं सुरग विहार।
जगत माहिं चिरकाल भ्रमियो, दुर्लभ नर अवतार।।२।।
पाय अमृत पांय धोवै, कहत सुगुरु पुकार।
तजो विषय कषाय 'द्यानत', ज्यों लहो भवपार।।३।।

तू तो समझ-समझ रे! भाई.....

तू तो समझ-समझ रे! भाई।
निशि दिन विषय भोग लपकाना, धरम वचन न सुहाई।।टेक।।
कर मनका लै आसान मारयो, बाहिज लोक रिझाई।
कहा भयो बक ध्यान धरे तैं, जो मन थिर न रहाई।।१।।
मास-मास उपवास किये तैं, काया बहुत सुखाई।
क्रोध मान छल लोभ न जीत्यो, कारज कौन सराई।।२।।
मन-वच-काय जोग थिर करकैं, त्यागो विषय कषाई।
'द्यानत' सुरग मोख सुखदाई, सद्गुरु सीख बताई।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

री! मेरे घट ज्ञान घना मम छायो.....

री! मेरी घट ज्ञान घना मम छायो ।
शुद्धभाव बादल मिल आये, सूरज मोह छिपायो ।।टेक।।
अनहद घोर घोर गरजत है, भ्रम आताप मिटायो ।
समता चपला चमकनि लागी, अनुभव-सुख झर लायो ।।१।।
सत्ता भूमि बीज समकित को, शिवपद खेत उपायो ।
उद्धत भाव सरोवर दीसै, मोर सुमन हरषायो ।।२।।
भव-प्रदेश तैं बहु दिन पीछै, चेतन पिय घर आयो ।
'द्यानत' सुमति कहै सखियनसों, यह पावस मोहि भायो ।।३।।

दुनियाँ मतलब की गरजी.....

दुनियाँ मतलब की गरजी, अब मोहे जान पड़ी ।।टेक।।
हरे वृक्ष पै पंछी बैठा, रटता नाम हरी ।
प्रात भये पंछी उड़ चाले, जग की रीति खरी ।।१।।
जब लग बैल वहै बनियां का, तब लग चाह घनी ।
थके बैल को कोई न पूछै, फिरता गली गली ।।२।।
सत्त बांध सत्ती उठ चाली, मोह के फन्द पड़ी ।
'द्यानत' कहै प्रभू नहिं सुमर्‌यो, मुरदा संग जली ।।३।।

प्राणीलाल! धरम अगाऊ धारौ.....

प्राणी लाल! धरम अगाऊ धारौ ।
जबलौं धन जोवन हैं तेरे, दान शील न विसारौ ।।टेक।।
जबलौं करपद दिढ़ हैं तेरे, पूजा तीरथ सारौ ।
जीभ नैन जबलों हैं नीके, प्रभु गुन गाय तिहारौ ।।१।।
आसन श्रवण सबल हैं तोलौं, ध्यान शब्द सुनि धारौ ।
जरा न आवै गद न सतावै, संजम पर उपकारौ ।।२।।
देह शिथिल मति विकल न तौलों, तप गहि तत्त्वविचारो ।
अन्त समाधि पोत चढ़ि अपनो, 'द्यानत' आतम तारो ।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जगत में सम्यक् उत्तम भाई !.....

जगत में सम्यक् उत्तम भाई !।।टेक।।
सम्यक् सहित प्रधान नरक में, धिक् शठ सुरगति पाई।।१।।
श्रावकव्रत मुनिव्रत जे पालैं, ममता बुद्धि अधिकाई।
तिनतैं अधिक असंजम चारी, जिन आतम लव आई।।२।।
पञ्च परावर्तन तैं कीनै, बहुत बार दु:खदाई।
लख चौरासी स्वांग धरि नाच्यौ, ज्ञानकला नहिं आई।।३।।
सम्यक् बिन तिहुँ जग दु:खदाई, जहं भावै तहं जाई।
'द्यानत' सम्यक् आतम अनुभव, सद्गुरु सीख बताई।।४।।

भाई ! अब मैं ऐसा जाना.....

भाई ! अब मैं ऐसा जाना।।टेक।।
पुद्गल दरब अचेत भिन्न हैं, मेरा चेतन बाना।।१।।
कलप अनन्त सहत दु:ख बीते, दु:ख कौं सुख कर माना।
सुख-दु:ख दोऊ कर्म अवस्था, मैं कर्मन तैं आना।।२।।
जहां भोर थी तहां भई निशि, निशि की ठौर बिहाना।
भूल मिटी जिन पद पहिचाना, परमानन्द निधाना।।३।।
गूंगे का गुड़ खाय कहैं किमि, यद्यपि स्वाद पिछाना।
'द्यानत' जिन देख्या ते जानै, आत्मज्ञान विज्ञाना।।४।।

भाई ! ज्ञानी सोई कहिए.....

भाई ! ज्ञानी सोई कहिये।।टेक।।
करम उदय सुख-दु:ख भोगे तैं, राग विरोध न लहिये।।१।।
कोऊ ज्ञान क्रिया तैं कोई, शिवमारग बतलावै।
नय निहचै व्यवहार साधिकै, दोऊ चित्त रिझावै।।२।।
कोऊ कहै जीव छिनभंगुर, कोई नित्य बखानै।
परजय दरवित नय परमानै, दोऊ समता आनै।।३।।
कोई कहै उदय है सोई, कोई उद्यम बोलै।
'द्यानत' स्यादवाद सु तुला में, दोनों बातें तौलैं।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धनि-धनि ते मुनि गिरिवनवासी.....

धनि-धनि ते मुनि गिरिवनवासी।।टेक।।
मार-मार जग जार जार तें, द्वादस व्रत तप अभ्यासी।।१।।
कौड़ी लाल पास नहिं जाके, जिन छेदी आसापासी।
आतम-आतम पर-पर जानै, द्वादश तीन प्रकृति नासी।।२।।
जा दु:ख देख दु:खी सब जग ह्वै, सो दु:ख लख सुख ह्वै तासी।
जाकों सब जग सुख मानत है, सो सुख जान्यो दु:खरासी।।३।।
बाहिज भेष कहत अन्तर गुण, सत्य मधुर हित मित भासी।
'द्यानत' ते शिवपंथ पथिक हैं, पांव परत पातक जासी।।४।।

अज्ञानीजन ! समझत क्यों नहिं वानी...

अज्ञानीजन ! समझत क्यों नहिं वानी।।टेक।।
स्याद्वाद अंकित सुखदाय, भाखी केवलज्ञानी।।१।।
जास लखैं निरमल पद पावै, कुमति कुगति की हानी।
उदय भया जिहमें परगासी, तिहि जाना सरधानी।।२।।
जामें देव धरम गुरु वरनें, तीनौं मुकति निसानी।
निश्चय देव धरम गुरु आतम, जानत विरला प्रानी।।३।।
या जगमाहिं तुझे तारन को, कारन नाव बखानी।
'द्यानत' सो गहिये निहचै सैं, हूजे ज्यों शिवथानी।।४।।

बसि, ससार में मैं पायो दु:ख अपार.....

बसि, संसार में मैं पायो दु:ख अपार।।टेक।।
मिथ्याभाव हिये धरचो, नहिं जानो सम्यक् चार।।१।।
काल अनादिहिं हौं रुल्यौ हो, नरक निगोद मंझार।
सुरनर पद बहुत धरे पद, पद प्रति आतम धार।।२।।
जिनको फल दु:खपुञ्ज है हो, ते जानें सुखकार।
भ्रम मद पीय विकल भयो नहिं, गह्यो सत्य व्योहार।।३।।
जिनवाणी जानी नहीं हो, कुगति विनाशन हार।
'द्यानत' अब सरधा करी, दुख मेटि लह्यो सुखसार।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भाई! ज्ञान का राह.....

भाई! ज्ञान का राह सुहेला रे।।टेक।।
दरव न चहिये, देह न दहिये, जोग भोग न नवेला रे।।१।।
लड़ना नाहीं, मरना नाहीं, करना बेला तेला रे।
पढ़ना नाहीं, गढ़ना नाहीं, नाचन गावन मेला रे।।२।।
न्हानां नाहीं, खाना नाहीं, नाहिं कमाना धेला रे।
चलना नाहीं, जलना नाहीं, गलना नाहीं देला रे।।३।।
जो चित चाहै, सो नित दाहै, चाह दूर करि खेला रे।
'द्यानत' यामें कौन कठिनता, बे-परवाह अकेला रे।।४।।

आतम अनुभव कीजे हो.....

आतम अनुभव कीजे हो।।टेक।।
जनम जरा अरु मरन नाशकै, अनंत काल लौं जीजै हो।।१।।
देव-धरम-गुरु की सरधा करि, कुगुरु आदि तज दीजै हो।
छहौं दरब नव तत्त्व परख कै, चेतन सार गहीजै हो।।२।।
दरब-करम नोकरम भिन्न करि, सूक्षम दृष्टि धरीजै हो।
भावकरम तैं भिन्न जानि कै, बुधि विलास न मरीजै हो।।३।।
आप-आप जानै सो अनुभव, 'द्यानत' शिव का दीजै हो।
और उपाय बन्यो नहिं बनि है, करै सो दक्ष कहीजै हो।।४।।

कर रे! कर रे! कर रे! तू आतम हित.....

कर रे! कर रे! कर रे! तू आतम हित कर रे।।टेक।।
काल अनन्त गयो जग भमतैं, भव-भव के दुःख हर रे।।१।।
लाख कोटि भव तपस्या करतैं, जीतो कर्म तेरी जर रे।
स्वास-उस्वास माहिं सो नासै, जब अनुभव चित धर रे।।२।।
काहे कष्ट सहै वन माहीं, राग-दोष परिहर रे।
काज होय समभाव बिना नहिं, भावो पचि-पचि मर रे।।३।।
लाख सीख की सीख एक यह, आतम-निज पर-पर रे।
कोटि ग्रन्थ को सार यही है, 'द्यानत' लख भव तर रे।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अब हम आतम को पहिचान्यौ.....

अब हम आतम को पहिचान्यौ।
जब ही सेती मोह सुभट बल, छिनक एक में भान्यौ।।टेक।।
राग विरोध विभाव भजे झर, ममता भाव पलान्यौ।
दरशन ज्ञान चरन में चेतन, भेद रहित परवान्यौ।।१।।
जिहि देखैं हम अवर न देख्यो, देख्यो सो सरधान्यौ।
ताकौ कहो कहैं कैसे करि, जा जानै जिम जान्यौ ।२।।
पूरब भाव सुपनवत देखे, अपनो अनुभव तान्यौ।
'द्यानत' ता अनुभव स्वादत ही, जनम सफल करि मान्यौ।।३।।

कर कर आतमहित रे प्राणी.....

कर कर आतमहित रे प्रानी।
जिन परिनामनि बंध होत है, सो परणति तज दुःखदानी।।टेक।
कौन पुरुष तुम कहां रहत हौ, किहि की संगति रति मानी।
जे परजाय प्रगट पुद्गलमय, ते तैं क्यों अपनी जानी।।१।।
चेतन जोति झलकत तुझ माहीं, अनुपम सो तैं विसरानी।
जाकी पटतर लगत आन नहिं, दीप रतन शशि सूरानी।।२।।
आप में आप लखो अपनो पद, 'द्यानत' करि तन मन वानी।
परमेश्वर पद आप पाइये, यौं भाषैं केवलज्ञानी।।३।।

धनि ते साधु रहत वनमाहीं.....

धनि ते साधु रहत वनमाहीं।
शत्रु-मित्र सुख-दुःख सम जानैं, दिरसन देखत पाल पलाहीं।।टेक।।
अट्ठाईस मूलगुण धारै, मन वच काय चपलता नाहीं।
ग्रीषम शैल शिखा हिम तटिनी, पावस बरखा अधिक सहाहीं।।१।।
क्रोध मान छल लोभ न जानैं, राग-दोष नाहीं उनपाहीं।
अमल अखंडित चिद्गुण मंडित, ब्रह्मज्ञान में लीन रहाहीं।।२।।
तेई साधु लहैं केवल पद, आठ काठ दह शिवपुरी जाहीं।
'द्यानत' भवि तिनके गुण गावैं, पावैं शिवसुख दुःख नसाहीं।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रे जिय! काहे क्रोध करै.....

रे जिय! काहे क्रोध करै ।।टेक।।
देख के अविवेक प्रानी, क्यों न विवेक धरै ।।१।।
जिसे जैसी उदय आवै, सो क्रिया आचरै ।
सहज तू अपनो बिगारै,जाय दुर्गम परै ।।२।।
होय संगति गुन सबनि को, सरब जग उच्चरै ।
तुम भले कर भले सबको, बुरे लखि मति जरै ।।३।।
वैद्य परविष हर सकत नहीं, आप भाखि को मरै ।
बहु कषाय निगोद-वासा, 'द्यानत' क्षमा धरै ।।४।।

मन ! मेरे राग भाव निवार.....

मन ! मेरे राग भाव निवार।।टेक।।
राग चिक्कनतैं लागत है, कर्मधूलि अपार ।।१।।
राग आस्रव मूल है, वैराग्य संवर धार ।
जिन न जान्यो भेद यह, वह गयो नरभव हार ।।२।।
दान पूजा शील जप तप, भाव विविध प्रकार ।
राग बिन शिव सुख करत हैं, राग तैं संसार ।।३।।
वीतराग कहा कियो,यह बात प्रगट निहार ।
सोई करसुखहेत 'द्यानत' शुद्ध अनुभव सार ।।४।।

कहिवे को मन सूरमा.....

कहिवे को मन सूरमा, करवे को कांचा।।टेक।।
विषय छुड़ावै और पै, आपन अति माचा ।।१।।
मिश्री-मिश्री के कहैं, मुंह होय न मीठा ।
नीम कहैं मुख कटु हुआ, कहुं सुना न दीठा ।।२।।
कहनेवाले बाहुत हैं, करने को कोई ।
कथनी लोक रिझावनी, करनी हित होई ।।३।।
कोटि जनम कथनी कथै, करनी बिनु दुःखिया ।
कथनी बिनु करनी करै, 'द्यानत' सो सुखिया ।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो तैं आतम हित नहीं कीना.....

जो तैं आतम हित नहीं कीना।।टेक।।
रामा रामा धन धन काजै नर भव फल नहिं लीना।।१।।
जप तप करि कै लोक रिझाये प्रभुता के रस भीना।
अंतरगति परनमन (न) सोधे एकौ गरज सरीना।।२।।
बैठि सभा में बहु उपदेशो आप भए परवीना।
ममता डोरी तोरी नाहीं उत्तम तैं भए हीना।।३।।
'द्यानत' मन वच काय लगा कैं जिन अनुभौ चितदीना।
अनुभौ धारा ध्यान विचारा मंदर कलस नवीना।।४।।

अब हम आतम को पहचाना....

अब हम आतम को पहचाना।।टेक।।
जैसा सिद्धक्षेत्र में राजत, तैसा घट में जाना।।१।।
देहादिक परद्रव्य न मेरे, मेरा चेतन बाना।।२।।
'द्यानत' जो जानै सो स्याना, नहिं जानें सो दीवाना।।३।।'

आतम जानो रे भाई.....

आतम जानो रे भाई !।।टेक।।
जैसी उज्वल आरसी रे, तैसी आतम जोत।
काया-करमनसौं जुदी रे, सबको करै उदोत।।१।।
शयनदशा जागृतदशा रे, दोनों विकलप रूप।
निरविकलप शुद्धातम रे, चिदानन्द चिद्रूप।।२।।
तन वच सेती भिन्न कर रे, मनसों निज लव लाय।
आप-आप जब अनुभवै रे, तहां न मन-वच-काय।।३।।
छहौं दरब नव तत्त्व तैं रे, न्यारो आतम राम।
'द्यानत' जे अनुभव करैं रे, ते पावैं शिवधाम।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोहि कब ऐसा दिन आय है.....

मोहि कब ऐसा दिन आय है।
सकल विभाव अभाव होहिंगे, विकलपता मिट जाय है।।टेक।।
यह परमातम यह मम आतम, भेदबुद्धि न रहाय है।
औरनि की का बात चलावै, भेदविज्ञान पलाय है।।१।।
जानैं आप आप मैं आपो, सो व्यवहार बिलाय है।
नय परमान निखेपन माहीं, एक न औसर पाय है।।२।।
दरसन ज्ञान चरन के विकलप, कहो कहां ठहराय है।
'द्यानत' चेतन चेतन ह्वै है, पुद्गल पुद्गल थाय है।।३।।

रे मन ! काहे को सोचत अति भारी.....

रे मन ! काहे को सोचत अति भारी।
पूरब करमन की थिति बांधी, सो तो टरत न टारी।।टेक।।
सब दरवनि की तीन काल की, विधि न्यारी की न्यारी।
केवलज्ञान विषैं प्रतिभासी, सो सो ह्वै है सारी।।१।।
सोच किये बहु बंध बढ़त है, उपजत है दुःख ख्वारी।
चिन्ता चिता समान बखानी, बुद्धि करत है कारी।।२।।
रोग सोग उपजत चिन्ता तैं, कहौ कौन गुनवारी।
'द्यानत' अनुभव करि शिव पहुंचे, जिन चिन्ता सब जारी।।३।।

गलता नमता कब आवैगा.....

गलता नमता कब आवैगा।
राग-दोष परणति मिट जैहै, तब जियरा सुख पावैगा।।टेक।।
मैं' ही ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय मैं, तीनों भेद मिटावैगा।
करता-किरिया-करम भेद मिटि, एक दरब लों लावैगा।।१।।
निहचै अमल मलिन व्यौहारी, दोनों पक्ष नसावैगा।
भेद गुण गुणी को नहिं ह्वै है, गुरु सिख कौन कहावैगा।।२।।
'द्यानत' साधक साधि एक करि, दुविधा दूर बहावैगा।
वचनभेद कहवत सब मिटकै, ज्यों का त्यों ठहरावैगा।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सो ज्ञाता मेरे मन माना.....

सो ज्ञाता मेरे मन माना, जिन निज-निज पर-पर जाना।।टेक।।
छहों दरव तैं भिन्न जान कै, नव तत्वनि तैं आना।
ताकों देखैं ताकों जानैं, ताही के रस साना।।१।।
कर्म शुभाशुभ जो आवत हैं, सो तो पर पहिचाना।
तीन भवन को राज न चाहै, यद्यपि गांठ दरब बहु ना।।२।।
अखय अनन्ती सम्पति विलसै, भव तन भोग मगन ना।
'द्यानत' ता ऊपर बलिहारी, सोई 'जीवन-मुकत' भना।।३।।

जिनके हिरदै प्रभु नाम नहीं.....

जिनके हिरदै प्रभु नाम नहीं, तिन नर अवतार लिया न लिया।।टेक।।
दान बिना घर-वास बास, कै लोभ मलीन धिया न धिया।।१।।
मदिरापान कियो घट अन्तर, जलमल सोधि पिया न पिया।
आन प्रान के मांस भखे तैं, करुना भाव हिया न हिया।।२।।
रूपवान गुनखान वानि शुभ, शील विहीन तिया न तिया।
कीरतवन्त मृतक जीवत हैं, अपजसवन्त जिया न जिया।।३।।
धाम माँहि कछु दाम न आये, बहु व्योपार किया न किया।
'द्यानत' एक विवेक किये बिन, दान अनेक दिया न दिया।।४।।

जानत क्यों नहिं रे.....

जानत क्यों नहिं रे, हे नर ! आतम ज्ञानी।।टेक।।
राग-दोष पुद्गल की संगति, निहचै शुद्ध निशानी।।१।।
जाय नरक पशु नर खर गति में, ये परजाय विरानी।
सिद्धस्वरूप सदा अविनाशी, जानत बिरला प्रानी।।२।।
कियो न काहू हरै न कोई, गुरु-सिख कौन कहानी।
जनम-मरन मलरहित अमल है, कीच बिना ज्यों पानी।।३।।
सार पदारथ है तिहुँ जग में, नहिं क्रोधी नहिं मानी।
'द्यानत' सो घटमाहिं विराजै, लख हूजै शिवथानी।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आतमरूप अनुपम है.....

आतमरूप अनुपम है, घटमाहिं विराजै हो।
जाके सुमरन जाप सो, भव-भव के दु:ख भाजै हो।।टेक।।
केवल दरशान ज्ञान में, थिरतापद छाजै हो।
उपमा को तिहुँ लोक में, कोउ वस्तु न राजै हो।।१।।
सहै परीषह भार जो, जु महाव्रत साजे हो।
ज्ञान बिना शिव ना लहैं, बहुकर्म उपाजै हो।।२।।
तिहुँ लोक तिहुँ काल में, नाहिं और इलाजै हो।
'द्यानत' ताको जानिये, जिन स्वारथ काजै हो।।३।।

हो भविजन ज्ञान सरोवर सोई.....

हो भविजन ज्ञान सरोवर सोई।
भूमि छिमा करुना मरजादा, समरस जल जहं होई।।टेक।।
परहति लहर हरख जलचर बहु, नय पंकति परकारी।
सम्यक् कमल अष्ट दल गुण हैं, सुमन भंवर अधिकारी।।१।।
संजम शील आदि पल्लव हैं, कमला सुमति निवासी।
सुजस सुवास कमल परिचयतैं, परसत भ्रम तम नासी।।२।।
भवमल जात न्हवात भविजन को, होत परमसुख साता।
'द्यानत' यह सर और न जानैं, जानैं बिरला ज्ञाता।।३।।

जीव! तैं मूढ़पना कित पायो.....

जीव! तैं मूढ़पना कित पायो।
सब जग स्वारथ को चाहत हैं, स्वारथ तोहि न भायो।।टेक।।
अशुचि अचेत दुष्ट तन माहीं, कहा जान विरमायो।
परम अतीन्द्रिय निजसुख हरिकै, विषय रोग लपटायो।।१।।
चेतन नाम भयो जड़ काहे, अपनो नाम गमायो।
तीन लोक को राज छांड़िकै, भीख मांग न लजायो।।२।।
मूढ़पना मिथ्या जब छूटै, तब तू सन्त कहायो।
'द्यानत' सुख अनन्त शिव-विलसो, यों सद्गुरु बतलायो।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साधो छोडौ विषै विकारी.....

साधो छोडौ विषै विकारी, जातैं तोहि महादुख कारी।
जौ जैन धरम कौं ध्यावै सो आतमीक सुख पावै।।टेक।।
गज फरस विषै दुख पाया, रस मीन गंध अलि पाया।
लखि दीप सलभ हित कीना, मृग नाद सुनत जिय दीना।।१।।
ये एक एक दुखदाई, तू पंच रमत है भाई।
ऐ कौने सीख बताई, तुम्हरे मन कैसैं आई।।२।।
इन मांहि लोभ अधिकाई, यह लोभ कुगति कौ भाई।
सो कुगति मांहि दुख भारी, तू त्यागि विषै मतिधारी।।३।।
ए सेवत सुख से लागै, फिर अन्त प्राण कौ त्यागै।
तातैं एक विषफल कहिये, तिन कौं कैसें करि गहिये।।४।।
तब लौं विषय रस भावै, जब लौं अनुभौ नहिं आवै।
जिन अमृत पान नहिं कीना, तिन और रस भवि चित दीना।।५।।
अब चहत कहा लौं कहिये, कारज कहि चुप है रहिये।
यह लाख बात की एकै, मति गहौ विषै का टेकै।।६।।
जौ तजै विषै की आसा, 'द्यानत' पावै सिववासा।
यह सतगुरु सीख बताई, काहूँ विरलै के जिय आई।।७।।

हमारो कारज कैसै होइ .....

हमारो कारज कैसै होइ ।।टेक।।
कारण पंच मुकति के, तिन में के हैं दोय।।१।।
हीन संघनन लघु आऊषा, अलप मनीषा जोइ।
कच्चै भाव न सधै साली, सब जग देख्यौ होइ।।२।।
इन्द्री पंचसु विषयनि दोरै, मानै कहचा न कोइ।
साधारन चिरकाल वस्यौ मैं, धरम बिना फिर सोइ।।३।।
चिंता बडी न कछु बन आवै, अब सब चिंता खोई।
'द्यानत' एक शुद्ध निज पद लखि, आप में आप समोई।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्यान बिना दुख पाया रे भाई.....

ग्यान बिना दुख पाया रे, भाई।।टेक।।
भौ दस आठउ श्वास सास मैं, साधारन लपटाया रे।।१।।
काल अनन्त यहां तोहि बीते, जब भई मंद कषाया रे।
तब तू निकसि निगोद सिंधु तैं, थावर होय न सारा रे।।२।।
क्रम क्रम निकसि भयौ विकलत्रय, सो दुख जात न गाया रे।
भूख प्यास परवस सही पशुगति, बार अनेक बिकाया रे।।३।।
नरक मांहि छेदन भेदन बहु, पुतरी अगनि जलाया रे।
सीत तपत दुरगंध रोग दुख, जानै श्री जिनराया रे।।४।।
भ्रमत भ्रमत संसार महावन, कबहुँ देव कहाया रे।
लखि पर विभव सहचौ दुख भारी, मरन समै बिललाया रे।।५।।
पाप नरक पशु पुन्य सुरग वसि, काल अनन्त गमाया रे।
पांप पुन्य जब भए बराबर, तब कहुँ नर भौ जाया रे।।६।।
नीच भयौ फिरि गरभ पड्यौ, फिरि जनमत काल सताया रे।
तरुन पनौ तू धरम न चेतौ, तन धन सुत लौ लाया रे।।७।।
दरव लिंग धरि धरि मरि मरि तू, फिर फिर जग भज आया रे।
'द्यानत' सरधा जु गहि मुनिव्रत, अमर होय तजि काया रे।।८।।

हमारो कारज ऐसे होइ.....

हमारो कारज ऐसे होइ।।टेक।।
आतम आतम पर पर जानै, तीनौ संसै खोइ।।१।।
अंत समाधि मरन करि तन तजि, हौंहि सक्र सुर लोइ।
विविध भोग उपभोग भोगवै, धरम तना फल सोइ।।२।।
पूरी आऊ विदेह भूप ह्वै, राज संपदा भोइ।
कारण पंच लहै गहै दुद्धर, पंच महाव्रत जोइ।।३।।
तीन जोग थिर सहै परीसह, आठ करम मल धोइ।
'द्यानत' सुख अनन्त सिव विलसै, जनमै मरै न कोइ।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन नाम सुमर मन! बावरे.....

जिन नाम सुमर मन! बावरे, कहा इत-उत भटकै ।।टेक।।
विषय प्रगट विष बेल हैं, इनमें जिन अटकै ।।१।।
दुर्लभ नरभव पाय के, नग सों मत पटकै ।
फिर पीछैं पछतायगो, औसर जब सटकै ।।२।।
एक घरी है सफल जो, प्रभु गुन रस गटकै ।
कोटि वरष जीयो वृथा, जो थोथा फटकै ।।३।।
'द्यानत' उत्तम भजन है, लीजै मन रटकै ।
भव-भव के पातक सबै, जै हैं तो कटकै ।।४।।

चेतन खेलै होरी.....

चेतन खेलै होरी।।टेक।।
सत्ता भूमि छिमा वसन्त में, समता प्रान प्रिया संग गोरी।।१।।
मन को कलश प्रेम को पानी, तामें करुना केसर घोरी।
ज्ञान-ध्यान पिचकारी भरि-भरि, आपमें छारै होरा होरी।।२।।
गुरु के वचन मृदंग बजत हैं, नय दोनों डफ ताल टकोरी।
संजम अतर विमल व्रत चोवा, भाव गुलाल भरै भर झोरी।।३।।
धरम मिठाई तप बहु मेवा, समरस आनन्द अमल कटोरी।
'द्यानत' सुमति कहै सखियन सों, चिरजीवो यह जुग-जुग जोरी।।४।।

कारज एक ब्रह्म ही सेती.....

कारज एक ब्रह्म ही सेती।।टेक।।
अंग संग नहिं बाहिरभूत सब, धन दारा सामग्री तेती।।१।।
सोल सुरग नव ग्रैवेयक में दुःख, सुखित सात में ततका वेति
जा शिवकारन मुनिगन ध्यावैं, सो तेरे घट आनन्द खेती।।२।।
दान शील जप तप व्रत पूजा, अफल ज्ञान बिन किरिया केती।
पञ्च दरब तोतैं नित न्यारे, न्यारी राग-दोष विधि जेती।।३।।
तू अविनाशी जयपरकासी, 'द्यानत' भासी सुकलावेती।
तजौ लाल! मन के विकल्प सब, अनुभव मगन सुविद्या एती।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कलि में ग्रन्थ बड़े उपगारी.....

कलि में ग्रन्थ बड़े उपगारी ।
देव-शास्त्र-गुरु सम्यक् सरधा, तीनों जिन तैं धारी ।।टेक।।
तीन बरस वसु मास पंद्र दिन, चौथा काल रहा था ।
परम पूज्य महावीर स्वामी तब, शिवपुर राज लहा था ।।१।।
केवलि तीन, पाँच श्रुतकेवलि, पीछैं गुरुनि विचारी ।
अंग पूर्व अब न हैं, न रहेंगे, बात लिखी थिरकारी ।।२।।
भविहित कारन धर्म विचारन, आचारजों बनाये ।
बहुतानि तिनकी टीका कीनी, अद्भुत अरथ समाये ।।३।।
केवलि-श्रुतकेवलि यहँ नाहीं, मुनिगन प्रगट न सूझे ।
दोऊ केवलि आज यही हैं, इनही को मुनि बूझे ।।४।।
बुद्धि प्रगट करि आप बाँचिये, पूजा वंदन कीजे ।
दरब खरचि लिखवाय सुधाय, सुपंडित जन को दीजे ।।५।।
पढ़ते सुनतें चरचा करतें, हैं संदेह जु कोई ।
आगम माफिक ठीक करै है, देख्यो क़ेवलि सोई ।।६।।
तुच्छ बुद्धि कछु अरथ जानिकैं, मनसों विंग उठाये ।
अवैधिज्ञानी श्रुतज्ञानी मानो, सीमंधर मिलि आये ।।७।।
ये तो आचारज हैं साँचे, ये आचारज झूठे ।
तिनिके ग्रन्थ पढ़ें नित बंदै, सरधा ग्रन्थ अपूठे ।।८।।
साँच झूठ तुम क्यों कर जानो, झूठ जान क्यों पूजो ।
खोट निकाल शुद्ध कर राखो, अवर बनाओ दूजो ।।९।।
कौन सहामी बात चलावै, पूछैं आनमती तो ।
ग्रन्थ लिख्यो तुम क्यों नहिं मानो, जवाब कहा कहि जीतो ।।१०।।
जैनी जैनग्रन्थ के निंदक, हुंडासर्पिनी जोरा ।
'द्यानत' आप जानि चुप रहिये, जग में जीवन थोरा ।।११।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संक्षिप्त परिचय

कविवर भूधरदास

(विक्रम संवत १७५७ - १८०६)

हिन्दी और संस्कृत दोनों पर ही समान रूप से अधिकार रखनेवाले काव्य जगत के एक महान नक्षत्र कविवर भूधरदास का जन्म खण्डेलवाल जैन जाति में आगरा में हुआ था।

अध्यात्म जगत में अपनी एक विशिष्ट छाप रखने वाले कविवर की अब तक तीन रचनायें उपलब्ध हो चुकी हैं :—

जैन शतक, पार्श्व पुराण एवं पदसंग्रह। पार्श्वपुराण को हिन्दी के महाकाव्यों की कोटि में रखा जा सकता है। इसमें २३ वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के महान् जीवन-चरित्र का सुन्दरतम वर्णन दृष्टव्य है। यह पुराण काव्य और प्रसाद गुण से युक्त है।

कविवर के रचित ६८ पद प्राप्त हो चुके हैं, प्रायः सभी पदों में कवि ने अध्यात्म की ऊँची उडान भरी है। अनुभव परक, वैराग्य प्रेरक और विविध आध्यात्मिक भावों से आपूर्ण आपके पदों का अनेक बार पाठन करने पर भी पुनः पाठन की इच्छा उद्भूत हुए बिना नहीं रहती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अब मेरे समकित सावन आयो .....

अब मेरे समकित सावन आयो ।
बीति कुरीति मिथ्यामति ग्रीषम, पावस सहज सुहायो ।।टेक।।
अनुभव दामिनि दमकन लागी सुरति घटा घन छायो ।
बोलै विमल विवेक पपीहा, सुमति सहुगिनि भायो ।।१।।
गुरु धुनि गरज सुनत सुख उपजै, मोर सुमन विहसायो ।
साधक भाव अंकुर उठे बहु, जित तित हरष सवायो ।।२।।
भूल धूल कहिं भूल न सूझत, समरस जल भर लायो ।
'भूधर' को निकसै अब बाहिर, निज निरचू घर पायो ।।३।।

भगवन्त भजन क्यों भूला रे .....

भगवन्त भजन क्यों भूला रे ।
यह संसार रैन का सुपना, तन धन वारि बबूला रे ।।टेक।।
इस जोवन का कौन भरोसा, पावक में तृण पूला रे ।
काल कुदार लिंये सिर ठाड़ा, क्या समझै मन फूला रे ।।१।।
स्वारथ साधै पांव पांव तू, परमारथ को लूला रे ।
कहु कैसे सुख पावे प्राणी, काम करै दुःख मूला रे ।।२।।
मोह पिशाच छल्यो मति मारै, निज कर कन्ध वसूला रे ।
भज श्री राजमतीवर 'भूधर', दो दुरमति सिर धूला रे ।।३।।

जगत जन जूवा हारि चले .....

जगत जन जूवा हारि चले ।
काम कुटिल संग बाजी मांड़ी, उन करि कपट छले ।।टेक।।
चार कषायमयी जहं चौपरि, पांसे जोग रले ।
इत सरवस उत कामिनी कौड़ी, इह विधि झटक चले ।।१।।
कूर खिलार विचार न कीन्हों, ह्वै है ख्वार भले ।
बिना विवेक मनोरथ काके, 'भूधर' सफल फले ।।२।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भाई ! अन्तर उज्ज्वल करना रे

भाई ! अन्तर उज्ज्वल करना रे।।टेक।।
कपट कृपान तजै नहिं तबलौं, करनी काज न सरना रे ।।१।।
जप तप तीरथ यज्ञ व्रतादिकं, आगम अर्थ उचरना रे ।
विषय-कषाय कीच नहिं धोयो, यों ही पचि-पचि मरना रे ।।२।।
बाहिर भेष क्रिया उर शुचि सों, किये पार उतरना रे ।
नाहीं है सब लोक रंजना, ऐसे वेदन वरना रे ।।३।।
कामादिक मन सौं मन मैला, भजन किये क्या तिरना रे ।
'भूधर' नीलवसन पर कैसैं, केसर रंग उछरना रे ।।४।।

मन हंस ! हमारी लै शिक्षा हितकारी

मन हंस! हमारी लै शिक्षा हितकारी।।टेक।।
श्री भगवान चरन पिंजरे वसि, तजि विषयनि की यारी ।।१।।
कुमति कागली सौं मति राचो, ना वह जात तिहारी ।
कीजै प्रीत सुमति हंसी सौं, बुध हंसन की प्यारी ।।२।।
काहे को सोवत भव झीलर, दु:खजल पूरित खारी ।
निजबल पंख पसारि उड़ो किन, हो शिव सरवर चारी ।।३।।
गुरु के वचन विमल मोती चुन, क्यों निजवान विसारी ।
ह्वै है सुखी सीख सुधि राखें, 'भूधर' भूलैं ख्वारी ।।४।।

देखो भाई ! आतम देव विराजै

देखो भाई ! आतम देव विराजै।।टेक।।
इस ही हूठ हाथ देवल में, केवल रूपी राजै ।।१।।
अमल उदास जोतिमय जाकी, मुद्रा मंजुल छाजै ।
मुनि जन पूजन अचल अविनाशी, गुण बरनत बुधि लाजै ।।२।।
पर संजोग अमल प्रतिभासत, निज गुण मूल न त्याजै ।
जैसे फटिक पाखान हेत सों, स्याम अरु दुति साजै ।।३।।
सोऽहं पद ममता सों ध्यावत, घटा ही में प्रभु पाजैं ।
'भूधर' निकट निवास जासु को, गुरु बिन भरम न भाजै ।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अज्ञानी पाप धतूरा न बोय .....

अज्ञानी पाप धतूरा न बोय।।टेक।।
फल चाखन की बार भरै दृग, मर है मूरख रोय ।।१।।
किंचित् विषयनि के सुख कारण, दुर्लभ देह न खोय ।
ऐसा अवसर फिर न मिलैगा, मोह नींद मत सोय ।।२।।
इस विरियां मैं धर्म-कल्प-तरु, सींचत स्याने लोय ।
तू विष बोवन लागत तो सम, और अभागा कोय ।।३।।
जे जग में दुःखदायक बेरस, इस ही के फल सोय ।
यों मन 'भूधर' जानिकै भाई, फिर क्यों भोंदू होय ।।४।।

सुन ज्ञानी प्राणी, श्रीगुरु सीख .....

सुन ज्ञानी प्राणी, श्रीगुरु सीख सयानी।।टेक।।
नरभव पाय विषय मति सेवो, ये दुरगति अगवानी ।।१।।
यह भव कुल यह तेरी महिमा, फिर समझी जिनवाणी ।
इस अवसर में यह चपलाई, कौन समझ उर आनी ।।२।।
चन्दन काठ कनक के भाजन, भरि गंगा का पानी ।
तिल खलि रांधत मंदमती जो, तुझ क्या रीस बिरानी ।।३।।
'भूधर' जो कथनी सो करनी, यह बुधि है सुखदानी ।
ज्यों मशालची आप न देखै, सो मति करै कहानी ।।४।।

सो मत सांचो है मन मेरे .....

सो मत सांचो है मन मेरे।।टेक।।
जो अनादि सर्वज्ञप्ररूपित, रागादिक बिन जे रे ।।१।।
पुरुष प्रमान-प्रमान वचन तिस, कलपित जान अने रे ।
राग दोष दूषित तिन वायक, सांचे हैं हित तेरे ।।२।।
देव अदोष धर्म हिंसा बिन, लोभ बिना गुरु वे रे ।
आदि अन्त अविरोधी आगम, चार रतन जहं ये रे ।।३।।
जगर भरचो पाखण्ड परख बिन, खाइ खता बहुतेरे ।
'भूधर' करि निज सुबुधि कसौटी, धर्म कनक कसि ले रे ।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अहो दोऊ रंग भरे खेलत होरी.....

अहो दोऊ रंग भरे खेलत होरी, अलख अमूरति की जोरी।।टेक।।
इतमैं आतम. राम रंगीले, उतमैं सुबुद्धि किसोरी।
या कै ज्ञान सखा संग सुन्दर, बाकै संग समता गोरी।।१।।
सुचि मन सलिल दया रस केसरि, उदै कलस में घोरी।
सुधी समझि सरल पिचकारि, सखिय प्यारी भरि भरि छोरी।।२।।
सत-गुरु सीख तान धर पद की, गावत होरा होरी।
पूरव बंध अबीर उड़ावत, दान गुलाल भर झोरी।।३।।
'भूधर' आजि बड़े भागिन, सुमति सुहागिन मोरी।
सो ही नारि सुलछिनी जग में, जासौ पति नै रति जोरी।।४।।

पानी में मीन पियासी.....

पानी में मीन पियासी, मोहे रह रह आवे हाँसी रे।।टेक।।
ज्ञान बिना भव बन में भटक्यो, कित जमुना कित काशी रे ।।१।।
जैसे हिरण नाभि किस्तूरी, वन वन फिरत उदासी रे ।।२।।
'भूधर' भरम जाल को त्यागो, मिट जाये जम की फांसी रे ।।३।।

होरी खेलूंगी घर आए चिदानंद.....

होरी खेलूंगी घर आए चिदानंद।।टेक।।
शिशर मिथ्यात गई अब, आइ काल की लब्धि वसंत ।।१।।
पीय संग खेलनि कौं, हम सइये तरसी काल अनन्त
भाग जग्यो अब फाग रचानौ, आयौ विरह को अंत ।।२।।
सरधा गागरि में रुचि रूपी, केसर घोरि तुरन्त
आनन्द नीर उमंग पिचकारी, छोडूंगी नीकी भंत ।।३।।
आज वियोग कुमति सौतनि कौ, मेरे हरष अनंत
'भूधर' .धनि एही दिन दुर्लभ, सुमति राखी विहसंत ।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसो श्रावक कुल तुम पाय .....

ऐसो श्रावक कुल तुम पाय, वृथा क्यों खोवत हो।।टेक।।
कठिन-कठिन कर नरभव भाई, तुम लेखी आसान।
धर्म विसारि विषय में राचौ, मानी न गुरु की आन।।१।।
चक्री एक मतंग जु पायो, तापर ईंधन ढोयो।
बिना विवेक बिना मति ही को, पाय सुधा पग धोयो।।२।।
काहू शठ चिन्तामणि पायो, मरम न जानो ताय।
बायस देखि उदधि में फैंक्यो, फिर पीछे पछताय।।३।।
सात व्यसन आठों मद त्यागो, करुना चित्त विचारो।
तीन रतन हिरदे में धारो, आवागमन निवारो।।४।।
'भूधरदास' कहत भविजन सों, चेतन अब तो सम्हारो।
प्रभु को नाम तरन-तारन जपि, कर्म फन्द निरवारो।।५।।

वे मुनिवर कब मिलि हैं उपकारी .....

वे मुनिवर कब मिलि हैं उपकारी।।टेक।।
साधु दिगम्बर नगन निरम्बर, संवर भूषण धारी।।१।।
कंचन कांच बराबर जिनकै, ज्यौं रिपु त्यौं हितकारी।
महल मसान मरन अरु जीवन, सम गरिमा अरु गारी।।२।।
सम्यग्ज्ञान प्रधान पवन बल, तप पावक परजारी।
सेवत जीव सुवर्ण सदा जे, काय-कारिमा टारी।।३।।
जोरि जुगल कर 'भूधर' विनवै, तिन पद धोक हमारी।
भाग उदय दरसन जब पाऊँ, ता दिन की बलिहारी।।४।।

हे नर! निपट गवार .....

हे नर ! निपट गंवार, गरव नहिं कीजै रे।।टेक।।
झूठी काया झूठी माया, छाया ज्यों लखि लीजे रे।
कै छिन सांझ सुहागुरु जोबन, कै दिन जग में जीजै रे।।१।।
बेगा चेत विलम्ब तजो नर, बंध बढ़ै थिति छीजै रे।
'भूधर' पलपल हो है भारो, ज्यों-ज्यों कमरी भीजैं रे।।२।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गरब नहिं कीजे रे.....

गरब नहिं कीजे रे, ऐ नर निपट गँवार।।टेक।।
झूठी काया झूठी माया, छाया ज्यों लखि लीजे रे।
कै छिन साँझ सुहागरु जोवन, कै दिन जग में जीजेरे।।१।।
बेगां चेत विलम्ब तजो नर, बंध बढ़ै तिथि छीजे रे।
'भूधर' पल पल हो है भारी, ज्यों ज्यों कमरी भींजे रे।।२।।

सुनि ठगनी माया, तैं सब जग ठग खाया.....

सुनि ठगनी माया, तैं सब जग ठग खाया।
टुक विश्वास किया जिन तेरा, सो मूरख पिछताया।।टेक।।
आपा तनक दिखाय बीज ज्यों, मूढमती ललचाया।
करि मद अंध धर्म हर लीनौं, अन्त नरक पहुँचाया।।१।।
केते कंथ किये तैं कुलटा, तो भी मन न अघाया।
किस ही सौं नहिं प्रीति निबाही, वह तजि और लुभाया।।२।।
'भूधर' छलत फिरै यह सबकों, भोंदू करि जग पाया।
जो इस ठगनी कों ठग बैठे, मैं तिसको सिर नाया।।३।।

देख्या बीच जहान में.....

देख्या बीच जहान में।
कोई अजब तमासा जोर, तमासा सुपने का सा।।टेक।।
एकौं के घर मंगल गावैं, पूरी मन की आसा।
एक वियोग भरे बहु रोवैं, भरि-भरि नैन निरासा।।१।।
तेज तुरङ्गनि पै चढ़ि चलते, पहिरैं मलमल खासा।
रङ्क भये नागे अति डोलैं, ना कोइ देय दिलासा।।२।।
तरकैं राज तखत पर बैठा, था खुशवक्त खुलासा।
ठीक दुपहरी मुद्दत आई, जंगल कीना वासा।।३।।
तन धन अथिर निहायत जग में, पानी माहिं पतासा।
'भूधर' इनका गरब करैं जे, धिक तिनका जनमासा।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Nana, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रखता नहीं तन की खबर.....

रखता नहीं तन की खबर, अनहद बाजा बाजिया।
घट बीच मण्डल बाजता, बाहिर सुना तो क्या हुआ।।टेक।।
जोगी तो जंगम सेवड़ा, बहु लाल कपड़े पहिरता।
उस रंग से महरम नहीं, कपड़े रंगे तो क्या हुआ।।१।।
काजी किताबैं खोलता, नसीहत बतावै और को।
अपना अमल कीन्हा नहीं, कामिल हुआ तो क्या हुआ।।२।।
पोथी के पाना बांचता, घर-घर कथा कहता फिरै।
निज ब्रम्ह को चीन्हा नहीं, ब्राम्हण हुआ तो क्या हुआ।।३।।
गांजा अफीम भांग है, दारू शराब पोशता।
प्याला न पिया प्रेम का, अमली हुआ तो क्या हुआ।।४।।
शतरंज चोपर गंजफा, बहु खेल खेलैं हैं सभी।
वाजी न खेली प्रेम की, जुआरी हुआ तो क्या हुआ।।५।।
'भूधर' बनाई विनती, श्रोता सुनो सब कान दे।
गुरु का वचन माना नहीं, श्रोता हुआ तो क्या हुआ।।६।।

जग में श्रद्धानी जीव 'जीवन मुकत' हैंगे.....

जग में श्रद्धानी जीव 'जीवन मुकत' हैंगे।।टेक।।
देव गुरु सांचे मानैं, सांचो धर्म हिये आनैं।
ग्रन्थ ते ही सांचे जानैं, जे जिन उकत हैंगे।।१।।
जीवन की दया पालैं झूठ तजि चोरी टालैं।
पर-नारी भालैं नैन, जिनके लुकत हैंगे।।२।।
जीय मैं सन्तोष धारैं, हियैं समता विचारैं।
आगे को न बन्ध पारैं, पाछेसों चुकत हैंगे।।३।।
बाहिज क्रिया आराधैं, अन्दर सरूप साधैं।
'भूधर' ते मुक्त लाधैं, कहूँ न रुकत हैंगे।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ते गुरु मेरे मन बसो.....

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जिहाज।
आप तिरहिं पर तारहीं, ऐसे श्री ऋषिराज।।टेक।।
मोह महारिपु जानि कैं, छांड़्यो सब घरबार।
होय दिगम्बर बन बसे, आतम शुद्ध विचार।।१।।
रोग उरग-विल वपु गिण्यो, भोग भुजंग समान।
कदलीतरु संसार है, त्याग्यो सब यह जान।।२।।
रत्नत्रय निधि उर धरैं, अरु निरग्रंथ त्रिकाल।
मार्‌यो कामखवीस को, स्वामी परमदयाल।।३।।
पंच महाव्रत आदरैं, पांचों समिति समेत।
तीन गुपति पालैं सदा, अजर अमर पदहेत।।४।।
धर्म धरैं दशलाछनी, भावैं भावना सार।
सहैं परीषह बीस द्वै, चारित-रतन-भँडार।।५।।
जेठ तपै रवि आकरो, सूखै सरवर नीर।
शैल-शिखर मुनि तप तपैं, दाझैं नगन शरीर।।६।।
पावस रैन डरावनी, बरसैं जलधर धार।
तरुतल निवसैं तब यती, बाजै झंझा व्यार।।७।।
शीत पड़ै कपि-मद गलै, दाहै सब वनराय।
ताल तरंगनिके तटैं, ठाड़े ध्यान लगाय।।८।।
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों काल मँझार।
लागे सहज सरूप में, तन सौं ममत निवार।।९।।
पूरव भोग न चितवैं, आगम वांछै नाहिं।
चहुंगति के दुख सौं डरैं, सुरति लगी शिवमाहिं।।१०।।
रंग महल में पौढ ते, कोमल सेज बिछाय।
ते पच्छिम निशि भूमि में, सोवें संवरिकाय।।११।।
गज चढ़ि चलते गरव सौं, सेना सजि चतुरंग।
निरखि निरखि पग वे धरैं, पालैं करुणा अंग।।१२।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वे गुरु चरण जहां धरैं, जग मैं तीरथ जेह।
सो रज मम मस्तक चढो, 'भूधर' मांगै एह।।१३।।

आया रे बुढ़ापो मानी .....

आया रे बुढ़ापो मानी, सुधि बुधि बिसरानी।।टेक।।
श्रवन की शक्ति घटी, चाल चालै अटपटी।
देह लटी भूख घटी, लोचन झरत पानी।।१।।
दाँतन की पंक्ति टूटी, हाड़न की संधि छूटी।
काया की नगरि लूटी, जात नहिं पहिचानी।।२।।
बालों ने वरन फेरा, रोग ने शरीर घेरा।
पुत्र हू न आवे नेरा, औरों की कहां कहानी।।३।।
'भूधर' समुझि अब, स्वहित करैगो कब।
यह गति ह्वै है जब, तब पछितैहै प्राणी।।४।।

ऐसीं समझ के सिर धूल .....

ऐसी समझ के सिर धूल।।टेक।।
धरम उपजन हेत हिंसा, आचरैं अघमूल।।१।।
छके मत-मद पान पीके, रहे मन में फूल।
आम चाखन चहैं भोंदू, बोय पेड़ बबूल।।२।।
देव रागी लालची गुंरु, सेय सुखहित भूल।
धर्म नग की परख नाहीं, भ्रम हिंडोले झूल।।३।।
लाभ कारन रतन विराजै, परख को नहिं सूल।
करत इहि विधि वणिज 'भूधर', विनस जै है मूल।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संक्षिप्त परिचय

कविवर बुधजन

(विक्रम संवत १८३० - १८९५)

काव्य में अध्यात्म को विशुद्ध रूप से व्यक्त करनेवाले कविवर बुधजन का पूर्व नाम विरधीचंद था। आपका जन्म जयपुर में खण्डेलवाल जाति तथा बज गोत्र में हुआ था।

आपका साहित्यिक जीवन संवत् १८५४ से प्रारंभ हुआ, जबकि आपने "छहढ़ाला" की रचना की – यह आपकी विशिष्ट कृति है।

इसी से प्रेरणा पाकर कविवर दौलतरामजी ने नवीन छहढाला की रचना की थी। पंडित दौलतरामजी ने अपनी छहढ़ाला के अन्त में आपको बड़े सम्मान के साथ याद किया है:–

इक नव वसु इक वर्ष की, तीज शुक्ल बैसाख।
करचो तत्त्व-उपदेश यह, लखि 'बुधजन' की भाख।।

अब तक आपकी १७ रचनायें उपलब्ध हो चुकी हैं। तत्वार्थ बोध, बुधजन सतसई, संबोध पंचासिका, पंचास्तिकाय भाषा, बुधजन विलास एवं योगसार भाषा आदि आपकी प्रमुख रचनायें है। 'बुधजन सतसई' एक उत्कृष्ट रचना है, जिसमें अध्यात्म के साथ अन्य अनेक विषयों पर भावपूर्ण वर्णन मिलता है। 'बुधजन विलास' में इनकी स्फुट रचनाओं एवं पदों का संग्रह मिलता है – यह एक मुक्तक संग्रह है, जिसे पढ़कर प्रत्येक पात्र पाठक आत्मदर्शन का प्रयास करता है।

कविवर के अब तक २६५ पद प्राप्त हो चुके हैं। पदों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि वे अध्यात्म के ज्ञाता तो थे ही, साथ ही आपकी काव्यप्रतिभा भी उच्चकोटि की थी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भजन बिन यौं ही जनम गमायो.....

भजन बिन यौं ही जनम गमायो।।टेक।।
पानी पैल्यां पाल न बांधी, फिर पीछैं पछतायो।।१।।
रामा-मोह भये दिन खोवत, आशा-पाश बंधायो।
जप तप संजम दान न दीनौं, मानुष जनम हरायो।।२।।
देह सीस जब कांपन लागी, दसन चलाचल थायो।
लागी आगि भुजावन कारन, चाहत कूप खुदायो।।३।।
काल अनादि गुमायो भ्रमतां, कबहुँ न थिर चित ल्यायो।
हरी विषयसुख भरम भुलानो, मृग तिसना-वश धायो।।४।।

वानी सुनि मन कैं हरष अपार.....

वानी सुनि मन कैं हरष अपार, चित कैं हरष अपार।।टेक।।
ज्यौं तिरषातुर अमृत पीवत, चातक अंबुद धार।।१।।
मिथ्या तिमिर गयो ततखिन हो, संशय भरम निवार।
तत्त्वारथ अपने उर दरस्यौ, जानि लियो निज सार।।२।।
इन्द नरिंद फनिंद पदीधर, दीसत रंक लगार।
ऐसा आनंद 'बुधजन' के उर, उपज्यौ अपरंपार।।३।।

तन देख्या अथिर घिनावना.....

तन देख्या अथिर घिनावना।।टेक।।
बाहर चाम चमक दिखलावै, माहीं मैल अपावना।
बालक जवान बुढ़ापा मरना, रोग शोक उपजावना।।१।।
अलख अमूरति नित्य निरंजन, एकरूप निज जानना।
वरन फरस रस गंध न जाकै, पुन्य-पाप बिन मानना।।२।।
करि विवेक उर धारि परीक्षा, भेद-विज्ञान विचारना।
'बुधजन' तन तैं ममत मेटना, चिदानंद पद धारना।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हमकौं कछू भय ना रे.....

हमकौ कछू भय ना रे, जान लियौ संसार ।।टेक।।
जो निगोद में सो ही मुझमें, सो ही मोख मँझार।
निश्चय भेद कछू भी नाहीं, भेद गिनै संसार।।१।।
परवश ह्वै आपा विसारिकै, राग-दोष कौं धार।
जीवत-मरत अनादि काल तैं, यौं ही है उरझार।।२।।
जाकरि जैसैं जाहि समय में, जो होतब जा द्वार।
सो बनि है टरि है कछु नाहीं, करि लीनौं निरधार।।३।।
अगनि जरावै पानी बोवै, बिछुरत मिलत अपार।
सो पुद्गलरूपी मैं 'बुधजन' सबकौ जाननहार।।४।।

ज्ञानी! थारी रीति रौ अचंभौ मोनैं आवै.....

ज्ञानी! थारी रीति रौ अचंभौ मोनैं आवै।।टेक।।
भूलि सकति निज-परवश ह्वै क्यौं, जनम-जनम दुख पावै।।१।।
क्रोध लोभ मद माया करि करि, आपौ आप फँसावै।
फल भोगन की बेर होय तब, भोगत क्यौं पिछतावै।।२।।
पाप काज करि धन कौं चाहे, धर्म विषै में बतावै।
'बुधजन' नीति अनीति बनाई, साँचौ सौ बतरावै।।३।।

सारद ! तुम परसाद तैं,.....

सारद ! तुम परसाद तैं, आनन्द उर आया।
ज्यौं तिरसातुर जीव कौं, अमृत जल पाया।।टेक।।
नय परमान निखेप तैं, तत्वार्थ बताया।
भाजी भूलि मिथ्यात की, निज निधि दरसाया।।१।।
विधिना मोहि अनादि तैं, चहुंगति भरमाया।
ता हरिवै की विधि सबै, मुझ माहिं बताया।।२।।
गुन अनन्त मति अलप तैं, मोपै जात न गाया।
प्रचुर कृपा लखि रावरी, 'बुधजन' हरषाया।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निजपुर में आज मची रे होरी.....

निजपुर में आज मची रे होरी।।टेक।।
उमँगि चिदानन्दजी इत आये, इत आई सुमती गोरी।।१।।
लोकलाज कुलकानि गमाई, ज्ञान गुलाल भरी झोरी।
समकित केसर रंग बनायो, चारित की पिचुकी छोरी।।२।।
गावत अजपा गान मनोहर, अनहद झरसौं वरस्यो री।
देखन आये 'बुधजन' भीगे, निरख्यौ ख्याल अनोखो री।।३।।

बाबा ! मैं न काहू का,.....

बाबा ! मैं न काहू का, कोई नहीं मेरा रे।।टेक।।
सुर नर नारक तिरयक गति में, मोकों करमन घेरा रे।।१।।
मात पिता सुत तिय कुल परिजन, मोह गहल उरझेरा रे।
तन धन वसन भवन जड़ न्यारे, हूँ चिन्मूरति न्यारा रे।।२।।
मुझ विभाव जड़कर्म रचत हैं, करमन हमको फेरा रे।
विभाव चक्र तजि धारि सुभावा, अब आनन्दघन हेरा रे।।३।।
खरच खेद नहिं अनुभव करते, निरखि चिदानन्द तेरा रे।
जप तप व्रत श्रुत सार यही है, 'बुधजन' कर न अबेरा रे।।४।।

चेतन ! खेल सुमति संग होरी.....

चेतन ! खेल सुमति संग होरी।।टेक।।
तोरि आन की प्रीति सयाने, भली बनी या जौरी।।१।।
डगर डगर डोले है यौं ही, आव आपनी पौरी।
निज रस फगुवा क्यौं नहिं बांटो, नातर ख्वारी तोरी।।२।।
छार कषाय त्यागी या गहि लै, समकित केशर घोरी।
मिथ्या पाथर डारि धारि लै, निज गुलाल की झोरी।।३।।
खोटे भेष धरैं डोलत है, दुख पावै बुधि भोरी।
'बुधजन' अपना भेष सुधारो, ज्यौं विलसो शिवगोरी।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तम नरभव पायकै, मति भूलै.....

उत्तम नरभव पायकै, मति भूलै रे रामा।।टेक।।
कीट पशु का तन जब पाया, तब तू रहचा निकामा।
अब नरदेही पाय सयाने, क्यौं न भजै प्रभु नामा।।१।।
सुरपति याकी चाह करत उर, कब पाऊं नरजामा।
ऐसा रतन पायकैं भाई, क्यौं खोवत बिनकामा।।२।।
धन जोबन तन सुन्दर पाया, मगन भया लखि भामा।
काल अचानक झटक खायगा, परे रहैंगे ठामा।।३।।
अपने स्वामी के पदपंकज, करो हिये विसरामा।
मैंटि कपट भ्रम अपना 'बुधजन', ज्यौं पावो शिवधामा।।४।।

ऐसा ध्यान लगावो.....

ऐसा ध्यान लगावो भव्य जासौं, सुरग-मुक्ति फल पावोजी।।टेक।।
जामैं बंध परै नाहिं आगैं, पिछले बंध हटावोजी।।१।।
इष्ट-अनिष्ट कल्पना छोड़ो, सुख-दुख एक हि भावोजी।
परवस्तुनि सों ममत निवारो, निज आतम लौ ल्यावोजी।।२।।
मलिन देह की संगति छूटै, जामन-मरन मिटावोजी।
शुद्ध चिदानंद 'बुधजन' ह्वै कै, शिवपुर वास बसावोजी।।३।।

मेरा सांई तौ मोमैं नाहीं न्यारा,.....

मेरा सांई तौ मोमैं नाहीं न्यारा, जानैं सो जाननहारा।
पहले खेद सहचौ बिन जानैं, अब सुख अपरंपारा।।टेक।।
अनंत-चतुष्टय धारक ज्ञायक, गुन परजै द्रब सारा।
जैसा राजत गंधकुटी में, तैसा मुझमें म्हारा।।१।।
हित अनहित मम पर विकलप तैं, करम बंध भये भारा।
ताहि उदय गति गति सुख-दुख में, भाव किये दुखकारा।।२।।
काल लब्धि जिन आगम सेती, संशय भरम विदारा।
'बुधजन' जान करावन करता, हौंहि एक हमारा।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्यग्ज्ञान बिना तेरो जनम अकारथ.....

सम्यग्ज्ञान बिना तेरो जनम अकारथ जाय।।टेक।।
अपने सुख में मगन रहत नहिं, पर की लेत बलाय।
सीख सुगुरु की एक न मानै, भवभव मैं दुख पाय।।१।।
ज्यौं कपि आप क़ाठ लीला करि, प्रान तजै बिललाय।
ज्यौं निज मुख करि जाल मकरिया, आप मरै उलझाय।।२।।
कठिन कमायो सब धन ज्वारी, छिन में देत गमाय।
जैसे रतन पाय के भोंदू, बिलखे आप गमाय।।३।।
देव-शास्त्र-गुरु को निहचै करि, मिथ्यामत मति ध्याय।
सुरपति बांछा राखत याकी, ऐसी नर परजाय।।४।।

भवदधि-तारक नवका जगमाहीं जिनवान.....

भवदधि-तारक नवका जगमाहीं जिनवान।।टेक।।
नय प्रमान पतवारी जाके, खेवट आतम ध्यान।।१।।
मन वच तन सुध जे भवि धारत, ते पहुंचत शिवथान।
परत अथाह मिथ्यात भँवर तें, जे नहिं गहत अजान।।२।।
बिन अक्षर जिनमुख़ तैं निकसी, परी वरनजुत कान।
हितदायक 'बुधजन' कों गनधर, गूंथे ग्रन्थ महान।।३।।

मैं देखा आतमरामा.....

मैं देखा आतमरामा।।टेक।।
रूप फरस रस गंध तैं न्यारा, दरस-ज्ञान-गुनधामा।
नित्य निरंजन जाकै नाहीं, क्रोध लोभ मद कामा।।१।।
भूख-प्यास सुख-दुख नहिं जाकैं, नाहिं वन पुर गामा।
नहिं साहिब नहिं चाकर भाई, नहीं तात नहिं मामा।।२।।
भूलि अनादि थकी जग भटकत, लै पुद्गल का जामा।
'बुधजन' संगति जिनगुरु की तैं, मैं पाया मुझ ठामा।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

और ठौर क्यों हेरत प्यारा.....

और ठौर क्यों हेरत प्यारा, तेरे हि घट में जाननहारा।।टेक।।
चलन हलन थल वास एकता, जात्यान्तर तैं न्यारा न्यारा।।१।।
मोह उदय रागी-द्वेषी ह्वै, क्रोधादिक का सरजन हारा।
भ्रमत फिरत चारौं गति भीतर, जनम-मरन भोगत दुख भारा।।२।।
गुरु उपदेश लखै पद आपा, तबहिं विभाव करै परिहारा।
ह्वै एकाकी 'बुधजन' निश्चल, पावै शिवपुर सुखद अपारा।।३।।

काल अचानक ही ले जायेगा.....

काल अचानक ही ले जायेगा, गाफिल होकर रहना क्या रे।।टेक।।
छिन हू तोकूं नाहिं बचावै, तौ सुभटन का रखना क्या रे ।।१।।
रंच सबाद करिन के काजै, नरकन में दुख भरना क्या रे ।
कुलजन पथिकनि के हित काजै, जगत जाल में परना क्या रे ।।२।।
इंद्रादिक कोउ नाहिं बचैया, और लोक का शरना क्या रे ।
निश्चय हुआ जगत में मरना, कष्ट परै तब डरना क्या रे ।।३।।
अपना ध्यान करत खिर जावै, तौ करमनि का हरना क्या रे ।
अब हित करि आरत तजि 'बुधजन', जन्म-जन्म में जरना क्या रे ।।४।।

या नित चितवो उठिकै भोर.....

या नित चितवो उठिकै भोर।।टेक।।
मैं हूँ कौन कहां तैं आयो, कौन हमारी ठौर ।।१।।
दीसत कौन, कौन यह चितवत, कौन करत है शोर ।
ईश्वर कौन, कौन है सेवक, कौन करे झकझोर ।।२।।
उपजत कौन मरै को भाई, कौन डरे लखि घोर ।
गया नहीं आवत कछु नाहीं, परिपूरन सब ओर ।।३।।
और और मैं और रूप ह्वै, परनतिकरि लइ और ।
स्वांग धरैं डोलौ याही तैं, तेरी 'बुधजन' भोर ।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तोकौं सुख नहिं होगा लोभीड़ा.....

तोकौं सुख नहिं होगा लोभीड़ा! क्यौं भूल्या रे परभावन में।।टेक।।
किसी भांति कहूँ का धन आवै, डोलत है इन दावन में।।१।।
ब्याह करूं सुत जस जग गावै, लग्यौ रहैं या भावन में।
दरव परिनमत अपनी गौंत, तू क्यों रहित उपायन में।।२।।
सुख तो है संतोष करन में, नाहीं चाह बढ़ावन में।
कै सुख है 'बुधजन' की संगति, कै सुख शिवपद पावन में।।३।।

नरभव पाय फेरि दुख भरना.....

नरभव पाय फेरि दुख भरना, ऐसा काज न करना हो।।टेक।।
नाहक ममत ठानि पुद्गल सौं, करमजाल क्यौं परना हो।।१।।
यह तो जड़ तू ज्ञान अरूपी, तिल तुष ज्यौं गुरु वरना हो।
राग-दोष तजि भजि समता कौं, कर्म साथ के हरना हो।।२।।
यो भव पाय विषय-सुख सेना, गज चढ़ि ईंधन ढोना हो।
'बुधजन' समुझि सेय जिनवर पद, ज्यौं भवसागर तरना हो।।३।।

हो मनाजी, थारी वानी बुरी छै.....

हो मना जी, थारी वानी बुरी छै, दुखदाई।।टेक।।
निज कारिज मैं नेकु न लागत, परसौं प्रीति लगाई।।१।।
या सुभाव सौं अति दुख पायो, सो अब त्यागो भाई।।२।।
'बुधजन' औसर भागन पायो, सेवो श्री जिनराई।।३।।

रे मन मेरा, तू मेरो कहचौ मान.....

रे मन मेरा, तू मेरो कहचौ मान मान रे।।टेक।।
अनंत चतुष्टय धारक तू ही, दुख पावत बहुतेरा।
भोग विषय का आतुर ह्वै कै, क्यौं होता है चेरा।।१।।
तेरे कारन गति गति माहीं, जनम लिया है घनेरा।
अब जिन चरन गहि 'बुधजन', मिटि जावै भव फेरा।।२।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धर्म बिन कोई नहीं अपना.....

धर्म बिन कोई नहीं अपना ।
सब सम्पति धन थिर नहिं जग में, जिसा रैन सपना ।।टेक।।
आगै किया सो माया भाई, याही है निरना ।
अब जो करैंगा सो पावैगा, तातैं धर्म करना ।।१।।
ऐसैं सब संसार कहत है, धर्म कियैं तिरना ।
परपीड़ा बिसनादिक सेवैं, नरक विषैं परना ।।२।।
नृप के घर सारी सामग्री, ताकैं ज्वर तपना ।
अरु दरिद्री कैं हूँ ज्वर है, पाप उदय थपना ।।३।।
नाती तो स्वारथ के साथी, तोहि विपत भरना ।
वन गिरि सरिता अगनि जुद्ध मैं, धर्म हि का सरना ।।४।।
चित 'बुधजन' सन्तोष धारना, पर चिंता हरना ।
विपति पड़ै तो समता रखना, परमातम जपना ।।५।।

मति भोगन राचौ जी.....

मति भोगन राचौ जी, भव-भव में दुख देत घना ।।टेक।।
इनके कारन गति गति मांही नाहक नाचौ जी ।
झूठे सुख के काज धरम में पाड़ौ खांचौ जी ।।१।।
पूरब कर्म उदय सुख आयां, राजौ माचौ जी ।
पाप उदय पीड़ा भोगन में, क्यौं मन काचौ जी ।।२।।
सुख अनन्त के धारक तुम ही, पर क्यौं जांचौं जी ।
'बुधजन' गुरु का वचन हिया में, जानौ सांचौ जी ।।३।।

बन्यौ म्हारै या घरी मैं रंग.....

बन्यौं म्हारै या घरी मैं रंग ।।टेक।।
तत्त्वारथ की चरचा पाई, साधरमी कौ संग ।।१।।
श्री जिनचरन बसे उर माहीं, हरष भयौ सब अंग ।।२।।
ऐसी विधि भव-भव में मिलिज्यौ, धर्मप्रसाद अभंग ।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं देखा अनोखा ज्ञानी वे.....

मैं देखा अनोखा ज्ञानी वे।।टेक।।
लारैं लागि आन की भाई, अपनी सुध विसरानी वे।
जा कारन तैं कुगति मिलत है, सो ही निजकर आनी वे।।१।।
झूठे सुख के काज सयानें, क्यौं पीड़ै है प्रानी वे।
दया दान पूजन व्रत तप कर, 'बुधजन' सीख बखानी वे।।२।।

मेरो मनुवा अति हरषाय.....

मेरो मनुवा अति हरषाय, तोरे दरसन सौं।।टेक।।
शांत छबि लखि शांत भाव ह्वै, आकुलता मिट जाय।।१।।
जबलौं चरन निकट नहिं आया, तबलौं आकुलता थाय।
अब आवत ही निज निधि पाया, नित नव मंगल पाय।।२।।
'बुधजन' अरज करै कर जोरे सुनिये श्री जिनराय।
जबलौं मोख होय नहिं तबलौं भक्ति करूं गुन गाय।।३।।

ज्ञान बिन थान न पावौगे.....

ज्ञान बिन थान न पावौगे, गति गति फिरौगे अजान।
गुरु उपदेश लह्यौ नहिं उर में, गह्यौ नहीं सरधान।।टेक।।
विषयभोग में राचि रहे करि, आरति रौद्र कुध्यान।
आन-आन लखि आन भये तुम, परनति करि लई आन।।१।।
निपट कठिन मानुष भव पायौ, और मिले गुनवान।
अब 'बुधजन' जिनमत को धारौ, करि आपा पहिचान।।२।।

गुरु ने पिलाया जो ज्ञान पियाला.....

गुरु ने पिलाया जो, ज्ञान पियाला।।टेक।।
भइ बेखबरी परभावां की, निजरस में मतवाला ।।१।।
यों तो छाक जात नहिं छिन हूं, मिटि गये आन जंजाला ।।२।।
अद्भुत आनन्द मगन ध्यान में, 'बुधजन' हाल सम्हाला ।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

और सबै मिलि होरि रचावैं.....

और सबै मिलि होरि रचावैं, हूँ काके संग खेलौंगी होरी।।टेक।।
कुमति हरामिनि ज्ञानी पिया पै, लोभ मोह की डारी ठगौरी।
भोरै झूठ मिठाई खवाई खोंसि लये गुन करि बरजोरी।।१।।
आप हि तीन लोक के साहिब, कौन करै इनकै सम जोरी।
अपनी सुधि कबहूं नहिं लेते, दास भये डोलैं पर पौरी।।२।।
गुरु 'बुधजन' तैं सुमति कहत हैं, सुनिये अरज दयाल सु मोरी।
हा हा करत हूँ पांय परत हूँ, चेतन पिय कीजे मो ओरी।।३।।

धनि सरधानी जग मैं,.....

धनि सरधानी जग मैं, ज्यौं जल कमल निवास।।टेक।।
मिथ्या तिमिर फटचो प्रगटचो शशि, चिदानन्द परकास ।।१।।
पूरब कर्म उदय सुख पावैं, भोगत ताहि उदास ।
जो दुख मैं न विलाप करैं, निरवेर सहैं तन त्रास ।।२।।
उदय मोहचारित परवशि ह्वै, व्रत नहिं करत प्रकाश ।
जो किरिया करि हैं निरवांछक, करैं नहीं फल आस ।।३।।
दोषरहित प्रभु धर्म दयाजुत, परिग्रह बिन गुरु तास ।
तत्त्वारथ रुचि है जाके घट, 'बुधजन' तिनका दास ।।४।।

तू मेरा कहचा मान रे निपट अयाना.....

तू मेरा कहचा मान रे निपट अयाना।।टेक।।
भव वन बाट मात सुत दारा, बंधु पथिक जन जान रे।
इनतैं प्रीति न ला बिछुरैंगे, पावैगो दुख खान रे।।१।।
इकसे तन आतम मति आनैं, यो जड़ है तू ज्ञान रे।
मोह उदय वश भरम पड़त है, गुरु सिखवत सरधान रे।।२।।
बादल रंग सम्पदा जग की छिन में जात विलान रे।
तमाशवीन बनि यातैं 'बुधजन', सब तैं ममता हान रे।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हे आतमा ! देखी दुति तोरी रे.....

हे आतमा ! देखी दुति तोरी रे।।टेक।।
निज को ज्ञान लोक को ज्ञाता, शक्ति नहीं थोरी रे।
जैसी जोति सिद्ध जिनवर में, तैसी ही मोरी रे।।१।।
जड़ नहिं हुवो फिरै जड़ के वसि, जड़ की रुचि जोरी रे।
जग के काजि करन जग टहलैं, 'बुधजन' मति भोरी रे।।२।।

मेरी अरज कहानी, सुनि केवलज्ञानी.....

मेरी अरज कहानी, सुनि केवलज्ञानी।।टेक।।
चेतन के संग जड़-पुद्गल मिलि, सारी बुधि बौरानी।।१।।
भववन माहीं फेरत मोकौं, लख चौरासी थानी।
कबलौं वरनौ तुम सब जानो, जनम-मरन दुखखानी।।२।।
भाग भले तैं मिले 'बुधजन' को, तुम जिनवर सुखदानी।
मोह फांसि को काटि प्रभूजी, कीजे केवलज्ञानी।।३।।

तेरी बुद्धि कहानी, सुनि मूढ़ अज्ञानी.....

तेरी बुद्धि कहानी, सुनि मूढ़ अज्ञानी।।टेक।।
तनक विषयसुख लालच लाग्यौ, नंतकाल दुखखानी।।१।।
जड़-चेतन मिलि बंध भये इक, ज्यौं पयमाहीं पानी।
जुदा-जुदा सरूप नहिं मानै, मिथ्या एकता मानी।।२।।
हूँ तो 'बुधजन' दृष्टा-ज्ञाता, तन जड़ सरधा आनी।
ते ही अविचल सुखी रहैंगे, होय मुक्ति वर प्रानी।।३।।

शिवधानी निशाशानी जिनवानी हो.....

शिवधानी निशाशानी जिनवानी हो।।टेक।।
भववन भ्रमन निवारन-कारन, आपा-पर पहिचानि हो ।।१।।
कुमति पिशाच मिटावन लायक, स्याद् मंत्र मुख आनि हो ।।२।।
बुधजन मनवचतन करि निशिदिन, सेवो सुख की खानि हो ।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अब घर आये चेतनराय.....

अब घर आये चेतनराय, सजनी खेलौंगी मैं होरी।।टेक।।
आरस सोच कानि कुल हरिकै, धरि धीरज बरजोरी।।१।।
बुरी कुमति की बात न बूझै, चितवत है मो ओरी।
वा गुरुजन की बलि-बलि जाऊं, दूरि करी मति भोरी।।२।।
निज सुभाव जल हौज भराऊं, घोरूं निजरंग रोरी।
निज ल्यौं ल्याय शुद्ध पिचकारी, छिरकन निज मति दोरी।।३।।
गाय रिझाय आप वश करिकै, जावन द्यौं नहिं पोरी।
'बधजन' रचि मचि रहूं निरंतर, शक्ति अपूरब मोरी।।४।।

अजी हो जीवाजी थानैं श्रीगुरु.....

अजी हो जीवाजी थानैं श्रीगुरु कहै छै, सीख मानौं जी।।टेक।।
बिन मतलब की थे मति मानौं, मतलब की उर आनौं जी ।।१।।
राग-दोष की परिनति त्यागौ, निज सुभाव थिर ठानौं जी ।।२।।
अलख अभेद रु नित्य निरंजन, थे 'बुधजन' पहिचानौं जी ।।३।।

मुनि बन आयेजी बना.....

मुनि बन आये जी बना।
शिव बनरी ब्याहन कौं उमगे, मोहित भविक जना।।टेक।।
रत्नत्रय सिर सेहरा बांधै, सजि संवर बसना।
संग बराती द्वादश भावन, अरु दश धर्म पना।।१।।
सुमति नारी मिलि मंगल गावत अजपा गीत घना।
राग-दोष की अतिशबाजी, छूटत अगनि-कना।।२।।
दुविधि कर्म का दान बटत है, तोषित लोकमना।
शुक्लध्यान की अगनि जला करि, होमैं कर्मघना।।३।।
शुभ बेल्यां शिव बनरि बरी मुनि, अद्भुत हरष बना।
निज मंदिर में निश्चल राजत, 'बुधजन' त्याग घना।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुरु दयाल तेरा दुख लखि कैं.....

गुरु दयाल तेरा दुख लखि कैं, सुन लै जो फरमावै है।।टेक।।
तामैं तेरा जतन बतावै, लोभ कछू नहिं चावै है ।।१।।
पर सुभाव कौ मोस्या चाहै, अपना उसा बनावै है ।
सो तो कबहूं हुवा न होसी, नाहक रोग लगावै है ।।२।।
खोटी खरी जस करी कमाई, तैसी तेरै आवै है ।
चिन्ता आगि उठाय हिया में, नाहक जान जलावै ।।३।।
पर अपनावै सो दुख पावै, 'बुधजन' ऐसे गावै है ।
पर को त्यागि आप थिर तिष्ठै, सो अविचल सुख पावै है ।।४।।

जगत में होनहार सो होवै.....

जगत में होनहार सो होवै, सुर नृप नाहिं मिटावै ।।टेक।।
आदिनाथ से कौं भोजन में, अन्तराय उपजावै।
पारसप्रभु कौं ध्यान लीन लखि कमठ मेघ बरसावै।।१।।
लक्ष्मन से संग भ्राता जाकै, सीता राम गमावै।
प्रतिनारायण रावण से की, हनुमत लंक जरावै।।२।।
जैसो कमावै तैसो ही पावै, यों 'बुधजन' समझावै।
आप आपकौ आप कमावो, क्यों परद्रव्य कमावै।।३।।

आगे कहा करसी भैया,.....

आगे कहा करसी भैया, आ जासी जब काल रे।
ह्यां तौ तैंनैं पोल मचाई, व्हां तौ होय संभाल रे।।टेक।।
झूठ कपट करि जीव सताये, हरचा पराया माल रे।
सम्पति सेती धाप्या नाहीं, तकी विरानी बाल रे।।१।।
सदा भोग मैं मगन रहचा तू, लख्या नहीं निज हाल रे।
सुमरन दान किया नहिं भाई, हो जासी पैमाल रे।।२।।
जोवन मैं जुवती संग भूल्या, भूल्या जब था बाल रे।
अब हुँ धारो 'बुधजन' समता, सदा रहहु खुशहाल रे।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेरो गुण गावत हूँ मैं,......

तेरो गुण गावत हूं मैं, निजहित मोहि जताय दे।।टेक।।
शिवपुर की मोकौं सुधि नाहीं, भूलि अनादि मिटाय दे।।१।।
भ्रमत फिरत हूँ भववन माहीं, शिवपुर बाट बताय दे।
मोह-नींद वश घूमत हूँ नित, ज्ञान बधाय जगाय दे।।२।।
कर्म शत्रु भव-भव दुख दे हैं, इनतैं मोहि छुटाय दे।
'बुधजन' तुम चरना सिर नावै, एती बात बनाय दे।।३।।

हूँ कब देखूँ वे मुनिराई हो.....

हूँ कब देखूं वे मुनिराई हो।।टेक।।
तिल तुष मात्र न परिग्रह जिनकैं, परमातम लौं लाई हो।।१।।
निज स्वारथ के सब ही बांधव, वे परमारथ भाई हो।।२।।
सब विधि लायक शिवमग दायक तारन-तरन सदाई हो।।३।।

सुणिल्यो जीव सुजान.....

सुणिल्यो जीव सुजान, सीख सुगुरु हित की कही।
रुल्यौ अनन्ती बार, गति गति साता ना लही।।टेक।।
कोइक पुन्य संजोग, श्रावक कुल नरगति लही।
मिले देव निरदोष, वाणी भी जिनकी कही।।१।।
चरचा को परसंग, अरु सरध्या मैं बैठिवो।
ऐसा अवसर फेरि, कोटि जनम नहिं भेंटिवो।।२।।
झूठी आशा छोड़ि, तत्त्वारथ रुचि धारिल्यो।
या में कछु न बिगार, आपो आप सुधारिल्यो।।३।।
तन को आतम मानि, भोग विषय कारज करो।
यौं ही करत अकाज, भव भव क्यौं कूवे परो।।४।।
कोटि ग्रन्थ कौ सार, जो भाई 'बुधजन' करो।
राग-दोष परिहार, याही भव सौं उद्धरो।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री जिनपूजन को हम आये.....

श्री जिनपूजन को हम आये, पूजत ही दुखदुंद मिटाये।।टेक।
विकलप गयो प्रगट भयो धीरज, अदभुत सुख समता बरसाये
आधि-व्याधि अब दीखत नाहीं, धरम कलपतरु आंगन थाये ।१।।
इतमैं इन्द्र चक्रवर्ति इतमैं, इतमैं फनिंद खरे सिर नाये।
मुनिजनबृंद करैं थुति हरषत, धनि हम जनमैं पद परसाये।।२।।
परमौदारिक मैं परमातम, ज्ञानमयी हमकों दरसाये।
ऐसे ही हममें हम जानैं, 'बुधजन' गुन मुख जात न गाये।।३।।

हो जिनवानी जू, तुम मोकौं तारोगी.....

हो जिनवानी जू, तुम मोकौं तारोगी।।टेक।
आदि अन्त अविरुद्ध वचन तैं, संशय भ्रम निरबारोगी।।१।।
ज्यौं प्रतिपालत गाय बत्स कौं, त्यों ही मुझकों पारोगी।
सनमुख काल बाघ जब आवै, तब तत्काल उवारोगी।।२।।
'बुधजन' दास बीनवै माता, या विनती उर धारोगी।
उलझि रहचौ हूँ मोह जाल में, ताकौ तुम सुरझारोगी।।३।।

तैं क्या किया नादान.....

तैं क्या किया नादान, तैं तो अमृत तजि विष लीना।।टेक।।
लख चौरासी जौनी माहिं तैं, श्रावक कुल में आया।
अब तजि तीन लोक के साहिब, नवग्रह पूजन धाया।।१।।
वीतराग के दरसन ही तैं, उदासीनता आवै।
तू तौ जिनके सनमुख ठाड़ा, सुत को ख्याल खिलावै।।२।।
सुरग सम्पदा सहजैं पावै, निश्चय मुक्ति मिलावै।
ऐसी जिनवर पूजन सेती, जगत कामना चावै।।३।।
'वधजन' मिलैं सलाह कहैं तब, तू वापै खिजि जावै।
जथा जोग कौं अजथा मानै, जनम-जनम दुख पावै।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संक्षिप्त परिचय

कविवर दौलतराम

(विक्रम सवंत १८५५ - १९२३)

अध्यात्म रस में निमग्न रहनेवाले उन्नीसवीं सदी के तत्त्वदर्शी विद्वान कविवर पं. दौलतरामजी पल्लीवाल जाति के नर-रत्न थे। आपका जन्म अलीगढ़ के पास सासनी नामक ग्राम में हुआ था। आप कुछ दिन अलीगढ़ भी रहे थे। आपके पिता का नाम श्री टोडरमल था।

आत्मश्लाघा से दूर रहनेवाले इन महान कवि का जीवन-परिचय पूर्णतः प्राप्त नहीं है । वे एक साधारण गृहस्थ, सरल स्वभावी, आत्मज्ञानी महापुरुष थे।

आपके द्वारा रचित लघु पद्य ग्रंथ **छहढ़ाला** जैन समाज का बहुप्रचलित एवं समादृत ग्रंथरत्न है। शायद ही ऐसा कोई जैनी हो, जिसने छहढ़ाला का अध्ययन न किया हो। इसकी रचना आपने विक्रम संवत् १८८१ में की थी, आपने इसमें गागर में सागर भरने का प्रयत्न किया है।

इसके अलावा आपने कई स्तुतियाँ एवं अध्यात्म-रस से ओत-प्रोत अनेक भजन लिखे हैं, जो आज भी सारे भारतवर्ष के मन्दिरों और शास्त्र-सभाओं में बड़े सम्मान के साथ गाये जाते हैं। आपके भजनों में मात्र भक्ति ही नहीं, गूढ़ तत्व भी भरे हुए हैं।

भक्ति और अध्यात्म के साथ ही आपके काव्य में काव्योत्पादन भी अपने प्रौढ़तम रूप में पाये जाते हैं । भाषा सरल, सुबोध और प्रवाहमयी है, भर्ती के शब्दों का अभाव है। आपके द्वारा रचित आध्यात्मिक पद एवं भजन हिन्दी गीत साहित्य के किसी भी महारथी के सम्मुख बड़े ही गर्व के साथ रखे जा सकते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेरे कब ह्वै वा दिन की सुघरी .....

मेरे कब ह्वै वा दिन की सुघरी।।टेक।।
तन बिन वसन असन बिन वन में, निवसों नासादृष्टि धरी।।१।।
पुण्य-पाप परसौं कब विरचों, परचों निजनिधि चिरबिसरी।
तज उपाधि सजि सहज समाधि, सहो घाम हिम मेघझरी।।२।।
कब थिरजोग धरों ऐसो मोहि, उपल जान मृग खाज हरी।
ध्यान कमान तान अनुभव-शर, छेदों किहि दिन मोह अरी।।३।।
कब तृन-कंचन एक गिनों अरु, मनिजडितालय शैल दरी।
'दौलत' सतगुरु चरन सेव, जो पुरवो आश यहै हमरी।।४।।

आतम रूप अनुपम अद्भुत .....

आतम रूप अनुपम अद्भुत, याहि लखैं भव-सिन्धु तरो।।टेक।।
अल्पकाल में भरत चक्रधर, निज आतम को ध्याय खरो।
केवलज्ञान पाय भवि बोधे, ततछिन पायौ लोकशिरो।।१।।
या बिन समुझे द्रव्यलिंगि मुनि, उग्र तपन कर भार भरो।
नवग्रीवक पर्यन्त जाय चिर, फेर भवार्णव माहिं परो।।२।।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरन तप, येहि जगत में सार नरो।
पूरव शिव को गये जाहिं अब, फिर जैहैं यह नियत करो।।३।।
कोटि ग्रन्थ को सार यही है, ये ही जिनवानी उचरो।
'दौल' ध्याय अपने आतम को, मुक्तिरमा तव वेग वरो।।४।।

प्रभु मोरी ऐसी बुधि कीजे .....

प्रभु मोरी ऐसी बुधि कीजे।।टेक।।
राग-दोष दावानल से बच, समतारस में भीजे।।१।।
पर में त्याग अपनपो, निज में लाग न कबहूँ छीजे।
कर्म-कर्मफल माहिं न राचत, ज्ञान सुधारस पीजे।।२।।
सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरन निधि, ताकी प्राप्ति करीजे।
मुझ कारज के तुम बड़ कारन, अरज 'दौल' की लीजे।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

.....

चिन्मूरत दृग्धारी की मोहे रीति

चिन्मूरत दृग्धारी की मोहे, रीति लगत है अटापटी ।।टेक
बाहिर नारकिकृत दु:ख भोगै, अन्तर सुखरस गटागटी ।
रमत अनेक सुरनि संग पै तिस, परणति तैं नित हटाहटी ।।१।।
ज्ञान-विराग शक्ति तैं विधि-फल, भोगत पै विधि घटाघटी ।
सदन-निवासी तदपि उदासी, तातै आस्रव छटाछटी ।।२।।
जे भवहेतु अबुध के ते तस, करत बन्ध की झटाझटी ।
नारक पशु तिय षट् विकलत्रय, प्रकृतिन की ह्वै कटाकटी ।।३।।
संयम धर न सकै पै संयम, धारन की उर चटाचटी ।
तासु सुयश गुन की 'दौलत' के, लगी रहै नित रटारटी ।।४।।

.....

चेतन यह बुधि कौन सयानी

चेतन यह बुधि कौन सयानी, कही सुगुरु हित सीख न मानी ।।टेक।
कठिन काकताली ज्यौं पायो, नरभव सुकुल श्रवण जिनवानी ।।१।।
भूमि न होत चाँदनी की ज्यौं, त्यौं नहिं धनी ज्ञेय को ज्ञानी ।
वस्तुरूप यौं तूं यौं ही शठ, हट कर पकरत सोंज विरानी ।।२।।
ज्ञानी होय अज्ञान-राग-रुष कर, निज सहज स्वच्छता हानी ।
इन्द्रिय जड़ तिन विषय अचेतन, तहां अनिष्ट-इष्टता ठानी ।।३।।
चाहै सुख-दु:ख की अवगाहै, अब सुनि विधि जो है सुखदानी ।
'दौल' आपकरि आप आपमैं, ध्याय लाय लय समरससानी ।।४।।

.....

देख्यो भागन तैं जिनपाला

देख्यो भागन तैं जिनपाला, मोह नाशने वाला ।।टेक।।
सुभग निशंक राग बिन यातैं, बसन न आयुध वाला ।।१।।
जास ज्ञान में युगपत भासत, सकल पदारथ माला ।
निज में लीन हीन इच्छा पर, हितमित वचन रसाला ।।२।।
लखि जाकी छवि आतम निधि निज, पावत होत निहाला ।
'दौल' जास गुन चिन्तत रत हैं, निकट विकट भव नाला ।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनबैन सुनत मोरी भूल भगी .....

जिनबैन सुनत मोरी भूल भगी ।।टेक।।
कर्मस्वभाव भाव चेतन को, भिन्न पिछानन समुति जगी ।।१।।
जिन अनुभूति सहज ज्ञायकता, सो चिर रुष तुष मैल पगी।
स्यादवाद-धुनि निर्मल-जलतैं, विमल भई समभाव लगी ।।२।।
संशय मोह भरमता विघटी, प्रगटी आतम सौंज सगी।
'दौल' अपूरव मंगल पायो, शिवसुख लेन हौंस उमगी ।।३।।

जिनवानी जान सुजान रे .....

जिनवानी जान सुजान रे ।।टेक।।
लाग रही चिरतैं विभावता, ताको कर अवसान रे ।।१।।
द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव की, कथनी को पहिचान रे ।
जाहि पिछाने स्व-पर भेद सब, जान परत निदान रे ।।२।।
पूरब जिन जानी तिनही ने, भानी संसृतिबान रे ।
अब जानै अरु जानैंगे जे, ते पावैं शिवथान रे ।।३।।
कह 'तुषमाष' मुनी शिवभूती, पायो केवलज्ञान रे ।
यौं लखि 'दौलत' सतत करो भवि, चिद्वचनामृत पान रे ।।४।।

धनि मुनि जिनकी लगी लौ शिवओरनै .....

धनि मुनि जिनकी लगी लौ शिवओरनै ।टेक।।
सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरन निधि, धरत हरत भ्रमचोरनै ।।१।।
यथाजात मुद्राजुत सुन्दर, सदन विजन गिरिकोरनै ।
तृन कञ्चन अरि स्वजन गिनत सम, निंदन और निहोरनै ।।२।।
भवसुख चाह सकल तनि बल सजि, करत द्विविध तप घोरनै ।
परम विराग भाव पवितैं नित, चूरत करम कठोरनै ।।३।।
छीन शरीर न हीन चिदानन, मोहत मोह झकोरनै ।
जग-तप-हर भवि कुमुद निशाकर मोदन 'दौल' चकोरनै ।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानी जीव निवार भरमतम

ज्ञानी जीव निवार भरमतम, वस्तुस्वरूप विचारत ऐसै ।।टेक।।
सुत तिय बन्धु धनादि प्रगट पर, ये मुझतें हैं भिन्न प्रदेशै ।
इनकी परणति है इन आश्रित, जो इन भाव परनवै वैसै ।।१।।
देह अचेतन चेतन मैं इन, परणति होय एकसी कैसैं ।
पूरन-गलन स्वभाव धरै तन, मैं अज अचल अमल नभ जैसैं ।।२।।
पर परिनमन न इष्ट अनिष्ट, न वृथा रागरुष द्वन्द भयेसैं ।
नसै ज्ञान निज फंसैं बंध में, मुक्त होय नमभाव लयेसैं ।।३।।
विषय-चाह दवदाह नसैं नहिं, बिन निज सुधासिन्धु में पैसैं ।
अब जिनबैन सुने श्रवन तैं, मिटै विभाव करूँ विधि तैसैं ।।४।।
ऐसो अवसर कठिन पाय अब, निजहित हेत विलम्ब करेसैं ।
पछताओ बहु होय सयाने, चेतन 'दौल' छुटो भव भयसैं ।।५।।

नित पीज्यौ धी धारी

निज पीज्यौ धी धारी, जिनवाणि सुधासम जान के।।टेक।।
वीर मुखारविन्द तैं प्रगटी, जन्म-जरा-भय टारी।
गौतमादि गुरु-उर घट व्यापी, परम सुरुचि करतारी।।१।।
सलिल समान कलिल मल गंजन, बुधमन रंजन हारी।
भंजन विभ्रम धूलि प्रभंजन, मिथ्या जलद निवारी।।२।।
कल्यानक तरु उपवन धरिनी, तरनी भवजल तारी।
बन्ध विदारन पैनी छैनी, मुक्ति नसैनी सारी।।३।।
स्व-पर स्वरूप प्रकाशन को यह, भानुकला अविकारी।
मुनिमन-कुमुदिनि मोदन शशि-भा, शमसुख मनसुवारी।।४।।
जाके सेवत बेवत निजपद, नसत अविद्या सारी।
तीनलोक पति पूजन जाको, जान त्रिजग हितकारी।।५।।
कोटि जीभ सौं महिमा जाकी, कहि न सके मति धारी।
'दौल' अल्पमति केम कहै यह, अधम उधारन हारी।।६।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हम तो कबहुँ न निज घर आये .....

हम तो कबहुँ न निज घर आये।
पर घर फिरत बहुत दिन बीते, नाम अनेक धराये।।टेक।।
परपद निजपद मानि मगन है, पर-परणति लपटाये।
शुद्ध बुद्ध सुख कन्द मनोहर, चेतनभाव न भाये।।१।।
नर पशु देव नरक निज जान्यो, परजय बुद्धि लहाये।
अमल अखण्ड अतुल अविनाशी, आतमगुन नहिं गाये।।२।।
यह बहु भूल भई हमरी फिर, कहा काज पछताये।
'दौल' तजो अजहूँ विषयन को, सतगुरु वचन सुहाये।।३।।

धनि मुनि निज आतम हित कीना .....

धनि मुनि निज आतम हित कीना।
भव असार तन अशुचि विषय विष, जान महाव्रत लीना।।टेक।।
एक विहारी परीग्रह छारी, परिसह सहत अरीना।
पूरव तन तपसाधन मान, न लाज गना परवीना।।१।।
शून्य सदन गिर गहन गुफा में, पद्मासन आसीना।
परभावन तैं भिन्न आपपद, ध्यावत मोह विहीना।।२।।
स्व-पर भेद जिनकी बुधि निज में, पागी वाहि लगीना।
'दौल' तासपद वारिज रज से, किन अघ करे न छीना।।३।।

राचि रह्यो परमांहि तू .....

राचि रह्यो परमांहि तू, अपनो रूप न जानै रे।
अविचल चिनमूरत बिनमूरत, सुखी होत तस ठानै रे।।टेक।।
तन धन भ्रात तात सुत जननी, तू इनको निज जानै रे।
ये पर इनहिं वियोग योग में, यौं ही सुख-दुःख मानै रे।।१।।
चाह न पाये पाये तृष्णा, सेवत ज्ञान जघानै रे।
विपतिखेत विधिबन्ध हेत पै, जान विषयं रस खानै रे।।२।।
नर भव जिनश्रुत श्रवण पाय अब, कर निज सुहित सयानै रे।
'दौलत' आतम ज्ञान-सुधारस, पीवो सुगुरु बखानै रे।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हम तो कबहुँ न निजगुन भाये

हम तो कबहुँ न निजगुन भाये।
तन निज मान जान तन दुःख-सुख में विलखे हरखाये।।टेक।।
तन को गरन मरन लखि तन को, धरन मान हम जाये।
या भ्रम-भौंर परे भव-जल चिर, चहुँगति विपत लहाये।।१।।
दरश-बोध-व्रत सुधा न चाख्यौ, विविध विषयविष खाये।
सुगुरु दयाल सीख दइ पुनि-पुनि, सुनि-सुनि उर नहिं लाये।।२।।
बहिरातमता तजी न अन्तर, दृष्टि न है निज ध्याये।
धाम काम धन रामा की नित, आश हुताश जलाये।।३।।
अचल अनूप शुद्ध चिद्रूपी, सब सुखमय मुनि गाये।
'दौल' चिदानन्द स्वगुन मगन जे, ते जिय सुखिया थाये।।४।।

कबधौं मिलैं मोहि श्रीगुरु मुनिवर

कबधौं मिलैं मोहि श्रीगुरु मुनिवर, करि हैं भवोदधि पारा हो।।टेक।।
भोग उदास जोग जिन लीनों, छांड़ि परिग्रह भारा हो।
इन्द्रिय दमन वमन मद कीनो, विषय कषाय निवारा हो।।१।।
कञ्चन कांच बराबर जिनके, निन्दक बन्दक सारा हो।
दुर्धर तप तपि सम्यक् निजघर, मन-वच-तनकर धारा हो।।२।।
ग्रीषम गिरि हिम सरिता तीरै, पावस तरुतर ठारा हो।
करूणाभीन चीन त्रसधारक, ईर्यापन्थ समारा हो।।३।।
मार-मार व्रत धार शील दृढ़, मोह महामल टारा हो।
मास छमास उपास वासवन, प्रासुक करत अहारा हो।।४।।
आरत-रौद्र लेश नहिं जिनके, धर्म शुकल चित धारा हो।
ध्यानारूढ़ गूढ़ निज आतम, शुध उपयोग विचारा हो।।५।।
आप तरहिं औरन तो तारहिं, भवजलसिन्धु अपारा हो।
'दौलत' ऐसे जैन-जतिन को, नित प्रति धोक हमारा हो।।६।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हम तो कबहूँ न हित उपजाये

हम तो कबहुँ न हित उपजाये।।टेक।।
सुकुल-सुदेव-सुगुरु सुसंग हित, कारन पाय गमाये।।१।।
ज्यों शिशु नाचत, आप न माचत, लखनहार बौराये।
त्यों श्रुत बांचत आप न राचत, औरन को समुझाये।।२।।
सुजस लाभ की चाह न तज निज, प्रभुता लखि हरखाये।
विषय तजे न रचे निज पद में, पर-पद अपद लुभाये।।३।।
पाप त्याग जिन जाप न कीन्हौं, सुमन चाप तपताये।
चेतन तन को कहत भिन्न पर, देह सनेही थाये।।४।।
यह चिर भूल भई हमरी अब, कहा होत पछताये।
'दौल' अजौं भवभोग रचौ मत, यौं गुरु वचन सुनाये।।५।।

भाई ! निजहित कारज करना

भाई ! निजहित कारज करना।।टेक।।
जनम-मरन दुःख पावत जातैं, सो विधि-बन्ध कतरना।।१।।
ज्ञान-दरस अरु राग परस रस, निज-पर चिन्ह भ्रमरना।
संधि-भेद बुधि-छैनी तैं कर, निज गहि पर पहिरना।।२।।
परिग्रही अपराधी शंकै, त्यागी अभय विचरना।
त्यौं परचाह बन्ध दुःखदायक, त्यागत सब सुख भरना।।३।।
जो भव-भ्रमन न चाहे तो, अब सुगुरु सीख उर धरना।
'दौलत' स्वरस सुधारस चाखौ, ज्यौं बिनसै भवमरना।।४।।

गुरू कहत सीख इमि बार-बार

गुरू कहत सीख इमि बार-बार, विषसम विषयन को टार-टार।।टेक।।
इन सेवत अनादि दुःख पायो, जनम-मरन बहु धार-धार।।१।।
कर्माश्रित बाधाजुत फांसी, बन्ध बढ़ावन द्वन्द्वकार।
ये न इन्द्रिय के तृप्तिहेतु जिमि, तिस न बुझावत क्षार वार।।२।।
इनमें सुख कलपना अबुध के, बुधजन मानत दुःख प्रचार।
इन तजि ज्ञानपियूष चख्यौ तिन, 'दौल' लही भव वार पार।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छांड़त क्यों नहिं रे .....

छांड़त क्यों नहिं रे, हे नर ! रीति अयानी।।टेक।।
बार-बार सिख देत सुगुरु यह, तू दे आनाकानी ।।१।।
विषय न तजत न भजत बोध-व्रत, दुःख-सुख जाति न जानी ।
शर्म चहैं न लहैं शठ, ज्यौं घृतहेत बिलोवत पानी ।।२।।
तन धन सदन स्वजन जन तुझसौं, ये परजाय बिरानी ।
इन परिनमन विनश-उपजन सों, तैं दुःख-सुख कर मानी ।।३।।
इस अज्ञान तैं चिर दुःख पाये, तिनकी अकथ कहानी ।
ताको तज दृग-ज्ञान-चरन भज, निजपुर गति शिव ठानी ।।४।।
यह दुर्लभ नरभव-सुसंग लहि, तत्त्व लखावन बानी ।
'दौल' न कर अब पर में ममता, धर-समता सुखदानी ।।५।।

मत कीज्यौ जी यारी .....

मत कीज्यौ जी यारी, ये भोग भुजंग सम जान के।।टेक।।
भुजंग डसत इक बार नसत है, ये अनन्त मृतुकारी।
तिसना तृषा बढ़ै इन सेयें, ज्यौं पीये जल खारी।।१।।
रोग वियोग शोक वनिता धन, समता-लता कुठारी।
केहरि करि अरी न देत ज्यों, त्यों ये दैं दुःख भारी।।२।।
इनमें रचे देव तरु थाये, पाये शुभ्र मुरारी।
जे विरचे ते सुरपति अरचे, परचे सुख अधिकारी।।३।।
पराधीन छिन मांहि छीन ह्वै, पापबन्ध करतारी।
इन्हें गिनैं सुख आकमाहिं तिन, आमतनी बुधि धारी।।४।।
मीन मतङ्ग पतङ्ग भृङ्ग मृग, इन वश भये दुखारी।
सेवत ज्यौं किंपाक ललित, परिपाक समय दुःखकारी।।५।।
सुरपति नरपति खगपति हू की, भोग न आस निवारी।
'दौल' त्याग अब भज विराग सुख, मिलै मोक्ष सुखकारी।।६।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मानत क्यों नहिं रे .....

मानत क्यों नहिं रे, हे नर सीख सयानी।।टेक।।
भयौ अचेत मोह मद पीके, अपनी सुधि विसरानी ।।१।।
दुःखी अनादि कुबोध अव्रत तैं, फिर तिनसौं रति ठानी ।
ज्ञानसुधा निजभाव न चाख्यौ, पर-परणति मति सानी ।।२।।
भव असारता लखै न क्यों जहं, नृप ह्वै कृमि बिट थानी ।
सधन निधन नृप दास स्वजन रिपु, दुःखिया हरिसे प्रानी ।।३।।
देह एह गद-गेह इस, हैं बुह विपति निशानी ।
जड़ मली छिनछीन करमकृत, बन्धन शिवसुख हानी ।।४।।
चाह ज्वलन ईंधन विधि वन घन, आकुलता कुलखानी ।
ज्ञान सुधा सर शोषन रवि ये, विषय अमति मृतुदानी ।।५।।
यौं लखि भव तन भोग विरचि करि, निजहित सुन जिनवानी ।
तज रुष-राग 'दौल' अब अवसर, यह जिनचन्द्र बखानी ।।६।।

मत कीज्यौ जी यारी .....

मत कीज्यौ जी यारी, घिनगेह देह जड़ जान के।।टेक।।
मात तात रज वीरज सौं यह, उपजी मल फुलवारी ।
अस्थिमाल स्नायु जाल की, लाल लाल जल क्यारी ।।१।।
कर्म कुरङ्ग थली पुतली यह मुत्रपुरीष भण्डारी ।
चर्ममडी रिपुकर्म घड़ी, धन-धर्म चुरावन हारी ।।२।।
जे जे पावन वस्तु जगत में, ते इन सर्व बिगारी ।
स्वेद मेद कफ क्लेशमयी, बहु मदगद व्याल पिटारी ।।३।।
जो संयोग रोगभव तौलौं, जो वियोग शिवकारी ।
बुध तासौं न ममत्व करै, यह मूढ़मतिन को प्यारी ।।४।।
जिन पोषी ते भये सदोषी, तिन पाये दुःख भारी ।
जित तप ठान ध्यान कर शोषी, भये मोक्ष अधिकारी ।।५।।
सुरधनु शरद जलद जल बुदबुद, त्यौं झट विनशनहारी ।
यातैं भिन्न जान निज चेतन, 'दौल' होहु शमधारी ।।६।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जानत क्यों नहिं रे .....

जानत क्यों नहिं रे, हे नर आतमज्ञानी।।टेक।।
राग-दोष पुद्गल की सम्पति, निहचै शुद्ध निशानी ।।१।।
जाय नरक पशु नर सुरगति में, यह परजाय विरानी ।
सिद्धसरूप सदा अविनाशी, मानत बिरले प्रानी ।।२।।
कियौ न काहू हरै न कोई, गुरु शिख कौन कहानी ।
जनम-मरन मलरहित विमल है, कीच बिना जिमि पानी ।।३।।
सार पदारथ है तिहुं जग में, नहिं क्रोधी नहिं मानी ।
'दौलत' सो घटमांहि विराजे, लखि हूजे शिवथानी ।।४।।

और सबै जगद्वन्द मिटावो .....

और सबै जगद्वन्द मिटावो, लौं लावो जिन आगम ओरी।।टेक।।
है असार जगद्वन्द बन्धकर, यह कछु गरज न सारत तोरी।
कमला चपला यौवन सुरधनु, स्वजन पथिकजन क्यों रति जोरी।।१।।
विषय कषाय दुःखद दोनों ये, इनतैं तोर नेह की डोरी।
परद्रव्यन को तू अपनावत, क्यों न तजे ऐसी बुधि भोरी।।२।।
बीत जाय सागरथिति सुर की, नर परजाय तनी अति थोरी।
अवसर पाय 'दौल' मत चूको, फिर न मिलै मणि सागर बोरी।।३।।

चेतन कौन अनीति गही रे .....

चेतन कौन अनीति गही रे, तू ना मानैं सुगुरु कही रे।।टेक।।
जिन विषयनवश बहु दुःख पायो, तिनसौं प्रीति ठही रे।।१।।
चिन्मय ह्वै देहादि जड़िन सौं, तो मति पागि रही रे।
सम्यग्दर्शन ज्ञान भाव निज, तिनकौं गहत नहीं रे।।२।।
जिनवृष पाय बिहाय रागमय, निजहित हेत यही रे।
'दौलत' जिन यह सीख धरी उर, तिन शिव सहज लही रे।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आज मैं परम पदारथ पायौ .....

आज मैं परम पदारथ पायौ, प्रभु चरनन चित लायो।।टेक।।
अशुभ गये शुभ प्रगट भये हैं, सहज कल्पतरु छायो ।।१।।
ज्ञानशक्ति तप ऐसी जाकी, चेतनपद दरसायो ।।२।।
'दौलत' अष्टकर्म रिपु जीतन, शिवपथ अंकुर पायो ।।३।।

मानत नहिं जिय निपट अनारी .....

मानत नहिं जिय निपट अनारी, सीख देत सुगुरु हितकारी।
कुमति कुनारि संग रति मानत, सुमति सुनारि विसारी।।टेक।।
नर परजाय सुरेश चहैं सो, चखि विषविषय विगारी।
त्याग अनाकुल ज्ञान चाह, पर आकुलता विसतारी।।१।।
अपना भूल आप समता निधि, भवदुःख भरत भिखारी।
पर-द्रव्यन की परणति को शठ, वृथा बनत करतारी।।२।।
जिस कषायदव जरत तहां, अभिलाष छटा घृत डारी।
दुख सौ डरै करै दुःखकारन, तैं नित प्रीति करारी।।३।।
अतिदुर्लभ जिन बैन श्रवन करि, संशयमोह निवारी।
'दौल' स्व-पर हित-अहित जानके, होवहु शिवमगचारी।।४।।

मोही जीव भरमतम तैं नहिं .....

मोही जीव भरमतम तैं नहिं, वस्तुस्वरूप लखै है जैसे।।टेक।।
जे-जे जड़-चेतन की परणति, है अनिवार परनबै वैसे।
वृथा दुःखी शठकर विकलप यौं नहिं परिनवै परिनबै ऐसे।।१।।
अशुचि सरोग समल जड़मूरत, लखत बिलात गगनघन जैसै।
सो तन ताहि निहार अपनपो, चहत अबाध रहै थिर कैसै।।२।।
सुत-तिय-बंधु वियोग योग यौं, ज्यौं सरायजन निकसै पैसैं।
बिलखत हरखत शठ अपने लखि, रोवत हंसत मत्तजन जैसे।।३।।
जिन-रवि बैन किरन लहि जिन, निजरूप सुभिन्न कियौ परमैसें।
सो जगमौल 'दौल' को चिर थित, मोहविलास निकास हृदैसें।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अरे जिया! जग धोखे की टाटी .....

अरे जिया! जग धोखे की टाटी।।टेक।।
झूठा उद्यम लोक करत हैं, जामैं निशदिन घाटी।
जान-बूझ के अन्ध बने हैं, आँखिन बांधी पाटी।।१।।
निकल जायेंगे प्राण छिनक में, पड़ी रहैगी माटी।
'दौलतराम' समझ मन अपने, दिल की खोल कपाटी।।२।।

निपट अयाना तैं आपा न जाना .....

निपट अयाना तैं आपा न जाना, नाहक भरम भुलाना।
पीय अनादि मोहमद मोह्यो, परपद में निज माना।।टेक।।
चेतन चिन्ह भिन्न जड़ता सो, ज्ञान दरश रस साना।
तन में छिप्यो लिप्यो न तदपि ज्यों, जल में कजदल माना।।१।।
सकल भाव निज-निज परनतिमय, कोई न होय बिराना।
तू दुःखिया परकृत्य मानि ज्यों, नभ ताडन श्रम ठाना।।२।।
अजगन में हरि मूल अपनपो, भयो दीन हैराना।
'दौल' सुगुरुधुनि सुनि निज में निज, पाय लह्यो सुखथाना।।३।।

हे हितवांछक प्रानी रे .....

हे हितवांछक प्रानी रे, कर यह रीति सयानी।।टेक।।
श्रीजिनचरन चितार धार गुन, परम विराग विज्ञानी।।१।।
हरन भयामय स्व-पर दयामय, सरधौ वृष सुखदानी।
दुविध उपाधि बाध शिवसाधक, सुगुरु भजौ गुणथानी।।२।।
मोह तिमिर हर मिहर भजो श्रुत, स्यात्पद जास निशानी।
सप्त तत्त्व नव अर्थ विचारहु, जो वरनै जिनवानी।।३।।
निज-पर भिन्न पिछान मान पुनि, होतु आप सरधानी।
जो इनको विशेष जानत सो, ज्ञायकता मुनि मानी।।४।।
फिर व्रत समिति गुपतिसजि अरु, तजि प्रवृति शुभास्रव दानी।
शुद्ध स्वरूपाचरन लीन ह्वै 'दौल' वरौ शिवरानी।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसा योगी क्यों न अभयपद पावै .....

ऐसा योगी क्यों न अभयपद पावै, सो फेर न भव में आवै ।
संसय-विभ्रम-मोह विवर्जित, स्व-पर स्वरूप लखावै।।टेक।।
लख परमातम चेतन को पुनि, कर्मकलंक मिटावै ।।१।।
भव-तन-भोग विरक्त होय तन, नग्न सुभेष बनावै ।
मोह-विकार निवार निजातम, अनुभव में चित लावै ।।२।।
त्रस-थावर बध त्याग सदा, परमाद दशा छिटकावै ।
रागादिक वश झूठ न भाखै, तृण हू न अदत्त गहावै ।।३।।
बाहिर नारि त्यागि अन्तर, चिदब्रह्म सुलीन रहावै ।
परमाकिंचन धर्मसार सो, द्विविध प्रसंग बहावै ।।४।।
पञ्च समिति त्रय गुप्ति पाल, व्यवहार-चरनमग धावै ।
निश्चल सकल कषायरहित ह्वै, शुद्धातम थिर थावै ।।५।।
कुंकु पंक दास रिपु तृण मणि, व्याल माल सम भावै ।
आरत रौद्र कुध्यान विडारे, धर्मशुकल को ध्यावै ।।६।।
जाके सुख समाज की महिमा, कहत इन्द्र अकुलावै ।
'दौल' तासपद होय दास सो, अविचल ऋद्धि लहावै ।।७।।

हमारी वीर हरो भवपीर .....

हमारी वीर हरो भवपीर।।टेक।।
मैं दुःख तपित दयामृत सर तुम, लखि आयो तुम तीर।
तुम परमेश मोक्षमग दर्शक, मोह दवानल नीर।।१।।
तुम बिनहेत जगत उपकारी, शुद्ध चिदानन्द धीर।
गनपति ज्ञानसमुद्र न लंघैं, तुम गुनसिन्धु गहीर।।२।।
याद नहीं मैं विपति सही जो, धर-धर अमित शरीर।
तुम गुन चिन्तत नशात तथा भय, ज्यों घन चलत समीर।।३।।
कोटवार की अरज यही है, मैं दुःख सहूँ अधीर।
हरहु वेदनाफन्द 'दौल' की, कतर कर्म जंजीर।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसा मोही क्यों न अधोगति जावै .....

ऐसा मोही क्यों न अधोगति जावै, जाको जिनवानी न सुहावैं।।टेक।।
वीतराग से देव छोड़कर, कुगुरु कुदेव मनावैं।
कल्पलता दयालुता तजि, हिंसा इन्द्रीयनि बावैं।।१।।
रचैं न गुरु निर्ग्रन्थ भेष, बहु-परिग्रही गुरु भावैं।
पर-धन पर-तिय कौ अभिलाषे, अशन अशोधित खावैं।।२।।
पर को विभव देख ह्वै विह्वल, पर-दुःख हरख लहावैं।
धर्म हेतु इक दाम न खरचै, उपवन लक्ष बहावैं।।३।।
ज्यों गृह में संचै बहु अघ त्यों, वन हू में उपजावैं।
अम्बर त्याग कहाय दिगम्बर, बाघम्बर तन छावैं।।४।।
आरम्भ तज शठ यन्त्र मन्त्र करि, जनपै पूज्य मनावैं।
बाम धाम तज दासी राखे, बाहिर मढ़ी बनावैं।।५।।
नाम धराय जती तपसी मन, विषयनि में ललचावैं।
'दौलत' सो अनन्त भव भटकै, औरन को भटकावैं।।६।।

छाँडि दे या बुधि भोरी .....

छाँडि दे या बुधि भोरी, वृथा तन से रति जोरी।
यह पर है न रहै थिर पोषत, सकल कुमल की झोरी।।टेक।।
यासौं ममता कर अनादि तैं, बंधो कर्म की डोरी।
सहैं दुःख जलधि हिलोरी, छाँडि दे या बुधि भोरी।।१।।
यह जड़ है तू चेतन, यौं ही अपनावत बरजोरी।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण निधि, ये हैं सम्पत तोरी।।२।।
सदा विलसौ शिवगोरी, छाँडि दे या बुधि भोरी।
सुखिया भये सदीव जीव जिन, यासौं ममता तोरी।।३।।
'दौल' सीख यह लीजै पीजे, ज्ञान पियूष कटोरी।
मिटै परवाह कठोरी, छाँडि दे या बुधि भोरी।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मान ले या सिख मोरी .....

मान ले या सिख मोरी, झुकै मत भोगन ओरी ।।टेक।।
भोग भुजगभोग सम जानो, जिन इनसे रति जोरी ।
ते अनन्त भव भीम भरे दु:ख, परे अधोगति पोरी ।।
बँधे दृढ़ पातक डोरी, मान ले या सिख मोरी ।।१।।
इनको त्याग विरागी जे जन, भये ज्ञानवृषधोरी । घ
तिन सुख लहचो अचल अविनाशी, भवफांसी दई तोरी ।।
रमैं आतम रस बोरी, मान ले या सिख मोरी ।।२।।
भोगन की अभिलाष हरन को, त्रिजग सम्पदा थोरी ।
यातैं ज्ञानानन्द 'दौल' अब, पियो पियूष कटोरी ।।
मिटै भवव्याधि कठोरी, मान ले या सिख मोरी ।।३।।

तोहि समझायो सौ-सौ बार .....

तोहि समझायो सौ-सौ बार, जिया तोहि ।
देख सुगुरु की पर-हित में रति, हित उपदेश सुनायो ।।टेक।।
विषय भुजंग सेय सुख पायो, पुनि तिनसौं लिपटायो।
स्वपद विसार रच्यौ पर-मग में, मदरत ज्यौं बोरायो।।१।।
तन धन स्वजन नहीं हैं तेरे, नाहक नेह लगायो।
क्यों न तजै भ्रम चाख समामृत, जो नित संत सुहायो।।२।।
अबहूँ समझ कठिन यह नरभव, जिन वृष बिना गमायो।
ते विलखैं मनि डार उदधि में, 'दौलत' को पछतायो।।३।।

आपा नहिं जाना तूने .....

आपा नहिं जाना तूने, कैसा ज्ञानधारी रे।।टेक।।
देहाश्रित करि क्रिया आपको, मानत शिवमगचारी रे।
निज निवेद बिन घोर परीषह, विफल कही जिन सारी रे।।१।।
शिव चाहै तो द्विविधकर्म तैं, कर निज परिणति न्यारी रे।
'दौलत' जिन निजभाव पिछान्यौ, तिन भवविपति विदारी रे।।२।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जब तैं आनन्द जननि दृष्टि .....

जब तैं आनन्द जननि दृष्टि परी माई ।।टेक।।
तब तैं संसय विमोह भरमता विलाई ।।१।।
मैं हूँ चित-चिन्ह भिन्न, पर तें पर जड़स्वरूप ।
दोउन की एकता, सु जानी दु:खदाई ।।२।।
रागादिक बन्धहेत, बन्धन बहु विपति देत ।
संवर हित जान तासु, हेतु ज्ञानताई ।।३।।
सब सुखमय शिव हैं तसु, कारन विधि झारन इमि ।
तत्त्व की विचारन, जिनवानि सुधि कराई ।।४।।
विषय-चाह ज्वाल तैं, दहचो अनन्त काल तैं ।
सुधांबु स्यात्पदांक गाहतें, प्रशान्ति आई ।।५।।
या बिन जगजाल में, न शरन तीनकाल में ।
सम्हाल चित भजो सदीव, 'दौल' यह सुहाई ।।६।।

अपनी सुधि भूल आप .....

अपनी सुधि भूल आप, आप दु:ख उपायो ।।टेक।।
ज्यौं शुक नभचाल विसरि, नलिनी लटकायो ।।१।।
चेतन अविरुद्ध शुद्ध, दरशबोधमय विशुद्ध ।
तजि जड़ रस-परस रूप, पुद्गल अपनायो ।।२।।
इन्द्रिय सुख-दु:ख में नित्त, पाग राग-रुष में चित्त ।
दायक भवविपति वृन्द, बन्ध को बढ़ायो ।।३।।
चाह-दाह दाहै, त्यागो न ताह चाहै ।
समतासुधा न गाहै जिन, निकट जो बतायो ।।४।।
मानुषभव सुकुल पाय, जिनवर शासन लहाय ।
'दौल' निजस्वभाव भज, अनादि जो न ध्यायो ।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिया तुम चालो अपने देश .....

जिया तुम चालो अपने देश, शिवपुर है थारो शुभ थान।
लख चौरासी में बहु भटके, लहचो न सुख को लेस।।टेक।।
मिथ्यारूप धरे बहुतेरे, भटके बहुत विदेश।
विषय-कषाय बहुत दुःख पाये, भुगते बहुत कलेश।।१।।
भयो तिरंच नारकी नर सुर, करि-करि नाना भेष।
'दौलतराम' तोड़ जग नाता, सुनो सुगुरु उपदेश।।२।।

मेरो मन ऐसी खेलत होरी .....

मेरो मन ऐसी खेलत होरी।।टेक।।
मन मिरदंग साजकरि त्यारी, तन के तमूरा बनो री।
सुमति सुरंग सरंगी बजाई, ताल दोउ कर जोरी।।१।।
राग पांचौं पद कोरी, मेरो मन ऐसी खेलत होरी।
समकिति रूप नीर भर झारी, करुना केशर घोरी।।२।।
ज्ञानमयी लेकर पिचकारी, दोउ करमाहिं सम्होरी।
इन्द्री पांचौं सखि बोरी, मेरो मन ऐसी खेलत होरी।।३।।
चतुरदान को है गुलाल सो, भरि-भरि मूठि चलोरी।
तप मेवा की भरि निज झोरी, यश को अबीर उड़ोरी।।४।।
रंग जिनधाम मचोरी, मेरो मन ऐसी खेलत होरी।
'दौलत' शिशु खेलें अस होरी, भव-भव दुःख टलोरी।।५।।
शरना ले इक श्रीजिन को री, जग में लाज हो तोरी।
मिलै फगुआ शिव होरी, मेरो मन ऐसी खेलत होरी।।६।।

शिवमग दरसावन रावरो दरस .....

शिवमग दरसावन रावरो दरस।।टेंक।।
परपद चाह दाह गद नाशन, तुम वच भेषज पान सरस।।१।।
गुण चितवत निज अनुभव प्रगटै, विघटै विधि ठग दुविध तरस।।२।।
'दौल' अवाची सम्पति सांची, पाय रहै थिर राच सरस।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धन-धन साधर्मीजन मिलन की घरी .....

धन-धन साधर्मीजन मिलन की घरी, बरसत भ्रमताप हरन ज्ञानघनझरी।।
जाके बिन पाये भवविपति अति भरी निजपरहितअहित की कछू न सुधि परी।
जाके परभाव चित्त सुथिरताकरी, संशय-भ्रम-मोह की सुवासना टरी।।
मिथ्या गुरु-देव सेव टेव परिहरी वीतराग देव सुगुरु सेव उरधरी।
चारों अनुयोग सुहितदेश दिठपरी शिवमग के लाह की सुचाह विस्तरी।।
सम्यक तरु धरनि येह करन करिहरी भवजल को तरनि समर भुजग विषज।
पूरवभव या प्रसाद रमनि शिववरी सेवो अब 'दौल' याहि बात यह खरी।।

शिवपुर की डगर समरससौं भरी .....

शिवपुर की डगर समरससौं भरी, सो विषय विरसरचि चिरबिसरी।।
सम्यक् दरश-बोध-व्रतन त्रय भव दुःखदावानल मेघझरी।।
ताहि न पाय तपाय देह बहु, जनम-मरन करि विपति भरी।
कालपाय जिनधुनि सुनि मैं जन, ताहि लहूँ सोई धन्य घरी।।
ते जन धनि या मांहि चरत नित, तिन कीरति सुरपति उचरी।
विषयचाह भवराह त्याग अब, 'दौल' हरी रजरहसि अरी।।

हो तुम शठ अविचारी जियरा .....

हो तुम शठ अविचारी जियरा, जिनवृष पाय वृथा खोवत हो।।
पी अनादि गदमोह स्वगुननिधि, भूल अचेत नींद सोवत हो।।
स्वहित सीखवच सुगुरु पुकारत, क्यों न खोल उर-दृग जोवत हो।
ज्ञान विसार विषयविष चाखत, सुरतरु जारि कनक बोवत हो।।
स्वारथ सगे सकल जनकारन, क्यों निज पाप भार ढ़ोवत हो।
नरभव सुकुल जैनवृष नौका, लहि निज क्यों भवजल डोवत हो।।
पुण्य-पाप फल वात-व्याधिवश, छिन में हँसत छिनक रोवत हो।
संयम सलिल लेय निज उर के, कलिमल क्यों न 'दौल' धोवत हो।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देखो जी आदीश्वर स्वामी .....

देखो जी आदीश्वर स्वामी, कैसा ध्यान लगाया है।
कर ऊपर कर सुभग विराजे, आसन थिर ठहराया है।।टेक।।
जगत-विभूति भूति सम तजिकर, निजानन्द पद ध्याया है।
सुरभित श्वासा आशाबासा, नासादृष्टि सुहाया है।।१।।
कञ्चन वरन चलै मन रञ्च न, सुरगिर ज्यों थिर थाया है।
जास पास अहि-मोर मृगी-हरि, जाति विरोध नसाया है।।२।।
शुभ उपयोग हुताशन में जिन, वसुविधि समिध जलाया है।
स्यामलि अलिकावलि सार सोहै, मानो धुआँ उड़ाया है।।३।।
जीवन-मरन-अलाभ-लाभ जिन, तृन -मनि को सम भाया है।
सुर-नर-नाग नमहिं पद जाकै, 'दौल' तास जस गाया है।।४।।

सुन जिन बैन, श्रवन सुख पायो .....

सुन जिन बैन, श्रवन सुख पायो ।।टेक।।
नस्यौ तत्त्व दुर अभिनिवेष-तम, स्याद उजास कहायो।
चिर बिसरचो लहचो आतम रैन श्रवन सुख पायो।।१।।
दहचो अनादि असंजम दवतैं, लहि व्रत सुधा सिरायौ।
धीर धरी मन जीतन मैन श्रवन सुख पायौ।।२।।
भरो विभाव अभाव सकल अब, सकल रूप चित लायौ।
'दौल' लहचो अब अविचल जैन, श्रवन सुख पायो।।३।।

हे जिन मेरी ऐसी बुधि कीजै .....

हे जिन मेरी ऐसी बुधि कीजै।।टेक।।
राग-द्वेष दावानाल तें बचि, समता रस में भीजै।
पर कों त्याग अपनपो निज में, लाग न कबहूँ छीजै।।१।।
कर्म-कर्म फल माहिं न राचै, ज्ञान सुधारस पीजै।
मुझ कारज के तुम कारन वर, अरज 'दौल' की लीजै।।२।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानी ऐसी होली मचाई .....

ज्ञानी ऐसी होली मचाई।।टेक।।

राग कियो विपरीत विपन घर, कुमति कुसौति सुहाई।
धार दिगम्बर कीन्ह सु संवर, निज-पर भेद लखाई।।
घात विषयिन की बचाई, ज्ञानी ऐसी होली मचाई।।१।।
कुमति सखा भजि ध्यानभेद सम, तन में तान उड़ाई।
कुम्भक ताल मृदंग सौं, पूरक रेचक बीन बजाई।।
लगन अनुभव सों लगाई, ज्ञानी ऐसी होली मचाई।।२।।
कर्म बलीता रूपनाम अरि, वेद सुइन्द्रि गनाई।
दे तप अग्नि भस्म करि तिनको, धूल अघाति उड़ाई।।
भव्य शिवपन्थ बताई, ज्ञानी ऐसी होली मचाई।।३।।
ज्ञान को फाग भागवश आवै, लाख करौ चतुराई।
सो गुरु दीनदयाल कृपाकरि, 'दौलत' तोहि बताई।।
नहीं चित्त से बिसराई, ज्ञानी ऐसी होली मचाई।।४।।

हे जिन ! तेरे मैं शरणै आया .....

हे जिन ! तेरे मैं शरणै आया।।टेक।।

तुम हो परमदयाल जगत गुरु, मैं भव-भव दुःख पाया।।१।।
मोह महादुठ घेर रह्यो मोहि, भव कानन भटकाया।
नित निज ज्ञान- चरन निधि विसर्यो, तन,धन कर अपनाया।।२।।
निजानन्द अनुभव पियूष तज, विषय हलाहल खाया।
मेरी भूल भूल दुःखदाई, निमित मोह-विधि पाया।।३।।
सो दुठ होत शिथिल तुमरे ढ़िग, और न हेत लखाया।
शिवस्वरूप शिवमगदर्शक तुम, सुयश मुनीगन गाया।।४।।
तुम हो सहज निमित जगहित के, मो उर निश्चय भाया।
भिन्न होहुं विधि तैं सो कीजे, 'दौल' तुम्हें सिर नाया।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भाखूँ हित तेरा, सुन हो मन मेरा.....

भाखूँ हित तेरा, सुन हो मन मेरा।।टेक।।
नर नरकादिक चारौं गति में, भटक्यो तू अधिकानी।
पर-परणति मैं प्रीति करी, निज परणति नाहिं पिछानी।।
सहै दुःख क्यों न घनेरा, भाखूँ हित तेरा।।१।।
कुगुरु कुदेव कुपन्थ पंक फंसि, तैं बहु खेद लहायो।
शिवसुख दैन जैन जगदीपक, सो तैं कबहुं न पायो।।
मिटचो न अज्ञान अन्धेरा, भाखूँ हित तेरा।।२।।
दर्शन-दर्शन ज्ञान चरण तेरी, सो ठगन ठगी है।
पांचो इन्द्रिय के विषयन में, तेरी बुद्धि लगी है।।
भया इनका तू चेरा, भाखूँ हित तेरा।।३।।
तू जगजाल विषै बहु उरझ्यौ, अब कर ले सुरझेरा।
'दौलत' नेमिचरन पंकज का, हो तू भ्रमर सबेरा।।
नशै ज्यों दुःख भवकेरा, भाखूँ हित तेरा।।४।।

हे जिन तेरो सुजस उजागर .....

हे जिन तेरो सुजस उजागर, गावत हैं मुनिजन ज्ञानी।।टेक।।
दुर्जय मोह महाभट जाने, निजवश कीने जगप्रानी।
सो तुम ध्यानकृपान पानिगहि, ततछिन ताकी थिति भानी।।१।।
सुप्त अनादि अविद्या निद्रा, जिन जन निजसुधि विसरानी।
ह्वै सचेत तिन निज-निधि पाई, श्रवन सुनी जब तुम बानी।।२।।
मंगलमय तू जग में उत्तम, तुही शरन शिवमग दानी।
तुम पद-सेवा परम औषध, जन्म-जरा-मृत गद हानी।।३।।
तुमरे पञ्चकल्यानक माहीं, त्रिभुवन मोददशा ठानी।
विष्णु विदम्बर, जिष्णु, दिगम्बर, बुधशिव कहा ध्यावत ध्यानी।।४।।
सर्व दर्वगुनपरजय परनति, तुम सुबोध में नहिं छानी।
तातैं 'दौल' दास उर आशा, प्रगट करो निजरससानी।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हे नर! भ्रमनींद क्यों न छांड़त.....

हे नर! भ्रमनींद क्यों न, छांड़त दुःखदाई।
सेवत चिरकाल सोंज, आपनी ठगाई।।टेक।।
मूरख अघ कर्म कहा, भेदैं नहिं मर्म लहा।
लागै दुःख-ज्वाल की न, देह कै तताई।।१।।
जम के रव बाजते, सुभैरव अति गाजते।
अनेक प्रान त्यागते, सुनै कहा न भाई।।२।।
पर को अपनाय आप, रूप को भुलाय हाय।
करन-विषय दारु जार, चाह दौं बढ़ाई।।३।।
अब सुन जिनबान, राग-द्वेष को जघान।
मोक्षरूप निज पिछान 'दौल', भज विरागताई।।४।।

चिदराय गुन सुनो मुनो प्रशस्त गुरु गिरा.....

चिदराय गुन सुनो मुनो, प्रशस्त गुरु गिरा।
समस्त तज विभाव, हो स्वकीय में थिरा।।टेक।।
निज भाव के लखाव बिन, भवाब्धि में परा।
जामन मरन जरा त्रिदोष, अग्नि में जरा।।१।।
फिर सादि औ अनादि दो, निगोद में परा।
तहं अंक के असंख्य भाग, ज्ञान ऊबरा।।२।।
तहां भव अन्तर मुहूर्त के, कहे गनेश्वरा।
छयासठ सहस त्रिशत छतीस, जन्म धर मरा।।३।।
यौं वशि अनन्तकाल फिर तहांतैं नीसरा।
भूजल अनिल अनल प्रतेक, तरु में तन धरा।।४।।
अनुंधरीसु कुन्थु, काणमच्छ अवतरा।
जल थल खचर कुनर नरक, असुर उपज मरा।।५।।
अब के सुथल सुकुल सुसंग, बोध लहि खरा।
'दौलत' त्रिरत्न साध लाध, पद अनुत्तरा।।६।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धनि मुनि जिन यह भाव पिछाना.....

धनि मुनि जिन यह भाव पिछाना।।टेक।।
तन व्यय वांछित प्रापति मानो, पुण्य उदय दुःख जाना।।१।।
एक विहारी सकल ईशता, त्याग महोत्सव माना।
सब सुख परिहार सार सुख, जानि रागमय भाना।।२।।
चित स्वभाव को चिन्त्य प्रान निज, विमल ज्ञान-दृग साना।
'दौल' कौन सुख जान लह्यो तिन, करो शांतिरस पाना।।३।।

चित चिन्तकैं चिदेश कब .....

चिंत चिन्तकैं चिदेशकब, अशेष पर वमूं।
दुःखदा अपार विधि, दुचार-की चमूं दमूं।।टेक।।
तजि पुण्य-पाप थाप आप, आप में रमूं।
कब राग-आग शर्म-बाग, दागिनी शमूं।।१।।
दृग-ज्ञान भानतैं मिथ्या, अज्ञानतम दमूं।
कब सर्व जीव प्राणिभूत, सत्त्वसौं छमूं।।२।।
जल मल्ल लिप्त-कल सुकल, सुबल्ल परिनमूं।
दल के त्रिशल्ल मल्ल कब, अटल्लपदं पमूं।।३।।
कब ध्याय अज अमर को, फिर न भवविपिन भमूं।
जिन पूर कौल 'दौल' को यह, हेतु हौं नमूं।।४।।

जिन राग-दोष त्यागा वह सतगुरु .....

जिन राग-दोष त्यागा, वह सतगुरु हमारा।।टेक।।
तज राजऋद्ध तृणवत, निज काज सम्भारा।।१।।
रहता है वह वनखण्ड में, धरि ध्यान कुठारा।
जिन मोह महा तरु को, जड़मूल उखारा।।२।।
सर्वांग तज परिग्रह, दिक् अम्बर धारा।
अनन्त ज्ञान गुन समुद्र, चारित्र भण्डारा।।३।।
शुक्लाग्नि को प्रजाल के, बसु कानन ज़ारा।
ऐसे गुरु को 'दौल' है, नमोऽस्तु हमारा।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

.....

जिनवर आनन-भान निहारत

जिनवर आनन-भान निहारत, भ्रमतमघान नसाया है।।टेक।।
वचन-किरन प्रसरन तैं भविजन, मनसरोज सरसाया है।
भवदु:खंकारन सुख विसतारन, कुपथ सुपथ दरसाया है।।१।।
बिनसाई कज जलसरसाई, निसिचर समर दुराया है।
तस्कर प्रबल कषाय पलाये, जिन धन-बोध चुराया है।।२।।
लखियत उडुन कुभाव कहूँ अब, मोह उलूक लजाया है।
हंस कोक को शोक नश्यो निज, परनति चकवी पाया है।।३।।
कर्मबंधकज कोष बंधे चिर, भव अलि गुञ्जन पाया है।
'दौल' उजास निजातम अनुभव, उर जग अन्तर छाया है।।४।।

.....

चेतन अब धरि सहज समाधि

चेतन अब धरि सहज समाधि, जातैं यह विनशै भवव्याधि ।।टेक।।
मोह ठंगौरी खायके रे, पर को आपा जान ।
भूल निजातक ऋद्धि को तैं, पाये दु:ख महान ।।१।।
सादि अनादि निगोद दोय में, परचो कर्मवश जाय ।
श्वास उसास मंझार तहां भव, मरन अठारह थाय ।।२।।
काल अनन्त तहां यौं बीत्यो, जब भइ मन्द कषाय ।
भूजल अनिल अनल पुन तरु ह्वै, काल असंख्य गमाय ।।३।।
क्रम-क्रम निकसि कठिन तैं पाई, शंखादिक परजाय ।
जल थल खरच होय अघ ठाने, तस वस श्वभ्र लहाय ।।४।।
तित सागर लों बहु दु:ख पाये, निकस कबहुं नर थाय ।
गर्भ जन्म शिशु तरुण वृद्ध दु:ख, सहे कहे नहिं जाय ।।५।।
कबहूँ किंचित पुण्यपाक तैं, चउविधि देव कहाय ।
विषय आश मन त्रास लही तहं, मरन समय बिललाय ।।६।।
यों अपार संसार जलधि में, भ्रम्यो अनन्ते काल ।
'दौलत' अब निजभाव नाव चढ़ि, लै भवाब्धि की पाल ।।७।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय-जय जग भरम-तिमिर हरन.....

जय-जय जग भरम-तिमिर हरन जिन धुनी।।टेक।।
या बिन समुझे अजौं न सोंज निज मुनी।
यह लखि हम निज-पर अविवेकता लुनी।।१।।
जाको गनराज अंग-पूर्वमय चुनी।
सोई कही कुन्दकुन्द प्रमुख बहु मुनी।।२।।
जे चर जड़ भये पीय मोह बारुनी।
तत्त्व पाय चेते जिन थिर सुचित सुनी।।३।।
कर्ममल पखारने हि विमल सुर धुनी।
तब विलम्ब अम्ब करो 'दौल' उर पुनी।।४।।

घड़ि-घड़ि पल-पल छिन-छिन निश-दिन.....

घड़ि-घड़ि पल-पल छिन-छिन निश-दिन, प्रभुजी का सुमिरन कर ले रे।।टेक।
प्रभु सुमिरे तैं पाप कटत है, जनम-मरन दुःख हर ले रे।।१।।
मन-वच-काय लगाय चरन चित, ज्ञान हिये बिच धर ले रे।।२।।
'दौलतराम' धर्म नौका चढ़ि, भवसागर तैं तर ले रे।।३।।

निरखत जिनचन्द्र-बदन .....

निरखत जिनचन्द्र-बदन, स्वपद सुरुचि आई।।टेक।।
प्रगटी निज आन की, पिछान ज्ञान भान की।
कला उदोत होत काम जामिनी पलाई।।१।।
सास्वत आनन्द स्वाद, पायो बिनस्यो विषाद।
आन में अनिष्ट-इष्ट, कलपना नसाई।।२।।
साधी निज साध की, समाधि मोह-व्याधि की।
उपाधि को विराधि कैं, अराधना सुहाई।।३।।
धन दिन छिन आज सुगुन, चिन्तैं जिनराज अबै।
सुधरे सब काज 'दौल', अचल सिद्धि पाई।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीव तू अनादिही तैं, भूल्यो .....

जीव तू अनादिही तैं, भूल्यो शिवगैलवा।।टेक।।
मोहमदवार पियो, स्वपद विसार दियो।।१।।
पर अपनाय लियौ, इन्द्रि सुख में रचियौ।
भव तैं न भियौ, न तजियौ मनमैलवा।।२।।
मिथ्याज्ञान आचरन, धरि कर कुमरन।
तीन लोक की धरन, तामें कियो है फिरन।।३।।
पायो न शरन, न लहायौ सुख शैलवा।
अब नरभव पायो, सुथल सुकुल आयौ।।४।।
जिन उपदेश भायो, 'दौल' झट छिटकायौ।
पर-परणति दुःखदायिनी चुरैलवा ।।५।।

मैं आयौ, जिन शरन तिहारी.....

मैं आयो, जिन शरन तिहारी।।टेक।।
मैं चिर दुःखी विभाव भाव तैं, स्वाभाविक निधि बिसारी।।१।।
रूप निहार धार तुम गुन सुन, बैन होत भवि शिवमगचारी।
यों मम कारज के कारन तुम, तुमरी सेव एक उर धारी।।२।।
मिल्यौ अनन्त जन्म तैं अवसर, अब बिनऊँ हे भव सरतारी।
परम इष्ट अनिष्ट कल्पना, 'दौल' कहै झट मेट हमारी।।३।।

तू काहे को करत, रति तन में.....

तू काहे को करत, रति तन में, यह अहित मूल जिम कारासदन में ।।
चरमपिहित पलरुधिर लिप्त मलद्वार स्त्रवै छिन-छिन में ।
आयु-निगड़ फंसि विपति भरै सो, क्यों न चितारत मन में ।।
सुचरन लाग त्याग अब याको, जो न भ्रमै भव-वन में ।
'दौल' देह सौं नेह देह को, हेतु कहचो ग्रन्थन में ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संक्षिप्त परिचय

कविवर भागचन्द

(विक्रम संवत् १९०० के लगभग)

१९ वीं शताब्दि के महान अध्यात्म कवि विद्वान भागचन्दजी ईसागढ़ (ग्वालियर) के रहनेवाले थे। आपका संस्कृत और हिन्दी भाषा पर समान अधिकार था।

अद्यावधि आपकी ६ रचनायें प्रकाश में आई हैं, जिसमें उपदेश सिद्धान्त रत्नमाला (भाषा), प्रमाण परीक्षा (भाषा), नेमिनाथ पुराण (भाषा) अमितगति श्रावकाचार (भाषा) के नाम उल्लेखनीय हैं। ये सभी कृतियाँ वि. सं. १९०७ से १९१३ तक लिखी गई हैं, जिससे ज्ञात होता है कि वह उनके साहित्यिक जीवन का स्वर्णिम काल था।

आत्मचिंतक और उच्च विचारक के साथ-साथ कवि हृदय का सुन्दर मेल कविवर भागचंदजी में देखने को मिलता है। अभी तक आपके ८६ पद उपलब्ध हो चुके हैं, जो सभी अपनी मौलिक विशेषता लिये हुये हैं।

अनुभूति की दशा का वर्णन "जब निज आतम अनुभव आवै" — इस पद में उन्होंने अलौकिक रीति से किया है। जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि मानों अनुभूति से बाहर निकलकर ही उन्होंने इसकी रचना की हो इसी पद के अन्त में वे लिखते हैं:—

"भागचन्द ऐसे अनुभव को हाथ जोरि शिर नावै"

इसीप्रकार जिनवाणी से संबंधित "साँची तो गंगा यह वीतराग वाणी", "महिमा है अगम जिनागम की" आदि भजनों से समाज चिरपरिचित है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जब निज आतम अनुभव आवै.....

जब निज आतम अनुभव आवै, और कछु ना सुहावे।।टेक।।
रस नीरस हो जात ततच्छिन्, अक्ष विषय नहीं भावै।।१।।
गोष्ठी कथा कुतूहल विघटै, पुद्गल प्रीति नसावै।
राग दोष युग चपल पक्ष जुत, मन पक्षी मर जावै।।२।।
ज्ञानानन्द सुधारस उमगै, घट अन्तर न समावै।
'भागचन्द' ऐसे अनुभव को, हाथ जोरि सिर नावै।।३।।

श्रीमुनि राजत समता संग.....

श्रीमुनि राजत समता सङ्ग, कायोत्सर्ग समायत अंग।।टेक।।
करतैं नहिं कछु कारज तातैं, आलम्बित भुज कीन अभंग।
गमन काज कछु हूँ नहिं तातैं, गति तजि छाके निजरस रंग।।१।।
लोचनतैं लखिवौ कछु नाहीं, तातैं नासादृग अचलंग।
सुनिवे जोग रह्यो कछु नाहीं, तातैं प्राप्त इकन्त सुचंग।।२।।
तहं मध्यान्ह माहिं निज ऊपर, आयो उग्र प्रताप पतंग।
कैधौं ज्ञान पवनबल प्रज्वलित, ध्यानानल सौं उछलि फुलिंग।।३।।
चित्त निराकुल अतुल उठत जहं, परमानन्द पियूष तरंग।
'भागचन्द' ऐसे श्रीगुरुपद, वन्दत मिलत स्वपद उत्तंग।।४।।

जे सहज होरी के खिलारी.....

जे सहज होरी के खिलारी, तिन जीवन की बलिहारी।।टेक।।
शान्तभाव कुंकुम रस चन्दन, भर ममता पिचकारी।
उड़त गुलाल निर्जरा संवर, अंबर पहरैं भारी।।१।।
सम्यक्दर्शनादि संग लेकै, परम सखा सुखकारी।
भींज रहे निज ध्यान रंग में, सुमति सखी प्रियनारी।।२।।
कर स्नान ज्ञान जल में पुनि, विमल भये शिवचारी।
'भागचन्द' तिन प्रति नित वंदन, भावसमेत हमारी।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

5260

जब निज आतम अनुभव आवै.....

जब निज आतम अनुभव आवै, और कछु न सुहावै।।टेक।।
जिन आज्ञा अनुसार प्रथम ही, तत्त्व प्रतीति अनावै।
वरनादिक-रागादिक तैं, निज चिन्ह भिन्न कर ध्यावै।।१।।
मतिज्ञान फरसादि विषय तजि, आतम सन्मुख धावै।
नय-प्रमाण-निक्षेप सकल, श्रुतज्ञान विकल्प नसावै।।२।।
'चिदहं शुद्धोऽहं' इत्यादिक, आप माँहि बुध आवै।
तन पै वज्रपात गिरत हूँ, नैकु न चित्त डुलावै।।३।।
स्वसंवेद आनन्द बढ़ै अति, वचन कह्यो नहिं जावै।
देखन-जानन-चरन तीन बिच, इक स्वरूप ठहरावै।।४।।
चित्कर्ता चित्कर्म भावचित्,परनति क्रिया कहावै।
साधक-साध्य, ध्यान-ध्येयादिक, भेद कछु न दिखावै।।५।।
आत्मप्रदेश अदृष्ट तदपि, रस स्वाद प्रगट दरसावै।
ज्यौं मिश्री दीषत न अन्ध को, सपरस मिष्ट चखावै।।६।।
जिन जीवन के संसृत, पारावार पार निकटावै।
'भागचन्द' ते सार अमोलक, परम रतन नर पावै।।७।।

सुमर सदा मन आतमराम.....

सुमर सदा मन आतमराम।।टेक।।
स्वजन कुटुम्बी जन तू पोखै, तिनको होय सदैव गुलाम।
सो तो हैं स्वारथ के साथी, अन्तकाल नहिं आवत काम।।१।।
जिमि मरीचिका में मृग भटके, होवे जब ग्रीषम अति घाम।
तैसे तू भवमाहीं भटके, धरत न इक छिन हू विसराम।।२।।
करत न ग्लानी अब भोगन में, धरत न वीतराग परिणाम।
फिरि किमि नरकमाहिं दुःख सहसी, जहां नहीं सुख आठौं याम।।३।।
तातैं आकुलता अब तजि के, थिर ह्वै बैठो अपने धाम।
'भागचन्द' बसि ज्ञाननगर में, तजि रागादिक ठग सब ग्राम।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सन्त निरन्तर चिन्तत ऐसे.....

सन्त निरन्तर चिन्तत ऐसे, आतमरूप अबाधित ज्ञानी।।टेक।।
रागादिक तो देहाश्रित हैं, इनतें होत न मेरी हानी।
दहन-दहत ज्यों दहन न तदगत, गगन दहनता की विधि ठानी।।१।।
वरणादिक विकार पुद्गल के, इनमें नहिं चैतन्य निशानी।
यद्यपि एक क्षेत्र अवगाही, यद्यपि लक्षण भिन्न पिछानी।।२।।
मैं सर्वाङ्गपूर्ण ज्ञायक रस, लवण खिल्लवत लीला ठानी।
मिलौ निराकुल स्वाद न यावत, तावत पर-परनति हितमानी।।३।।
'भागचन्द' निरद्वन्द निरामय, मूरति निश्चय सिद्धसमानी।
नित अकलंक अबंक शंक बिन, निर्मल पंक बिना जिमि पानी।।४।।

यही इक धर्ममूल है मीता !.....

यही इक धर्ममूल है मीता ! निज समकित सार सहीता।।टेक।
समकित सहित नरकपद वासा, खासा बुधजन गीता।
तहंतें निकसि होय तीर्थंकर, सुरगन जजत सुप्रीता।।१।।
स्वर्गवास हू नीको नाहीं, बिन समकित अविनीता।
तहंतें चय एकेन्द्री उपजत, भ्रमत सदा भयभीता।।२।।
खेत बहुत जोते हु बीज बिन, रहत धान्य सों रीता।
सिद्धि न लहत कोटि तप हू तें, वृथा कलेश सहीता।।३।।
समकित अतुल अखण्ड, सुधारस जिन पुरुषन ने पीता।
'भागचन्द' ते अजर-अमर भये, तिनही ने जग जीता।।४।।

प्रभु थांको लखि मम चित हरषायो.....

प्रभु थांको लखि मम चित हरषायो।।टेक।।
सुन्दर चिन्तारतन अमोलक, रंकपुरुष जिमि पायो।।१।।
निर्मल रूप भयो अब मेरो, भक्ति नदी जल न्हायो।।२।।
'भागचन्द' अब मम करतल में, अविचल शिवथल आयो।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सांची तो गंगा यह वीतरागवाणी.....

सांची तो गंगा यह वीतरागवाणी।
अविच्छिन्न धारा निजधर्म की कहानी।।टेक।।
जामें अति ही विमल अगाध ज्ञान पानी।
जहाँ नंहीं संशयादि पङ्क की निशानी।।१।।
सप्तभङ्ग जहँ तरंग उछलत सुखदानी।
सन्तचित मरालवृन्द रमैं नित्य ज्ञानी।।२।।
जाके अवगाहन तैं शुद्ध होय प्रानी।
'भागचन्द' निहचै घट माहिं या प्रमानी।।३।।

परणति सब जीवन की, तीन भांति.....

परणति सब जीवन की, तीन भांति वरनी।
एक पुण्य एक पाप, एक राग हरनी।।टेक।।
तामें शुभ अशुभ बन्ध, दोय करैं कर्म बन्ध।
वीतराग परणति ही, भव समुद्र 'तरनी।।१।।
जावत शुद्धोपयोग, पावत नाहीं मनोग।
तावत ही करन जोग, कही पुण्य करनी।।२।।
त्याग शुभ्र क्रिया-कलाप, करो मत कदाचि पाप।
शुभ में न मगन होय, शुद्धता विसरनी।।३।।
ऊँच-ऊँच दशा धारि, चित प्रमाद को विडारि।
ऊँचली दशा तैं मति गिरो, अधो धरनी।।४।।
'भागचन्द' या प्रकार, जीव लहै सुख अपार।
याके निरधारि, स्यादवाद की उचरनी।।५।।

प्रभु तुम मूरत दृग सों.....

प्रभु तुम मूरत दृग सों निरखै, हरखै मोरो जीयरा।।टेक।।
भुजत कषायानल पुनि उपजै, ज्ञान सुधाम्भ सीयरा।।१।।
वीतरागता प्रगट होत है, शिवथल दीसै नीयरा।।२।।
'भागचन्द' तुम चरन-कमल में, बसत संतजन हीयरा।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महिमा है अगम जिनागम की.....

महिमा है अगम जिनागम की ।।टेक।।

जाहि सुनत जड़ भिन्न पिछानी, हम चिन्मूरति आतम की ।।१।।
रागादिक दुःखकारन जानें, दीनी त्याग बुद्धि भ्रम की ।
ज्ञान ज्योति जागी घट अन्तर, रुचि बाढ़ी पुनि शमदम की ।।२।।
कर्मबन्ध की भई निरजरा, कारणं परम्पराक्रम की ।
'भागचन्द' शिवलालच लागो, पहुँच नहीं है जहाँ यम की ।।३।।

जान के सुज्ञानी जैनवानी की सरधा लाइये.....

जान के सुज्ञानी जैनवानी की सरधा लाइये ।।टेक।।

जा बिन काल अनन्ते भ्रमता, सुख न मिलै कहूँ प्रानी ।
स्व-पर विवेक अखण्ड मिलत है, जाही के सरधानी ।।१।।
अखिल प्रमान सिद्ध अविरुद्धत, स्यात्पद शुद्ध निशानी ।
'भागचन्द' सत्यारथ जानी, परम धरम रजधानी ।।२।।

तुम गुणमनि निधि हौ अरहन्त.....

तुम गुणमनि निधि हौ अरहन्त ।।टेक।।

पार न पावंत तुमरो गनपति, चार ज्ञान धरि सन्त ।
ज्ञानकोष सब दोष रहित, तुम अलख अमूर्ति अचिन्त ।।१।।
हरिगन अरचत तुम पदवारिज, परमेष्ठी भगवन्त ।
'भागचन्द' के घट-मन्दिर में, बसहु सदा जयवन्त ।।२।।

म्हाकैं जिनमूरति हृदय बसी-बसी.....

म्हाकैं जिनमूरति हृदय बसी-बसी ।।टेक।।

यद्यपि करुना रसमय तद्यपि, मोह शत्रु हनि असी-असी ।
भामण्डल ताको अति निर्मल, निःकलंक जिमि ससी-ससी ।।१।।
लखत होत अति शीतल मति जिमि, सुधा जलधि में धसी-धसी ।
'भागचन्द' जिस ध्यान मन्त्र सों, ममता नागिन नसी-नसी ।।२।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धन्य-धन्य है घड़ी आज की.....

धन्य-धन्य है घड़ी आज की, जिन-धुनि श्रवन परी।
तत्त्व-प्रतीति भई अब मेरे, मिथ्यादृष्टि टरी।।टेक।।
जड़ तैं भिन्न लखी चिन्मूरति, चेतन स्वरस भरी।
अहंकार ममकार बुद्धि पुनि, पर में सब परिहरी।।१।।
पाप-पुण्य विधि बन्ध अवस्था, भासी अति दुःख भरी।
वीतराग-विज्ञान भावमय, परिणति अति विस्तरी।।२।।
चाह-दाह विनसी बरसी पुनि, समता मेघ झरी।
बाढ़ी प्रीति निराकुल पद सों, 'भागचन्द' हमरी।।३।।

शान्ति वरन मुनिराई वर लखि.....

शान्ति वरन मुनिराई वर लखि।।टेक।।
उत्तर गुनगन सहित (मूल गुन सुभग) बरात सुहाई।
तप रथ पै आरूढ़ अनूपम, धरम सुमंगल दाई।।१।।
शिवरमनी को पानि ग्रहण करि, ज्ञानानन्द उपाई।
'भागचन्द' ऐसे वनरा को, हाथ जोर सिर नाई।।२।।

धनि ते प्रानि, जिनके तत्त्वारथ श्रद्धान.....

धनि ते प्रानि, जिनके तत्त्वारथ श्रद्धान।।टेक।।
रहित सप्त भय तत्त्वारथ में, चित्त न संशय आन।
कर्म-कर्ममल की नहिं इच्छा, पर में धरत न ग्लानि।।१।।
सकल भाव में मूढ़दृष्टि तजि, करत साम्यरस पान।
आतम धर्म बढ़ावैं वा, पर-दोष न उचरैं वान।।२।।
निज स्वभाव वा, जैन-धर्म में, निज-पर थिरता दान।
रत्नत्रय महिमा प्रगटावैं, प्रीति स्वरूप महान।।३।।
ये वसु अंगसहित निर्मल यह, समकित निज गुन जान।
'भागचन्द' शिवमहल चढ़न को, अचल प्रथम सोपान।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बरसत ज्ञान सुनीर हो.....

बरसत ज्ञान सुनीर हो, श्री जिनमुख घन सौं।।टेक।।
शीतल होत सुबुद्धि मेदिनी, मिटत भवातप पीर।
स्यादवाद नय दामिनि दमकै, होत निनाद गम्भीर।।१।।
करुना नदी बहै चहुंदिशितैं, भरी सो दोई तीर।
'भागचन्द' अनुभव मंदिर को, तजत न संत सुधीर।।२।।

अहो, यह उपदेश मांही.....

अहो, यह उपदेश मांही खूब चित्त लगावना।
होयगा कल्याण तेरा सुख अनंत बढ़ावना।।टेक।।
रहित दूषण विश्वभूषण देव जिनपति ध्यावना।
गगनवत निर्मल अचल मुनि तिनहि शीष नमावना।।१।।
धर्म अनुकम्पा-प्रधान, न जीव कोई सतावना।
सप्त तत्व परीक्षा करी हृदय श्रद्धा लावना।।२।।
पुद्गलादिक तैं पृथक् चैतन्य ब्रह्म लखावना।
या विधि सम्यक् विमल धारी शंकादि पंक बहावना।।३।।
रुचे भव्यन को वचन ये शठन को न सुहावना।
चन्द्र लखि जिमि कुमुद विकसे उपल नहिं विकसावना।।४।।
'भागचन्द' विभाव तजि, अनुभव स्वभावित भावना।
या शरण, न अन्य जगतारण्य में कहुं पावना।।५।।

अब मैं छाड़्यो पर जंजाल.....

अब मैं छाँड़्यो पर जंजाल।।टेक।।
लग्यो अनादि मोह भ्रम भारी तज्यो ताहि तत्काल।।१।।
आतम रस चाख्यो मैं अदभुत, पायो परम दयाल।।२।।
सिद्ध समान शुद्ध गुण राजत, सोमरूप सुविशाल।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आकुल रहित होय इमि निशिदिन.....

आकुल रहित होय इमि निशिदिन, कीजे तत्त्व विचारा हो।।टेक।।
को मैं कहा रूप है मेरा, पर है कौन प्रकारा हो।।१।।
को भव-कारण बन्ध कहा, को आस्रव रोकनहारा हो।
खिपत कर्म बन्धन काहे सों, थानक कौन हमारा हो।।२।।
इमि अभ्यास किये पावत है, परमानन्द अपारा हो।
'भागचन्द' यह सार जान करि, कीजै, बारम्बारा हो।।३।।

ऐसे जैनी मुनि महाराज.....

ऐसे जैनी मुनि महाराज, सदा उर मो बसौ।।टेक।।
जिन समस्त परद्रव्यनि माहीं, अहंबुद्धि तजि दीनी।
गुन अनन्त ज्ञानादिक मम पुनि, स्वानुभूति लखि लीनी।।१।।
कर्म शुभाशुभ बन्ध उदय में, हर्ष-विषाद न राखैं।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरन तप, भाव सुधारस चाखैं।।२।।
पर की इच्छा तजि निजबल सजि, पूरब कर्म खिरावै।
सकलकर्म तैं भिन्न-अवस्था, सुखमय लखि चित चावैं।।३।।
उदासीन शुद्धोपयोग रत, सबके दृष्टाज्ञाता।
बाहिजरूप नगन समताकर, 'भागचन्द' सुखदाता।।४।।

जीव! तू भ्रमत सदैव अकेला.....

जीव! तू भ्रमत सदैव अकेला, संग साथी काई नहिं तेरा।।टेक।।
अपना सुख दुःख आपहि भुगतै, होत कुटुम्ब न भेला।
स्वार्थ भयैं सब बिछरि जात हैं, विघट जात ज्यों मेला।।१।।
रक्षक कोई न पूरन ह्वै जब, आयु अन्त की बेला।
फूटत पारि बंधत नहीं जैसें, दुद्धर-जल को ठेला।।२।।
तन धन जीवन विनशि जात ज्यों, इन्द्रजाल का खेला।
'भागचन्द' इमि लख करि भाई, हो सतगुरु का चेला।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री जिनवर पद ध्यावैं जे नर.....

श्री जिनवर पद ध्यावै जे नर, श्री जिनवर पद ध्यावैं।।टेक।।
तिनकी कर्मकालिमा विनशै, परम ब्रह्म हो जावैं।
उपल अग्नि संजोग पाय जिमि, कञ्चन विमल कहावैं।।१।।
चन्द्रोज्वल जस तिनको जग में, पण्डित जन नित गावैं।
जैसे कमल सुगन्ध दशों दिश, पवन सहज फैलावै।।२।।
तिनहिं मिलन को मुक्ति सुन्दरी, चित अभिलाषा ल्यावैं।
कृषि में तृण जिम सहज ऊपजै, त्यों स्वर्गादिक पावैं।।३।।
जनम-जरा-मृत दावानल ये, भाव सलिल तैं बुझावैं।
'भागचन्द' कहां ताईं वरनै, तिनहिं इन्द्र शिर नावैं।।४।।

ऐसे साधु सुगुरु कब मिलि हैं.....

ऐसे साधु सुगुरु कब मिलि हैं।।टेक।।
आप तरैं अरु पर को तारैं, निष्प्रेही निर्मल हैं।
तिलतुष मात्र संग नहिं जाकै, ज्ञान-ध्यान-गुण-बल हैं।।१।।
शांत दिगम्बर मुद्रा जिनकी, मन्दिर तुल्य अचल हैं।
'भागचन्द' तिनको नित चाहैं, ज्यों कमलनि को अलि हैं।।२।।

जीवन के परिणामन की यह.....

जीवन के परिणामन की यह, अति विचित्रता देखहु ज्ञानी।।टेक।
नित्य निगोदमाहिं तैं कढ़िकर, नर परजाय पाय सुखदानी।
समकित लहि अन्तर्मुहूर्त में, केवलज्ञान पाय शिवगामी।।१।।
मुनि एकादश गुणथानक चढ़ि, गिरत तहांतैं चितभ्रम ठानी।
भ्रमत अर्धपुद्गल प्रावर्तन, किंचित् ऊन काल परमानी।।२।।
निज परिणामन की संभाल में, तातैं गाफिल मत ह्वै प्रानी।
बंध-मोक्ष परिणामन ही सों, कहत सदा श्रीजिनवर वाणी।।३।।
सकल उपाधि निमित भावनसों, भिन्न सुनिज परणति को छानी।
ताहि जानि रुचि ठानि होहु थिर, 'भागचंद' यह सीख सयानी।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धन-धन जैनी साधु अबाधित.....

धन-धन जैनी साधु अबाधित, तत्त्वज्ञान विलासी हो।।टेक।।
दर्शन-बोधमयी निजमूरति, जिनको अपनी भासी हो।
त्यागी अन्य समस्त वस्तु में, अहंबुद्धि दुःखदासी हो।।१।।
जिन अशुभोपयोग की परणति, सत्तासहित विनाशी हो।
होय कदाच शुभोपयोग तो, तहं भी रहत उदासी हो।।२।।
छेदत जे अनादि दुःखदायक, दुर्विध बन्ध की फाँसी हो।
मोह-क्षोभ-रहित जिन परणति, विमल मयंक कला-सी हो।।३।।
विषय-चाह-दव-दाह खुजावन, साम्य सुधारस-रासी हो।
'भागचन्द' ज्ञानानन्दी पद, साधत सदा हुलासी हो।।४।।

ज्ञानी मुनि छै ऐसे स्वामी गुनरास.....

ज्ञानी मुनि छै ऐसे स्वामी गुनरास।।टेक।।
जिनके शैलनगर मन्दिर पुनि, गिरिकन्दर सुखवास।
निःकलंक परजंज शिला पुनि, दीप मृगांक उजास।।१।।
मृग किंकर करुना वनिता पुनि, शील सलिल तप ग्रास।
'भागचन्द' ते हैं गुरु हमरे, तिनही के हम दास।।२।।

ज्ञानी जीवन के भय होय न या परकार.....

ज्ञानी जीवन के भय होय न या परकार।।टेक।।
इहभव परभव अन्य न मेरो, ज्ञानलोक मम सार।
मैं वेदक इक ज्ञानभाव को, नहिं पर वेदनहार।।१।।
निज सुभाव को नाश न तातैं, चहिये नहिं रखवार।
परमगुप्त निजरूप सहज ही, पर का तहँ न संचार।।२।।
चित स्वभाव निज प्रान तास को, कोई नहीं हरतार।
मैं चितपिंड अखंड न तातैं, अकस्मात भयभार।।३।।
होय निःशंक स्वरूप अनुभव, जिनके यह निरधार।
मैं सो मैं, पर सो मैं नाहीं, 'भागचन्द' भ्रम डार।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जे दिन तुम विवेक बिन खोये.....

जे दिन तुम विवेक बिन खोये ।।टेक।।

मोह वारुणी पी अनादि तैं, पर-पद में चिर सोये ।
सुखकरण्ड चितपिंड आपपद, गुन अनन्त नहिं जोये ।।१।।
होय बहिर्मुख ठानि राग-रुष, कर्मबीज बहु बोये ।
तसु फल सुख-दुःख सामग्री लखि, चित में हरषे रोये ।।२।।
धवल ध्यान शुचि सलिलपूर तें, आस्रव मल नहिं धोये ।
परद्रव्यनि की चाह न रोकी, विंविध परिग्रह ढोये ।।३।।
अब निज में निज जान नियत तहां, निज परिणाम समोये ।
यह शिवमारग समरस सागर, 'भागचन्द' हित तो ये ।।४।।

चेतन निजभ्रम तैं भ्रमत रहै.....

चेतन निजभ्रम तैं भ्रमत रहै ।।टेंक।।

आप अभंग तथापि अंग के, संग महा दुःख पुन्ज बहै ।
लोहपिंड संगति पावक ज्यों, दुर्धर घन की चोट सहै ।।१।।
नामकर्म के उदय प्राप्त नर, नरकादिक परजाय धरै ।
तामें मान अपनपो विरथा, जन्म जरा मृतु पाय डरै ।।२।।
कर्ता होय राग-रुष ठानै, पर को साक्षी रहत न यहै ।
व्याप्य-व्यापक भाव बिना किमि, पर को करता होत ।।३।।
जब भ्रमनींद त्याग निज में, निज हित हेत सम्हारत है ।
वीतराग-सर्वज्ञ होत तब, 'भागचन्द' हित सीख कहै ।।४।।

अरे हो अज्ञानी तूने,.....

अरे हो अज्ञानी तूने, कठिन मनुष-भव पायो ।।टेक।।

लोचन रहित मनुष के कर में, ज्यों बेटर खग आयो ।।१।।
सो तू खोवत विषयन माहीं, धरम नहीं चित लायो ।।२।।
'भागचन्द' उपदेश मान अब, जो श्रीगुरु फरमायो ।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तू स्वरूप जाने बिन दुःखी.....

तू स्वरूप जाने बिन दुःखी, तेरी शक्ति न हलकी वे।।टेक।।
रागादिक वर्णादिक रचना, सोहै सब पुद्गल की वे।।१।।
अष्ट गुनातम तेरी मूरति, सो केवल में झलकी वे।
जगी अनादि कालिमा तेरे, दुस्त्यज मोहन मल की वे।।२।।
मोह नसैं भासत है मूरत, पंक नसैं ज्यों जल की वे।
'भागचन्द' सो मिलत ज्ञानसों, स्फूर्ति अखंड स्वबल की वे।।३।।

प्रानी समकित ही शिवपंथा.....

प्रानी समकित ही शिवपंथा, या बिन निर्मल सब ग्रंथा।।टेक।।
जा बिन बाहच-क्रिया तप कोटिक, सफल वृथा है रंथा ।।१।।
हयजुतरथ भी सारथ बिन जिमि, चलत नहीं ऋजु पंथा ।।२।।
'भागचन्द' सरधानी नर भये, शिव लछमी के कंथा ।।३।।

हरी तेरी मति नर कौनें हरी.....

हरी तेरी मति नर कौनें हरी, तजि चिन्तामन कांच गहत शठ।।टेक।।
विषय-कषाय रुचत तोकौं नित, ज़े दुःखकरन अरी।
सांचे मित्र सुहितकर श्रीगुरु, तिनकी सुधि विसरी।।१।।
पर-परनति में आपो मानत, जो अति विपति भरी।
'भागचन्द' जिनराज भजन कहुं, करत न एक घरी।।२।।

जैन-मन्दिर हमको लागै प्यारा.....

जैन-मन्दिर हमकौ लागै प्यारा।।टेक।।
कैंधौ व्याह मुकति मंगल ग्रह, तोरनादि जुत लसत अपारा।।१।।
धर्मकेतु सुखहेत देत गुन, अक्षय पुण्य रतन भण्डारा।
कहुँ पूजन कहूँ भजन होत हैं, कहुं बरसत पुन श्रुतरसधारा।।२।।
ध्यानारूढ़ विराजत हैं जहां, वीतराग प्रतिबिम्ब उदारा।
'भागचन्द' तहां चलिये भाई, तजिकै गृहकारज अघ भारा।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CG0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करौ रे भाई, तत्त्वारथ सरधान.....

करौ रे भाई, तत्त्वारथ सरधान, नरभव सुकुल सुक्षेत्र पायके।।टेक।।
देखन जाननहार आप लखि, देहादिक परमान।
मोह-राग-रुष अहित जान तजि, बंध-हु विधि दुखदान।।१।।
निज स्वरूप में मगन होय कर, लगन-विषय दो भान।
'भागचन्द' साधक ह्वै साधो, साध्य स्वपद अमलान।।२।।

प्रभु पै यह वरदान सुपाऊँ.....

प्रभु पै यह वरदान सुपाउँ, फिर जग कीच बीच नहिं आऊँ।।टेक।।
जल गन्धाक्षत पुष्प सुमोदक, दीप धूप फल सुन्दर ल्याऊँ।
आनंदजनक कनकभाजन धरि, अर्घ अनर्घ बनाय चढाऊँ।।१।।
आगम के अभ्यास माहिं पुनि, चित एकाग्र सदैव लगाऊँ।
संतन की संगति तजि के मैं, अंत कहूँ इक छिन नहिं जाऊँ।।२।।
दोषवाद में मौन रहूं फिर, पुण्य पुरुष गुन निशिदिन गाऊँ।
मिष्ट स्पष्ट सबहि सों भाषों, वीतराग निज भाव बढ़ाऊँ।।३।।
बाहिज दृष्टि ऐंच के अन्दर, परमानन्द स्वरूप लखाऊँ।
'भागचन्द' शिव प्राप्त न जौलौं, तौलौं तुम चरनांबुज ध्याऊँ।।४।।

ऐसे विमल भाव जब पावै.....

ऐसे विमल भाव जब पावै, हमरो नरभव सुफल कहावै।।टेक।।
दरशबोधमय निज आतम लखि, पर-द्रव्यनि को नहिं अपनावै।
मोह-राग-रुष अहित जान तजि, झटित दूर तिनको छिटकावै।।१।।
कर्म शुभाशुभ बंध-उदय में, हर्ष-विषाद चित्त नहिं ल्यावै।
निज-हित-हेत विराग-ज्ञान लखि, तिनसौं अधिक प्रीति उपजावै।।२।।
विषयचाह तजि आत्मवीर्य सजि, दुःखदायक विधिबन्ध खिरावै।
'भागचन्द' शिवसुख सब सुखमय, आकुलता बिन लखि चित चावै।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आज मैंने प्रभु दर्शन पाये.....

आज मैंने प्रभु दर्शन पाये, महाराज श्रीजिनवर जी।।टेक।।
तुमरे ज्ञान द्रव्य गुन पर्जय, निज चित गुन दरशाये।
निज लच्छन तैं सकल विलच्छन, ततछिन पर दृग आये।।१।।
अप्रशस्त संक्लेश भाव अघ, कारन ध्वस्त कराये।
राग प्रशस्त उदय तैं निर्मल, पुण्य समस्त कमाये।।२।।
विषय कषाय आताप नस्यो सब, साम्य सरोवर न्हाये।
रुचि भई तुम समान होवे की, 'भागचन्द' गुन गाये।।३।।

मैं तुम शरन लियो तुम साचे.....

मैं तुम शरन लियो, तुम सांचे प्रभु अरहन्त।।टेक।।
तुमरे दर्शन-ज्ञान मुकर में, दरश-ज्ञान झलकन्त।
अतुल निराकुल सुख आस्वादन, वीरज अरज अनन्त।।१।।
राग-द्वेष विभाग नाश भये, परम समरसी सन्त।
पद देवाधिदेव पायो किय, दोष क्षुधादिक अन्त।।२।।
भूषन-वसन-शस्त्र-कामादिक, करन विकार अनन्त।
तिन तुम परमौदारिक तन, मुद्रा सम शोभन्त।।३।।
तुम वानी तैं धर्म-तीर्थ जग, माँहि त्रिकाल चलन्त।
निजकल्याण हेतु इन्द्रादिक, तुम पदसेव करन्त।।४।।
तुम गुन अनुभव तैं निज-पर गुन, दरसत अगम अचिन्त।
'भागचन्द' निजरूप प्राप्ति अब, पावैं हम भगवन्त।।५।।

थांकी तो वानी में हो.....

थांकी तो वानी में हो, निज स्व-पर प्रकाशक ज्ञान।।टेक।।
एकीभाव भये जड़ चेतन, तिनकी करत पिछान।
सकल पदार्थ प्रकाशत जामें, मुकुर तुल्य अमलान।।१।।
जग चूड़ामनि शिव भये ते ही, तिन कीनों सरधान।
'भागचन्द' बुधजन ताही को, निशदिन करत बखान।।२।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम आराम विहारी साधुजन.....

सम आराम विहारी साधुजन, सम आराम विहारी।।टेक।।
एक कल्पतरु पुष्पन सेती, जजत भक्ति विस्तारी।।१।।
एक कण्ठविच सर्प नाखिया, क्रोध दर्पजुत भारी।
राखत एक वृत्ति दोउन में, सब ही के उपगारी।।२।।
व्याघ्रबाल करि सहित नन्दिनी, व्याल नकुल की नारी।
तिनके चरन-कमल आश्रय तैं, अरिता सकल निवारी।।३।।
अक्षय अतुल प्रमोद विधायक, ताकौ धाम अपारी।
काम धरा विच गढ़ी सो चिरतें, आतमनिधि अविकारी।।४।।
खनत ताहि लैकर कर में जे, तीक्ष्ण बुद्धि कुदारी।
निज शुद्धोपयोगरस चाखत, पर-ममता न लगारी।।५।।
निज सरधान ज्ञान चरनात्मक, निश्चय शिवमगचारी।
'भागचन्द' ऐसे श्रीपति प्रति, फिर-फिर ढोक हमारी।।६।।

वीतराग जिन महिमा थारी.....

वीतराग जिन महिमा थारी, वरन सकै को जन त्रिभुवन में।।टेक।।
तुमरे अनन्त चतुष्टय प्रगट्यो, निःशेषावरनच्छय छिन में।
मेघ विघटनतैं प्रगटत, जिमि मार्तण्ड प्रकाश गगन में।।१।।
अप्रमेय ज्ञेयन के ज्ञायक, नहिं परिनमत तदपि ज्ञेयन में।
देखत नयन अनेकरूप जिमि, मिलत नहीं पुनि निज विषयन में।।२।।
निज उपयोग आपनै स्वामी, गाल दिया निश्चल आपन में।
है असमर्थ बाह्य निकसन को, लवन घुला जैसैं जीवन में।।३।।
तुमरे भक्त परम सुख पावत, परत अभक्त अनन्त दुःखन में।
जैसो मुख देखो तैसौ ह्वै, भासत जिम निर्मल दरपन में।।४।।
तुम कषाय विन परम शान्त हो, तदपि दक्ष कर्मारि हतन में।
जैसे अति शीतल तुषार पुनि, जार देत द्रुम भारि गहन में।।५।।
अब तुम रूप जथारथ पायो, अब इच्छा नहिं अन कुमतन में।
'भागचन्द' अमृतरस पीकर, फिर को चाहै विष निज मन में।।६।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

म्हांकै घट जिन धुनि अब प्रगटी.....

म्हांकै घट जिन धुनि अब प्रगटी।।टेक।।
जागृत दशा भई अब मेरी, सुप्त दशा विघटी।
जग रचना दीसत अब मोकों, जैसी रंहट घटी।।१।।
विभ्रम तिमिर-हरन निज दृग की, जैसी अञ्जनवटी।
तातैं स्वानुभूति प्रापति तैं, पर-परणति सब हटी।।२।।
ताके बिन जो अवगम चाहै, सो तो शठ कपटी।
तातैं 'भागचन्द' निशिवासर, इक ताही को रटी।।३।।

गिरिवनवासी मुनिराज मन वसिया.....

गिरिवनवासी मुनिराज, मन वसिया म्हारै हो।।टेक।।
कारन बिन उपगारी जग के, तारन-तरन जिहाज।।१।।
जनम-जरा-मृत गद गंजन को, करत विवेक इलाज।
एकाकी जिमि रहत केसरी, निरभय स्वगुन समाज।।२।।
निर्भूषन निर्वसन निराकुल, सजि रत्नत्रय साज।
ध्यानाऽध्ययन माहिं तत्पर नित, 'भागचन्द' शिवकाज।।३।।

अतिसंक्लेश विशुद्ध शुद्ध पुनि.....

अतिसंक्लेश विशुद्ध शुद्ध पुनि, त्रिविध जीव परिणाम बखाने।।टेक।।
तीव्र कषाय उदय तैं भावित, दर्वित हिंसादिक अघ ठाने।
सो संक्लेशभाव फल नरकादिक, गति दुःख भोगत असहाने।।१।।
शुध उपयोग कारनन में जो, रागकषाय मन्द उदयाने।
सो विशुद्ध तसु फल इन्द्रादिक, विभव-समाज सकल परमाने।।२।।
परकारन मोहादिक तैं च्युत, दरसन-ज्ञान-चरन रस पाने।
सो है शुद्ध भाव तसु फल तैं, पहुँचत परमानन्द ठिकाने।।३।।
इनमें जुगल बन्ध के कारन, परद्रव्याश्रित हेय प्रमानं।
'भागचन्द' स्वसमय निज हित लखि, तामैं रम रहिये भ्रम हाने।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन स्व-पर हिताहित चीना.....

जिन स्व-पर हिताहित चीना, जीव ते ही हैं सांचै जैनी।।टेक।।
जिन बुध-छैनी पैनी तैं जड़ रूप निराला कीना।
पर तैं विरचि आपसे राचे, सकल विभाव विहीना।।१।।
पुन्य पाप विधि बंध उदय में, प्रमुदित होत न दीना।
सम्यग्दर्शन -ज्ञान- चरन निज भाव सुधारस भीना।।२।।
विषयचाह तजि निज वीरज सजि करत पूर्वविधि छीना।
'भागचन्द' साधक ह्वै साधन, साध्य स्वपद स्वाधीना।।३।।

सहज अबाध समाध धाम तहाँ.....

सहज अबाध समाध धाम तहाँ, चेतन सुमति खेलैं होरी।।टेक।।
निजगुन चंदन मिश्रित सुरभित, निर्मल कुंकुम रस घोरी।
समता पिचकारी अति प्यारी, भर जु चलावत चहुँ ओरी।।१।।
शुभ संवर सुअबीर आडंबर, लावत भर भर कर जोरी।
उड़त गुलाल निर्जरा निर्भर, दुखदायक भव थिति टोरी।।२।।
परमानंद मृदंगादिक धुनि, विमल विरागभाव घोरी।
'भागचन्द' दृग-ज्ञान-चरनमय, परिनति अनुभव रंग बोरी।।३।।

यह मोह उदय दुख पावै.....

यह मोह उदय दुख पावै, जगजीव अज्ञानी।।टेक।।
निज चेतनस्वरूप नहिं जानै, पर-पदार्थ अपनावै।
पर-परिनमन नहीं निज आश्रित, यह तहँ अति अकुलावै।।१।।
इष्ट जानि रागादिक सेवै, तै विधि-बंध बढ़ावै।
निजहित-हेत भाव चित सम्यक्‌दर्शनादि नहिं ध्यावै।।२।।
इन्द्रिय-तृप्ति करन के काजै, विषय अनेक मिलावै।
ते न मिलैं तब खेद खिन्न ह्वै सममुख हृदय न ल्यावै।।३।।
सकल कर्म छय लच्छन लच्छित, मोच्छदशा नहिं चावै।
'भागचन्द' ऐसे भ्रमसेती, यह काल अनन्त गमावै।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निज कारज काहे न सारै रे,.....

निज कारज काहे न सारै रे, भूले प्रानी।।टेक।।
परिग्रह भार थकी कहा नाहीं, आरत होत तिहारै रे।।१।।
रोगी नर तेरी वपु को कहा, तिस दिन नाहीं जारै रे।
क्रूरकृतांत सिंह कहा जग में, जीवन को न पछारै रे।।२।।
करनविषय विषभोजनवत कहा, अन्त विसरता न धारै रे।
'भागचन्द' भव अन्धकूप में, धर्म रतन काहे डारै रे।।३।।

अहो यह उपदेश माहीं.....

अहो यह उपदेश माहीं, खूब चित्त लगावना।
होयगा कल्यान तेरा, सुख अनन्त बढ़ावना।।टेक।।
रहित दूषन विश्वभूषन, देव जिनपति ध्यावना।
गगनवत निर्मल अचल मुनि, तिनहिं शीस नवावना।।१।।
धर्म अनुकम्पा प्रधान, न जीव कोई सतावना।
सप्ततत्त्व परीक्षा करि, हृदय श्रद्धा लावना।।२।।
पुद्गलादिक तैं पृथक्, चैतन्य ब्रह्म लखावना।
या विधि विमल सम्यक्त्व धरि, शंकादि पंक बहावना।।३।।
रुचै भव्यन को वचन जे, शठन को न सुहावना।
चन्द्र लखि जिमि कुमुद विकसै, उपल नहिं विकसावना।।४।।
'भागचन्द' विभाव तजि, अनुभव स्वभावित भावना।
या शरण न अन्य जगतारन्य में कहुं पावना।।५।।

मेघ घटा सम श्री जिनवानी.....

मेघ घटा सम श्री जिनवानी।।टेक।।
स्यात्पद चपला चमकत जामें, बरसत ज्ञान सुपानी।
धरमसस्य जातैं बहु बाढ़ै, शिव आनन्द फलदानी।।१।।
मोहन धूल दबी सब यातैं, क्रोधानल सुबुझानी।
'भागचन्द' बुधजन केकीकुल, लखि हरखै चितज्ञानी।।२।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लखिकै स्वामी रूप को मेरा मन भया.....

लखिकै स्वामी रूप को मेरा मन भया चंगा जी।।टेक।।
विभ्रम नष्ट गरुड़ लखि जैसे भगत भुजंगा जी।।१।।
शीतल भाव भये अब न्हायो सुगंगा जी।।२।।
'भागचन्द' अब मेरे लागो निजरस रंगा जी।।३।।

भव वन में नहीं भूलिये भाई.....

भव वन में नहीं भूलिये भाई, कर निज थल की याद।।टेक।
नर परजाय पाय अति सुन्दर, त्यागहु सकल प्रमाद।
श्री जिन-धर्म सेय शिव पावत, आतम जासु प्रसाद।।१।।
अब के चूकत ठीक न पड़सी, पासी अधिक विषाद।
सहसी नरक वेदना पुनि तहां, सुणसी कौन फिराद।।२।।
'भागचन्द' श्रीगुरु शिक्षा बिन, भटका काल अनाद।
तू कर्ता तू ही फल भोगत, कौन करै बकवाद।।३।।

सफल है धन्य-धन्य वा घरी.....

सफल है धन्य-धन्य वा घरी।
जब ऐसी अति होसी, परमदशा हमरी।।टेक।।
धारि दिगम्बर दीक्षा सुन्दर, त्याग परिग्रह अरी।
वनवासी कर पात्र परीषह, सहि हों धीर धरी।।१।।
दुर्धर तप निर्भर नित तप हौं, मोह कुंवृक्ष करी।
पञ्चाचार क्रिया आचर ही, सकल सार सुथरी।।२।।
विभ्रम ताप हरन झरसी निज, अनुभव-मेघ-झरी।
परम शान्त भावन की तातैं, होसी वृद्धि खरी।।३।।
त्रेसठि प्रकृति भंग जब होसी, जुत त्रिभंग सगरी।
तब केवलदर्शन विबोध सुख, वीर्यकला पसरी।।४।।
लखि हो सकल द्रव्य गुन पर्जय, परणति अति गहरी।
'भागचन्द' जब सहजहि मिलहै, अचल मुकति नगरी।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आवै न भोगन में तोहि गिलान.....

आवै न भोगन में तोहि गिलान।।टेक।।
तीरथ नाथ भोग तजि दीनें, तिनतैं मत भय आन।
तू तिनतैं कहुं डरपत नाहीं, दीसत अति बलवान।।१।।
इन्द्रिय तृप्ति काज तू भोगै, विषय महा अघखान।
सो जैसे घृतधारा डारै, पावक ज्वाल बुझान।।२।।
जे सुख तौ तीछन दुःखदाई, ज्यों मधुलिप्त कृपान।
तातैं 'भागचन्द' इनको तजि आत्मस्वरूप पिछान।।३।।

बिन काम ध्यान मुद्राभिराम.....

बिन काम ध्यान मुद्राभिराम, तुम हो जगनायकजी।।टेक।।
यद्यपि वीतराग मय तद्यपि, हो शिवदायकजी।।१।।
रागी देव आप ही दुखिया, सो क्या लायकजी।
दुर्जय मोह शत्रु हनवे को, तुम वच शायकजी।।२।।
तुम भवमोचन ज्ञान सुलोचन, केवल क्षायकजी।
'भागचन्द' भागन तैं प्रापति, तुम सब ज्ञायकजी।।३।।

सत्ता रङ्गभूमि में नटत ब्रह्म नटराय.....

सत्ता रङ्गभूमि में, नटत ब्रह्म नटराय।।टेक।।
रत्नत्रय आभूषण मण्डित, शोभा अगम अथाय।
सहज सखा निःशंकादिक गुन, अतुल समाज बढ़ाय।।१।।
समता वीन मधुररस बोलै, ध्यान मृदंग बजाय।
नदत निर्जरा नाद अनूपम, नूपुर संवर ल्याय।।२।।
लय निज-रूप मगनता ल्यावत, नृत्य सुज्ञान कराय।
समरस गीतालापन पुनि जो, दुर्लभ जगमह आय।।३।।
'भागचन्द' आप हि रीझत तहाँ, परम समाधि लगाय।
तहाँ कृतकृत्य सुहोत मोक्षनिधि, अतुल इनाम हिं पाय।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जा जा देखी वीतराग ने.....

जो जो देखी वीतराग ने, सो सो होसी वीरा रे।
अनहोनी होसी नहि क्यों जग में, काहे होत अधीरा रे।।टेक।।
समय एक बढ़ै नहिं घटसी, जो सुख-दुःख की पीरा रे।
तू क्यों सोच करै मन मूरख, होय वज्र ज्यों हीरा रे।।१।।
लगै न तीर कमान बान कहुँ, मार सकै नहिं मीरा रे।
तू सम्हारि पौरुष बल अपनो, सुख अनन्त तो तीरा रे।।२।।
निश्चय ध्यान धरहु वा प्रभु को, जो टारे भव भीरा रे।
'भैया' चेत धरम निज अपनो, जो तारैं भव नीरा रे।।३।।

एते पर ऐता क्या करना.....

सिद्ध समान न जाने आपा, तातैं तोहि लगत हैं पापां।
खोल देख घट पटहिं उघरना, एते पर एता क्या करना।।टेक।।
श्री जिनवचन अमल रस वानी, पीवहिं क्यों नहि मूढ़ अज्ञानी।
जातैं जन्म जरा मृत हरना, एते पर एता क्या करना।।१।।
जो चेतै तो है यह दावो, नाहीं बैठे मंगल गावो।
फिर यह नरभव वृक्ष न फरना, एते पर एता क्या करना।।२।।
'भैया' विनवहि बारंबारा, चेतन चेत भलो अवतारा।
ह्वै दलह शिवनारी वरना. एते पर एता क्या करना।।३।।

जिया का मोह महा दुखदाई.....

जिया का मोह महा दुखदाई।।टेक।।
काल अनन्त जीति जिहं राख्यो, शक्ति अनन्त छिपाई।
क्रम-क्रम करके नर भव पायो, तऊ न तजत लगाई।।१।।
मात, तात, सुत, बाँधव, वनिता, अरु परवार बड़ाई।
तिन सौं प्रीति करे निशि-बासर, जानत सब ठकुराई।।२।।
चहुँ गति जनम मरन के, बहुदुःख, अरु बहु कष्ट सहाई।
संकट सहत तऊ नहिं चेतन, भ्रम मदिरा अति पाई।।३।।
इह बिन तो परम पद नाहीं, यों जिनदेव बताई।
तातें मोह त्याग लै 'भैया', ज्यों प्रगटे ठकुराई।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अरे जु तैं यह जन्म गमायो रे.....

अरे जु तैं यह जन्म गमायो रे ।।टेक।।
पूरब पुण्य किये कहुँ अति ही, तातैं नरभव पाया रे ।।१।।
देव धरम गुरु ग्रंथ न परखै, भटकि भटकि भरमायो रे ।।२।।
फिर तोको मिलिबो यह दुर्लभ, दश दृष्टान्त बतायो रे ।।३।।
जो चेतैं तो चेत रे 'भैया' तोको कहि समुझायो रे ।।४।।

छांड़ि दे अभिमान जिय रे.....

छांड़ि दे अभिमान जिय रे ।।टेक।।
काको तू अरु कौन तेरे, सब ही हैं महिमान।
देख राजा रंक कोऊ, थिर नहीं यह थान ।।१।।
जगत देखत तोरि चलवो, तू भी देखत आन।
घरी पल की खबर नाहीं, कहा होय विहान ।।२।।
त्याग क्रोध अरु लोभ माया, मोह मदिरा पान।
राग-द्वेष हिं टार अन्तर, दूर कर अज्ञान ।।३।।
भयो सुर पद देव कबहूँ, कबहूँ नरक निदान।
इम कर्मवश बहु नाच नाचे, "भैया" आप पिछान ।।४।।

कहो परसों प्रीति कीन्हीं.....

कहो परसों प्रीति कीन्ही, कहा गुण तम जान ।।टेक।।
चतुर चेतन चित विचारो, कहहुँ पुनि पहिचान ।।१।।
वे अचेतन तुम सचेतन, देखि दृष्टि विज्ञान ।।२।।
परहि त्याग स्वरूप गहिये, यहै बात प्रमान ।।३।।

हो चेतन वे दुःख विसरि गये.....

हो चेतन वे दुःख विसरि गये ।।टेक।।
पर नरक में संकट सहते, अब महाराज भये ।।१।।
सूजी सेज सबै तन वेदत, रोग एकत्र ठगे ।।२।।
करत पुकार परम पद पावत, कर मन आनंदयें ।।३।।
कहूँ शीत कहूँ उष्ण महाभुवि, सागर आयु लयें ।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिहुं पुर के पुरहूत सब.....

तिहुं पुर के पुरहूत सब, बंदत शीश नवाय।
तिहँ तीर्थंकर देव सों बचत नाहिं यमराय।।टेक।।
जिनकी भ्रू के फरक तें, कंपन सुरनर वृन्द।
तेहू काल छिन में लये, जो योधा सुर इन्द्र।।१।।
जाकी आज्ञा में रहैं, छहों खंड के भूप।
ता चक्रीधर को ग्रसै, काल महा भयरूप।।२।।
नारायण नरलोक में, महा शूर बलवंत।
तीन खंड आज्ञा बहै, तिनै हु काल ग्रसंत।।३।।
औरहु भूप बलिष्ट जे, वसत याहि जगमाहिं।
तेहु काल की चाल सों, बचत रंच कहुँ नाहिं।।४।।
तातैं काल महाबली, करत सबन पै जोर।
धन धन सिध परमात्मा, जिहँ कीनो इह भोर।।५।।
ऐसे काल बलिष्ट को, जो जीतै सो देव।
कहत दास भगवंत को, कीजे ताकी सेव।।६।।
काल वसत जगजाल में, नूतन करत पुरान।
'भैया' जिहँ जग त्यागियो, नमहुं ताहि धर ध्यान।।७।।

कहा परदेशी को पतियारो.....

कहा परदेशी को पतियारो।।टेक।।
मन मानै तब चलै पंथ को, सांज गिनै न सकारो।
सबै कुटुंब छाँड़ इतही पुनि, त्याग चलै तन प्यारो।।१।।
दूर दिसावर चलत आप ही, कोऊ न राखन हारो।
कोऊ प्रीति करो किन कोटिक, अंत होयगो न्यारो।।२।।
धन सों राचि धरम सों भूलत, झूलत मोह मझारो।
इहि विधि काल अनंत गमायो, पायो नाहिं भव पारो।।३।।
सांचे सुख सों विमुख होत है, भ्रम मदिरा मतवारो।
चेतहु चेत सुनहु रे 'भइया', आप ही आप संभारो।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चेतन काहे कौं अरसात.....

चेतन काहे कौं अरसात।
सहज सकति सम्हारि आपनी, काहे न सिवपुर जात।।टेक।।
इहिं चतुरगति विपति भीतरि, रहचो क्यों न सुहात।
अरु अचेतन असुचि तन मैं, कैसे रहचौ विरमात।।१।।
अछत अनुपम रतन मांगत, भीख क्यौं न लजात।
तू त्रिलोकपति वृथा अब कत, रंक ज्यौं विललात।।२।।
सहज सुख बिन, विषय सुख रस भोगवत न अघात।
'रूपचंद' चित चेत ओसनि प्यास तौं न बुझात।।३।।

चेतन सौं चेतन लौं लाई.....

चेतन सौं चेतन लौं लाई।
चेतन अपनु सु फुनि चेतन, चेतन सौं बनि आई।।टेक।।
चेतन तैं अब चेतन उपज्यौं, सुचेतन कौं चेतन क्यों जाई।
चेतन गुन अरु गुनि फुनि चेतन, चेतन चेतन रहचो समाई।।१।।
चेतन मौन बनै अब चेतन, चेतन मौं चेतन ठहराई।
'रूपचंद' चेतन भयो चेतन, चेतन गुण चेतन मति पाई।।२।।

चेतन चेति चतुर सुजान.....

चेतन चेति चतुर सुजान।
कहा रंग रचि रहचो परसौं, प्रीति करि अति वान।।टेक।।
तू महंतु त्रिलोकपति जिय, जान गुन परधानु।
यह अचेतन हीन पुदगलु, नाहिं न तोहि समान।।१।।
हुई रहचौ असमरथु आपुनु, परु कियौ पजवान।
निज सहज सुख छोडि परवस, परचौ है किहिं जान।।२।।
रहचौ मोहि जु मूढ यामैं, कहा जानि गुमान।
'रूपचन्द' चित चेति नर, अपनौ न होइ निदान।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चेतन ! अब मोहि दर्शन दीजे.....

चेतन! अब मोहि दर्शन दीजे।।टेक।।

तुम दर्शन शिव-सुख पामीजे, तुम दर्शन भव दीजे।
तुम कारन संयम तप किरिया, कहो, कहां लौं कीजे।।
तुम दर्शन बिनु सब या झूठी, अन्तरचित्त न भीजे।।१।।
क्रिया मूढ़मति कहे जन कोई, ज्ञान और को प्यारो।
मिलत भावरस दोउ न भाखें, तू दोनों तें न्यारो।।
सब में है और सब में नाहीं, पूरन रूप अकेलो।।२।।
आप स्वभावे वे किम रमतो, तूँ गुरु अरु तूं चेलो।
अकल अलख तू प्रभु सब रूपी, तू अपनी गति जाने।।
अगमरूप आगम अनुसारें, सेवक सुजस बखानें।।३।।

चेतन परस्यौं प्रेम बढ्यो.....

चेतन परस्यौं प्रेम बढ्यो।।टेक।

स्व-पर विवेक बिना भ्रम भूल्यो, मे मे करत रह्यो।।१।।
नरभव रतन जतन बहु तैं करि, कर तेरे आइ चढ्यो।
सुक्यौं विषय-सुख लागि हारिए, सब गुना गढनि गढ्यो।।२।।
आरंभ के कुसियार कीट ज्यौं, आपु हि आपु मढ्यो।
'रूपचंद' चित चेतत नाही तैं, सक ज्यौं वादि पढ्यो।।३।।

गुरुजी म्हारो मनरो निपट अजान.....

गुरुजी म्हारो मनरो निपट अजान।।टेक।

बार बार समझावत हों तुम, तोऊ न धरत सरधान।।१।।
विषै भोग अभिलाषा लागी, सहत काम के वान।
अनरथ मूल क्रोध सों लिपट्यो, बहुरि धरै बहु मान।।२।।
छल को लिये चहत कारज को, लोभ पर्‌यो सव थान।
विनासीक सव ठाठ बन्या है, ता परि करइ गुमान।।३।।
गुरु-प्रसाद तैं सुलट होयगी, दयो उपदेस सुदान।
'जगतराम' चित को इत ल्यावो, मुनि सिद्धान्त बखान।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भजन सम नहीं काज दूजो.....

भजन सम नहीं काज दूजो।
धर्म अंग अनेक यामें, एक ही सिरताज।।टेक।।
करत जाके दुरत पातक, जुरत संत समाज़।
भरत पुण्य भण्डार यातैं, मिलत सब सुख साज।।१।।
भक्त को यह इष्ट ऐसो ज्यों क्षुधित को नाज।
कर्म ईंधन को अगनि सम, भव जलधि को पाज।।२।।
इन्द्र जाकी करत महिमा, कहो तो कैसी लाज।
'जगतराम' प्रसाद यातैं, होत अविचल राज।।३।।

नहिं गोरो नहिं कारो चेतन.....

नहिं गोरो नहिं कारो चेतन, अपनो रूप निहारो।
दर्शन ज्ञान मई चिन्मूरत, सकल करम तें न्यारो।।टेक।।
जाके बिन पहिचान जगत में, सह्यो महा दुख भारो।
जाके लखे उदय हो तत्क्षण, केवलज्ञान उजारो।।१।।
कर्मजनित पर्याय पायके, कीनों तहां पसारो।
आपा-पर को रूप न जान्यो, तातैं भव उरझारो।।२।।
अब निज में निज कूं अवलोकूं, जो हो भव सुलझारो।
'जगतराम' सब विधि सुखसागर, पद पाऊँ अविकारो।।३।।

अब ही हम पायौं विसराम.....

अब ही हम पायौं विसराम।
गृह कारिज को चितवन झूले, जब आये जिन धाम।।टेक।।
दरसन करियौं नैननि सौं, मुख उचरे जिन नाम।
कर जुग जोरि श्रमण वानी सुनि, मस्तक करत प्रणाम।।१।।
सन्मुख रहें रहत चरननि सुख, हृदय सुमरि गुन ग्राम।
नरभव सफल भयो या विधि सौं मनबांछित फल पाम।।२।।
पुन्य उद्योत होत जिय जाकै, सो आवत इह ठाम।
साधरमी जन सहज सुखकारी, रलि मिलि है 'जगराम'।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कैसे होरी खेलौ खेलि न आवै.....

कैसे होरी खेलौ खेलि न आवै।।टेक।।

प्रथम ही पाप हिंसा जा मांही, दूजै झूठ जपावै।।१।।
तीजे चोर कलाविन जामें, नैंक न रस उपजावै।
चौथौं परनारी सौं परचै, सील वरत मल लावै।।२।।
त्रंसना पाप पाचवां जामें, छिन छिन अधिक बढावै।
सब विधि अशुभ रूप जो कारिज, करत ही चित चपलावै।।३।।
अक्षर ब्रह्म खेल अति नीकों, खेलत हो हुलसावै।
'जगतराम' सोई खेलिये, जो जिन-धरम बढावै।।४।।

मेरी कौन गति होसी हो गुसांई.....

मेरी कौन गति होसी हो गुसांई।।टेक।।

पंच पाप मोसौं नहीं छूटै, विकथा चारचौ भाई।।१।।
तीन जोग मेरे वस नांही, राग-द्वेष दोऊ थाई।
एक निरंजन रूप तिहारो, ताकी खबर न पाई।।२।।
एक बार कबहुँ तिहु सेती, मन परतीति न आई।
याहीं तैं भव दुख भुगते, बहु विधि आपद पाई।।३।।
मो सों पतित निकट जब टेरत, कहा अन्तर लौं लाई।
पतित उधारक सकति जु अपनी, राखी कब कै ताई।।४।।
इह कलिकाल क्षेत्र व्यापक है, हौं इम जानत सांई।
'जगतराम' प्रभु रीति विसारी, तुम हूँ व्याप्यौ कांई।।५।।

आज कोई अद्‌भुत रचना रची.....

आज कोई अद्‌भुत रचना रची।।टेक।।

जुगल इन्द्र दोउ चँवर ढुरावत, निरत करत हैं शची।।१।।
समवसरण महिमा देखन की, होड़ाहोड़ मची।
स्वर्ग विमान विपुल छबि जाकी, देखत मन न खची।।२।।
जिनगुण सार सभी हैं इनमें, ये जिन बात सची।
'नवल' कहे उर आवत ऐसे, हरष धार के नची।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

की परि इतनी मगरूरि करी.....

की परि इतनी मगरूरि करी।।टेक।।
चेति सकै तो चेति बावरे, नातर बूडत है सगरी ।।१।।
कित तैं आयो फिरि कित जै है, समझ देख नहीं ठीक परी ।
ओस बूंद लौ जीवन तेरो, धूप लगे न रहत धरी ।।२।।
ग्रह परियण इत्यादिक मेरो, मानत है सो जानि परी ।
निज देही लखि मगन होत तू, सो मल-मूतर पूरि भरी ।।३।।
लाख बात की एक बात ये, सो सुनि अपनै कान धरी ।
छांड़ि बदी नेकी करि भाई, 'नवल' कहत यह बात खरी ।।४।।

जिनराज भजा सो ही जीता रे.....

जिन राज भजा सोही जीता रे।।टेक।।
भजन किया पावै सिव संपति, भजन बिना रहै रीता रे ।।१।।
धरम बिना धन ह्वै चक्री सम, सो दुख भार सलीता रे ।
धरम मांहि रत धन नहिं तौ पण वो जग माहि पुनीता रे ।।२।।
या सरधा बिन भ्रमत भ्रमत तोहि, काल अनन्त वितीता रे ।
वीतराग पद नरनि गही तिन, जनम सफल करि लीता रे ।।३।।
मन वचन द्रिढ़ प्रीति आंनि उर, जिन गुन गावो मीता रे ।
नामं महात्म्य श्रवनन सुनि कै, 'नवल' सुधारस पीता रे ।।४।।

म्हारो मन लागो जी जिनजी सौं.....

म्हारो मन लागो जी जिनजी सौं।।टेक।।
अद्भुत रूप अनोपम मूरति, निरखि निरखि अनुरागो जी ।।१।।
समता भाव भये हैं मेरे, आंन भाव सब त्यागो जीं।
स्व-पर विवेक भयो नहीं कबहूँ, सो परगट होय जागो जी।।२।।
ग्यान प्रभाकर उदित भयो अब, मोह महातम भागो जी।
'नवंल' नवल आनंद भये प्रभु, चरन-कमल अनुरागो जी।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खेलत फाग महामुनि वन में.....

खेलत फाग महामुनि वन में, स्वातम रंग सदा सुखदाई।।टेक।।
अष्टकर्म की रचत होलिका, ध्यान धनंजय ताहि जराई।
राग-द्वेष-मोहादिक कंटक, भस्म किये चिर शांति उपाई।।१।।
मार्दव आर्जव सत्यादिक मिल, दया क्षमा संग होरी मचाई।
मन मृदंग तम्बूरा तन का, डुलन डोरि कसि तंग कराई।।२।।
सुरत सारंगी की धुनि गाजे, मधुर वचन बाजत शहनाई।
ज्ञान गुलाल भाल पर सोहै, परम अहिंसा अबीर उड़ाई।।३।।
क्षमा रंग छिड़कत भविजन पर, प्रेम रंग पिचकारी चलाई।
मोक्षमहल के द्वार फाग लखि, सेवक 'कुंज' रहे हर्षाई।।४।।

चेतन नरभव पाय कै हो.....

चेतन नरभव पाय कै हो जानि वृथा क्यौं खोवै छै।।टेक।।
पुदगल कै रंग राचि रहै हो, मोह मगन होय सोवै छै।।१।।
ये जड रूप अनादि को, तोहि भव भव मांहि विगोवै छै।
भूलि रहचो भ्रम जाल में, तु आयो आय लकोवै छै।।२।।
विषयादिक सुख त्यागि कैं, तू ग्यान रतन कौं न जोवै छै।
'बखतराम' जाकै उदै हो, मुक्तिवंधू सुख होवै छै।।३।।

करो कल्याण आतम का.....

करो कल्याण आतम का, भरोसा है न इक पल का।।टेक।।
ये कांया कांच की शीशी, फूल मत देखकर इसको।
छिनक में फूट जावेगी, कि जैसे बुद-बुदा जल का।।१।।
यह धनदौलत मकां मंदिर, जो तूं अपना बताता है
कभी हरगिज नहीं तेरे, छोड़ जंजाल सब जग का।।२।।
स्वजन सुत मात पितु दारा, सबै परिवार अरु ब्रदर।
खड़े सब देखते होंगे, कूच होगा जभी दम का।।३।।
बड़ी अटवी यह जगरूपी, फँसो मत देखकर इसको।
कहे 'चन्नी' समझ दिल में, सितारा ज्ञान का चमका।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इक तैं एक अनेक गेय बहु.....

इक तैं एक अनेक गेय बहु, रूप गुनन करि अधिक विराजे ।।टेक।।
कौन कौन की चाह करै तू, कौन कौनं तुझ संग समाजे ।।१।।
सब निज निज परिनाम रूप, परिनमत अन्यथा भाव न साजे ।
पुन्य पाप अनुसार सबनि का, होत समागम सुख दुख पाजे ।।२।।
जग जन तन सपरस अवलोकन, करि करि सुख मानें डरि भाजे ।
यह अग्यान प्रभाव प्रगट गुरु, करत निवेदन जनहित काजै ।।३।।
पर रस मिलै कदापि न आपमें, जो जल जलज दलनि थितिकाजैं ।
'छत्त' आप केवल-ग्यायक ही, है बरतें विधि बंध निवाजै ।।४।।

करि करि ज्ञान अयान अरे नर.....

करि करि ज्ञान अयान अरे नर, निज आतम अनुभव रस धारा ।।टेक।।
वादि अनर्थ माहिं क्यों खोवत, आयु दिवस हितकारा ।।१।।
तन में बसत मिलत नही तन सों, जो जल दूध तेल तिल न्यारा ।
देखत जानत आप अपरके, गुन परजाय प्रवाह प्रचारा ।।२।।
निहचें निरविकार निरआश्रव, आनन्द रूप अनूप उघारा ।
अपनी भूल थकी परबस ह्वै, भयो समाकुल समल अपारा ।।३।।
सुख के थान होत सुख भाई, अंब न लागत कंठ मझारा ।
तजि विकलप करि थिर चित इतमें, 'छत्त' होय सहजै निसतारा ।।४।।

आयु सब यों ही बीती जाय.....

आयु सब यों ही बींती जाय ।
बरस अयन रितु मास महूरत, पल छिन समय सुभाय।।टेक।।
बन न सकत जप तप व्रत संजम, पूजन भजन उपाय।
मिथ्या विषय कषाय काज में, फंसौ न निकसौ जाय।।१।।
लाभ समै इह जात अकारथ, सत प्रति कहू सुनाय।
होति निरंतर विधि बधवारी, इस पर भव दुखदाय।।२।।
धनि वे साधु लगै परमारथ, साधन में उमगाय।
'छत्त' सफल जीवन तिनही का, हम सम शिथिल न पाय।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्तर त्याग बिना बाहिज का.....

अन्तर त्याग बिना बाहिज का, त्याग सुहित साधक नहिं क्यों ही ।।टेक।।
वाहिज त्याग होत अन्तर में, त्याग होय नहिं होय सु योंही ।।१।।
जो विधि लाभ उदै बिन बाहिज, साधन करते काज न सीझे ।
बाहिज कारन तें कारज की, उतपति होय न होय लखी जै ।।२।।
देखन जानन तें साधन बिन, सुहित सधे नहिं खेद लहीजै ।
अंध लुंज जो देखत जानत, गमन बिना नहिं सुथल सहीजै ।।३।।
यों साधन बिन साध्य अलभ लखि, साधन विषैं प्रीति कित कीजै ।
'छत्तर' थोथे गाल बजाये, पेट भरे नहिं रसना भीजै ।।४।।

आतम ग्यान भान परकासत.....

आतम ग्यान भान परकासत, वर उत्साह दशा बिस्तरती ।।टेक।।
सुगुन कंज बन मोद बधावति, परम प्रशान्ति सुधाकरि झरती ।।१।।
भरम ध्वांत विधि आगम कारन, मन वच काय क्रिया वृष करती ।
तन तें भिन्न अपनपो आश्रिति, राग-द्वेष संतति अपहरती ।।२।।
जो अभेद अविकल्प अनूपम, चित्स्वभावना सो नहिं टरती ।
वर्तमान निबंध पुराकृत, कर्म निर्जरा फल करि फरती ।।३।।
जहां न चंद सूर सुख मन गति, सुथिर भई सरवांग उघरती ।
'छत्त' आस भरि हिये वास करि, निज महिमा सुहाग सिर धरती ।।४।।

सुनि सुजन सयाने तो सम कौन अमीर रे.....

सुनि सुजन सयाने तो सम कौन अमीर रे ।
निज गुन विभव विसरि करि भोंदू, गेलत भयो फकीर रे ।।टेक।।
गुरु उपदेश संभालि खोलि हिय, नैंन निरखि धरि धीर रे ।
निपट नजीक सुसाध्य ज्ञान द्रग, बीरज सुख तुझ तीर रे ।।१।।
समरस असन अचाह कोष वृष, वसनाभरन सरीर रे ।
द्रव्य निरत की परजै पलटनि, निरत विलोकि अमीर रे ।।२।।
सुनि त्रिभुवनपति राज सचीपति, सेवग मुनिगन धीर रे ।
'छत्त' चरित विराग भाव गहि, साधन आदि अखीर रे ।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रे भाई! आतम अनुभव कीजै.....

रे भाई! आतम अनुभव कीजै ।।टेक।।
या सम सुहित न साधन दूजौ, ज्ञान द्रगन लखि लीजै ।।१।।
पुदगल जीव अनादि संजोगी, जो तिल तेल पतीजै ।
होत जुदौ तौ मिलौ कहां हैं, खलि सब प्रति दिठि दीजै ।।२।।
जीव चेतनामय अविनाशी, पुदगल जड मिलि छीजै ।
रागादिक पर-नमन भूलि निज, गये. साम्य रंग भीजै ।।३।।
निरंउपाधि सरवारथ पूरन, आनन्द उदधि मुनीजै ।
'छत्त' तास गुन रस स्वाद तें, उदभव सुखरस पीजै ।।४।।

क्या सूझी रे जिय थाने.....

क्या सूझी रे जिय थाने, जो आपा आप न जाने ।।टेक।।
एक छेत्र अवगाह संजोगे, तन ही को निज माने ।।१।।
तू न फरस रस सुरभ बरन, जड तन इन मई न आने ।
उपसत नसत गलत पूरित नित, सुध्रुव सदा सयाने ।।२।।
जो कोई जन खाई धतूरा, तिन कल धौत बखाने ।
चिर अग्यान थकी भ्रम भूला, विषयनि में चित साने ।।३।।
चाह दाह दाहचो न सिराये, पिये न बोध सुधाने ।
'छत्तर' कौन भांति सुख होवै, बडा अंदेशा म्हाने ।।४।।

जग में बड़ी अंधेरी छाई.....

जग में बड़ी अंधेरी छाई, कहतं कही नहीं जाई ।।टेक।।
मिथ्या विषय कषाय तिमर, द्रग गहै न सुहित लखाई ।।१।।
स्व-पर प्रकाशक जिन श्रुत दीपक, पाइ अंध अधिकाई ।
औरनि को हित पथ दरसावत, आप परे अंध खाई ।।२।।
जिन आयस सरधान सर्वथा, क्रिया शक्ति समगाई ।
सो न ऊंच पद धारि नीचकृति, करत न मूढ़ लजाई ।।३।।
जिनकी द्रिष्टि सुहित साधन पै, ते सदवृत्य धराई ।
धरम आसरे 'छत्त' जीव का, कौन सुगुरु फरमाई ।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जे सठ निजपद जोग्य क्रिया तजि.....

जे सठ निजपद जोग्य क्रिया तजि अन्य विशेष क्रिया सनमानै।
ते तरुमूल छेद लघु दीरघ साख रखा मन की विधि ठाने।।टेक।।
जो क्रम भंग भखत भेषज कों बधै व्याधि यह ज्ञान न आनै।
तौ जिन आयस वाहिज साधन तीव्र कषाय काज नहिं जानै।।१।।
जिन आयस सरधान एक ही कियो सुदिढ दायक सुरथानै।
तौं वर क्रिया साथ साधन को क्यों न लहै जिन सम प्रभुताने।।२।।
जातैं श्रुत सरधान स्वथा करौ क्रिया वृष थल पहिचाने।
'छत्त' जीव का लोक बडाई मांहि कहां हित लखौ सयाने।।३।।

दरस ज्ञान चारित तप कारन.....

दरस ज्ञान चारित तप कारन, कारज इक वैराग्यपना है।
कारन काज अन्यथा मानत, तिनका मन मिथ्यात सना है।।टेक।।
तरुतें बीज बीजतें तरुवर, यों नहिं कारन काज मना है।
आप बधत वैराग बधावत, हरत सकल दुख दोष जना है।।१।।
जहां ज्ञान वैराग्य अवस्थित, तहां सहज आनन्द घना है।
विषै कषाय उपाधिक भावन की संतति नहिं उदित छना है।।२।।
नाम न ठाम न विधि आस्रव कौ, पुनि अवस्थित बंध हना है।
'छत्त' सदा जयवंत प्रवरतौ, कारन काज दुहू अपना है।।३।।

रे जिय तेरी कौन भूल यह.....

रे जिय! तेरी कौन भूल यह, जो गुरु सीख न मानै है रे।
जो अवोध व्याधी पियूष सम, भेषज हिये न आनै है रे।।टेक।।
जा करी दुखी भया है होगा, तिस ही में चित सानै है रे।
विद्यमान भावी सुख कारन, ताहि न टुक सनमानै है रे।।१।।
परभावनि सों भिन्न ग्यान, आनन्द सुभाव न ठानै है रे।
अपर गेह सम्बन्ध थकी, सुख दुख उतपति बखानै है रे।।२।।
दुर्लभ अवसर मिला जात यह, सो कहा न तू जानै है रे।
'छत्त' ठठेरा का नभचर जो, निडर भया थिति थानै है रे।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निपुनता कहां गमाई राज.....

निपुनता कहां गमाई राज ।।टेक।।
मूढ भये परगुन रस राजे, खोयो सहज समाज ।।१।।
पुद्गल जीव मिश्र तन को, निज मानत धरि अहलाद ।
जो कन त्रिन भक्षत वारन, नहिं जानत भिन्न स्वाद ।।२।।
आनन्द मूल अनाकुलताई, दुख विभाव वस चाह ।
दुह का भेद-विज्ञान भये बिन, मिलत न शिवपुर राह ।।३।।
अव गुरु वंचन सुधा पी चेतन, सरधौ सुहित विधान ।
मिथ्या विषय कषाय 'छत्त' तज, करि चिन्मूरति ध्यान ।।४।।

जो कृषि साधन करत बीज बिन.....

जो कृषि साधन करत बीज बिन, बोये अन्नलाभ नहिं होई।।टेक।।
तों पद जोग्य क्रिया बिन छुल्लक, ऐलक मुनि हितलाभ न होई ।।१।।
केवल भेष अलेख अमुख थल, धरम हास्य स्थानक सोई ।
श्रुत विचार उपवास आदि तप, उदर भरन साधन अवलोई ।।२।।
जिन आयस अनुकूल तुक्ष भी, निरापेक्ष वृष साधन जोई ।
बहु गुन पिंड साम्य-रस-पूरन, साधे सुहित अहित सब खोई ।।३।।
प्रभुता सुजस प्रान पोषन के, हेत आचरौ धरम दोई ।
भव दुख नासरु सिव सुख साधन, 'छत्त' आदरौ मन मल धोई ।।४।।

जो भवितव्य लखी भगवंत.....

जो भवितव्य लखी भगवंत, सु होय वही न अन्यथा होही ।टेक।।
यह सति वज्र-रेख ज्यों अविचल, वादि विकल्प करै जन यों ही ।।१।।
जे पूरव कृत कर्म शुभाशुभ, तास उदै फल सुख दुख होई ।
सो अनिवार निवारन समरथ, हुओ, न है, न होइगो कोई ।।२।।
मंत्र जंत्र मनि भेषजादि बहु, है उपाय त्रिभुवन में जोई ।
सो सब साध्य काज को साधन, असाध्य साधे नहिं सोई ।।३।।
जातें सुख दुखरु जू होत नहि,हरष विषाद करौ भवि लोई ।
वरतमान भावी सुख साधन, 'छत्त' धरम सेवौ द्रिढ होई ।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीव तू भ्रमत भ्रमत भव खोयो.....

जीव तू भ्रमत भ्रमत भव खोयो, जब चेत भयो तब रोयो।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण तप, यह धन धूरि विगोयो।।टेक।।
विषय भोग गत रस को रसियो, छिन छिन में अतिसोयो।।१।।
क्रोध मान छल लोभ भयो, तब इन ही में उरझोयो।
मोहराय के किंकर यह सब, इनके वसि है लुटोयो।।२।।
मोह निवास संवार सु आयो, आतम हित स्वर जोयो।
'बुध महाचन्द्र' चन्द्र सम होकर, उज्ज्वल चित रखोयो।।३।।

निजघर नाहिं पिछान्या रे....

निजघर नाहिं पिछान्या रे ।।टेक।।
मोह उदय होने तैं मिथ्या भर्म भुलाना रे ।।१।।
तू तो नित्य अनादि अरूपी सिद्ध समाना रे ।
पुद्गल जड़ में राचि भयो तू मूर्ख प्रधाना रे ।।२।।
तन धन जोवन पुत्र बधू आदिक निज माना रे ।
यह सब जाय रहन के नाहीं समझ सयाना रे ।।३।।
बालपन लड़कन संग जोवन प्रिया जवान रे ।
वृद्ध भयो सब सुधि गई अब धर्म भुलाना रे ।।४।।
गई गई अब राख रही तू समझ सियाना रे ।
'बुध महाचन्द' विचारिकै निजपद नित्य रमाना रे ।।५।।

देखो! पुद्गल का परिवारा.....

देखो! पुद्गल का परिवारा, जामें चेतन है इक न्यारा।
स्पर्शन रसना घ्राण नेत्र फुनि, श्रवण पंच यह सारा।।टेक।।
स्पर्श रस फुनि गंध वर्ण, स्वर यह इनका विषयारा।।१।।
क्षुधा तृषा अर राग-द्वेष रुज, सप्त धातु दुख कारा।
बादर सूक्ष्म स्कंध अणु आदिक, मूर्ति मई निरधारा।।२।।
काय वचन मन स्वासोछ्वास जू, थावर त्रस करि डारा।
'बुध महाचन्द' चेतकरि निशदिन, तजि पुद्गल पतियारा।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भाई! चेतन चेत सकै तो चेत.....

भाई! चेतन चेत सकै तो चेत अब, नातर होगी खुवारी रे।।टेक।।
लख चौरासी में भ्रमता भ्रमता, दुरलभ नरभव धारी रे।
आयु लई तहां तुच्छ दोष तैं, पंचम काल मझारी रे।।१।।
अधिक लई तब सौ वरषन की, आयु लई अधिकारी रे।
आधी तो सोने में खोई, तेरा धर्म ध्यान विसरारी रे।।२।।
बाकी रही पचास वर्ष में, तीन दशा दुखकारी रे।
बाल अज्ञान जवान त्रिया रस, वृद्धपने बल हारी रे।।३।।
रोग अरु सोक संयोग दुःख वसि, बीतत हैं दिनसारी रे।
बाकी रही तेरी आयु किती अब, सो तैं नाहिं विचारी रे।।४।।
इतने ही में किया जो चाहै, सो तू कर सुखकारी रे।
नहीं फंसेगा फंद बिच पंडित, 'महाचन्द्र' यह धारी रे।।५।।

राग-द्वेष जाके नहिं मन में.....

राग-द्वेष जाके नहि मन में हम ऐसे के चाकर हैं।
जो हम ऐसे के चाकर तो कर्म रिपू हम कहा करि हैं।।टेक।।
नहिं अष्टादश दोष जिनू में छियालीस़ गुण आकर हैं।
सप्त तत्व उपदेशक जग में सोही हमारे ठाकुर हैं।।१।।
चाकरि में कछु फल नहिं दीसत तो नर जग में थाकि रहै।
हमरे चाकरि में है यह फल होय जगत के ठाकुर हैं।।२।।
जांकी चाकरि बिन नहिं कछु सुख तातैं हम सेवा करि हैं।
जाकै करणैं तैं हमरे नहिं खोटे कर्म विपाक रहैं।।३।।
नरकादिक गति नाशि मुक्तिपद लहै जु ताहि कृपा धर हैं।
चंद्र समान जगत में पंडित 'महाचंद्र' जिन स्तुति करिहैं।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भूल्यो रे जीव तू पद तेरो.....

भूल्यो रे जीत तू पद तेरो।।टेक।।

पुद्गल जड में राचि-राचि कर, कीनौ भववन फेरो।
जामन मरण जरा दौं दाझयो, भस्म भयो फल नरभव केरो।।१।।
पुत्र नारि बान्धव धन कारण, पाप कियो अधिकेरो।
तेरो मेरो यूं करि मान्यु इन में, नहीं कोई तेरो न मेरो।।२।।
तीन खंड को नाथ कहावत, मंदोदरी भरतेरो।
काम कला की फौज फिरी तब, राज खोय कियो नर्क बसेरो।।३।।
भूलि भूलि कर समझ जीव तूं, अबहूँ औसर हेरो।
बुध महाचन्द्र जाणि हित अपणू, पीवो जिनवानी जल केरो।।४।।

रे नर ! विपति में धर धीर.....

रे नर! विपति में धर धीर।।टेक।।

सम्पदा ज्यों आपदा रे ! विनश जै है वीर।।१।।
धूप छाया घटत बढ़ै ज्यों, त्यों हीं सुख दुःख पीर।।२।।
दोष 'द्यानत' देय किसको, तोरि करम-जंजीर।।३।।

रे मन! उलटी चाल चले.....

रे मन! उलटी चाल चले।।टेक।।

पर संगति में भ्रमतो आयो, पर-संगतबन्ध फले।।१।।
हित को छाँड़ अहित सों राचै, मोह-पिशाच झले।
उठ उठ अन्ध सम्हार देख अब, भाव सुधार चले।।२।।
आओ अन्तर आतम के ढ़िग, पर को चपल टले।
परमातम को भेद मिलत ही, भव को भ्रमण गले।।३।।
मन के साथ विवेक धरो मित, सिद्ध स्वभाव वरे।
बिना विवेक यही मन छिन में, नरक-निवास करे।।४।।
भेदज्ञान तें परमातम पद, आप आप उछरे।
'नन्दब्रह्म' परपद नहिं परसै, ज्ञान-स्वभाव धरे।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिय ऐसा दिन कब आय है.....

जिय ऐसा दिन कब आय है ।
सकल विभाव अभाव रूप ह्वै, चित विकलप मिट जाय है ।।टेक।।
परमातम में निज आतम में, भेदा-भेद विलाय है ।
औरों की तो चलै कहां फिर, भेद-विज्ञान पलाय है ।।१।।
आप आपको आपा जानत, यह व्यवहार लजाय है ।
नय परमान निक्षेप कहीं ये, इनको औसर जाय है ।।२।।
दरसन ज्ञान भेद आतम के, अनुभव माँहि पलाय है ।
'नन्दब्रह्म' चेतनमय पद में. नहिं पुद्गलगुण भाय है ।।३।।

मूढ़ मन! मानत क्यों नहीं रे.....

मूढ़ मन! मानत क्यों नहीं रे ।।टेक।।
परद्रव्यन को डोलत रहता, फिरै गांठ की संपति खोता ।
डूब रसातल मारन गोता, सुख चाहत अर करत कुकर्म ।।१।।
चिर अभ्यास कियो जिनशासन, बैठे मार मारकर आसन ।
तदपि भयो विज्ञान प्रकाश न, मगन भयो लख तन को चर्म ।।२।।
अरे 'नैनसुख' हिय के अन्धे, मत कर नाम जतिन के गंदे ।
अब तो त्याग जगत के धन्धे, कर सुकृत कर जतन धर्म ।।३।।

देखो! भूल हमारी, हम संकट पाये.....

देखो ! भूल हमारी, हम संकट पाये ।
सिद्धसमान स्वरूप हमारा, डोलूं जेम भिखारी ।।टेक।।
पर परिणति अपनी अपनाई, पोट परिग्रह धारी ।
द्रव्यकर्म वश भावकर्म कर, निजगल फांसी डाली ।।१।।
नोकर्मन तें मलिन कियो चित, बाँधे बन्धन भारी ।
बोये बीज बबूल जिन्होंने, खावें क्यों सहकारी ।।२।।
करम कमाये आगे आवें, भोगें सब संसारी ।
'नैनसौख्य' अब समता धारो, सतगुरु सीख उचारी ।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क़रम जड़ हैं न इनसे डर.....

करम जड़ है न इनसे डर, परम पुरुषार्थ कर प्यारे।
कि जिन भावों से बांधे हैं, उन्हीं को अब उलट प्यारे।।टेक।।
शुभाशुभ पाप-पुण्यों को, सदा ही बाँधते जिय में।
शुभाशुभ टालकर चेतन, तूँ शुध उपयोग धर प्यारे।।१।।
तूं जैसा शाश्वता निर्मल, परमदीपक परमज्योती।
तूं आपा-पर को जाने रह, राग द्वेष न कर प्यारे।।२।।
जहाँ आतम अकेला है, वहीं उपयोग निर्मल हैं।
उसी में निजचरण धरना, यही अभ्यास रख प्यारे।।३।।
तूँ भवसागर सुखावेगा, निजातम भाव भावेगा।
'सुखोदधि' में समावेगा, सदा समता-सहित प्यारे।।४।।

किस विधि किने करम चकचूर.....

किस विधि किये करम चकचूर।
थांकी उत्तम क्षमा पै जी अचंभो म्हाने आवै।।
एक तो प्रभु तुम परम दिगम्बर, पास न तिल तुष मात्र हजूर।
दूजे जीव दया के सागर, तीजे संतोषी भरपूर।।
चौथे प्रभु तमु हित उपदेशी, तारण तरण जगत मशहूर।
कोमल वचन सरल सम वक्ता, निर्लोभी संजम तप-शूर।।
कैसे ज्ञानावरण निवारयो, कैसे गेरयो अदर्शन चूर।
कैसे मोह-मल्ल तुम जीते, कैसे किये घातिया दूर।।
त्याग उपाधि हो तुम साहिब, आकिंचन व्रतधारी मूल।
दोष अठारह दूषण तज के, कैसे जीते काम क्रूर।।
कैसे केवलज्ञान उपायो, अन्तराय कैसे निर्मूल।
सुरनर मुनि सेवै चरण तिहारे, तो भी नहीं प्रभु तुमको गरूर।।
करत दास अरदास 'नैनसुख' येही वर दीजे मोहे दान जरूर।
जन्म-जन्म पद-पंकज सेऊँ और नहीं कछु चाह हजूर।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जगत् में कोई नहीं रे मेरा.....

जगत् में कोई नहीं रे मेरा ।
सब संशय को टाल देख लो, आप शुद्ध डेरा ।।टेक।।
क्यों शरीर में आपा लखकर, होत कर्म चेरा ।
वृथा मोह में फँसकर, करता है मेरा तेरा ।।१।।
है व्यवहार असत्य स्वप्न सम, नश्वर उलझेरा ।
कर निश्चय का ध्यान कि, जिससे होवे सुलझेरा ।।२।।
जीव जीवन सब एक सारखे, शुद्ध ज्ञान ढेरा ।
नहीं मित्र नहिं अरी जगत में, है खूबहि हेरा ।।३।।
बैठ आप में आपो भज लो, वही देव तेरा ।
'सुखसागर' पावेगा क्षण में, होत न जग फेरा ।।४।।

निजरूप को विचार,.....

निजरूप को विचार, निजानन्द स्वाद लो ।
भवभव मिटाय आप में, आपो सम्हार लो ।।टेक।।
अपना स्वरूप शुद्ध, वीतराग ज्ञानमय ।
निरमल फटिक समान, यही भाव धार लो ।।१।।
ये क्रोध मान आदि भाव, आत्मा के हैं विभाव ।
सुख शान्तिमय स्वभाव का, रूपक चितार लो ।।२।।
नहीं मान आतमभाव, है विकार कर्म का ।
मार्दव स्वभाव सार है, इस को विचार लो ।।३।।
माया नहीं निजात्म है, विकार मोह का ।
आर्जव स्वधर्म स्वच्छ, यही तत्त्व धार लो ।।४।।
नहिं लोभ है स्वरूप, है चारित्र-मोहिनी ।
शुचिता अपार सार, इसे ही सम्हार लो ।।५।।
चारों कषाय शत्रु, निजातम के हैं प्रबल ।
इनके दमन के हेतु, आत्म-ध्यान धार लो ।।६।।
सब कर्ममल निवारिये, यदि शिव की चाह है ।
'सुखदधि' विशाल आप, सुखकन्द सार लो ।।७।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वसंवेदन सुज्ञानी जो.....

स्वसंवेदन सुज्ञानी जो, वही आनन्द पाता है।
न पर का आसरा करता, सदा निजरूप ध्याता है।।टेक।।
न विषयों की कोई चिन्ता, उसे बेजार करती है।
लखा विषरूप है जिसको, वह क्यों कर याद आता है।।१।।
कषायों की लहरें न हैं, जिसके जल को लहरातीं।
जो निश्चल मेरुसदृश है, पवन घन ना हिलाता है।।२।।
जो चिन्ता है वही दुख है, जो इच्छा है वही दुख है।
है जिसने अपनी निधि देखी, नहीं फिकरों में जाता है।।३।।
है तन से गरचे व्यवहारी, मगर मन से रहे निश्चल।
वही सत ध्यान का कँन है, जो कर्मों को जलाता है।।४।।
सुधा की बूँद लेकर वह, इक सागर बनाता है।
इसी का नाम 'सुखोदधि' है, उसी में डूब जाता है।।५।।

जगत जंजाल से हटना.....

जगत जंजाल से हटना, सुगम भी है कठिन भी है।
परम सुखसिन्धु में रमना, सुगम भी है कठिन भी है।।टेक।।
है कायरता बड़ी जामें, इसे वशाकर सुवीरज से।
निजातम-भूमि में जमना, सुगम भी है कठिन भी है।।१।।
पर शत्रू हैं रागादी, इन्हें वशाकर सुवीरज से।
सुसमता का अनुभवना, सुगम भी है कठिन भी है।।२।।
करोड़ों भाव आ आकर, मनोहरता बता जाते।
न इनके मोह में पड़ना, सुगम भी है कठिन भी है।।३।।
करम जड़ हैं न कुछ करतें, चले जाते स्वमारग से।
अबन्धक शाश्वता रहना, सुगम भी है कठिन भी है।।४।।
कषायों की जलन जिसको, वही तन को जलाती है।
चिदानन्द 'सुखसागर', सुगम भी है कठिन भी है।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अरे मन! कर ले आतम-ध्यान.....

अरे मन ! कर ले आतम-ध्यान ।।टेक।।
कोई नहीं अपना इस जग में, क्यों होता हैरान ।।१।।
जासे पावे सौख्यं अनूपम, होवे गुण अमलान ।
निज में निज को देख देख मन, होवे केवलज्ञान ।।२।।
अपना लोक आप में राजत, अविनाशी सुखदान ।
'सुखसागर' नित वहे आपमें,कर मञ्जन रजहान ।।३।।

आतम-स्वरूप सार को,.....

आतम-स्वरूप सार को, जाने वही ज्ञानी ।
है मोक्षपन्थ रूप वही, मोक्ष-विज्ञानी ।।टेक।।
है यह अनेक धर्मरूप, गुण – मई आतम ।
एकान्त नय ना देख सके, आत्म सुज्ञानी ।।१।।
कोई कहे वह शुद्ध है, कोई कहे अशुद्ध ।
है शुद्ध भी अशुद्ध भी, यह जैन की वानी ।।२।।
है कर्म-बन्ध इसलिये, अशुद्ध यह आतम ।
स्वभाव से है शुद्ध यही बात प्रमानी ।।३।।
कोई कहे नित्य कोई, कहे है अनित्य कोई ।
यह नाशरहित गुणमई है नित्य सुज्ञानी ।।४।।
पर्याय पलटता रहे, हो मैल से उजला ।
परिणाम मई तत्त्व में, अनित्यता मानी ।।५।।
करता है निजस्वभाव का, पर का नहीं करता ।
भोगता है स्वस्वभाव का, यह बात सुहानी ।।६।।
है मोह ने अज्ञान में, इसको फँसा डाला ।
सुज्ञान-भाव धारते हो, आतम महानी ।।७।।
भवदधि से निकलने का, यही मार्ग निराला ।
पाता है 'सुख उदधि' को, न जिसका कोई सानी ।।८।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुझे निर्वाण पहुँचन की.....

मुझे निर्वाण पुहुँचन की, लगी लौं है अनादि से।
मैं किस विध कार्य साधूँगा, यही इच्छा अनादि से।।टेक।।
लिया व्यवहार का सरना, न निश्चय से करो मिल्लत।
इसी से हो रहा रुलना, चतुर्गति में अनादि से।।१।।
परम निश्चय उमड़ आया, कि पाया आप का दर्शन।
मिटाया ध्यान सब पर का, जो छाया था अनादि से।।२।।
लखा निज को कि ये ही है, परम आतम परमज्ञानी।
यही सुख-शान्ति-सागर है, न जाना था अनादि से।।३।।
मुझे निजदुर्ग में वसना, जहाँ आना न कर्मों का।
ओ 'सुखसागर' नहाना है, न पाया था अनादि से।।४।।

परम रस है मेरे घट में.....

परम रस है मेरे घट में, उसे पीना कठिन सुन ले।
जगतरस में जो भीगे हैं, उन्हें समरस कठिन सुन ले।।टेक।।
है भव-आताप दुखदाई, किसी ने चैन ना पाई।
जो इनके संग में उलझे, उन्हें शिवसुख कठिन सुन ले।।१।।
प्रथमपद में जो काँटे हैं, उन्हीं से छिद रहा यह तन।
जो भेदज्ञान का शस्तर, उसे पाना कठिन सुन ले।।२।।
बचाकर रखना आपे को, है सूराई परम अद्भुत।
जो भवथिति नाश कर लेते, न निजसुख कुछ कठिन सुन ले।।३।।
जो 'सुखोदधि' में रहें लवलीन, उन्हें बेकार कह दीजे।
परखना ऐसे पुरुषों का, जगत में है कठिन सुन ले।।४।।

जाको मन लगौ निजरूपहिं.....

जाको मन लगौ निजरूपहिं, ताहि और क्यों भावै।।टेक।।
ज्यों अटूट धन लहै रंक कहुँ, और न कांहु दिखावै।।१।।
गुण अनंत प्रगटै जिह थानक, ता पटतर को भावै।।२।।
इहविधि हंस सकल सुखसागर, आपुहि आप लखावै।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इक जोगी आसन बनावे.....

इक जोगी आसन बनावे, तसु भखत असन अघ नसन होत।।टेक।।
ज्ञान-सुधारस जल भर लावे, चूल्हा-शील जलावे।
कर्म-काष्ठ को चुग-चुग जारे, ध्यान-अगनि प्रजलावे।।१।।
अनुभव-भाजन निजगुण-तन्दुल, समता-क्षीर मिलावे।
सोऽहं मिष्ट निशंकित व्यंजन, समकित-छौंक लगावे।।२।।
स्याद्वाद सतभंग मसाले, गिनती पार न पावे।
निश्चयनय का चमचा फेरे, विरद भावना भावे।।३।।
आप बनावे आप ही खावे, खावत नाहिं अघावे।
तदपि मुक्ति पद-पंकज सेवे, 'नयनानन्द' शिर नावे।।४।।

जो आनन्द निजघट में.....

जो आनन्द निजघट में, नहीं पर में प्रगट होता।।टेक।।
जो ज्ञानी निजानन्द का, नहीं दुख सुख उसे होता।।१।।
करोड़ों रोग अर व्याधि, अगर तन मन में आती हैं।
निराश होकर चली जातीं, असर घट पै नहीं होता।।२।।
कहाँ सुवरण कहाँ लोहा, रतन अर काँच का अन्तर।
कहाँ है चेतना सुखमय, कहाँ जड़रूप है थोता।।३।।
जो जड़ में मोह करते हैं, वही भव में विचरते हैं,।
उन्हीं को राग द्वेषों में, क्षणिक सुख-दुख निकट होता।।४।।
जो अपनी निधि का है स्वामी, उसे क्या और धन चहिये।
वह 'सुखसागर' मगन रह के, सुज्ञानानन्द-मय होता।।५।।

करो मन! आतम वन में केल.....

करो मन ! आतम वन में केल।।टेक।।
होय सफल नरभव यह दुर्लभ, हो शिवरमणीमेल।
भवबाधा मिट जाय क्षिनक में, छूटे कर्मनजेल।।१।।
निजानन्द पावें अविनाशी, मिटि है सकल दलेल।
निजराधासंग राचो हरदम, हो 'सुखसागर' खेल।।२।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निजरूप सजो भवकूप तजो....

निजरूप सजो भवकूप तजो, तुम काहे कुरूप बनावत हो।।टेक।।
चितपिंड अखंड प्रचंड जिया, तुम रत्नकरंड कहावत हो।।१।।
स्वर्गादिक में पछतावत हैं, नरदेह मिलै तो करैं तप को।
अब भूलि गये मद फूल गये, प्रतिकूल भये इतरावत हो।।२।।
दुख नर्क निगोद विशाल तहां, अति शीत रु उष्ण सहे तुमने।
वहां ताती त्रिया लिपटाते तुम्हें, फिरहू मद में लपटावत हो।।३।।
त्रस थावर त्रास सहे बंधन, बध छेदन भेदन भूख सहा।
सुख रंच न संच करो तुम क्यों, परपंचन में उलझावत हो।।४।।
तेरे द्वारों पे कर्म-किवार लगे, तापै मोह ने ताला लगाया बड़ा।
सम्यक्त्व की कुंजी से खोल भवन, 'कुंजी' क्यों देर लगावत हो।।५।।

समझि औसर पायो रे जिया.....

समझि औसर पायो रे जिया।।टेक।।
तैं परकूं करि मान्यों यातैं, आपा कूं विसरायौ रे।।१।।
गल बिचि फांसि मोह की लागी, इन्द्रिय सुख ललचायौ रे।
भ्रमत अनादि गयौ ऐसे ही अजहूँ वोर (ओर) न आयौ रे।।२।।
करत फिरत पर की चिंता तू, नाहक जन्म गमायौ रे।
जिन साहिब की वाणी उर धरि, शुद्ध मारग दरसायो रे।।३।।

मन मेरे की उलटी रीति.....

मन मेरे की उलटी रीति।।टेक।।
जिनि जिनि तें तू दुख पावत है, तिन हीं सौ पुनि प्रीति।।१।।
वर्ग विरोधउ होइ आपुसौ, परुसौ अधिक समीति।
डहकतु वार वारजि परिग्रह, तिन ही की परतीति।।२।।
गफिल भयौ रहतु यह संतत, बहु तै करतु अनीति।
इतनी संका मानतु नाहीं, जु वैरनि माहिं वसीति।।३।।
मेरे कहै सुने नहीं मानतु, हौ इहि पायौ जीति।
'रूपचन्द' अब हारि दाउ दयौ, कहा बहुत कैफीति।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जगत में आत्मपावन को.....

जगत में आत्मपावन को, समझना काम भारी है।।टेक।।
वही ज्ञानी है जिसने आतम, निधि अनुपम सम्हारी है।।१।।
उन्हें हरवक्त भेदज्ञान की, परम रचना सुहाती है।
कि जिससे आप में आपी, छटा उठती करारी है।।२।।
करोड़ो भाव दिन पर दिन, जो आते हैं चले जाते।
जो है इक शुध उपयोगी, उसी की शान प्यारी है।।३।।
न भवसागर से है मतलब, न कुछ करना न कुछ धरना।
करो अनुभव सु आतम का, यही शिक्षा सुखारी है।।४।।

चेतन इह घर नाहीं तेरो.....

चेतन इह घर नाहीं तेरो।।टेक।।
घट पदादि नैनन गोचर जो, नाटक पुद्गल केरो।।१।।
तात मांत कामनि सुत बन्धु, करम बंध को घेरो।
करि है गौन आनगति को जब, को नहिं आवत नेरौ।।२।।
भ्रमत भ्रमत संसार गहन वन, कीयो आनि बसेरो।
मिथ्या मोह उदै तैं समझो, इह सदन है मेरो।।३।।
सद्गुरु वचन जोइ घर दीपक, मिटै अनादि अंधेरो।
असंख्यात परदेस ग्यान मय, ज्यो जानहु निज मेरो।।४।।
नाना विकलप त्यागि आपको आप आप महि हेरो।
ज्यो 'मनराम' अचेतन परसों सहजै होइ निवेरो।।५।।

जनमु अकारथ ही जु गयौ.....

जनमु अकारथ ही जु गयौ।।टेक।।
धरम अरथ काम पद तीनौं, एको करि न लयौ।।१।।
पूरब ही सुभ करमु न कीनौं, जु सब विधि हीनु भयौ।
औरो जनमु जाई जिहि इहि विधि, सोई बहुरी ठयौ।।२।।
विषयनि लागि दुसह दुख देखत, तबहूं न तनकु नयौ।
'रूपचंद' चित चेत तू नाहीं, लाग्यौं हो तोहि दयौ।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुनियाँ में सबसे न्यारा, यह आत्मा

दुनियाँ में सबसे न्यारा, यह आत्मा हमारा।
सब देखन जाननहारा, यह आत्मा हमारा।।टेक।।
यह जले नहीं अग्नि में, भीगे न कभी पानी में
सूखे न पवन के द्वारा, यह आत्मा हमारा।।१।।
शस्त्रों से कटे न काटा, नहिं तोड़ सके कोई भाटा।
मरता न मरी का मारा, यह आत्मा हमारा।।२।।
माँ बाप सुता सुत नारी, झुठे झगड़े संसारी।
नहिं कोई देत सहारा, यह आत्मा हमारा।।३।।
मत फँसे मोह ममता में, 'मक्खन' आजा आपा में।
तन धन कुछ नहीं तुम्हारा, यह आत्मा हमारा।।४।।

समझि मन इह औसर फिरि नाहीं

समझि मन इह औसर फिरि नाही।।टेक।।
नरभव पाय कहा कहिये तोहि, रमत विषै सुख मांही।।१।।
जा तन सौं तप तपै सुगति ह्वै, दुरगति दूरि नसाही।
ताकूं तू नित पोषत है रे, आप अकाज कराही।।२।।
धन कौ पाय धरम कारिज, करि उद्यम लाही।
जोवन पाय सील भजि भाई, ज्यौं अमरापुर जाही।।३।।
तन धन जोवन पाय लाय इम, सुमरि देव निज जाई।
ज्यौं 'जगराम' अचल पद पावो, सदगुरु यौं समझांही।।४।।

कहा तू वृथा रहचो मन मोहि

कहा तू वृथा रहचो मन मोहि।।टेक।।
तू सरवज्ञ सरवदरसी कों, कहि समुझावहि तोहि।।१।।
तजि निज सुख स्वाधीनपनौ कत, रहचो परबस जड़ जोहि।
घर पंचामृत मांगतु भीख जु, यह अचिरज चित मोहि।।२।।
सुख लवलेस लहय़उ न कहूं फिरि, देखे सब पद टोहि।
'रूपचंद' चित चेति चतुरमति, स्वपद लीन किन होहि।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसे होरी खेलो हो चतुर खिलारि.....

ऐसे होरी खेलो हो चतुर खिलारि।।टेक।।
धर्म थान जहँ सब सज्जन जन, मिलि बैठो इकठार।।१।।
ज्ञान सलिल पूरण पिचकारी, वानी वरषा धार।
झेलत प्रेम प्रीति सौं जेते, धोवत करम विकार।।२।।
तत्वन की चरचा शुभ चोबो, चरचौ बारंबार।
राग गुलाल अबीर त्याग, भरि रंग रंगो सुविचार।।३।।
अनहद नाद अलापो जामैं, सोहे सुर झंकार।
रींझ मगनता दान त्याग कर 'धर्मपाल' सुनि यार।।४।।

जिया तू दुख से काहे डरे रे.....

जिया तू दुख से काहे डरे रे।।टेक।।
पहली पाप करत नहि शंक्यो अब क्यों सांस भरे रे।।१।।
करम भोग भोगे ही छुटेंगे शिथिल भये न सरे रे।
धीरज धार मार मन ममता, जो सब काज सरे रे।।२।।
करत दीनता जन जन पे तु कोई न सहाय करे रे।
धर्मपाल' कहै सुमरो जगपति वे सब विपति हरे रे।।३।।

कहा परदेशी को पतियारो.....

कहा परदेशी को पतियारो।।टेक।।
मन माने तब चलै पन्थ को, साँझ गिने न सकारो।
सबै कुटुम्ब छाँड़ इतही पुनि, त्याग चले तन प्यारो।।१।।
दूर दिशावर चलत आपही, कोउ न राखन हारो।
कोऊ प्रीति करो-किन कोटिन, अन्त होयगो न्यारो।।२।।
धन सों राचि धर्म सों भूलत, झूलत मोह मँझारी।
इह विधि काल अनन्त गमायो, पायो नहिं भव पारो।।३।।
साँचे सुख सों विमुख होत है, भ्रम मदिरा मतवारो।
चेतहु 'चेत' सुनहु रे भइया, आपहि आप संभारो।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कहाँ से आये हो चेतन.....

कहाँ से आये हो चेतन, कहाँ को होवेगा जाना।
पथिक जन सोचकर मन में, मुझे यह बात बतलाना।।टेक।।
मेरा है बास साधारण, जहाँ नहीं स्वांस भर जीना।
दुखों से लड़फड़ाता हूँ, तहाँ से निकस चल दीना।।
असंख्याते नगर घूमा, मगर रचना से पहिचाना।।१।।
चतुरशीति लाख धर बाने, नगर नरपुर में आया हूँ।
कहाँ लो दुख कहूँ अपना, करम का मैं सताया हूँ।।
कहो स्वामी करूँ क्या मैं, मुझे कुछ स्वहित बतलाना।।२।।
गुरू उपदेश देते हैं, नगर निजमान तन लीना।
नग़र तुमरा निजातम है, इसे तुम छोड़ क्यों दीना।।
लखो तुम नगर अपने को, करो इस ही में निज थाना।।३।।
बिना दृग ज्ञान चारित के, नहीं निज थान पाओगे।
सम्हालोगे नहीं आये जहाँ से, वहाँ ही जाओगे।।
भला उपदेश सतगुरु का है, जो 'चम्पा' के मन माना।।४।।

आतम अनुभव करना रे, भाई.....

आतम अनुभव करना रे, भाई।।टेक।।
और जगत की थोती बातें, तिनके बीच न परना रे।
काल अनन्ते दिन यों बीते, एकौ काज न सरना रे।।१।।
अनुभव कारन श्री जिनवानी, ताही को उर धरना रे।
या बिन कोउ हितू ना जग में, छिन इक नाहिं विसरना रे।।२।।
आतम अनुभव तैं शिवसुख हो, फेर नहीं जहाँ मरना रे।
और बात सब बन्ध करत हैं या रति बन्ध कतरना रे।।३।।
पर परिणति तें परवश पर हैं, तातें फिर दुख भरना रे।
'चम्पा' यातें पर-परिणति तजि, निज रचि काज सुधरना रे।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अब मेरे चेतन अनुभव आयो.....

अब मेरे चेतन अनुभव आयो, और कछु न सुहायो।
पर से ममता छूटन लागी, स्व रस सुखानंद भायो।।टेंक।।
पर में आपो मान सदा ही, भोगन में लिपटायो।
जड़ की सेवा युग-युग कीनी, जीवन व्यर्थ गमायो।।१।।
मिथ्या भ्रम तम भागन लागे, ज्ञान प्रकाश सुहायो।
वस्तुस्वरूप समझ मैं आयो, झूठो ही भरमायो।।२।।
ज्ञाता दृष्टा स्वभाव तुम्हारो, सत् गुरू यों समझायो।
पर में कर्ता बुद्धि हटे अब, स्व में स्व सुख पायो।।३।।
जो कुछ होना होता वह है, को परिणमन रुकायो।
राग द्वेष ममता माया में, नाहक ही भरमायो।।४।।
ज्ञान उदधि सुख अमृत पूरण, कैसी प्यास सतायो।
स्व की ओर निहार 'भंवर' अब, सुखसागर लहरायो।।५।।

ये आत्मा क्या रंग, दिखाता नये नये.....

ये आत्मा क्या रंग, दिखाता नये नये।
बहुरूपिया ज्यों भेष, बनाता नये नये।।टेक।।
धरता है स्वांग देव का, स्वर्गों में जाय के
करता किलोल देवियों के, सँग नये नये।।१।।
गर नर्क में गया तो, रूप नारकी धरा।
लखि मार पीट भूख प्यास, दुख नये नये।।२।।
तिर्यञ्च में गज बाज वृषभ, महिष मृग अजा।
धारे अनेक भांति के, काबिल नये नये।।३।।
नर नारि नपुंसक बना, मानुष की योनि में।
फल पुन्य पाप के उदय, पाता नये नये।।४।।
'मक्खन' इसी प्रकार भेष, लाख चौरासी।
धारे बिगारे बार बार, फिर नये नये।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन धर्म ही दाता मुक्ति का,.....

जिन धर्म ही दाता मुक्ति का, सुख पालो जिसका जी चाहे।
है जन्म-मरण-दुख हरण औषधि, खालो जिसका जी चाहे।।टेक।।
यह स्यादवाद निर्भेद किला, नहीं लगें कुतर्कों के गोले।
षट्दर्शन अपनी तोपों से अज़मा लो जिसका जी चाहे।।१।।
है राग-द्वेष बिन देव गुरू, निर्ग्रंथ दया मई धर्म जहाँ।
है आदि अन्त अविरुद्धागम, पढ़ डालो जिसका जी चाहे।।२।।
इस सृष्टि का नहीं आदि-अन्त, है स्वयंसिद्ध रचना यूं ही।
नहीं कर्त्ता-हर्त्ता है कोई, बतला लो जिसका जी चाहे।।३।।
युक्ति प्रमाण नय निक्षेपों से, है द्रव्य पदार्थ तत्त्व वर्णन।
यदि हो इसमें कुछ भी सन्देह, निकालो जिसका जी चाहे।।४।।
नहीं सत का होता नाश कभी, नहीं असत् कभी पैदा होता।
यह जिनमत का सिद्धान्त अटल, अजमा लो जिसका जी चाहे।।५।।
संसार अथायी सागर से, जिनदेव बिना कौन पार करे।
'मक्खन' रत्नत्रय नौका पे, चढ चालो जिसका जी चाहे।।६।।

मोहि सुन-सुन आवे हाँसी,.....

मोहि सुन-सुन आवे हाँसी, पानी में मीन पियासी।।टेक।।
ज्यों मृग दौड़ा फिरे विपिन में, ढूंढ़े गन्ध वसे निजतन में।
त्यों परमातम आतम में शठ, पर में करे तलासी।।१।।
कोई अँग भभूति लगावे, कोई शिर पर जटा चढ़ावे।
कोई पञ्च अगनि तपता है, रहता दिन रात उदासी।।२।।
कोई तीरथ बन्दन जावे, कोई गंगा जमुना न्हावे।
कोई गढ़ गिरनार द्वारिका, कोई मथुरा कोई काशी।।३।।
कोई वेद पुरान टटोले, मन्दिर मस्जिद गिरजा डोले।
ढूंढ़ा सकल जहान न पाया, जो घट घट का वासी।।४।।
'मक्खन' क्यों तू इत उत भटके, निज आतमरस क्यों नहिं गटके।
जन्म-मरण दुख मिटै कटे, लख चौरासी की फाँसी।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाना नहीं निज आत्मा.....

जाना नहीं निज आत्मा, ज्ञानी हुए तो क्या हुए।
ध्याया नहीं शुद्धात्मा, ध्यानी हुए तो क्या हुए।।टेक।।
ग्रन्थ सिद्धान्त पढ़ लिये, शास्त्री महान बन गये।
आत्मा रहा बहिरात्मा, पण्डित हुए तो क्या हुए।।१।।
पंच महाव्रत आदरे, घोर तपस्या भी करी।
मन की कषायें ना मरीं, साधु हुए तो क्या हुए।।२।।
माला के दाने हाथ में, मनुआँ फिरे बाजार में।
मन की नहीं माला फिरे, जपिया हुए तो क्या हुए।।३।।
गा के बजा के नाच के, पूजा भजन सदा किये।
निज ध्येय को सुमरा नहीं, पूजक हुए तो क्या हुए।।४।।
मान बढ़ाई कारणे, दाम हजारों खरचते।
भाई तो भूखों मरें, दानी हुए तो क्या हुए।।५।।
दृष्टी न अन्तर फेरते, औगुन पराये हेरते।
'शिवराम' एक हि नाम के, शायर हुए तो क्या हुए।।६।।

अरे हम आतमराम हैं.....

अरे हम आतमराम हैं।।टेक।।
चेतन ज्योति स्वरूप निरंजन, यों तो हजारों नाम हैं।।१।।
न हम गोरे श्वेत वरण के, न हम कारे राम हैं।
न हम खट्टे न हम मीठे, हम समरस परिणाम हैं।।२।।
गन्ध न शब्द न हल्के भारी, न हम चिकने चाम हैं।
न हम देव पशु नर नारक, षण्ड पुरुष नहीं वाम हैं।।३।।
क्षत्रिय विप्र न वैश्य न शूद्र, हम निर्भय निष्काम हैं।
काशी न मथुरा तीर्थ हमारा, हम परमानन्द धाम हैं।।४।।
न हम रागी, न हम द्वेषी, दोषरहित गुणधाम हैं।
हैं परमातम सिद्ध चिदातम, हम जिनवर 'शिवराम' हैं।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समझ कर देख ले चेतन.....

समझ कर देख ले चेतन, जगत बादल की है छाया ।
कि जैसे ओस का पानी, या सुपने में मिली माया ।।टेक।।
कहाँ है राम औ लक्षमन, कहाँ सीता सती रावन ।
कहां है भीम औ अर्जुन, सभी को काल ने खाया ।।१।।
जमाये ठाट यहां भारी, बनाये बाग महल वारी ।
यह संपति छोड़ गये सारी, नहीं रहने कोई पाया ।।२।।
क्यों करता तूं तेरी मेरी, नहीं मेरी नहीं तेरी ।
हो पलकी पल में सब ढेरी, तुझे किसने है बहकाया ।।३।।
किसी का तूं नहीं साथी, न तेरा कोई संगाती ।
यूं ही दुनियां चली जाती, न कोई काम कुछ आया ।।४।।
महादुर्लभ है ये नरभव, रहा है मुफ्त में क्यों खो ।
अरे 'शिवराम' ना अब सो. कि अवसर तेरा बन आया ।।५।।

अपनी शक्ति सम्हार चेतन.....

अपनी शक्ति सम्हार, चेतन कर ले निज उपकार ।।टेक।।
जो अपनो उपकार करत है, उससे पर उपकार बनत है ।
हुआ सत्य निर्धार, चेतन कर ले निज उपकार ।।१।।
क्षणभंगुर पुद्गलमयी काया क्यों इससे स्नेह लगाया ।
बुद बुद जल उनहार चेतन कर ले निज उपकार ।।२।।
हुये अनन्ते काल भ्रमते, पंच परावर्तन दुख सहते ।
पर में आपा विचार, चेतन कर ले निज उपकार ।।३।।
परवस्तु को पर जान लिया, अपने को पहचान लिया ।
अपना ले आधार, चेतन कर ले निज उपकार ।।४।।
अपने में थिर रहे शिव पावे, जन्म-जरा-मृतु रोग मिटावे ।
समयसार अविकार, चेतन कर ले निज उपकार ।।५।।
'निर्मल' परिणति हो जब तेरी, मिटती तीन जगत फेरी ।
सिद्ध सुगुण मन धार, चेतन कर ले निज उपकार ।।६।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपना भाव उर धरना प्यारे जी.....

अपना भाव उर धरना प्यारे जी, अपना भाव सुखदान बड़ा ।
अपना भाव जिनने उर धारा, तिन पाया शिव थान बड़ा ।।टेक।।
नरभव पाय चतुर मति चूकै, यह मौका हितदान बड़ा ।
जो करना सो निजहित करलै चिंतामणि सम जान बड़ा ।।१।।
धन जोवन बादल की छाया, क्यों इसमें ललचाता है ।
इन ही भावन तैं सुन प्यारे, कर्म अरी भरमाता है ।।२।।
धन संबंध करम की छाया, इन सबमें तू न्यारा है ।
ये जड़ प्रगट अचेतन प्यारे, तू सब जाननहारा है ।।३।।
राग-द्वेष मद-मोह छोड़ कैं, वीतराग परिनाम किया ।
पूरन ब्रह्म परम पद पावन, आप 'जिनेश्वर' सरन लिया ।।४।।

आपके हिरदै सदा सुविचार करना चाहिये.....

आपके हिरदै सदा सुविचार करना चाहिये ।
जापकर निजरूपका निरधार करना चाहिये ।।टेक।।
त्याग कैं पर की झलक, निज भाव को निरखा करो ।
चढ़ि वीतरागता शिखर फिर ना उतरना चाहिये ।।१।।
धारि कैं समता सहज, तज दीजिये ममता सबै ।
लोभ विषयनि के विषैं, नाहक ना गिरना चाहिये ।।२।।
जान निज-पर को सजन, कल्यान की सूरत यही ।
संसार-सागर पार यों, जल्दी से तिरना चाहिये ।।३।।
श्रद्धा समझकर आचरन, जिनराज का मारग यही ।
हितदाय 'जिनेश्वर' धर्म को, इख्त्यार करना चाहिये ।।४।।

नैना लाग रहे मोरे,.....

नैना लाग रहे मोरे, जिन चरणन की ओर ।।टेक।।
निरखत मूरत तेरी नैना, जैसे चन्द-चकोर ।।१।।
जैसे चातक चहत मेघ को, घन गरजत जिमि मोर ।।२।।
'ज्ञान' कहे धन भाग्य हमारा, बन्दे दोउ कर-जोर ।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनधर्म रत्न पाय के स्वकाज ना किया.....

जिनधर्म रत्न पायके स्वकाज ना किया।
नरजन्म पायके वृथा गमाय क्यों दिया।।टेक।।
अरहंतदेव सेव सर्व सुक्ख की मही।
तज के कुधी कुदेव की अराधना गही।।१।।
पण अक्ष तो परतच्छ, स्वच्छ ज्ञान को हरैं।
इनमें रचो कुजीव जो कुजोनि मैं परैं।।२।।
परसंग के परसंगतैं, परसंग ही किया।
तजके सुधा स्वरूपको, जलक्षार ही पिया।।३।।
मद- मोह- काम- लोभ की, झकोर में परो।
तज इनको ये वैरीं बड़े, लखि दूर से डरो।।४।।
हिरदैं प्रतीत कीजिये, सुदेव धर्म कीं।
तजि राग-दोष- मोह, ओ कुटेव कर्म की।।५।।
सजि वीतरागभाव जो स्वभाव आपना।
विधिबंध फंद के निकंद, भाव आपना।।६।।
मन का करो निरोध, बोध सोध लीजिये।
तजि पुण्य पाप बीज, आप खोज कीजिये।।७।।
सद्धर्म का यह भेव श्री, गुरुदेव ने कहा।
शिववास काज यों, 'जिनेशदास' ने गहा।।८।।

जतन बिन कारज बिगरत भाई.....

जतन बिन कारज बिगरत भाई।
प्रभु सुमरन तें सब सुधरत है, ता मैं क्यौं अलसाई।।
विषै लीनता दुख उपजावत, लागत जहां ललचाई।
चतुरन कौ व्यौहार नय जहाँ, समझ न परत ठगाई।।
सतगुरू शिक्षा अमृत पीवौ, अब करन कठोर लगाई।
ज्यौ अजरामर पद कौ पावौ, 'जगतराम' सुखदाई।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुझे ज्ञानशुचिता सुहाई हुई है.....

मुझे ज्ञानशुचिता सुहाई हुई है, परम शान्तता दिल में भाई हुई है ।।
जहां ज्ञान सम्यक् नहीं खेद कोई, निजानन्द परता जमाई हुई है ।
नहीं रागद्वेषौ, नहीं मोह कोई, परम-ब्रह्म-रुचिता बढ़ाई हुई है ।।
जगत नाट्यशाला नटन जो कि करता वहीं शुद्धता नित्य छाई हुई है ।
करूँ ध्यान हरदम उसीका खुशी हो, स्व सुखसिन्धु में प्रीति लाई हुई है ।।

जान लियो मैं जान लियो.....

जान लियो मैं जान लियो, आपा प्रभु मैं जान लियो।।टेक।।
परमेश्वर में सेवक को भ्रम, एक छिनक में दूर कियो।।१।।
परमेश्वर की मूरत में ही, ज्ञानसिन्धुमय पेख लियो।
मरमी होय परख सो जानें, औरन को है सुन्न हियो।।२।।
याहि जान मुनि ज्ञानध्यान बल, छिन में शिवपद सिद्ध कियो।
अरहंत सिद्ध सूरि गुरु मुनिपद, एक आत्म उपदेश कियो।।३।।
जो निगोद में सो अपने में, शिवथानक सोई लखियो।
'नन्दब्रह्म' यह रञ्च फेर नहिं, बुधजन योग्य जो गहियो।।४।।

चेतन अँखियाँ खोलो ना.....

चेतन अँखियाँ खोलो ना, तेरे पीछे लागे चोर।।टेक।।
मोहरूप-मद पान करे रे, पड़े हुए वे सुद्ध।
नयना मीचे सो रहे रे, हित की खोई बुद्धि।।१।।
याहि दशा लख तेरी चेतन, लीनों इन्द्रिन घेर।
लूटी गठरी ज्ञान की रे, अब क्यों कीनी देर।।२।।
फाँसी कर्मन डाल गले रे, नरक माँहि दें गेर।
पड़ें वहाँ दुख भोगने रे, कहा करोगे फेर।।३।।
जागो चेतन चातुरा तुम, दीजो निद्रा त्याग।
ज्ञान खड्ग लो हाथ में रे, इन्द्रिय ठग जाय भाग।।४।।
उत्तम अवसर आ मिलो रे, छांडो विषयन प्रीत।
'ज्योति' आतम हित करो रे, जाय न असर वीत।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अरे मन ! आतम को पहिचान.....

अरे मन ! आतम को पहिचान, जो चाहत निज कल्यान।।टेक।।
मिल जुल संग रहत पुद्गल के, ज्यों तिल तेल मिलान।
पर है आतम भिन्न पुद्गल से, निश्चय नय परमान।।१।।
इन्द्रिन रहित अमूरत आतम, ज्ञानमयी गुण खान।
अजर अमर अरु अलख लखै नहिं, आँख नाक मुँह कान।।२।।
तन सम्बन्धी सुख दुख जाको, करत लाभ नहिं हान।
रोग शोक नहिं व्यापत जाको, हर्ष विषाद न आन।।३।।
अन्तरात्मा भाव धार कर, जो पावे निर्वान।
ज्ञानदीपकी 'ज्योति' जगा लख, आतम अमर सुजान।।४।।

अब हम अमर भये न मरेंगे.....

अब हम अमर भये न मरेंगे, हमने आतमराम पिछाना।।टेक।।
जल में गलत ना जलत अग्नि मं, असि से कटत न विष से हाना।
चीर फाड़, ना पेरत कोल्हू, लगत न अग्नी वात निशाना।।१।।
दामिन परत न हरत वज्र गिर, विषधर डस न सके इक जाना।
सिंह व्याघ्र गज ग्राह आदि पशु, मार सके कोइ दैत्य न दाना।।२।।
आदि न अन्त अनादिनिधन यह, नहिं जन्मा नहिं मरत सयाना।
पाय पाय पर्याय कर्मवश, जीवन मरण मान दुख ठाना।।३।।
यह तन नशत और तन पावत, और नशत पावत अरु नाना।
ज्यों बहुरूप धरे बहुरूपी, त्यो बहुस्वांग धरे मनमाना।।४।।
ज्यों तिल तेल दूध में घृत, त्यों तन में आतम-राम समाना।
देखत एक एक ही समुझत, कहत एक ही मनुज अजाना।।५।।
पर पुद्गल अरु पर यह आतम, नहीं एक दो तत्त्व प्रधाना।
पुद्गल मरत जरत अरु विनसत, आतम अजर अमर गुणवाना।।६।।
अमररूप लख अमर भये हम, समझ भेद जो बखाना।
ज्योति जगी श्रुति की घट अन्तर, 'ज्योति' निरन्तर उर हर्षाना।।७।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भैया! धोखे में मत आना.....

भैया! धोखे में मत आना।।टेक।।
जिनको तू परिवार कहत है, वह मतलब की खाना।
पाप करा मरघट में फूँके, रहिबो है पछताना।।१।।
जिसको प्यारी नारि कहे तू, पास में उसके न जाना।
राध रुधिर मल पूरित तन में, होता मूर्ख दिवाना।।२।।
जिसको तू धन सम्पत्ति कहता, वह है विपत्ति निदाना।
तृष्णा का दृढ़ बन्धन बाँधे, क्लेश दिखावें नाना।।३।।
पंच इन्द्री के भोग विषय में, जिनमें रहियो लुभाना।
चखत मधुर विषफल सम लागे, करें हैं दुर्गति नाना।।४।।
मुट्ठी बाँध 'मनोहर' आया, हाथ पसारे जाना।
दो दिन का यह खेल तमाशा, मिट्टी में मिल जाना।।५।।

इतनी निगाह रखना, ...

इतनी निगाह रखना, जब प्राण तन से निकले।
समभाव सुधा पीना, जब प्राण तन से निकले।।टेक।।
सुत मात तात परिजन, संसार के मुसाफिर।
इनमें न मोह लाना, जब प्राण तन से निकले।।१।।
धन सम्पदा है माया, चक्री भी यासो हारे।
इनका समान तजना, जब प्राण तन से निकले।।२।।
विषफल समान सुन्दर, दुख पाक भोग जग के।
इनसे न प्यार करना, जब प्राण तन से निकलें।।३।।
क्या भोग भोग डाले, भोगों से खुद भुगे हम।
इनका न ख्याल करना, जब प्राण तन से निकलें।।४।।
चैतन्य चिन्ह चेतन, चिन्तन से चेत जाना।
डरना न जिन 'मनोहर', जब प्राण तन से निकले।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयवन्तो जिनबिम्ब जगत में......

जयवन्तो जिनबिम्ब जगत में, जिन देखत निज पाया है।।टेक।।
वीतरागता लखि प्रभुजी की, विषय-दाह विनशाया है।
प्रगट भयो संतोष महागुण, मन थिरता में आया है।।१।।
अतिशय ज्ञान शरासन पै धरि, शुक्ल ध्यान शरवाया है।
हानि मोह-अरि चंड चौकड़ी, ज्ञानादिक उपजाया है।।२।।
वसुविधि अरि हर कर शिवथानक, थिरस्वरूप ठ़हराया है।
सो स्वरूप रुचि स्वयंसिद्ध प्रभु, ज्ञानरूप मन भाया है।।३।।
यद्यपि अचित तदपि चेतन को, चितस्वरूप दिखलाया है।
कृत्य कृत्य 'जिनेश्वर' प्रतिमा, पूजनीय गुरु गाया है।।४।।

एक तुम्ही आधार हो जग में......

एक तुम्ही आधार हो जग में, अय मेरे भगवान।
कि तुमसा और नहीं बलवान, कि तुमसा और नहीं गुणवान।।टेक।।
सम्हल न पाया गोते खाया, तुम बिन हो हैरान,।
कि तुमसा और नहीं गुणवान, कि तुमसा और नहीं बलवान।।१।।
आया समय बड़ा सुखकारी, आतम बोध कला विस्तारी।
मैं चेतन तन वस्तु न्यारी, स्वयं चराचर झलकी सारी।।
निज अन्तर में ज्योति ज्ञान की, अक्षय निधी महान।।२।।
दुनिया में एक शरण जिनन्दा, पाप-पुण्य का बुरा है फन्दा।
मैं शिवभूप रूप सुख कन्दा, ज्ञाता-दृष्टा तुमसा वन्दा।।
मुझ कारज के कारण तुम हो, और नहीं मतिमान।।३।।
सहज स्वभाव भाव अपनाऊँ पर-परिणति से चित्त हटाऊँ।
पुनि-पुनि जग में जन्म न पाऊँ, सिद्ध समान स्वयं बन जाऊँ।।
चिदानन्द चैतन्य प्रभु का, है 'सौभाग्य' महान।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रभु ! तुम आतम ध्येय करो.....

प्रभु ! तुम आतम ध्येय करो।
सब जगजाल तनो विकल्प तज निजसुख सहज वरो।।टेक।।
हम तुम एकदेश के वासी, इतनो भेद परो।
भेदज्ञान बल तुम निज साधो, हम विवेक विसरो।।१।।
तुम निज राच लगे चेतन में, देह से नेह टरो।
हम सम्बन्ध कियो तन धन से, भववन विपति भरो।।२।।
तुमरो आतम सिद्ध भयो प्रभु, हम तनबन्ध धरो।
यातें भई अधोगति हमरी, भवदुख अगनि जरो।।३।।
देख तिहारी शान्त छवि को, हम यह जान परो।
हम सेवक तुम स्वामी, हमारे, हमहिं सचेत करो।।४।।
दर्शनमोह हरी हमरी मति, तुम लख सहज टरो।
'चम्पा' सरन लई अब तुमरी, भवदुख वेग हरो।।५।।

जगत में आयो न आयो.....

जगत में आयो न आयो, नाहक जन्म गमायो।।टेक।।
मात उदर नव मास वस्यो तें, अंग सकुच दुख पायो।
जठर अग्नि की ताप सही नित, अधो शीश लटकायो।।१।।
निकसि अतिरुदन करो, नाहक जन्म गमायो।
बालपने में बोधविवर्जित, मात-पितादि लड़ायो।।२।।
तरुण भयो तरुणी रस राच्यो, काम भोग ललचायो।
दरब संच कों धायो, नाहक जन्म गमायो।।३।।
विरह भयो बल पौरुष थाक्यो, वाड्यो मोह सवायो।
दृष्टि घटी पलटी तन की छवि, डर्यो ड्रयो विललायो।।४।।
कुटुम ना काम में आयो, नाहक जन्म गमायो।
देव धरम गुरु भेद न जान्यो, अमृत तज विष खायो।।५।।
कौड़ी एक कमाई नाहीं, गाँठि को मूल गमायो।
'चेत' चित लेख सुनायो, नाहक जन्म गमायो।।६।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चेतन तैं सब सुधि विसरानी भइया.....

चेतन तैं सब सुधि विसरानी भइया।।
झूठौ जग सांचौ करि मान्यौ, सुनी नहीं सतगुरू की वानी भइया।
भ्रमत फिरचौ चहुँगति मैं अब तौ, भूख त्रिसा सही नींद निसानी भइया।।
ये पुदगल जड जानि सदा ही, तेरौ तौं निज रूप सग्यानी भइया।
'बख्तराम' सिव सुख तव पै है, ह्वै है तब जिनमत सरधानी भइया।।

अरहंत-सा कोई दाता नहीं है.....

अरहंत-सा कोई दाता नहीं है,।
जो ध्याता वह कष्ट पाता नहीं है।।
ध्याता की होती है द्रव्यदृष्टि,।
हुआ करती जिसके ज्ञान-दर्शन की दृष्टि।।
बसा करते मन में पांचों परमेष्ठी,।
मिटा करती जिसके कर्मों की सृष्टि।।
आपके सिवा कुछ सुहाता नहीं है।
जो ध्याता वह कष्ट पाता नहीं है।।१।।
ध्याता जो होता उत्तम क्षमा का धारी।
दशलक्षण धर्म की जिसने किरणें पसारी।।
जो हो लक्ष्य जिसमें, वह है लक्ष्यधारी,।
जिसे अपनी जान से हर जान हो प्यारी।।
फिर वह किसी को सताता नहीं है,।
जो ध्याता वह कष्ट पाता नहीं है।।२।।
अरहंत हैं देव देवों के देवा,।
जो करता है सेवा पाता है मेवा।।
'माणिक' प्रभु आपका नाम लेगा।
कर दो मेरा भवसागर से खेवा।।
आपके सिवा कोई दिखाता नहीं है।
जो ध्याता वह कष्ट पाता नहीं है।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चेतन सुमति सखी मिल.....

चेतन सुमति सखी मिल दोनों, खेलो प्रीतम होरी जी।।टेक।।
समकित व्रत कौ चौक बणावो, समता नीर भरावो जी।
क्रोध मान की करो पोटली, तो मिथ्या दोष भगावो जी।।१।।
ग्यान ध्यान की ल्यौ पिचकारी, तौ खोटा भाव छुडावो जी।
आठ करम को चूरण करि कै, तौ कुमति गुलाल उड़ावो जी।।२।।
जीव दया का गीत राग सुणि, संजम भाव बधावो जी।
बाजा सत्य वचन ये बोलो, तौ केवल बाणी गावो जी।।३।।
दान सील तौ मेवा कीज्यौ, तपस्या करो मिठाई जी।
देवाब्रह्म या रति पाई छै तौं मन वच काया जोई जी।।४।।

भवचक्र से जो भव्यजन को.....

भव चक्र से जो भव्यजन को, सदा पार उतारती।।टेक।।
जगजाल मय एकान्त को, जो रही सदा नकारती।।१।।
निज तत्व को पाकर, भविक जिसकी उतारें आरती।।२।।
नयचक्र में उपलब्ध नित, यह नित्य बोधक भारती।।३।।

मिथ्यात्व नींद छोड़ दे,.....

मिथ्यात्व नींद छोड़ दे, आपा सम्हार ले।
जरा ज्ञानचक्षु खोल के, निज को पिछान ले।।टेक।।
वस्यो है तू निगोद में, अनन्तकाल जाय के।
तहाँ स्वास में अठारह, जन्म मरण पाय के।।१।।
जहाँ अंक के अनन्त भाग, ज्ञान है गहा।
भू आदि पंच मांहि, एकाक्ष हो रहा।।२।।
विकलेन्द्रियादि योनि में, दुखी हुआ फिरा।
सुर नर नरक नीच, गोत्र पाय के मरा।।३।।
ज्यों अन्धे को बटेर, त्यों सुबोध पाय के।
दृग ज्ञान चरण धार ले, निज में समाय के।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिया तैंने भावलिंग नहिं धारौ.....

जिया तैंने भावलिंग नहिं धारौ नहिं आतमराम विचारौ।।टेक।।
कै काहू सें ममता जोड़ी, कै पर दोष निहारौ।
कै काहू के प्राणघात कर, नरक निगोद सिधारौ।।१।।
दोय एक षट नव भवमाहीं, भ्रमत भ्रमत जब हारौ।
अंतिम भव त्रय वक्र प्रथम में, ज्ञान जघन्य उच्चारौ।।२।।
तहँतैं निकस भटक भववन में, नरभव आय सम्हारौ।
पंचताप तपि सुरपुर पहुँच्यो, पुनि भवसिंधु मंझारो।।३।।
यह मानुष भव सुकुल पायके, रत्नत्रय बिस्तारौ।
दास उदास ह्मोउ भोगन तें, अवागमन निवारौ।।४।।

देखा जब अपने अन्दर में कुछ.....

देखा जब अपने अन्दर में कुछ, और नहीं भगवान हूँ मैं।
पर्यय ही दीन हीन पामर, अन्दर में वैभववान हूँ मैं।।टेक।।
चैतन्य प्राण से जीवित नित, इन्द्रिय बल श्वाशोच्छवास नहीं।
हूँ आयु रहित नित अजर-अमर, सच्चिदानंद गुणधाम हूँ मैं।।१।।
आधीन नहीं संयोगों के, पर्यायों से अप्रभावी हूँ।
स्वाधीन अखण्ड अप्रतापी हूँ, निज से ही प्रभुतावान हूँ मैं।।२।।
सामान्य-विशेषों सहित विश्व, प्रत्यक्ष झलक जावे क्षण में।
सर्वज्ञ सर्वदर्शी आदिक, सम्यक निधियों की खान हूँ मैं।।३।।
स्वधर्मों में व्यापी विभु हूँ, और धर्म अनन्तोमय धर्मी।
नित निज स्वरूप की रचना से, सामर्थ्य से वीरजवान हूँ मैं।।४।।
तृप्ती आनन्दमयी प्रकटी, देखा जब अन्तर नाथ को मैं।
नहीं रही कामना अब कोई, बस निर्विकार निष्काम हूँ मैं।।५।।
मेरा वैभव शाश्वत अक्षुण, पर से आदान प्रदान नहीं।
त्यागोपदान शून्य निष्क्रिय, और अगुरुलघु शिवधाम हूँ मैं।।६।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चलै जात पायो सरस ज्ञान हीरा.....

चलै जात पायो सरस ज्ञान हीरा।।टेक।।
दुख दारिद्र सुकृत सुकृत, दूरिभई पर पीरा।।१।।
सित वैराग्य विवेक पंथ परि, वरषत सम रस नीरा।
मोह धूलि बह जात, जगमग्यो, निर्मल ज्योति गहीरा।।२।।
अखिल अनादि अनंत अनोपम, निज निधि गुण गम्भीरा।
अरस अगंध अपरस अनौतन, अलख अभेद अचीरा।।३।।
अरुण सुपेत न स्वेत हरित दुति, स्याम वरण सु न पीरा।
आवत हाथ काच सम सूझै, पर पद आदि शरीरा।।४।।
जासु उद्योत होत शिव सन्मुख, छोडि चतुर्गति कीरा।
'देवीदास' मिटै तिनही की, सहज विषम भव पीरा।।५।।

जाना धरम का न रूप,.....

जाना धरम का न रूप, भ्रम में बुद्धि पड़ी।
भ्रमता अनादिकाल से, दुख पाया सुख न घड़ी।।टेक।।
वस्तुस्वभाव धर्म गुरू ने बताया,।
तू है चेतन देखो पुद्गलमयी काया।।
जाना न निज पर का भेद, पर्याय दृष्टि पडी।।१।।
तू तो चेतनज्ञाता दृष्टा स्वरूप है।
उपजे विनसे यह पुदगल को रूप है।।
जानो अब निज पर का भेद लगाकर ज्ञान झड़ी।।२।।
बड़ी मुश्किल से तन मानुष का पाया।
उत्तम देश निरोगी यह काया।।
जिनवाणी का पाया संयोग, यह दुर्लभता बड़ी।।३।।
निज-पर को जान भ्रम अपना मिटाले,।
रहकर निजरूप धर्म धन को कमाले।।
'निर्मल' शक्ति से कर त्याग करके प्रतिज्ञा कड़ी।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आतम रूप निहारा सुद्धनय.....

आतम रूप निहारा सुद्धनय आतम रूप निहारा हो।।टेक।।
जाकी बिन पहिचानि जगत में पाया दु:ख अपारा हो।।१।।
बंध पर्स विन एक नियत है निर्विशेष निरधारा हो।
पर तें भिन्न अभिन्न अनोपम ज्ञायक चित हमारा हो।।२।।
भेदज्ञान रवि घट परकासत मिथ्या तिमिर निवारा हो।
'मानिक 'बलिहारी जिनकी तिन निज घट मांहि सम्हारा हो।।३।।

दिन रात मेरे स्वामी,.....

दिन रात मेरे स्वामी, ये भावना मैं भाऊँ।
देहांत के समय में, तुमको न भूल जाऊँ।।टेक।।
शत्रू अगर कोई हों, सन्तुष्ट उनको कर दूँ।
समता का भाव धर कर, सब से क्षमा कराऊँ।।१।।
त्यागूं आहार पानी, औषध विचार अवसर।
टूटे नियम न कोई, दृढ़ता हृदय में लाऊँ।।२।।
जागें नहीं कषायें, नहिं वेदना सतावे।
तुमसे ही लौ लगी हो, दुर्ध्यान को भगाऊँ।।३।।
आतम स्वरूप अथवा, आराधना विचारूँ।
अरहंत सिद्ध सांधू, रटना यही लगाऊँ।।४।।
धर्मात्मा निकट हों, चरचा धर्म सुनावें।
वे सावधान रक्खें, गाफिल न होने पाऊँ।।५।।
जीने की हो न वांछा, मरनेकी हो न इच्छा।
परिवार मित्र जन से, मैं मोह को हटाऊँ।।६।।
भोगे जो भोग पहले, उनका न होवे सुमरन।
मैं राज्य सम्पदा या, पद इन्द्र का न चाहूँ।।७।।
सम्यक्त्व का हो पालन, हो अन्त में समाधि।
'शिवराम' प्रार्थना यह, जीवन सफल बनाऊँ।।८।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं वो दिन कब पाऊँ.....

मैं वो दिन कब पाऊँ, घर को छोड़ बन जाऊँ।
अंतर बाहिर त्याग परिग्रह, नग्न स्वरूप बनाऊँ।।टेक।।
सकल विभावमय परिणति तज स्वाभाविक चित लाऊँ।
पर्वत गुफा नगर सुन्दर घर, दीपक चांद मनाऊँ।।१।।
भूमि सेज आकाश चंदोबा, तकिया भुजा लगाऊँ।
उपल जान मृग खाज खुजावत, ऐसा ध्यान लगाऊँ।।२।।
क्षुधा तृषादिक सहूँ परीषह, बारह भावन भाऊँ।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण तप, दशलक्षण उर लाऊँ।।३।।
चार घातिया कर्म नाशकर, केवलज्ञान उपाऊँ।
घात अघाति लहूँ शिव 'मक्खन' फेर न जग में आऊँ।।४।।

चेतन अनुभव घन मन भीनौ .....

चेतन अनुभव घन मन भीनौ।।टेक।।
काल अनादि अविद्या बंधन, सहज हुवौ बल छीनौ।।१।।
घट घट प्रकट अनत नट नाटक, एक अनेकन कीनौ।
अंग अंग रंग विरंग विराजत, वाचक वचन विहीनौ।।२।।
आपुन भोगी भुगतिन मुगता, करता भाव विलीनौ।
चतुर 'रूप' की चित्र चतुरता, चीन्ही चतुर प्रवीनौ।।३।।

रे जिय जनम लाहो लेह.....

रे जिय जनम लाहो लेह।।टेक।
चरण ते जिन भवन पहुंचै, दान दे कर जेह।।१।।
उर सोई जामैं दया है, अरू रूधिर कौ गेह।
जीभ सो जिन नाम गावै, सांस सों करें नेह।।२।।
आंख ते जिनराज देखैं, और आंखै खेह।
श्रवन तें जिन वचन सुनि सुभ, तप तपै सो देह।।३।।
सफल तन इह भांति ह्वै है और भांति न केह।
है सुखी 'मनराम' ध्यावौ कहै सदगुरु एह।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ,.....

मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ ।।टेक।।
मैं हूँ अपने में स्वयं पूर्ण, पर की मुझमें कुछ गन्ध नहीं।
मैं अगम्य अरूपी अस्पर्शी, पर से कुछ भी सम्बन्ध नहीं।।१।।
मैं रंग-रागमे भिन्न भेद से, भी मैं भिन्न निराला हूँ।
मैं हूँ अखन्ड चैतन्य पिण्ड, निज रस में रमने वाला हूँ।।२।।
मैं ही मेरा कर्त्ता धर्ता, मुझमें पर का कुछ काम नहीं।
मैं मुझमें रमने वाला हूँ, पर मैं मेरा विश्राम नहीं।।३।।
मैं शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध एक, पर परणति से अप्रभावी हूँ।
आत्मानुभूति से प्राप्त तत्व, मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ।।४।।

वस्तु स्वभाव समझ नहीं पाता.....

वस्तु स्वभाव समझ नहीं पाता, कर्त्ता धरता बन जाता।।टेक।।
स्व को भूल पर अपनाता, मिथ्यापन का यह नाता।।१।।
सहज स्वभाव समझ में आता, करना धरना मिट जाता।
स्व सो स्व और पर सो पर है, सम्यक्पन का यह नाता।।२।।
रोके रुकता लाये आता, धक्के से जाता है कौन।
अपनी अपनी सहज गुफा में, सभी द्रव्य है पर से मौन।।३।।

यम नियम संयम आप कियो.....

यम नियम संयम आप कियो, पुनि त्याग विराग अथाग लियो।
वनवास लियो मुख मौन रह्यो, दृढ़ आसन पद्म लगाय दियो।।टेक।।
मन पौन निरोध स्वबोध कियो, हठ जोग प्रयोग सुतार भयो।
जप भेद जपे तप त्योंहि तपे, उर से ही उदासि लहि सबपे।।१।।
सब शास्त्रन के नय धारि हिये, मत मन्डन खन्डन भेद लिये।
वह साधन बार अनन्त कियो, तदपि कछु हाथ हजू न पर्यो।।२।।
अब क्यों न विचारत है मन से, कछु और रहा उन साधन से?।
बिन सद्गुरु कोउ न भेद लहें,मुख आगल है कह बात कहे।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो एक शुद्ध विकारवर्जित.....

जो एक शुद्ध विकारवर्जित, अचल परम पदार्थ है।
जो एक ज्ञायकभाव निर्मल, नित्य निज परमार्थ है।।टेक।
जिसके दरश व जानने, का नाम दर्शन ज्ञान है।
हो नमन उस परमार्थ को, जिसमें चरण ही ध्यान है।।१।।
निज आत्मा को जानकर, पहिचानकर जमकर अभी।
जो बन गये परमात्मा, पर्याय में भी वे सभी।।२।।
वे साध्य हैं, आराध्य हैं, आराधना के सार हैं।
हो नमन उन जिनदेव को, जो भवजलधि के पार हैं।।३।।
भवचक्र से जो भव्यजन को, सदा पार उतारती।
जगजालमय एकान्त को, जो रही सदा नकारती।।४।।
निजतत्त्व को पाकर भविक, जिसकी उतारें आरती।
नयचक्रमय उपलब्ध नित, यह नित्यबोधक भारती।।५।।
नयचक्र के संचार में, जो चतुर हैं, प्रतिबद्ध हैं।
भवचक्र के संहार में, जो प्रतिसमय सन्नद्ध हैं।।६।।
निज आत्मा की साधना में, निरत तन मन नगन हैं।
भव्यजन के शरण जिनके, चरण उनको नमन है।।७।।

सुण सुण रे म्हारा लोभी मनड़ा.....

सुण सुण रे म्हारा लोभी मनड़ा, प्रभुरो भजन तनैं कब भावे।।टेक।।
रकम रकम रा भोजन भावे, रुचि रुचि भोग लगावे मनड़ा।।१।।
उजला उजला वस्त्र पहरे, छैल छबीलो बन जावे मनड़ा।
लोग दिखावण मन्दिर जावे, मोटा मोटा तिलक लगावे मनड़ा।।२।।
काया माया धन धरती रो, माटी में माटी मिल जावे मनड़ा।
झूठो बोले झूठो तोले, जैन में कैन क्यूं मिलावे मनड़ा।।३।।
चतुर चेत कर चाले जग में, मूरख जनम क्यूं गमावे मनड़ा।
पारस चरन परस जब पावे, लोहा कंचन बन जावे मनड़ा।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो मोह माया मान मत्सर, ...

जो मोह माया मान मत्सर, मदन मर्दन वीर हैं।
जो विपुल विघ्नों बीच में भी, ध्यान धारण धीर हैं।।टेक।।
जो तरण-तारण भव-निवारण, भव-जलधि के तीर हैं।
वे वंदनीय जिनेश, तीर्थंकर स्वयं महावीर हैं।।१।।
जो राग-द्वेष विकार वर्जित, लीन आतम ध्यान में।
जिनके विराट् विशाल निर्मल, अचल केवलज्ञान में।।२।।
युगपद् विशद् सकलार्थ झलकें, ध्वनित हों व्याख्यान में।
वे वर्द्धमान महान जिन, विचरें हमारे ध्यान में।।३।।
जिनका परम पावन चरित, जलनिधि समान अपार है।
जिनके गुणों के कथन में, गणधर न पावैं पार है।।४।।
बस वीतराग-विज्ञान ही, जिनके कथन का सार है।
उन सर्वदर्शी सन्मती को, वंदना शत बार है।।५।।

जो क्रोध-मद-माया अपावन .....

जो क्रोध-मद-माया अपावन, लोभरूप विभाव हैं।
उनके अभाव स्वभावमय, उत्तमक्षमादि स्वभाव हैं।।टेक।।
उत्तमक्षमादि स्वभाव ही, इस आत्मा के धर्म हैं।
है सत्य शाश्वत ज्ञानमय, निजधर्म शेष अधर्म हैं।।१।।
निज आत्मा में रमण संयम, रमण ही तप-त्याग है।
निज रमण आकिंचन्य है, निज रमण परिग्रह-त्याग है।।२।।
निज रमणता ब्रह्मचर्य है, निज रमणता 'दशधर्म' है।
निज जानना पहिचानना, रमना धरम का मर्म है।।३।।
अरहन्त हैं दशधर्म-धारक, धर्म-धारक सिद्ध हैं।
आचार्य हैं, उवझाय हैं, मुनिराज सर्व प्रसिद्ध हैं।।४।।
जो आत्मा को जानते, पहिचानते करते रमन।
वे धर्म-धारक, धर्म-धन हैं, उन्हें हम करते नमन।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समकित बिन फल नहीं पावोगे.....

समकित बिन फल नहीं पावोगे, नहीं पावोगे पछितावोगे।।टेक।।
चाहे निर्जन तप करिए, बिन समता दुख दाहोगे।।१।।
मिथ्या मारग निश दिन सेवो, कैसे मुक्ती पावोगे।
पत्थर-नाव समन्दर गहरा, कैसे पार लंघावोगे।।२।।
झूठे देव गुरु तज दीजे, नहीं आखिर पछतावोगे।
'न्यामत' स्यादवाद मन लावो, यासें मुक्ती पावोगे।।३।।

महावीर के पथ पर चलकर.....

महावीर के पथ पर चलकर महावीर गुण गायेंगे।
महावीर से शक्ति प्राप्त कर महावीर बन जायेंगे।।टेक।।
जीव मात्र की हिंसा से हो विमुख दया अपनायेंगे।
सत्य धर्म पर दृढ़ रहकर हम झूठ न उर में लायेंगे।।१।।
बिना किसी की आज्ञा कोई वस्तु न कभी उठायेंगे।
ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कर गीत शील के गायेंगे।।२।।
अनुचित संग्रह छोड़ सदा अपरिग्रह अपनायेंगे।
पांच पाप से दूर रहेंगे अणुव्रत पाँच निभायेंगे।।३।।
क्रोध मान माया तृष्णा का अब हम नाम मिटायेंगे।
सेवा करके दीन दुखी जीवों का कष्ट हटायेंगे।।४।।
क्रोध भाव को त्याग निरन्तर क्षमाभाव उर लायेंगे।
मान कषाय दूर करके हम विनय महा चित लायेंगे।।५।।
मायाचारी त्याग सहज ही सरल भावना भायेंगे।
लोभ हटा सन्तोषामृत से जीवन सुखी बनायेंगे।।६।।
सप्त व्यसन से दूर रहेंगे तप संयम नित ध्यायेंगे।
कैसा भी संकट विपत्ति हो धैर्य हृदय में लायेंगे।।७।।
आत्म स्वरूप नहीं भूलेंगे समता भाव जगायेंगे।
श्रद्धा ज्ञान चरित्र धारकर, नरभव सफल बनायेंगे।।८।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वतः परिणमति वस्तु के, ...

स्वतः परिणमति वस्तु के क्यों करता बनते जाते हो।
कुछ समझ नहीं आती तुझको, निःसत्व बने ही जाते हो।।टेक।।
अरे कौन निकम्मा जग में है, जो पर का करने जाता हो।
सब अपने अन्दर रमते हैं, तब किस विधि करण रचाते हो।।१।।
वस्तु की मालिक वस्तु है, जो मालिक है वह कर्त्ता है।
फिर मालिक के मालिक बनकर, क्यों नीति-न्याय गमाते हो।।२।।
सत् सब स्वयं परिणमता है, वह नहीं किसी की सुनता है।
यह माने बिन कल्याण नहीं, कोई कैसे ही कुछ कहता हो।।३।।

अपने घर को देख बावरे.....

अपने घर को देख बावरे, सुख का जहां खजाना रे।
क्यों पर में सुख खोज रहा है, क्यों पर का दीवाना रे।।टेक।।
ये माटी के खेल खिलौने, माटी तन क़ी रानी रे।
माटी के पुतले तेरा तो, माटी भरा बिछौना रे।।१।।
परपरणति परभाव निरखता, आत्मतत्त्व को भूला रे।
पर-भावों में दुःख-सुख माने, भूल रहा भव झूला रे।।
सहजानन्दी रूप तुम्हारा, जग सारा बेगाना रे।।२।।
चिन्तामणि-सा नरभव पाया, कल्पवृक्ष-सा जिनवृष रे।
गवां रहा है रत्न अमोलक, क्यों विषयों में फँस-फँस रे।।
बिखर जायगा एक दिन तेरा, सारा ताना बाना रे।।३।।
घूम लिये हो चारों गति में, अब तो निज का ध्यान करो।
विषय हलाहल बहुत पिया है, अब समतारस पान करो।।
अपने गुण को छोड़ बैठ जा, बहुत दूर नहीं जाना रे।।४।।
त्रस-थावर पर्याय बदलता, पिये मोह की हाला रे।
कभी स्वर्ग के आँगन देखे, कभी नरक की ज्वाला रे।।
चौरासी के 'पथिक' तुम्हारा, शिवपुर दूर ठिकाना रे।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धन्य धन्य जिन धर्म हमारो.....

धन्य धन्य जिन धर्म हमारो भवसागर से तारण हारो ।।टेक।।
धन्य जिनेश्वर धन्य जिनागम धन्य धन्य ध्रुव धाम हमारो ।।१।।
देव-शास्त्र-गुरु तीन रतन पा धन्य बनो नर जन्म हमारो ।
वीतराग सर्वज्ञ देव लखि सम्यक् दर्शन उर में धारो ।।२।।
द्वादशांग जिनवाणि हृदय धरि भेद-ज्ञान कला विस्तारो ।
परम दिगम्बर मुनिवर वन्दँ सम्यक् चारित्र रत्न हमारो ।।३।।

आचरण तुम्हारा शुद्ध नहीं.....

आचरण तुम्हारा शुद्ध नहीं, कल्याण तुम्हारा कैसे हो ।
विषयन-वश-भक्ष-अभक्ष भखो, हिय ज्ञान-उजाला कैसे हो ।।टेक।।
दिल दुनियाँ से भयभीत नहीं, आत्म-हित से कुछ प्रीत नहीं ।
तन पिंजर से जिय निकल पड़े, प्रस्थान सहारा कैसे हो ।।१।।
कायर बन जप व्रत छोड़ रहे, तप करने से दिल मोड़ रहे ।
विषयन में ममता जोड़ रहे, बिन दान गुजारा कैसे हो ।।२।।
पूजा कर मन इच्छा धरते, मन चंचल कर माला जपते ।
झूठे धंधे गटपट करते, कर्मों का निवारा कैसे हो ।।३।।
इस तनको अपना मान रहे, धन सम्पत्ति अपनी जान रहे ।
मैं-मैं तूँ-तूँ का ध्यान रहे, सत् ध्यान तुम्हारा कैसे हो ।।४।।
शुक जैसी रटना रटते हो, आगम का अर्थ न धरते हो ।
चलने की चाल पलटते हो, दुठ थान उबारा कैसे हो ।।५।।
प्रभुताई को तुम भजते हो, प्रभु नाम का कीर्तन तजते हो ।
प्रभु नाम से प्रभुता होती है, यह बात प्रचारा कैसे हो ।।६।।
नर तन-चिन्तामणि पाकर के, खोते हो काग उड़ा करके ।
डूबे को अगम भवोदधि में, बिन यान किनारा कैसे हो ।।७।।
अवसर लहि निज-हित कर डालो, शिव मग पर निज दृष्टी डालो ।
फिर 'बाल' जहाँ में रहने का, स्थान तुम्हारा कैसे हो ।।८।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चेतन क्यों पर अपनाता है.....

चेतन क्यों पर अपनाता है, आनन्दघन तू खुद ज्ञाता है।।टेक।।
ज्ञाता क्यों करता बनता है, खुद क्रमबद्ध सहज पलटता है।
सब अपनी धुन में धुनता है, तब कौन जगत में सुनता है।।१।।
उठ चेत जरा क्यों सोता है, फिर देख ज्ञान क्या होता है।
क्यों पर का बोझा ढ़ोता है, क्यों जीवन अपना खोता है।।२।।
पर का तू करता बनता है, कर तो कुछ भी नहीं सकता है।
यह विश्व नियम से चलता है, इसमें नहीं किसी का चलता है।।३।।
जो परका असर मनाता है, वह धोखा निश्चय खाता है।
जब जबरन का विष जाता है, तब सहज समझ में आता है।।४।।
जो द्रव्य द्वारे आता है, वह जीवन ज्योति जगाता है।
सुखधाम चिन्तामणि ज्ञाता है, आनन्द अनुभव नित पाता है।।५।।

समझ मन बावरे सब स्वारथ.....

समझ मन बावरे, सब स्वारथ का संसार।।टेक।।
हरे वृक्ष पर तोता बैठा, करता मौज विहारी।
सूखा तरुवर उड़ गया तोता, छिन में प्रीति बिसारी।।१।।
ताल पाल पर किया बसेरा, निर्मल नीर निहारा।
लखा सरोवर सूखा जब ही, पंखी पंख पसारा।।२।।
पिता पुत्र सब लोग प्यारे, जब लों करे कमाई।
जो नहीं द्रव्य कमाकर लावें, दुश्मन देत दिखाई।।३।।
जब लग स्वारथ सधत है जासों, तब लग तासों प्रीति।
स्वारथ भये बात न बूझे, यही जगत की रीति।।४।।
अपने अपने सुख को रोवे, मात पिता सुत नारी।
धरे ढके की बूझन लागे, अन्त समय की बारी।।५।।
सभी सगे शिवराम गरज के, तुम भी स्वारथ साधो।
नर तन मित्र मिला है तुमको, आतम हित आराधो।।६।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेरो शरण समयसार.....

मेरो शरण समयसार दूसरो न कोई ।
जा प्रमाद कार्य समयसार सिद्ध होई ।।टेक।।
अविनाशी ब्रह्मरूप, अविचल आज चित स्वरूप ।
शुद्ध बुद्ध स्वतः सिद्ध, जो प्रभु मैं सोई ।।१।।
प्रकट रूप का आधार, निश्चयतः निराधार ।
ये ही गुरु ये ही शिष्य, भक्त प्रभु दोई ।।२।।
समयसार नाहिं जाने, बाहच ज्ञान बहुत जाने ।
भव भव भटके, सुखी नाहिं कोई ।।३।।
एक समयसार जाने, और कुछ नाहिं जाने ।
समयसार रूप होय, परम सुखी होई ।।४।।
रूप मेरा समयसार, देव गुरु समयसार ।
शास्त्र कहे समयसार, सार यही होई ।।५।।
सहजानन्द सहज ज्ञान, निज परिणति का निधान ।
जिन चीन्हा उन परणति, निर्विकल्प जोई ।।६।।
सुनो समजो समयसार, गावो चिन्तो समयसार ।
श्रद्धो ध्यावो समयसार, समयसार होई ।।७।।

या घटमैं परमात्मा चिन्मूरति भइया.....

या घटमैं परमात्मा चिन्मूरति भइया ।
ताहि विलोकि सुदृष्टिसों पंडित परखैया ।।टेक।।
ज्ञानस्वरूप सुधामयी, भवसिंधु तरैया ।
तिहूँ लोकमें प्रगट है, जाकी ठकुरैया ।।
आप तरै तारें परहिं, जैसें जल नइया ।
केवल शुद्ध स्वभाव है, समुझै समुझैया ।।
देव वहै गुरु है वहै, शिव वहै बसइया ।
त्रिभुवन मुकुट चहै सदा, चेतौ चितवइयां ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धर्म बिना बावरे तूने मानव रतन गँवाया

धर्म बिना बावरे तूने मानव रतन गँवाया।।टेक।।
कभी न कीना आत्म निरीक्षण कभी न निज गुण गाया।
पर परणति से प्रीति बढ़ाकर काल अनंत बढ़ाया।।१।।
यह संसार पुण्य-पापों का पुण्य देख ललचाया।
दो हजार सागर के पीछे काम नहीं यह आया।।२।।
यह संसार भव समुद्र है बन विषयी हरषाया।
ज्ञानी जन तो पार उतर गये मूरख रुदन मचाया।।३।।
यह संसार ज्ञेय द्रव्य है आतम ज्ञायक गाया।
कर्ता बुद्धि छोड़ दे चेतन नहिं तो फिर पछताया।।४।।
यह संसार दृष्टि की माया अपना कर अपनाया।
"केवल" दृष्टि सम्यक् कर ले कहान गुरु समझाया।।५।।

सुन्दर दशलच्छन वृष सेय

सुन्दर दशलच्छन वृष, सेय सदा भाई।
जास तैं ततच्छन जन, होय विश्वराई।।टेक।।
क्रोध को निरोध, शान्त-सुधा को नितान्त शोध।
मान को तजौ, भजौ स्वभाव कोमलाई।।१।।
छल बल तजि, विमलभाव सरलताई भजि।
सर्व जीव चौन दैन, वैन कह सुहाई।।२।।
ज्ञान-तीर्थ स्नान दान, ध्यान भान हृदय आन।
दया-चरन धारि, करन-विषय सब बिहाई।।३।।
आलस हरि द्वादश तप धारि शुद्ध मानस करि।
खोह गोह देह जानि, तजौ नेहताई।।४।।
अन्तरंग बाहच संग त्यागि आत्मरंग पागि।
शीलमाल अति विशाल, पहिर शोभनाई।।५।।
यह वृष-सोपान राज, मोक्षधाम चढ़न कांज।
शिव सुख निज गुन समाज, 'केवली' बताई।।६।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कहियै जो कहिबे की होय.....

कहियै जो कहिब की होय।।टेक।।
आप आप में परगट दीसै, बाहिर निकस न पावै कोय।।१।।
बंचन राशि सब पुद्गल परजै, पुद्गल रूप नहीं पद सोय।।२।।
निर-विकलप अनुभूति सास्वती, मगन सुजान आन भ्रम खोय।।३।।

जिसे खोजता फिरता है.....

जिसे खोजता फिरता है तू मक्का, मथुरा, काशी।
तेरे ही अंदर बैठा है वह शिवपुर का वासी।।टेक।।
अपनी भूल न समझी इससे जनम-मरण दुख पाता,।
स्वर्ग नरक तिर्यंच गती में भव भव गोते खाता।।१।।
बन बन फिरता जिसके खातिर बन साधु संन्यासी।
तेरे ही अंदर बैठा है वह शिवपुर का वासी।।२।।
जाति-धर्म के बन्धन में बँधकर पुरुषार्थ गँवाया।
या फिर माया के चक्कर में अपने को विसराया।।३।।
लेकिन कभी न सोचा मैं ही सिद्धशिला का वासी।
मेरे ही अंदर बैठा है वह शिवपुर का वासी।।४।।
अपना समझ लिया जिस तन को भक्षाभक्ष खिलाता।
वह भी तेरे साथ न जाता, माटी में मिल जाता।।५।।
फिर क्यों इसको समझ रहा है अपना जीवन साथी।
तेरे ही अंदर बैठा है वह शिवपुर का वासी।।६।।
निज का 'दर्शन' कर ले तो सब बिगड़ा काम बनेगा।
तेरे 'ज्ञान' मांहि जग का प्रतिबिम्ब स्वयं झलकेगा।।७।।
तब होगा 'चारित्र' आप ही निर्विकार अविनाशी।
तेरे ही अंदर बैठा है वह शिवपुर का वासी।।८।।
अपने को पहिचान जाग उठ, अब क्यों देर लगाता।
तुझको तेरे ही अंदर का तारणहार बुलाता।।९।।
'काका' नर तन मिला काट ले जन्म-मरण की फाँसी।
तू ही आत्मानन्द बावरे अजर अमर अविनाशी।।१०।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ना समझो अभी मित्र कितना अंधेरा.....

ना समझो अभी मित्र कितना अंधेरा जभी जाग जाओ तभी है सवेरा।।
गई सो गई मत गई को बुलाओ नया दिन हुआ है नया डग बढ़ाओ।
न सोचो न लाओ बदनपर मलिनता तुम्हारे करों में है कल की सफलता।
जली ज्योति बनकर ढलेगा अन्धेरा जभी जाग जाओ तभी है सवेरा।।
पियो मित्र शोले समझ करके पानी दुःखोंने लिखी है सुखोंकी कहानी।
नहीं पढ़ सका कोई किस्मत का कासा नहीं जानता कब पलट जाये पासा।
चले जो मिला मंजिलों का बसेरा जभी जाग जाओ तभी है सवेरा।
व्यथायें मिले तो उन्हें तुम दुलारो प्रगति प्रेम से मिले तो पुकारो।
दुःखों की सदा उम्र छोटी रही है सदा श्रम सुखों के ही बोती रही है।
सदा पतझरों ने बहारों को टेरा जभी जाग जाओ तभी है सवेरा।।
गुरुदेव से नया जिवन मिला है जो निधियां बिखरती वो लूटो हमेशा।
अनेक ग्रन्थ मंथन से हीरा निकाला तुम जौहरी बनके कर दो उजाला।
जरा भूल की तो है नर्कों में बसेरा जभी जाग जाओ तभी है सवेरा।।

पुण्य से ही निर्जरा होती अगर तो.....

पुण्यसे ही निर्जरा होती अगर तो होगया होता अभीतक मोक्ष कबका।।
पुण्य से संवर अगर होता तनिक भी तो भ्रमणका कष्ट फिर मिलता न भवका।
इस तत्त्वके विज्ञानको तूने न जाना, इस आत्माको भी नहिं कभी पहचाना।।
रुचि राग में, कर्तृत्वमें अरु लोकरंजनमें करी,।
पुण्य पाप रहित सदृष्टीमय स्वतत्व-श्रद्धा नहिं करी।।
पुण्य हो या पाप ये आस्रव हैं शुभ राग भी तो बंध हैं संसार ही के।
इन्हीमें कर्तुत्वबुद्धि बनी रही तो, शुभाशुभ दुखद्वंद हैं भवभार ही के।।
नहीं है सम्यक्त्व जबतक व्यर्थ है सब पाठपूजनजप व्रतादिक ध्यान मिथ्या।
आत्मा की यदि नहीं पहचान की तो तप कुतप है ज्ञान भी है ज्ञानमिथ्या।।
इसलिए सम्यक्त्व धारणकर अरे जिय भिन्न निज चैतन्य पर से जान ले रे।
आत्मा परमात्मा स्वयमेव होगी, भेदज्ञान अपूर्व सुखमय मानले रे।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुद्गल का क्या विश्वासा.....

पुद्गल का क्या विश्वासा, जैसे पानी बीच पताशा।।टेक।।
जैसे चमत्कार बिजली का, जैसे इन्द्रधनुष आकाशा।।१।।
झूठा तन धन, झूठा यौवन, झूठा है घर-वासा।
झूठा ठाठ ठनो दुनियां में, झूठा महल निवासा।।२।।
इक दिन ऐसा होगा लोगों, जंगल होगा वासा।
इस तन ऊपर हल फिर जावें, पशु चरेंगे घासा।।३।।
एक बार श्री जिनवर का, भज ले नाम निराशा।
'नवल' कहे छिन एक न भूलो, जब लग घट में साँसा।।४।।

भावों में सरलता रहती है.....

भावों में सरलता रहती है, जहाँ प्रेम की सरिता बहती है।।टेक।।
हम उस धर्म के पालक हैं, जहाँ सत्य अहिंसा रहती है।।१।।
जो राग में मूंछें तनते हैं, जड़ भोगों में रीझ मचलते हैं,।
वे भूलते हैं निज को भाई, जो पाप के साँचे ढलते हैं।।२।।
उपकार उन्हें माँ जिन-वाणी, जहाँ ज्ञान-कथायें कहती हैं।
जो पर के प्राण दुखाते हैं, वे आप सताये जाते हैं,।।३।।
अधिकारी वे हैं शिवसुख के, जो आतम ध्यान लगाते हैं।
'सौभाग्य' सफल कर नर जीवन, यह आयु ढलती रहती है।।४।।

जो इच्छा का दमन न हो तो.....

जो इच्छा का दमन न हो तो, चारित्र से शिवगमन नहीं रे।
अन्नत्याग से मुक्ति होय तो, मृग तृष्णावश जान दई रे।।टेक।।
बिन बोले तैं मौनी हो तो, बगुला बैठो मौन गही रे।
नाम जपे निज नाथ मिलैं तो, तोता निशदिन रटत वही रे।।१।।
वस्त्रत्याग अरु वन-निवास तैं, जो होवे सो साधु कही रे।
तो पशु-वस्त्र कभी नहीं पहनत, वन में आयुष बीत गई रे।।२।।
काया कृश कर कृत नहिं होवे जो इच्छा नहिं दमन भई रे।
भोमराज' जो ताहि दमत है, सो पावे है मोक्ष मही रे।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समझ उर धर कहत गुरुवर.....

समझ उर धर कहत गुरुवर, आत्मचिन्तन की घड़ी है।
भव उदधि तन अथिर नौका, बीच मँझधारा पड़ी है।।टेक।।
आत्म से है पृथक् तन-धन, सोच रे मन कर रहा क्या? ।
लखि अवस्था कर्म-जड़ की, बोल उनसे डर रहा क्या।।
ज्ञान-दर्शन चेतना सम, और जग में कौन है रे? ।
दे सके दुख जो तुझे वह, शक्ति ऐसी कौन है रे? ।।१।।
कर्म सुख-दुख दे रहे हैं, मान्यता ऐसी करी है।
चेतचेतन प्राप्त अवसर, आत्म-चिन्तन की घड़ी है।।
जिस समय हो आत्मदृष्टि, कर्म थर थर काँपते हैं।
भाव की एकाग्रता लखि, छोड़ खुद ही भागते हैं।।
ले समझ से काम या फिर चतुर्गति ही में विचर ले।
मोक्ष अरू संसार क्या है, फैसला खुद ही समझ ले।।
दूर कर दुविधा हृदय से, फिर कहाँ धोखा धड़ी है।
समझ उर धर कहत गुरुवर, आत्म चिन्तन की घड़ी है।।२।।
कुन्दकुन्दाचार्य गुरुवर, यह सदा ही कहि रहे हैं।
समझना खुद ही पड़ेगा, भाव तेरे बहि रहे हैं।।
शुभ क्रिया को धर्म माना, भव इसी से धर रहा है।
है न पर से भाव तेरा, भाव खुद ही कर रहा है।।
है निमित्त पर दृष्टि तेरी, बान ही ऐसी पड़ी है।
चेत-चेतन प्राप्त अवसर, आत्म-चिन्तन की घड़ी है।।३।।
भाव की एकाग्रता रुचि, लीनता पुरुषार्थ कर ले।
मुक्ति-बन्धन रूप क्या है, बस इसी का अर्थ कर ले।।
भिन्न हूँ पर से सदा मैं, इस मान्यता में लीन हो जा।
द्रव्य-गुण-पर्याय ध्रुवता, आत्म सुख चिर नींद सो जा।।
आत्म गुण धर लाल अनुपम, शुद्ध रत्नत्रय जड़ी है।
समझ उर धर कहत गुरुवर, आत्म-चिन्तन की घड़ी है।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भेदज्ञान की गिरी बीजुरी.....

भेदज्ञान की गिरी बीजुरी टूटा भ्रम का श्रृंग रे ।
जड़ पुद्गल से भिन्न आत्मा देखा भव्य उतंग रे ।।टेक।
चिन्मय चेतन शुद्ध आत्मा जड़ पुद्गल यह देह रे ।
अंतर्मुख होते ही बरसा निज परणति मेह रे ।।
झनन झनन निज वीणा बाजी निज के बजे मृदंग रे ।
भेदज्ञान की गिरी बीजुरी टूटा भ्रम का श्रृंग रे ।।१।।
ज्ञात हुआ क्यों था अनादि से चेतन पर का भृत्य रे ।
भेद ज्ञान के अवलंबन बिन किया जगत में नृत्य रे ।।
निज को पर का कर्त्ता माना, सभी ढ़ंग बेढ़ंग रे ।
भेदज्ञान की गिरी बीजुरी टूटा भ्रम का श्रृङ्ग रे ।।२।।
भेदज्ञान के बिना न मिलता मिथ्या भ्रम का अन्त रे ।
भेदज्ञान से सिद्ध हुए हैं जीव अनन्तानन्त रे ।।
तीन लोक के ऊपर सिद्धशिला पर शुद्ध स्वरंग रे ।
भेदज्ञान की गिरी बीजुरी टूटा भ्रम का श्रृंग रे ।।३।।
शाश्वत सुख अनन्त का दाता भेदज्ञान विज्ञान रे ।
इसके द्वारा एक दिवस मिल जाता पद निर्वाण रे ।।
अष्ट कर्म अरि नष्ट करो ले भेदज्ञान की खंग रे ।
भेदज्ञान की गिरी बीजुरी टूटा भ्रम का श्रृंग रे ।।४।।
भेदज्ञान की दामिनि दमकी हुआ प्रकाश प्रचंड रे ।
राग भिन्न है ज्ञान भिन्न है चेतन द्रव्य अखंड रे ।।
निज परणति अनुभूति प्राप्त कर हृदय हुआ अति दंग रे ।
भेदज्ञान की गिरी बीजुरी टूटा भ्रम का श्रृंग रे ।।५।।
रूप, गंध, रस स्पर्श रहित है तू स्वतन्त्र निष्काम रे ।
अजर अमर अविकल अविनाशी अविरल सुख का धाम रे ।।
चिदानन्द चैतन्य अनाकुल पूर्ण ज्ञान निज संग रे ।
भेदज्ञान की गिरी बीजुरी टूटा भ्रम का श्रृंग रे ।।६।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कितने भव बीत गये.....

कितने भव बीत गये, संकल्प विकल्पों में।
जिया कब तक उलझेगा, संसार विजल्पों में।
उड़-उड़ कर यह चेतन, गति-गति में जाता है।
रागों में लिप्त सदा, भव-भव दुख पाता है।
क्षण भर को भी न कभी, निज आतम ध्याता है।।टेक।।
निज आतम स्वरूप, तत्वों का कर निर्णय।
मिथ्यात्व छूट जाये, समकित प्रगटे सुखमय।
निज परणति रमण करे, हो निश्चय रत्नत्रय।
निर्वाण मिले निश्चित, छूटे यह भव दुखसे।
सुख ज्ञांन अनंत मिले, चिन्मय की गल्पों में।।१।।
शुभ-अशुभ विभाव तजे, है हेय अरे आस्रव।
संवर का साधन ले, चेतन का ले अनुभव।
शुद्धातम का चिन्तन, आनंद-अतुल अभिनव।
कर्मों की पग-ध्वनि का, मिट जावेगा कलरव।
तू स्वयं सिद्ध होगा, होगा पुरुषार्थ अपने में।।२।।
नर रे! नर रे! नर रे! तू चेत अरे नर रे!।
क्यों मूढ़ विमूढ़ बना, कैसा पागल खर रे।
अंतर-मुख होजा तू, निज में निज भर ले।
पर का अवलंबन तज रे, निज का आश्रय कर ले।
पर परिणति विमुख हुआ, तो सुख पल अल्पों में।।३।।
तू कौन कहाँ का है, अरु क्या है नाम अरे।
आया है किस घर से, जाना किस गाँव अरे।
यह तन तो पुदगल है दो दिन की छाँव अरे।
तू चेतन द्रव्य सबल, ले सुख अविकल्पों में।
यदि अवसर चूका तो, भव-भव पछतायेगा।
फिर काल अनंत अरे, दुख का घन जावेगा।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह नर भव कठिन महा, किस गति में जायेगा।
नरभव भी पाया तो, जिन श्रुत नहीं पायेगा।।
अनगिनतित जन्मों में, अनगिनतित कल्पों में।
कितने भव बीत गये, संकल्प विकल्पों में।।५।।

धुन धुन धुनिया अपनी धुन.....

धुन धुन धुनिया अपनी धुन, निज की धुन में पाप न पुन्य
तेरी सुई में चार बिनोले, क्रोध, मान, अरु माया लोभ
पहिले इनको चुन-चुन-चुन धुन धुन धुनिया
बाहर से अब मन को मोड़ो, राग द्वेष मद की जड़ खोदो
निज को निज में गुन-गुन-गुन धुन धुन धुनिया
जब हो परणति ऐसी तेरी, अलख निरंजन की भज भेरी
अनहद ध्वनि तब सुन-सुन-सुन धुन धुन धुनिया
सोऽहं सोऽहं भज ले मन में, निज को रंग ले निज के रंग मे
भेद मिटे तब तुन-तुन-तुन धुन धुन धुनिया

निज आतम में रम जाओ पुजारी.....

निज आतम में रम जाओ पुजारी, और कहीं मत जाओ।
शीतल जल शुचिता से भरकर, आस्रव मल को हटाओ।।टेक।।
अभिन्न षट्कारक चंदन ले, भव की तपन मिटाओ।
उत्तम अक्षत लेकर निज के, भाव अखण्ड बनाओ।।१।।
परम भाव के पुष्प चढाकर, काम की फाँसी मिटाओ।
तृष्णा दुख मेटन काजे, स्वानुभव सुख लाओ।।२।।
मोह भवन की मूर्च्छा तज के, ज्ञान ज्योति प्रगटाओ।
क्रोधादिक धूप स्वाहा करके, रत्नत्रयी तप लाओ।।३।।
ध्यानाग्नि प्रभुमयी अग्नि से, तुम कुंदन बन जाओ।
सांसारिक झूठे फल तज कर, मोक्ष सरस फल पाओ।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं कब पाऊँ परम दिगम्बर मुद्रा.....

मैं कब पाऊँ परम दिगम्बर मुद्रा ऐसी मुनिवर की।
निशदिन ध्याऊं, गाऊं मंगल महिमा आतम सुखकर की।।टेक।।
निज आत्म प्रतीति जों करते हैं, वे मोह तिमिर को हरते हैं।
शुद्धात्म स्वरूप विचरते हैं, मैं कब पाऊँ परम दिगम्बर मुद्रा..... ।।१।।
बाहर में जंगल वास रहे, अन्तर शुद्धात्म प्रकाश रहे।
संवेदन प्रचुर विलास रहे, मैं कब पाऊँ परम दिगम्बर मुद्रा..... ।।२।।
वैराग्य ज्ञान आधार रहे, कषाय विषय परिहार रहे।
नव रस मय शांति विहार रहे, मैं कब पाऊँ परम दिगम्बर मुद्रा..... ।।३।।
परिणति विभाव विराम रहे, उपयोग थिर निज ठाम रहे।
निज सहज रूप विश्राम रहे, मैं कब पाऊँ परम दिगम्बर मुद्रा..... ।।४।।
उपयोग शुभाशुभ थिर न कदा, शुद्धोपयोग थिर रहे सदा।
'निर्मल' निज आत्म भजं सबसे जुदा, मैं कब पाऊँ परम दिगम्बर मुद्रा ।।५।

अब ज्ञाता-दृष्टा रहना.....

अब ज्ञाता-दृष्टा रहना फेर न यह नर तन धरना।
पुण्य-उदय नर तन पाया, फिर भी विषय में धाया।टेक।।
विषय तजो निज हित करना, अब ज्ञाता-दृष्टा रहना ।।१।।
अनादि से मिथ्या जहर पिया, पंचमकाल में जनम लिया।
इस भव न मुक्ति मिलना, अब ज्ञाता-दृष्टा रहना ।।२।।
रत्नत्रयनिधि पहिचानो, अपने को आतम मानो।
दृष्टि मुक्ति इसी विधि करना, अब ज्ञाता-दृष्टा रहना ।।३।।
अपना रूप सम्भालो तुम, रागादिक को टालो तुम।
इस विधि नर तन सफल करना, अब ज्ञाता-दृष्टा रहना ।।४।।
ये भव पाया भव दुख हरने को, फेर न जग दुख करने को।
निज शाश्वत सुख को वरना, अब ज्ञाता-दृष्टा रहना ।।५।।
भव तन भोग विरागी बन; समतारस का स्वादी बन।
'निर्मल' मत गल्ती करना, अब ज्ञाता-दृष्टा रहना ।।६।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भाई भविजन तेरे दुःख को देख के.....

भाई! भविजन तेरे दुःख को देख के, ज्ञानी की आँख भर आवें।
वे सोचते रे, कब सच्ची बात तू पावे वे सोचते रे।।टेक।
मोहमाया और ममता भाव, तुझे जनम-मरण में घुमावे।
जनम-मरण और मरण-जनम की, कतार का पार कब आवे।।१।।
विश्वविजेता वीर प्रभु का, महोत्सव आज तू मनावे।
क्या फायदा महामहोत्सव का? संसार अगर न छूट जावे।।२।।
बरसों से गुरुजी से सुनते आये, अब पालन कब किया जावे।
महाकाल सिर पर मंडराता है, कौन जाने कौन कब जावे।।३।।
पाप भावों मे दुःख बहुत है, दुनिया में हर कोई माने।
पुण्य आसक्ति मीठा जहर है, वो भी कतल कर जावे।।४।।
पाप और पुण्य बाहर की बात है, स्थिरता 'कमल' कैसे आये।
पल-पल बदलती पर्याय भूलकर, ध्रुवधाम में ही डूब जावे।।५।।

जिस विधि कीने करम चकचूर.....

जिस विधि कीने करम चकचूर, सो विधि बतलाऊँ तोहे ।
भरम मिटाऊँ तेत जिस विधि कीने करम चकचूर।।टेक।।
सुनो संत अर्हंत पंथ जन, स्व-पर दया जिस घट भरपूर।
त्याग प्रपंच निरीह करैं तप, ते नर जीते कर्म करूर।।१।।
तोडे क्रोध निठुरता अघ नग, कपट क्रूर सिर डारी धूर।
असत अंग कर भंग बतावें, ते नर जीते कर्म करूर।।२।।
लोभ कंदरा के मुख में भर, काठ असंजम लाय जरूर।
विषय कुशील कुलाचल फूँकें, ते नर जीते करम करूर।।३।।
परम क्षमा मृदुभाव प्रकाशे, सरलवृत्ति निरवांछक पूर।
धर संजम तप त्याग जगत सब, घ्यावै सतचित केवलनूर।।४।।
यह शिवपंथ सनातन संतो, सादि अनादि अटल मशहूर।
या मारग 'नैनानन्द' हू पायो, इस विधि जीते कर्म करूर।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानेश्वर द्रव्य बना है......

ज्ञानेश्वर द्रव्य बना हैं।।टेक।।

द्रव्य बना है, भाव बना है, करना भी साथ बना हैं।
बने बनाये जड़ चेतन में, अन्य क्या करने जावे रे।।१।।
इच्छा माफिक विश्व करन की, बेहद हाय मचावे।
कौन सुने झूठे क्रन्दन को, वृथा ही कूक मचावे।।२।।
करण जोग की लाय लगी है, किस विधि शान्ति आवे।
अन्य द्रव्य तो बाहर लौटे, अडने नहिं कोई पावे।।३।।
श्रद्धा, ज्ञान उपयोग पलटते, णमो अरिहंत ध्यावे।
पुद्‌गल से उपयोग हटते ही, सिद्ध प्रभू अपनावे।।४।।
मन से गुप्त वचन से गुप्त, काया से गुप्त ही पावे।
गुप्त गुफा में जाय विराजो, निर्भय आनंद पावे।।५।।

अबके ऐसी दिवाली मनाऊँ......

अबके ऐसी दिवाली मनाऊँ, कबहूँ फेर न दुःखड़ा पाऊँ।।टेक।।
आन कुदेव कुरीति छाँड़ के, श्री महावीर चितारूँ।
राग-द्वेष का मैल जलाकर, उज्ज्वल ज्योति जगाऊँ।।१।।
अपनी मुक्ति-तिया हर्षाऊँ, अबके ऐसी दिवाली मनाऊँ।
निज अनुभूति महालक्ष्मी का, वास हृदय करवाऊँ।।२।।
निजगुण लाभ दोष टोटे का, लेखा ठीक लगाऊँ।
जासो फेर न टोटा पाऊँ, अबके ऐसी दिवाली मनाऊँ।।३।।
ज्ञान-रतन के दीप में, तप का तेल पवित्र भराऊँ।
अनुभव ज्योति जगा के, मिथ्या अन्धकार बिनसाऊँ।।४।।
जासों शिव की गैल निहारूँ, अबके ऐसी दिवाली मनाऊँ।
अष्ट करम का फोड़ फटाका, विजयी जिन कहलाऊँ।।५।।
शुद्ध बुद्ध सुखकन्द मनोहर, शील स्वभाव लखाऊँ।
जासों शिवगोरी बिलसाऊँ, अबके ऐसी दिवाली मनाऊँ।।६।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चेतन को मिला जब नर तन.....

चेतन को मिला जब नर तन तो, फिर होश में आना भूल गया।
इस हाट में बारा बाट हुआ, निज हाट में आना भूल गया।।टेक।।
इस भूल में इतना फूल गया, कि ब्याज के बदले मूल गया।
ममता ठगनी ने ऐसा ठगा कि अपना-बिराना भूल गया।।१।।
फिरता तू तीरनदाज बना निज लक्ष्य का कुछ भी ध्यान नहीं।
तूं कैसे तीर चलावेगा जब पहल निशाना चूक गया।।२।।
स्वार्थ सिद्धि का मंत्र बना कहने को तू सरपंच बना।
निज कार्य जरा ना रंच बना कर्त्तव्य निभाना भूल गया।।३।।
अविरत कषाय और योगों से दिन-रात जो पाप के बंध किए।
नरकों में ऐसी मार सही जो गुजरा जमाना भूल गया।।४।।
हीरा पन्ना माणिक मोती ये सब पुद्गल की पर्यायें।
कंकड़-पत्थर पर मुग्ध हुआ आतम का खजाना भूल गया।।५।।

आओ जय जिनेन्द्र हो जाये.....

आओ जय-जिनेन्द्र हो जायें।।टेक।।
हम तुम कौन कहाँ से आये अब तक जान न पायें।
निज को भूल फिरे पर पीछे लाखों जनम गँवायें।।१।।
पता नहीं कब साँस दूसरी आये या नहिं आयें।
यह घट किस पनघट पर फूटे कोई जान न पाये।।२।।
इस काया के नाम अनेकों पंडित शोध धरायें।
अमल अखंडित ज्ञान पिंड को अब तक जान न पायें।।३।।
जिस काया पर अकड़ रहे वह तेरे साथ न जायें।
इक दिन यह माटी की काया माटी में मिल जायें।।४।।
यह काया माया दो दिन की साथ न आये जायें।
जड़ को अपना मान के चेतन चहुँ गति चक्कर खायें।।५।।
नाशवान काया पोषण को पाप अनेक कमायें।
जब जमराज आनकर पकरौ तब 'काका' पछतायें।।६।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माता प्रियकारणी ने उपजायो वीर ललना.....

माता प्रियकारणी ने उपजायो वीर ललना ।
वीर ललना श्री तीर्थंकर ललना ।।टेक।।
इन्द्रादिक भव क्षय के कारण, खुशियाँ खूब मनायें ।
जय-जयकार करें प्रभुजी का, बाजे विविध बजावें ।।
तान्डव नृत्य रचायो इन्द्र नृप के अंगना ।।१।।
डलो पालना चंदन को तीर्थंकर जिसमें झूलें ।
जिनका भव नहीं होना, वे देख हृदय में फूलें ।।
ऐसी हर्षित होय शची, जिनका झुलावें पलना ।।२।।
और झुलावें नर नारी सब, खींच-खींच कर डोरी ।
जन्म हमारा न हो प्रभुजी, ऐसी गावें लोरी ।।
चहुँगति फेरा मिट जावे ऐसी दृष्टि धरना ।।३।।
जनम-मरण का नाशक प्रभु ने दिया हमें उपदेश ।
करो नहीं तुम परद्रव्यन में किंचित् राग न द्वेष ।।
ऐसे धर्म से 'निर्मल' होवे न पुनः रुलना ।।४।।

अपनी सुधि पाय आप.....

अपनी सुधि पाय आप, आप यों लखायो ।।टेक।।
मिथ्यानिशि भई नाश, सम्यक् रवि को प्रकाश ।
निर्मल चैतन्य-भाव, सहजहिं दर्शायो ।।१।।
ज्ञानावर्णादि कर्म, रागादि मेटि भर्म ।
ज्ञानबुद्धि तें अखण्ड, आपरूप थायो ।।२।।
सम्यक दृग ज्ञान चरण, कर्त्ता कर्मादि करण ।
भेदभाव त्याग के, अभेद-रूप पायो ।।३।।
शुक्लध्यान-खड्ग धार, वसु अरि कीने सँहार ।
लोक अग्र सुथिर वास, शाश्वत सुख पायो ।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुभ अथवा ये अशुभ कामना.....

शुभ अथवा ये अशुभ कामना, आकुलता की बोरी है।
सतगुरु बारबार समझाते, राग बंध की डोरी है।।टेक।।
हाथी ईख घास दोनों को, एकमेक कर खाता है।
स्वाद कहाँ मीठे फीके का, सबको साथ चबाता है।।
राग और चैतन्य एक-सा, जिसको अनुभव आता है।
उनको कैसे मिले आत्मा, वह संसार कमाता है।।
भेदज्ञान के बिना त्याग बेकार, तपस्या कोरी है।।१।।
जैसे दर्पण में प्रतिबिंबित, होते हाथ-पाँव सारे।
किन्तु एक अंश न उसका, घुसता दर्पण में प्यारे।।
वैसे ही जो ज्ञेय ज्ञायक में, झलक रहे मीठे-खारे।
अपनी-अपनी जगह पड़े हैं, सब के सब न्यारे-न्यारे।।
है स्वतंत्र परिणमन कौन का, बिस्तर किसकी बोरी है।।२।।
जल में नाव रहे क्या खतरा, नहीं डूबने पायेगा।
किन्तु नाँव में जल यदि आया, सबका साथ डुबायेगा।।
जो जग से निर्लिप्त उसे क्या, शंका कौन नचायेगा।
जिसके मन में बसा हुआ, संसार वही अकुलायेगा।।
पर का आलम्बन दुखदाई, क्या हिंसा क्या चोरी है।।३।।

जग है अनित्य तामैं.....

जग है अनित्य तामैं शरण न वस्तु कोय,।
तातैं दुःखरासि भववास कौं निहारिये।।टेक।।
एक चित् चिन्ह सदा भिन्न परद्रव्यानि तैं,।
अशुचि शरीर में न आपाबुद्धि धारियै।।१।।
रागादिक भाव करै कर्म को बढ़ावै तातैं।
संवरस्वरूप होय कर्मबन्ध डारियै।।२।।
तीन लोक माँहि जिनधर्म एक दुर्लभ है,।
तातैं जिनधर्म कौ न छिनहू विसारियै।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक बार बस एक बार.....

राग-द्वेष में वर्षों बीते, अब निज सुधी भी आने दो।
एक बार बस एक बार, मुझे आतम ज्योति जलाने दो।।टेक।।
पड़ा अनादि मिथ्यात्व हृदय में उसका शमन करूँगा मैं।
अध:करण परिणाम के द्वारा, समकित प्राप्त करूँगा मैं।।
उपशम कर अन्तरमहूर्त में क्षयोपशम धर लूँगा मैं।
भ्राता अपने चारित्र द्वारा, श्रेणी भी चढ़ लूँगा मैं।।
होने दो टुकड़े बैरी के, घर से उसे भगाने दो।
एक बार बस एक बार मुझे आतम ज्योति जलाने दो।।१।।
काँप उठा मिथ्यात्व सम्बन्धी योद्धा भी अब घबड़ाये।
दर्शन मोह की मौत देख चारित्र भाई भी थर्राये।।
काम क्रोध मद लोभ भी भागे, चचा भतीजे जीजा साले।
पड़ने लगी तभी प्राणों के, कुमति कुबुद्धि को लाले।।
खड़े उदास मोह राजा, विकट समस्या सुलझाने दो।
एक बार बस एक बार मुझे आतम ज्योति जलाने दो।।२।।
बड़े अकड़ते चेतन राजा, आये हैं अधिकार लिये।
क्षमा शील संयम विवेक, सेनाओं को साथ लिये।।
बोल उठे मन्त्री विवेक, तू सोच न कर चेतन राजा।
नष्ट करूँगा तुरत मोह को, भेद विज्ञान खड्ग द्वारा।।
विरोधियों से लूँगा बदला, पार्टी पावर में आने दो।
एक बार बस एक बार मुझे, आतम ज्योति जलाने दो।।३।।
कहने लगे मोह राजा, निज सत्ता को नहिं जाना क्या।
भगा तुझे अन्तरमहूर्त में, चेतन तुमने समझा क्या।।
भले क्षयोपशम तू कर ले, श्रेणी न चढ़ने दूँगा।
गिरा गुणस्थान ग्यारहवें से, मिथ्यातम में पटकूँगा।।
ज्ञानावरणी दर्शनावरणी, अन्तराय जग जाने दो।
एक बार बस एक बार, मुझे आतम ज्योति जलाने दो।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुरुषार्थ वजीर हँसकर बोला, क्षायिक की कोशिश कर लूँ।
सहज ज्ञान स्वभाव के द्वारा, शिव-रमणी को भी वर लूँ।
चढ़ श्रेणी में क्षपक तभी, श्रद्धा चारित्र धर लूँगा।
सयोगी और अयोगी प्रभु बन, सिद्धपुरी में जाऊँगा।
ध्वंश हो जायेंगे राग-द्वेष, ध्रुवधाम का शंख बजाने दो।
एक बार बस एक बार, मुझे आतम ज्योति जलाने दो।।५।।

नर से नारायण बनने का.....

महा शक्ति का स्रोत स्वयं तुम, इस रहस्य को जानो।
विश्व-विराट तुम्हीं हो अपना अन्तर्बल पहिचानो।।टेक।।
महावीर ने कहा स्वयं को, यदि ज्ञान जाओगे।
जिसके लिये भटकते हो, अपने में ही पाओगे।।
अमृत घट विडम्बना का, क्यों बनें विनीत भिखारी।।१।।
अहंकार का अंधकार ही मन को दुख देता है।
आत्मस्वरूपी दीप्तिमान, छवि को यह ढक लेता है।।
लक्ष्य 'क्षितिज' को समझा तो, भौतिक अज्ञान बढ़ेगा।
इसमें चरम लक्ष्य पाने का रूप नहीं निखरेगा।।
हर चरमोत्कर्ष का, अधिकारी है हर संसारी।।२।।
लक्ष्य स्वयं ही पाने का, जब आत्म-विवेक जगेगा।
आत्मा का वास्तविक रूप प्रतिबिम्बित तभी मिलेगा।।
कितना ही जग छानो, सात्विक जीवन यहीं टिकेगा।
मृग मरीचिका में उलझा तो, भव भव में भटकेगा।।
यहां नहीं है तर्क हीन, अनुदार इजारेदारी।।३।।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित जिनवर पथ दर्शाते हैं।
इसमें प्रकृति बन्ध कर्मास्रव पास नहीं आते हैं।।
अन्यायी प्रतिपक्षी का खोटा सिक्का न चलेगा।
ऐसा असफल जीवन, गीले ईंधन सा सुलगेगा।।
दया अहिंसा धार्मिकता आत्मोन्नति में सहकारी।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राण मेरे तरसते हैं.....

प्राण मेरे तरसते हैं कब मुझे समकित मिलेगा ?
कब स्वयं से प्रीत होगी कब मुझे निजपद मिलेगा ? ।।टेक।।
अरे काल अनादि से मैं धर्म सुनता आ रहा हूँ,
किन्तु फिर भी आस्रवों के जाल बुनता जा रहा हूँ ।
दिव्यध्वनि के शब्द मेरे कर्ण में तो गूँजते हैं,
किन्तु मेरे हृदय में आकर नहीं क्यों कूजते हैं ।
पुण्य बेला आयगी कब मन कमल यह कब खिलेगा ?
कब स्वयं से प्रीत होगी कब मुझे निजपद मिलेगा ? ।।१।।
यह न सोचा आत्मा तो ज्ञान का सागर स्वयं है,
शुद्ध ज्ञाता विमल दृष्टा गुण अनन्त अतुल नियम हैं ।
कर्म रज से यह मलिन है किन्तु कंचन सम खरा है,
जगत में सुख खोजता जब सुख स्वयं में ही भरा है ।
कर्म रिपु का नाश करने कब निज स्थल में चलेगा?
कब स्वयं से प्रीत होगी कब मुझे निजपद मिलेगा? ।।२।।
लिप्त है व्यवहार में नित नहीं निश्चय दृष्टि इसकी,
बढ़ रही कर्माभिनय से नित्य प्रति ही सृष्टि इसकी ।
इस प्रकार अनन्त भव घर घर भटकता जा रहा है,
शुभ-अशुभ के बन्धनों में ही अटकता आ रहा है ।
नष्ट कब मिथ्यात्व होगा ज्ञान कब उर में मिलेगा?
कब स्वयं से प्रीत होगी कब मुझे निजपद मिलेगा ? ।।३।।
निर्जरा संवर न समझा आस्रवों में धर्म माना,
रही मिथ्यादृष्टि मेरी धर्म का ना मर्म जाना ।
पुण्य से ही मोक्ष होगा यही अब तक मानता था,
राग पर से कर रहा था स्व-पर भेद न जानता था ।
दूर होगी भूल कब यह ज्ञानदीपक कब जलेगा?
कब स्वयं से प्रीत होगी कब मुझे निजपद मिलेगा? ।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बिना समकित आत्मा का रे नहीं उद्धार होगा
बिना समकित धर्म से तो मूढ़ निष्फल प्यार होगा ।
कर्म बन्धन तोड़ने की शक्ति मुझमें ही भरी है.
पर कुमति ने बुद्धि सारी, मोह माया से हरी है ।।
कब सुमति का ध्यान होगा दीप समकित कब जलेगा?
कब स्वयं से प्रीत होगी कब मुझे निजपद मिलेगा? ।।५।।
यदि न चेता मन अभी भी फिर न यह अवसर मिलेगा,
भ्रमण गति-गति का करेगा सदा भव-भव में रुलेगा ।
आज फिर नरभव मिला है और जिनवाणी मिली है,
जाग रे मन, चेत रे मन, नींव जड़ता की हिली है ।।
तत्व का श्रद्धान कर ले रत्न समकित झिलमिलेगा ?
कब स्वयं से प्रीति होगी कब मुझे निजपद मिलेगा ? ।।६।।

यदि भला किसी का कर न सको.....

यदि भला किसी का कर न सको, तो बुरा किसी का मत करना ।
अमृत ना पिलाने को घर में, तो जहर पिलाने से डरना ।।टेक।।
यदि सत्य मधुर न बोल सको, तो झूठ कटुक भी मत बोलो ।
यदि मौन रखो सबसे अच्छा, कम से कम विष तो न घोलो ।।
बोलो तो पहले तुम बोलो, वचन सुहित बोला करना ।।१।।
यदि घर न किसी का बना सको, तो झोपड़ियां न जला देना ।
यदि मरहम पट्टी कर न सको, तो खार नमक न लगा देना ।।
यदि दीपक बनकर जल न सको, तो अन्धकार भी मत करना ।।२।।
यदि फूल नहीं बन सकते हो, तो कांटे बन न बिखर जाना ।
मानव बनकर सहला न सको, तो दिल भी किसी का न दुखाना ।।
यदि देव नहीं बन सकते हो, तो दानव बनकर मत मरना ।।३।।
मुनि पुष्प अगर भगवान नहीं, तो कम से कम इन्सान बनो ।
किन्तु न कभी शैतान बनो, और कभी न तुम हैवान बनो ।।
यदि सदाचार अपना न सको, तो पापों में पग मत धरना ।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुभ कर्मों से पुण्य, अशुभ से पाप.....

शुभ कर्मों से पुण्य; अशुभ से पाप कहाता आया है ।
दोनों में आकुलता रहती, दोनों ने भरमाया है ।।टेक।।
एक लोह श्रृंखला अगर तो दूजी बेड़ी सोने की ।
दोनों बन्धन का कारण हैं, दोनों बोझा ढोने की ।।
पाकर आज गर्व क्या करता, कल है बारी खोने की ।
जो हँसता है उसको ही फिर चिन्ता रोने की ।।
है निश्चिन्त वही जिसने शुद्धोपयोग अपनाया है ।
दोनों में आकुलता रहती, दोनों ने भरमाया है ।।१।।
जिस डाली में फूल, उसी में लगते तीखे शूल सखे ।
चिकनाहट है जहाँ, वहीं पर जम सकती है धूल सखे ।।
पर पदार्थ में रागभाव ही, होता दुख का मूल सखे ।
खो सम्यक्त्व ईश को भजना, होगी तेरी भूल सखे ।।
नेह किसी से भी हो बद है, बन्ध-बीज कहलाया है ।
दोनों में आकुलता रहती, दोनों ने भरमाया है ।।२।।
यह संसार रंहट की चक्की, मधुमक्खी का छाता है ।
आठ कर्मरूपी पहियों पर, जिसको मोह चलाता है ।।
राग-द्वेष दो बैल जुते हैं, पाप-पुण्य का खाता हैं ।
आकुलता से कब बच सकते, जब विभाव से नाता है ।
जीवन का पट क्षणिक कहीं पर धूप कहीं पर छाया है ।
दोनों में आकुलता रहती, दोनों ने भरमाया है ।।३।।
सर्दी गर्मी वर्षा सहकर घोर तपस्या करते हो ।
छोड़ नगर का वास अकेले वन के बीच विचरते हो ।।
योग साधना किस मतलब की, यदि भोगों पर मरते हो ।
बाहर से क्यों कर निर्भय, जब अन्तरंग में डरते हो ।।
पाप विकारभाव मान का व्यर्थ शरीर सुखाया है ।
दोनों में आकुलता रहती, दोनों ने भरमाया है ।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तत्त्वज्ञान का चिन्तन करके, जब भय दूर भगाओगे ।
पर-पदार्थ से तज ममत्व को, समता मन में लाओगे ।।
इस त्रिफला को शान्ति-सुधारस के संग खूब चबाओगे ।
मोह-खटाई, कटु कषाय से भी परहेज रखाओगे ।।
तब वह जग की व्याधि मिटेगी, जिसने नाच नचाया है ।
दोनों में आकुलता रहती, दोनों ने भरमाया है ।।५।।

अमूल्य तत्त्व विचार.....

बहु पुण्य-पुञ्ज-प्रसंग से शुभ देह मानव का मिला।
तो भी अरे ! भवचक्र का फेरा न एक कभी टला।।टेक।।
सुख-प्राप्ति हेतु प्रयत्न करते सुक्ख जाता दूर है।
तू क्यों भयंकर भाव-मरण प्रवाह में चकचूर है?।।१।।
लक्ष्मी बढ़ी अधिकार भी, पर बढ़ गया क्या बोलिये?।
परिवार और कुटुम्ब है क्या वृद्धि? कुछ नहिं मानिये।।२।।
संसार का बढ़ना अरे ! नर देह की यह हार है।
नहिं एक क्षण तुझको अरे ! इसका विवेक विचार है।।३।।
निर्दोष सुख निर्दोष आनन्द लो जहाँ भी प्राप्त हो।
यह दिव्य अन्तःतत्त्व जिससे बन्धनों से मुक्त हो।।४।।
परवस्तु में मूर्छित न हो इसकी रहे मुझको दया।
वह सुख सदा ही त्याज्य रे ! पश्चात् जिसके दुःख भरा।।५।।
मैं कौन हूँ? आया कहाँ से? और मेरा रूप क्या?।
सम्बन्ध दुखमय कौन है ? स्वीकृत करूँ परिहार क्या ?।।६।।
इसका विचार विवेक पूर्वक शान्त होकर कीजिये।
तो सर्व आत्मिक-ज्ञान के सिद्धान्त का रस पीजिये।।७।।
किसका वचन उस तत्त्व की उपलब्धि में शिवभूत है।
निर्दोष नर का वचन रे ! वह स्वानुभूति प्रसूत है।।८।।
तारो अहो तारो निजात्मा शीघ्र अनुभव कीजिये।
सर्वात्म में समदृष्टि द्यो, यह वच हृदय लिख लीजिये।।९।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समकित की शीतल वर्षा......

समकित की शीतल वर्षाऋतु आई निज प्रागंण में ।
मिथ्यात्व ग्रीष्म ऋतु बीती झूलो निज क्रीड़ांगन में ।।
संतोष शील संयम व्रत बादल बन घुमड़ रहे हैं ।
करुणा के सागर मन की गागर में उमड़ रहे हैं ।।टेक।।
धर्मामृत बरस बरस कर उर में उज्ज्वलता लाता ।
धुल जाती कर्म कलुषता पावन निर्मलता पाता ।।
वैराग्य घटा घिर आई चमकी निजत्व की बिजली ।
अब जी को नहीं सुहाती पर के ममत्व की कजली ।।१।।
पुण्यों के स्वर्णिम घुंघरु बजते स्वयमेव छनन छन ।
निज वीणा के तारों से स्वर गूंजे झनन झनन झन ।।
श्रृंगार सजा पुण्यावलि स्वर्गों के मार्ग बताती ।
पर से ममत्व त्यागी के मन को विरक्तता भाती ।।२।।
जप तप व्रत पूजन अर्चन तारों से झिलमिल झलके ।
अघ का तम नष्ट हुआ रे शुभ जल गागर से छलके ।।
भावना मुक्ति की अनुपम नर्त्तन सुरम्य करती है ।
कल्पना मात्र शिव सुख की भव भव के दुख हरती है ।।३।।
ग्यारह प्रतिमा मुखरित हो निज आँचल लहराती हैं ।
ऐलक छुल्लक मुनि पद की मर्यादा बतलाती हैं ।।
शुद्धात्मराज पाने को अनुभव पराग कर संचित ।
देखता स्वयं ज्ञाता बन निज को पर से कर वंचित ।।४।।
कर्मों का अंत निकट अब यह ज्ञान पवन लायेगा ।
चरित्र शक्ति के बल से भव बंधन कट जाएगा ।।
मैं तो चैतन्य स्वरूपी निर्मल स्वरूप पाऊँगा ।
मैं नित्य निरंजन चेतन सिद्धात्म स्वगुण गाऊँगा ।।५।।
समकित पावस की झड़ियाँ रिमझिम झर रही निरंतर ।
लहलहा उठी समता की हरियाली उर अभ्यंतर ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समकित वर्षा के जल को संचित कर निज सागर में ।
सच्चिदानंद सुख सागर भर लूँगा निज गागर में ।।६।।

हूँ स्वतंत्र निश्चल निष्काम.....

हूँ स्वतंत्र निश्चल निष्काम, ज्ञाता-दृष्टा आतम राम ।।टेक।।
मैं वह हूँ जो हैं भगवान, जो मैं हूँ वह हैं भगवान ।
अन्तर यही ऊपरी जान, वे विराग यहाँ राग वितान ।।१।।
मम स्वरूप है सिद्ध समान, अमित शक्ति सुख ज्ञान निधान ।
किन्तु आश वश खोया ज्ञान, बना भिकारी निपट अजान ।।२।।
सुख-दुख दाता कोई न आन, मोह-राग-रूष दुःख की खान ।
निज को निज पर को पर जान, फिर दुःख का नहीं लेशनिदान ।।३।।
जिन शिव ईश्वर ब्रह्मा राम, विष्णु बुद्ध हरि जिसके नाम ।
राग त्याग पहुँचूँ निजधाम, आकुलता का फिर क्या काम ।।४।।
होता स्वयं जगत परिणाम, मैं जग का करता क्या काम ।
दूर हटो परकृत परिणाम ज्ञायकभाव लखूँ अभिराम ।।५।।

कहा मान ले ओ मोरे भैया.....

कहा मानले ओ मोरे भैया, शांति जीवन बनाना अब सार है ।
तू बन जा बने तो परमात्मा, मेरी आत्मा की मूक पुकार है ।।टेक।।
मान बुरा है त्याग सजन जो, विपद करे और बोध हरे ।
चित्त प्रसन्नता सार सजन जो, विपद हरे और मोद भरे ।।
नीति तजने में तेरी ही हार है, वाणी जिनवर की ही हितकार है ।।१।।
समय बड़ा अनमोल सजन जो, इधर फिरे तो उधर फिरे ।
कर नहीं पाया मूल्य सजन जो, समय गया ना हाथ लगे ।।
गुप्त शांति की यहां भरमार है, इनको समझे तो बेड़ा पार है ।।२।।
इस जीवन को सफल बना, यह पुण्य योग से प्राप्त हुआ ।
बातों से नहीं काम सजन, कर्तव्य सामने खड़ा हुआ ।।
सुख शांति का ये ही द्वार है, शिक्षा दैनिक महा हितकार है ।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिल-तिल जलकर वैभव जोड़ा.....

तिल-तिल जलकर वैभव जोड़ा जाने किस आशा में ।
बे-लगाम इच्छाएँ छोड़ी मन की हर भाषा में ।।टेक।।
पल भर को भी ध्यान न आई जीवन की परिभाषा ।
चिन्तन होता रहा न बदला कभी दृष्टि का पाँसा ।।१।।
सुखाभास को रहे समझते जीवन की उपलब्धि ।
पहुँच नहीं पाई विवेक तक आकर्षण तज बुद्धि ।।
औरों से तुलना करने में समय रोज ही खोया ।
दोष देखते रहे पराये अपना मुख न धोया ।।२।।
भौतिक उपलब्धि बढ़ने से भी क्या उन्नति होती ।
अक्सर तो अधिकांश जनों की बुद्धि भ्रष्ट ही होती ।।
भूल भूल जाता है मानव लक्ष्य परम सुख-धाम का ।
आकर्षण में खो जाता है नाम ''शाश्वत-राम'' का ।।३।।
फिर फिर जन्म-मृत्यु का चक्कर युग युग तक चलता है ।
''अनंतानुबंधीकषाय'' में मानव मन जलता है ।।
जन्म-मृत्यु के अन्तराल में केवल दौड़ लगी है ।
रोज रोज नूतन अभिलाषा की ही प्यास लगी है ।।४।।
'राग' नहीं तो सदा 'द्वेष' की ही 'अति' पर मन डोला ।
'वीतराग' पर रुक करके मन कभी नहीं 'जय बोला' ।।
'शुभ से अशुभ', 'अशुभ से शुभ' में हर पल 'वृत्ति' बही है ।
'शुद्धभाव' की कथा जनम भर मन ने नहीं कही है ।।५।।
सच तो यह है मन ही बाधक 'परम-लक्ष्य' पाने में ।
रोड़ा बन कर अड़ जाता मन मंजिल तक जाने में ।।
मन स्मृतियों का संग्रह है चंचल बालक जैसा ।
मन हर पल बाधा बनता है खोटे दामों जैसा ।।६।।
सन्त हृदय से मन हारा है, जीता है भोगी में ।
दास बना लेता भोगी को, डरता है योगी से ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन तो है बीते की गाथा, ज्ञात हुए की छाया ।
मन से ही पैदा होती है कल्पनाओं की काया ।। ७।।
इसीलिए मन-आंगन पर जो है अलिप्त बन देखो ।
'बन्ध' और 'संवर' की घटना दृष्टा बनकर लेखो ।।
इतना सहज हो सके जीवन तभी 'निर्जरा' होगी ।
इतनी जागृत रहे चेतना तब न बनेगी रोगी ।। ८।।

आचार्य श्री धरसेन जो.....

आचार्य श्री धरसेन जो, न ग्रन्थ लिखाते ।
हम जैसे बुद्धि हीन, तत्त्व कैसे लहाते ।।टेक।।
अपने अलौकिक ज्ञान से, सब भेद जानकर ।
बुलवाये दो मुनिराज, की महिमा नगर खबर ।।
गर वे नहिं मुनिराज, युगल ऐसे बुलाते ।।१।।
आंने से पहले स्वप्न में, ही योग्य जानकर ।
दो मन्त्र सिद्धि द्वारा फिर, परखा प्रधान कर ।।
उत्तीर्ण होकर योग्यता, गर वे न दिखाते ।।२।।
पश्चात् पढ़ाया उन्हें, निज शिष्य मानकर ।
उनने भी ग्रन्थ लिखा, गुरु उपकार मानकर ।।
करुणा निधान मुनि नहीं, गर ग्रन्थ रचाते ।।३।।
श्री पुष्पदन्त सूरि, प्रथम खण्ड बनाया ।
अभिप्राय जानने को, भूतबलि पै पढ़ाया ।।
यदि वे नहिं उस ग्रन्थ का, प्रारम्भ कराते ।।४।।
उनने प्रसन्न होय, शेष ग्रन्थ रचाया ।
श्री ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी को, पूर्ण कराया ।।
गर वे नहिं इस ग्रन्थ को, सम्पूर्ण कराते ।।५।।
ग्रन्थाधिराज की हुई, थी आज ही पूजा ।
इस काल में इससे बड़ा, उपकार न दूजा ।।
करुणा निधान गुरु अगर, ऐसा न कराते ।।६।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संसारी जीवनां भावमरणो.....

संसारी जीवनां भावमरणो टालवा करुणा करी,।
सरिता बहावी सुधा तणी प्रभु वीर ! तें संजीवनीं।।
शोषाती देखी संरितने करुणाभीना हृदये करीं।
मुनिकुन्द संजीवनी समयप्राभृत तणे भाजन भरी।।१।।
कुन्दकुन्द रंच्युं शास्त्र, साथिया अमृते पूर्या।
ग्रंथाधिराज! तारामां भावो ब्रह्मांडना भर्या।।२।।
अहो! वाणी तारी प्रशमरस-भावे नितरती,।
मुमुक्षुने पाती अमृतरस अंजलि भरी भरी।।
अनादिनी मूर्छा विष तणी त्वराथी उतरती।
विभावेथी थंभी स्वरूप भणी दौड़े परिणती।।३।।
तूं छे निश्चयग्रन्थ भंग सघला व्यवहारना भेदवा।
तूं प्रज्ञाछीणी ज्ञान ने उदयनी संधि सहु छेदवा।।
साथी साधकनो तूं भानु जगनो संदेश महावीरनो।
विसामो भवक्लांतनां हृदयनो, तूं पंथ मुक्ति तणो।।४।।
सूण्ये तणे रसनिबंध शिथिल थाय,।
जाण्ये तने हृदय ज्ञानी तणां जणाय।।
तूं रूचतां जगतनी रुचि आलसे सौ,।
तूं रीझतां सकलज्ञायकदेव रीझें।।५।।
बनावुं पुत्र कुन्दनना, रत्नोनां अक्षरो लखी।
तथापि कुन्दसूत्रोनां अंकाये मूल्य ना कदी।।६।।

आनंद मंगल आज हमारे.....

आनंद मंगल आज हमारे, आनंद मंगल आज।।टेक।।
श्री जिन-चरण-कमल परसत ही, विघन गये सब भाज।।१।।
सफल भई सब मेरी कामना, सम्यक् हिये विराज।।२।।
'नैन' वयन मन शुद्ध करन को, भेंटे श्री जिनराज।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सर्वांगी 'सन्मति' श्रुतधारा.....

सर्वांगी 'सन्मति' श्रुतधारा, गुरु गौतम ने मुख धारी।
थी करुणा हों भाव-मरण बिन, तृषित तप्त भवि संसारी।।
हृदय शुद्ध मुनि कुन्दकुन्द ने, वह संजीवन दया विचार।
घट 'प्रवचन' 'पंचास्ति' 'समय' में, ली लख शोषित अमृत धार।।१।।
कुन्द रचित पद सार्थक कर, मुनि 'अमृत' ने अमृत सींचा।
ग्रन्थराज त्रय तुमने अद्भुत, मृदुरस ब्रह्म-भाव सींचा।।२।।
वीर वाक्य यह अहो, नितारें साम्य सुधारस।
भर हृदयान्जलि पियें, मुमुक्षु वमें विषय-विष।।
गहरी-मूर्छा प्रबल-मोह, दुस्तर-मल उतरें।
तज विभाव हो स्वमुख परिणति ले निज लहरें।।३।।
यह है निश्चय ग्रन्थ, भंग संयोगी भेदे।
अरु हैं प्रज्ञा-शस्त्र उदय मति संधी छेदें।।
साधक साथी जगत सूर्य, संदेशा वीर का।
क्लान्त जगत विश्राम-स्थान, सतपथ सुधीर का।।४।।
सुनें, समझ लें, रुचे, जगत रुचि से अलसावें।
पड़े बंधरस शिथिल हृदय ज्ञानी का पावे।।५।।
कुन्दन पत्र बना लिखे, अक्षर रत्न तथापि।
कुन्द सूत्र के मूल्य का, अंकन हो न कदापि।।६।।

चेतन अनुभव घट प्रतिभास्यौ.....

चेतन अनुभव घट प्रतिभास्यौ।।टेक।।
अनय पक्ष कौ मोह अंधियारौ, जारौ सारौ नास्यौ।।१।।
अनेकांत किरना छवि राजि, विराजत भान विकास्यौ।
सत्तारूप अनूपम अद्भुत, ज्ञेयाकार विकास्यौं।।२।।
आनंद कंद अमंद अमूरति, सूरति मैं मन वास्यो।
चतुर 'रूप' के दरसत जो सुख, जनै वाकूं वास्यो।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पर्व पर्यूषण आया आनंद स्वरूपी जान.....

पर्व पर्यूषण आया आनंद स्वरूपी जान ।।टेक।
पंर्व कहें सब उत्तम दिन को, उत्तम वह जिनसे निजहित हो ।
यह संदेश सुनाया श्री वीतराग भगवान ।।१।।
सबकी परिणति न्यारी-न्यारी, आप रहें ज्ञायक अविकारी ।
शत्रु मित्र समझाया, यह धर्म क्षमा गुणखान ।।२।।
बड़ापना जो पर से माने, अपनी निधि को न पहचाने ।
मानकषाय हटाया, यह धर्म मार्दव जान ।।३।।
जाने भले ही न अज्ञानी, किन्तु जानते केवलज्ञानी ।
इस भाँति समझ में आया, अब तजहुँ कपट कृपान ।।४।।
मैं पवित्र चैतन्यस्वरूपी, भाव आस्रव अशुचि विरूपी ।
चाहदाह विनसाया, धारूँ संतोष महान ।।५।।
वस्तुस्वरूप धरै जो जैसो, सम्यक ज्ञानी जाने तैसो ।
राग-द्वेष मिटाया, बोले हित मित प्रिय बान ।।६।।
पंचेन्द्रिय मन भोग तजे जा, निज में निज उपयोग सजै जो ।
षट्काय न जीव नशाया, यह संयम धर्म प्रधान ।।७।।
निस्तरंग निजरूप रमे जो, सकल विभाव समूह वमे जो ।
द्वादश विधि बतलाया, यह तप दाता निर्वाण ।।८।।
राग-द्वेषं की परिणति छीजे, चारों दान विधि से दीजे ।
उत्तम त्याग बताया, हितकारी स्व-पर सुजान ।।९।।
त्याग करे जो पर की ममता, अपने उर में धारे समता ।
आकिंचन धर्म सुहाया सब संग तजो दुख खान ।।१०।।
विषय बेल विष नारी तजकर, पुद्गलरूप लखो नारी नर ।
ब्रह्मचर्य मन भाया, आनंद दायिकी जान ।।११।।
दशलक्षण अरु सोलह कारण, रत्नत्रय हिंसा निरवारन ।
वस्तु स्वभाव बताया 'निर्मल' आतम पहचान ।।१२।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निरखो अंग-अंग जिनवर के.....

निरखो अंग-अंग जिनवर के, जिनसे झलके शान्ति अपार।।टेक।।
चरणकमल जिनवर कहें, घूमा सब संसार।
पर क्षणभंगुर जगत में, निज आत्म तत्त्व ही सार।।
यातें पद्मासन विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार।।१।।
हस्तयुगल जिनवर कहें, पर का करता होय।
ऐसी मिथ्याबुद्धि तें ही भ्रमण चतुगर्ति होय।।
यातें पद्मासन विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार।।२।।
लोचन द्वय जिनवर कहें, देखा सब संसार।
पर दु:खमय गति चार में, ध्रुव आत्म तत्त्व ही सार।।
यातें नाशा दृष्टि विराजें जिनवर, झलके शान्ति अपार।।३।।
अन्तर्मुख मुद्रा अहो, आत्म तत्त्व दरशाय।
जिनदर्शन कर निजदर्शन पा, सद्गुरु वचन सुहाय।।
यातैं अन्तर्दृष्टि विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार।।४।।

तुम्ही हो ज्ञाता, दृष्टा तुम्ही हो.....

तुम्ही ज्ञाता, दृष्टा तुम्ही हो, तुम्ही जगोत्तम, शरण तुम्ही हो।।
तुम्ही हो त्यागी, तुम्ही वैरागी, तुम्ही हो धर्मी, सर्वज्ञ स्वामी।
हो कर्म जेता, तीरथ प्रणेता, तुम्ही जगोत्तम, शरण तुम्ही हो।।
तुम्ही हो निश्छल, निष्काम भगवन, निर्दोष तुम हो, हे विश्वभूषण।
तुम्हें त्रिविध है वन्दन हमारी, तुम्ही जगोत्तम, शरण तुम्ही हो।।
तुम्ही सकल हो, तुम्ही निकल हो, तुम्ही हजारों हो नाम धारी।
कोई न तुमसा हितोपकारी, तुम्ही जगोत्तम, शरण तुम्ही हो।।
जो तिर सके ना भव सिन्धु मांही, किया क्षणों में है पार तुमने।
बैरी है पावन मुक्तिरमा को, तुम्ही जगोत्तम, शरण तुम्ही हो।।
जो ज्ञान निर्मल है नाथ तुममें, वही प्रगट हो वीरत्व हममें।
मिले परमपद 'सौभाग्य' हमको, तुम्ही जगोत्तम, शरण तुम्ही हो।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आज हम जिनराज तुम्हारे द्वारे.....

आज हम जिनराज तुम्हारे द्वारे आये हाँ जी हाँ हम आये आये ।।टेक।।
देखे देव जगत के सारे, एक नहीं मन भाये।
पुण्य उदय से आज तिहारे, दर्शन कर सुख पाये।।१।।
जन्म-मरण नित करते-करते, काल अनन्त गमाये।
अब तो स्वामी जन्म मरण का, दुखड़ा सहा न जाये।।२।।
भव सागर में नाव हमारी, कब से गोता खाये।
तुम ही स्वामी हाथ बढ़ाकर, तारो तो तिर जाये।।३।।
अनुकम्पा हो जाय आपकी, आकुलता मिट जाये।
'पंकज' की प्रभु यही वीनती, चरण शरण मिल जाये।।४।।

लिया प्रभु अवतार.....

लिया प्रभु अवतार जय जयकार जय जयकार जय जयकार।
त्रिशला नन्दकुमार जय जयकार जय जयकार जय जयकार।।टेक।।
आज खुशी है आज खुशी है, हमें खुशी है तुम्हें खुशी है।
खुशियां अपरम्पार जय जयकार जय जयकार जय जयकार।।१।।
पुष्प और रत्नों की वर्षा, सुरपति करते हरषा हरषा।
बजे दुन्दभीसार जय जयकार जय जयकार जय जयकार।।२।।
उमंग उमंग नरनारी आते नृत्य भजन संगीत सुनाते।
इन्द्र शची ले सार जय जयकार जय जयकार जय जयकार।।३।।
प्रभु का रूप अनूप सुहाया, निरख निरख छबि हरि ललचाया।
कीने नेत्र हजार जय जयकार जय जयकार जय जयकार।।४।।
जन्मोत्सव की शोभा भारी, देखो प्रभु की लगी सवारी।
जूड़ रही भीड़ अपार जय जयकार जय जयकार जय जयकार।।५।।
आवो हम सब प्रभु गुण गावें, सत्य अहिंसा ध्वज लहरावें।
जो जग मंगलकार जय जयकार जय जयकार जय जयकार।।६।।
पुण्य योग्य सौभाग्य हमारा, सफल हुवा है जीवन सारा।
मिले मोक्ष दातार जय जयकार जय जयकार जय जयकार।।७।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आओ जिनवर मंदिर में आओ.....

आओ जिनवर मंदिर में आओ, श्री जिनवर के दर्शन पाओ।
जिनशासन की महिमा गाओ, आया आया रे अवसर आनन्द का।।टेक।।
हे जिनवर तब शरण में, सेवक आया आज।
शिवपुर पथ दरशाय के, दीजे निजपद राज।।
प्रभु अब शुद्धातम बतलाओ, चहुँगति दुःख से शीघ्र छुड़ाओ।
दिव्यध्वनि अमृत बरषाओ, आया प्यासा मैं सेवक आनन्द का।।१।।
जिनवर दर्शन कीजिए, आतम दर्शन होय।
मोह महातम नाशि के, भ्रमण चतुर्गति खोय।।
शुद्धातम का लक्ष्य बनाओं, निर्मल भेदज्ञान प्रगटाओ।
इन विषयों से चित्त हटाओ, पाओ पाओ रे मारग निर्वाण का।।२।।
चिदानन्द चैतन्य मय, शुद्धातम को जान।
निज स्वरूप में लीन हो, पाओ केवलज्ञान।।
नव केवललब्धि प्रगटाओ, फिर योगों को नष्ट कराओ।
अविनाशी सिद्धपद पाओ, आया आया रे अवसर आनन्द का।।३।।

श्री अरिहंत छवि लखि हिरदै.....

श्री अरिहंत छवि लखि हिरदै, आनन्द अनुपम छाया है।।टेक।।
वीतराग मुद्रा हितकारी, आसन पद्म लगाया है।
दृष्टि नासिका अग्र धार मनु, ध्यान महान बढ़ाया है।।१।।
रूप सुधाकर अंजुलि भर-भर, पीवत अतिसुख पाया है।
तारन-तरन जगत हितकारी, विरद शचीपति गाया है।।२।।
तुम मुख-चन्द्र-नयन के मारग, हिरदै माँहि समाया है।
भ्रमतम दुःख आताप नस्यो सब, सुखसागर बढ़ि आया है।।३।।
प्रगटी उर सन्तोष-चन्द्रिका, निज स्वरूप दरशाया है।
धन्य धन्य तुम छवि 'जिनेश्वर', देखत ही सुख पाया है।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वीरा प्रभु के ये बोल.....

वीरा प्रभु के ये बोल, तेरा प्रभु तुझ ही में डोले।
तुझ ही में डोले, हाँ, तुझ ही में डोले।।
मन की तो गुंडी को खोल खोल खोल खोल।।टेक।।
क्यों जाता गिरनार क्यों जाता काशी।
घट ही में है तेरे घट घट का वासी।।
अन्तर का कोना टटोल टोल टोल टोल।।१।।
चारों को ही है तूने बढ़ाया।
आतम प्रभु को जो करती हैं काला।।
इनकी तो संगति तो छोड़ छोड़ छोड़ छोड़।।२।।
पर में जो ढूँढ़ा न भगवान पाया,।
संसार कषायों को तूने है पाला,।।
देखो निजातम की ओर ओर ओर ओर।।३।।
मस्तों की दुनियाँ में तू मस्त हो जा,।
आतम के रंग में ऐसा तू रंग जा।।
आतम को आतम में घोल घोल घोल घोल।।४।।
भगवान बनने को ताकत है तुझ में।
तू मान बैठा पुजारी हूँ बस मैं।।
ऐसी तू मान्यता को छोड़ छोड़ छोड़ छोड़।।५।।

दरबार तुम्हारा मनहर है.....

दरबार तुम्हारा मनहर है, प्रभु दर्शन कर हरषाये हैं।।टेक।।
भक्ति करेंगे चित्त से तुम्हारी, तृप्त भी होगी चाह हमारी।
भाव रहे नित उत्तम ऐसे, घट के पट में लाये हैं।।१।।
जिसने चिंतन किया तुम्हारा, मिला उसे सन्तोष सहारा।
शरणा जो भी आये हैं, वो निज आतम लख पाये हैं।।२।।
विनय यही है प्रभु हमारी, आतम की महके फुलवारी।
अनुरागी हो तुम पद पावन, 'बुद्धि' चरण सिर नाये हैं।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निज उठ ध्याऊँ गुण गाऊँ.....

निज उठ ध्याऊँ गुण गाऊँ, परम दिगम्बर साधु।
महाव्रत धारी ..... धारी ..... महाव्रत धारी।।टेक।।
राग-द्वेष नहिं लेश जिन्हों के, मन में है.... मन में हैं।
कनक कामिनी मोह-काम नहीं, तन में है...... तन में हैं।।
परिग्रह रहित निरारम्भी, ज्ञानी वा ध्यानी तपसी।
नमो हितकारी.... कारी.... नमो हितकारी।।१।।
शीतकाल सरिता के तट पर, जो रहते... जो रहते।
ग्रीष्मऋतु गिरिराज शिखर चढ़, अघ दहते.... अघ दहते।।
तरुतल रहकर वर्षा में, विचलित, न होते लख भय।
वन अंधियारी... भारी वन अंधियारी।।२।।
कंचन कांच मसान महल सम, जिनके हैं..... जिनके हैं।
अरि अपमान मान मित्र, सम, जिनके है.... जिनके हैं।।
समदर्शी समता धारी, नग्न दिगम्बर मुनिवर।
भव जलतारी...... तारी भव जल तारी।।३।।
ऐसे परम तपोनिधि जहाँ जहाँ, जाते हैं..... जाते हैं।
परम शान्ति सुख लाभ जीव सब, पाते हैं....पाते हैं।।
भव-भव में 'सौभाग्य' मिले, गुरुपद पूजूँ ध्याऊँ।
वरूँ शिवनारी..... नारी वरूँ शिवनारी।।४।।

धर्म मेरा धर्म मेरा, धर्म मरा रे.....

धर्म मेरा धर्म मेरा धर्म मेरा रे, प्यारा प्यारा लागे जैनधर्म मेरा रे।।
ऋषभहुए वीरहुए धर्म मेरे रे, बलवानबाहुबली सेवे धर्म मेरा रे।
भरत हुए राम हुए धर्म मेरे रे, कुन्द कुन्द सन्त हुए धर्म मेरा रे।।
चंदना सीता हुई धर्म मेरे रे, ब्राह्मी राजुल मात सेवे धर्म मेरा रे।
सिंह सेवे वाघ सेवे धर्म मेरा रे, हाथी वानर सर्प सेवे धर्म मेरा रे।।
आत्माका ज्ञान देता धर्म मेरा रे, रत्नत्रयका दान देता धर्म मेरा रे।
सम्यक्त्व जिसका मूल वह धर्म मेरा रे, सुख देवे मोक्ष देवे, धर्म मेरा रे।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गा रे भैया ..... गा रे भैया.... गा रे भैया.....

गा रे भैया, गा रे, भैया गा रे भैया गा, प्रभु गुण गा तू समय न गँवा।।टेक।।
किसको समझे अपना प्यारे, स्वारथ के सब रिश्ते सारे।
फिर क्यों प्रीति लगाये - ओ भैयाजी गा रे भैया.... ।।१।।
दुनिया के सब लोग निराले, बाहर उजले अन्दर काले।
फिर क्यों मोह बढ़ाये - ओ बाबूजी गा रे भैया.... ।।२।।
मिट्टी की यह नश्वर काया, जिसमें आतम राम समाया।
उसका ध्यान लगा ले - ओ लालाजी गा रे भैया..... ।।३।।
स्वारथ की दुनिया को तजकर, निशदिन प्रभु का नाम जपकर।
सम्यक् दर्शन पा ले - ओ काकाजी गा रे भैया.... ।।४।।
शुद्धातम को लक्ष्य बनाकर, निर्मल भेद-ज्ञान प्रगटकर।
मुक्तिवधू को पाले - ओ लालाजी गा रे भैया.... ।।५।।

मुक्तिपुरी का ऋषभ दुलारा.....

मुक्तिपुरी का ऋषभ दुलारा, सबकी आंखों का तारा।
ध्यान करत मन आनन्द पावे, ऐसा प्रभु का अतिशय न्यारा।।टेक।।
सात सुरों के सरगम में, प्रभु तेरे गुण को गावें रे,।
सुमरन करते नाम प्रभु का, भव-भव कर्म छुड़ावें रे।।
घर-घर मंगल होवे सबके, पाकर प्रभु का अमर सहारा।।१।।
अष्ट कर्म की जंजीरों को, तोड़ के मोक्ष सिधारे हो।
ज्ञानज्योति से सबको स्वामी, सम्यक् ज्योति देते हो।।
मन-मन्दिर में ध्यान लगावे, लेकर तेरा नाम निराला।।२।।
अमृतमय सन्देश तुम्हारा, धर्म की ज्योति जलावेगा।
मानवता में शान्ति करके, सद्बुद्धि फैलावेगा।।
भव-भव में हम शरणा पावे, जो है सबका तारणहारा।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेरे मन मन्दिर में आन.....

मेरे मन मन्दिर में आन, पधारो महावीर भगवान ।।टेक।।
भगवन तुम आनंद सरोवर, रूप तुम्हारा महा मनोहर ।
निशिदिन रहे तुम्हारा ध्यान, पधारो महावीर भगवान ।।१।।
सुन किन्नर गणधर गुण गाते, योगी तेरा ध्यान लगाते ।
गाते सब तेरा यश गान, पधारो महावीर भगवान ।।२।।
जो तेरी शरणागत आया, तूने उसको पार लगाया ।
तुम हो दयानिधि भगवान, पधारो महावीर भगवान ।।३।।
भक्त जनों के कष्ट निवारे, आप तिरे हमको भी तारे ।
कीजे हमको आप समान, पधारो महावीर भगवान ।।४।।
आये हैं हम शरण तिहारी, पूजा हो स्वीकार हमारी ।
तुम हो करुणा दया निधान, पधारे महावीर भगवान ।।५।।
रोम-रोम पर तेज तुम्हारा, भू-मण्डल तुमसे उजियारा ।
रवि-शशि तुम से ज्योर्तिमान, पधारो महावीर भगवान ।।६।।

सब मिलके आज जय कहो श्री वीरप्रभु की.....

सब मिलके आज जय कहो, श्री वीर प्रभु की ।
मस्तक झुका के जय कहो, श्री वीर प्रभु की ।।टेक।।
विघ्नों का नाश होता है, लेने से नाम के ।
माला सदा जपते रहो, श्री वीर प्रभु की ।।१।।
ज्ञानी बनो दानी बनो, बलवान भी बनो ।
अकलंक सम बन जय कहो, श्री वीर प्रभु की ।।२।।
होकर स्वतंत्र धर्म की, रक्षा सदा करो ।
निर्भय बनो अरु जय कहो, श्री वीर प्रभु की ।।३।।
तुमको भी अगर मोक्ष की, इच्छा हुई है दास ।
उस वाणी पर श्रद्धा करो, श्री वीर प्रभु की ।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धन्य धन्य आज घड़ी कैसी सुखकार है.....

धन्य धन्य आज घड़ी कैसी सुखकार है।
जिन चरणों की भक्ति करके आनन्द अपार है।।टेक।।
खुशियाँ अपार आज हर दिल में छाई हैं,।
दर्शन के हेतु देखो जनता अकुलाई है।।
चारों ओर देख लो भीड़ बेशुमार है।।१।।
भक्ति से नृत्य गान कोई हैं कर रहे,।
आतम सुबोध कर पापों से डर रहे।।
पल-पल पुण्य का भरे भन्डार है।।२।।
जय जय के नाद से गूँजा आकाश है,।
छूटेंगे पाप सब निश्चय ये आज है।।
देखलो "सौभाग्य" खुला आज मुक्ति द्वार है।।३।।

चिदानन्द चैतन्य प्रभु का.....

चिद्रानन्द चैतन्य प्रभु का, कर ले तू गुणगान।।टेक।।
कितना अवसर मिला महान।
दूर्लभतर से नरभव पाये, दुर्मतिवश तूँ इसे गमाये।।
धर्मभावना कभी न लाये, यातें जग में दुःख ही पाये।।१।।
छोड़ राग-रुचि, घातक हैं अति, कर ले आतमध्यान।
निज परिणति का कर्ता तू है, कर्मरूप परिणाम है तुझमें।।
नहीं अन्य का काम, कर ले निश्चय भेदविज्ञान।।२।।
गुण-पर्ययवतू द्रव्य सभी हैं, एकरूप स्थिति नहीं होती है।
वस्तु स्वयं निज कर्म की कर्ता, यह सिद्धान्त सभी गुण दाता।।
कर अनुभव तो बन भगवान कितना अवसर मिला महान।।३।।
ग्रह भूतार्थ तो समकित पावे, आतम ज्योति सत्य दिखलावे।
सुखी निरन्तर वह बन जावे, मोह-क्षोभ की हान।।
सदा चिद्रूप बनो भगवान कितना अवसर मिला महान।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुम्हारे दर्श बिन स्वामी.....

तुम्हारे दर्श बिन स्वामी, मुझे नहिं चैन पड़ती है।
छवि वैराग्य तेरी सामने आखों के फिरती है।।टेक।।
निराभूषण विगत दूषण, परम आसन मधुर भाषण।
नजर नैनों की नाशा की, अनी पर से गुजरती है।।१।।
नहीं कर्मों का डर मुझको, कि जब लग ध्यान च्नरणन में।
तेरे दर्शन से सुनते हैं, करम रेखा बदलती है।।२।।
मिले गर स्वर्ग की सम्पत्ति, अचम्भा कौनसा इसमें।
तुम्हें जो नयन भर देखे, गति दुरगति की टलती है।।३।।
हजारों मूर्तियाँ हमने बहुत-सी अन्य मत देखी।
शान्ति मूरत तुम्हारी-सी, नहीं नजरों में चढ़ती है।।४।।
जगत सिरताज हो जिनराज, सेवक को दरश दीजे।
तुम्हारा क्या बिगड़ता है, मेरी बिगड़ी सुधरती है।।५।।

तुम्हारे ध्यान की मूरत.....

तुम्हारे ध्यान की मूरत अजब छवि को दिखाती है।
विषय की वासना तज कर, निजातम लौ लगाती है।।टेक।।
तेरे दर्शन से हे स्वामी! लखा है रूप मैं मेरा।
तजूँ कब राग तन-धन का, ये सब मेरे विज़ाती है।।१।।
जगत के देव सब देखे, कोई रागी कोई द्वेषी।
किसी के हाथ आयुध है, किसी को नार भाती है।।२।।
जगत के देव हठग्राही, कुनय के पक्षपाती हैं।
तू ही सुनय का है वेत्ता, वचन तेरे अघाती है।।३।।
मुझे कुछ चाह नहिं जग की, यही है चाह स्वामीजी।
जपूँ तुम नाम की माला, जो मेरे काम आती है।।४।।
तुम्हारी छवि निरख स्वामी, निजातम लौ लगी मेरे।
यही लौ पार कर देगी, जो भक्तों को सुहाती है।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छोटासा मन्दिर बनायेंगे.....

छोटासा मंदिर बनायेंगे, वीर गुण गायेंगे ।
वीर गुण गायेंगे, महावीर गुण गायेंगे ।।टेक।।
कँधों पे लेकर चाँदी की पालकी, प्रभुजी का विहार करायेंगे ।
हाथों में लेकर सोने के कलशा, प्रभुजी का नह्वन करायेंगे ।।१।।
हाथों में लेकर द्रव्य की थाली, पूजन-विधान रचायेंगे ।
हाथों में लेकर ताल-मजीरा, प्रभुजी की भक्ति रचायेंगे ।।२।।
हाथों में लेकर श्री जिनवाणी, पढ़ेंगे और सबको पढ़ायेंगे ।
वीतराग-विज्ञान पाठशालायें खोलकर तत्त्वों का ज्ञान करायेंगे ।।३।।
श्रद्धा में लेकर वस्तु स्वरूप, आतम का अनुभव करायेंगे ।
चारित्र में लेकर शुद्धोपयोग, मुक्तिपुरी को जायेंगे ।।४।।

जैन धर्म के हीरे मोती.....

जैन धर्म के हीरे मोती, मैं बिखराऊँ गली गली ।
ले लो रे कोई प्रभु का प्यारा, शोर मचाऊँ गली गली ।।टेक।।
दौलत के दीवानों सुन लो, एक दिन ऐसा आयेगा ।
धन-दौलत और रूप-खजाना, पड़ा यहीं रह जायेगा ।।
सुन्दर काया मिट्टी होगी, चर्चा होगी गली गली ।।१।।
क्यों कहता तू तेरी मेरी, तज दे उस अभिमान को ।
झूठे झगड़े छोड़कर प्राणी, भज ले तू भगवान को ।।
जगत का मेला दो दिन का, अंत में होगी चला चली ।।२।।
जिन जिनने ये मोती लूटे, वे ही मालामाल हुए ।
दौलत के जो बने पुजारी, आखिर में कंगाल हुए ।।
सोने चाँदी वालों सुन लो, बात कहूँ मैं भली भली ।।३।।
जीवन में दुख है तब तक ही, जब तक सम्यग्ज्ञान नहीं ।
ईश्वर को जो भूल गया, वह सच्चा इन्सान नहीं ।।
दो दिन का ये चमन खिला है, फिर मुर्झाये कली कली ।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय वीतराग सर्वज्ञ प्रभु तुमको मैं.....

जय वीतराग सर्वज्ञ प्रभु तुमको मैं शीस झुकाता हूँ।
अज्ञान तिमिर के हरण हेतु जिन चरण शरण में आता हूँ।।टेक।।
तुमने अनंत सुख प्राप्त किया रागादि विकार हटाया है।
ज्ञायक स्वभाव में तन्मय हो अनुपम निज वैभव पाया है।।१।।
मैं उस वैभव को भूला था, निज पर का कुछ भी ज्ञान न था।
पर में सुख मान भटकता था निज आतम सुख का भान न था।।२।।
निज पर को कर्ता मान जान प्रतिपल अनुकूल बनाने में।
चिरकाल से व्यस्त रहा फिर भी असमर्थ रहा अपनाने में।।३।।
शुभराग को धर्म समझता था जो चिद्विकार दुखकारी है।
अज्ञात था ज्ञायक भाव मुझे जो सहज सिद्ध सुखकारी है।।४।।
मन वचन काय की परणति को निज परणति मैंने मानी थी।
ये भव के भाव मिटा न सका तो भव की कौन कहानी थी?।।५।।
अब शांत छवि लख जिनवर की मैंने यह निश्चित जाना है।
''मैं ज्ञानानंद स्वभावी हूँ''- जो भूला था पहचाना है।।६।।
जिसने प्रभु को पहचान लिया उसने अपने को जान लिया।
निज आतम में परमात्मदशा का शांति सुधारस पान किया।।७।।
आत्म 'हितैषी' को मिले, जिनसे आतमज्ञान।
ऐसे जिनवर देव को, शत शत करूँ प्रणाम।।८।।

रे जिय कौन सयाने कीना.....

रे जिय कौन सयाने कीना, पुद्गल कै रस भीना।।टेक।।
तुम चेतन ये जड जु विचारा, काम भया अतिहीना।।१।।
तेरे गुन दरसन ग्यानादिक, मूरति रहित प्रवीना।
ये सपरस रस गंध वरन मय, छिनक थूल छिन हीना।।२।।
स्व-पर विवेक विचार बिना सठ, धरि धरि जनम उगीना।
'जगतराम' प्रभु सुमरि सयानैं, और जु कछू कमीना।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धन्य धन्य जिनवाणी माता.....

धन्य धन्य जिनवाणी माता, शरण तुम्हारी आए।
परमागम का मन्थन करके, शिवपुर पथ पर धाए।।टेक।।
माता दर्शन तेरा रे! भविक को आनन्द देता है।
हमारी नैया खेता है।।
वस्तु कथञ्चित् नित्य-अनित्य, अनेकान्तमय शोभे।
परद्रव्यों से भिन्न सर्वथा, स्वचतुष्टय मय शोभे।।
ऐसी वस्तु समझने से, चतुर्गति फेरा कटता है।
जगत का फेरा मिटता है।।१।।
नय निश्चय-व्यवहार निरूपण, मोक्षमार्ग का करती।
वीतरागता ही मुक्तिपथ, शुभ व्यवहार उचरती।।
माता तेरी सेवा से, मुक्ति का मारग खुलता है।
महा मिथ्यातम धुलता है।।२।।
तेरे अंचल में चेतन की, दिव्यचेतना पाते।
तेरी अमृत लोरी क्या है, अनुभव की बरसातें।।
माता तेरी वर्षा से, निजानन्द झरना झरता है।
अनुपमानन्द उछलता है।।३।।
नव-तत्त्वों में छिपी हुई जो, ज्योति उसे बतलाती।
चिदानन्द ध्रुव ज्ञायक घन का, दर्शन सदा कराती।।
माता तेरे दर्शन से, निजातम दर्शन होता है।
सम्यग्दर्शन होता है।।४।।

जिनवाणी मोक्ष नसैनी है.....

जिनवाणी मोक्ष नसैनी है हम जानी।।टेक।।
जीव कर्म के जुदा करन को, यह ही पैनी छैनी है।
जो जिनवाणी नित अभ्यासै, सो ही सच्चा जैनी है।।१।।
जो जिनवाणी उर न धरत है, सैनी हो के भी असैनी है।
पढ़ो सुनो ध्यावो जिनवाणी, यदि सुख शांति लेनी है।।२।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनवाणी मोक्ष-नसैनी है.....

जिनवाणी मोक्ष-नसैनी है।।टेक।।
यह भवदधि से पार उतारे, परभव को सुख दानी।
मिथ्यातिनि के मनहिं न भावे, भविजन के मन मानी।।१।।
तत्त्व-कुतत्त्व की खबर पड़े जब, जुदे-जुदे कर मानी।
'व्राजूराय' भजो जिनवाणी, सुख दानी दुःख हानी।।२।।

जिनवाणी है चेतन हीरा जड़ी.....

जिनवाणी है चेतन हीरा जड़ी, जिनवाणी है रत्नत्रय से मड़ी।।टेक।।
सप्त तत्त्व दरशावन हारी, जिनवाणी है अद्भुत हीरा जड़ी।
जिनवाणी निज-निधि को बतावै, अनुपम सुखमय गुण की भरी।।१।।
भवंसागर से पार करन को, जिनवाणी हमारी नौका बड़ी।
जो ना सुनत है यह जिनवाणी, द्वार पै ताही के विपद खड़ी।।२।।
जो जो सुनत है यह जिनवाणी, झड़ती है ताके सुख की झड़ी।
जो जो सुनत है यह जिनवाणी, शान्ति मिलत ताहि वाहि घड़ी।।३।।
वाणी-कंथित निजतत्त्व जो ध्यावे, मोक्ष मिलत वाहि ताहि घड़ी।
माता तोसौं अरज करत हूँ, काटो हमारी कर्मन की कड़ी।।४।।

जिनवाणी जग मैय्या.....

जिनवाणी जग मैय्या जनम-दुख मेट दो।।टेक।।
बहुत दिनों से भटक रहा हूँ ,ज्ञान बिना हे मैय्या !।
निर्मल ज्ञान प्रदान सु कर दो, तू ही सच्ची मैय्या।।१।।
गुणस्थानों का अनुभव हमको, हो जावै जगमैय्या।
चढ़ैं उन्हीं पर क्रम से फिर, हम होवें कर्म खिपैया।।२।।
मेट हमारा जन्म-मरण दुख, इतनी विनती मैय्या।
तुम को शीश 'त्रिलोकी' ननावे तू ही सच्ची मैया।।३।।
वस्तु एक अनेक रूप है, अनुभव सबका न्यारा।
हर विवाद का हल हो सकता, स्याद्वाद के द्वारा।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धन्य धन्य वीतराग वाणी.....

धन्य धन्य वीतराग वाणी, अमर तेरी जग में कहानी।
चिदानन्द की राजधानी, अमर तेरी जग में कहानी।।टेक।।
उत्पाद-व्यय अरु ध्रौव्य स्वरूप, वस्तु बखानी सर्वज्ञ भूप।
स्याद्वाद तेरी निशानी, अमर तेरी जग में कहानी।।१।।
नित्य-अनित्य अरु एक-अनेक, वस्तु कथंचित् भेद-अभेद।
अनेकान्तरूपा बखानी, अमर तेरी जग में कहानी।।२।।
भाव शुभाशुभ बंधस्वरूप, शुद्ध चिदानंदमय मुक्तिरूप।
मारग दिखाती है वाणी, अमर तेरी जग में कहानी।।३।।
चिदानंद चैतन्य आनंद धाम, ज्ञानस्वभावी निजातम राम।
स्वाश्रय से मुक्ति बखानी, अमर तेरी जग में कहानी।।४।।

जाने क्यों अपनी शक्ति पर.....

जाने क्यों अपनी शक्ति पर, मन तुझको विश्वास नहीं है।।टेक।।
अपने घर की ओर कदम रख, यह घर तेरा खास नहीं है।
सोच रहा तू पर में सुख है, इसमें सुख की गंध नहीं है।।१।।
पर पर है तू उससे पर है, पर सच्चा संबंध नहीं है।
अग्नि जब निजधर्म न छोडे, पानी कब प्रतिकूल रहा है।।२।।
कमजोरी बस यही तुम्हारी, करता खुद से आश नहीं है।
एक नहीं दो नहीं सरस, हर भव में यही कसूर हुआ है।।३।।
आवागमन अभी मिट सकता, एक बात निश्चय लाता है।
जो कुछ पाता है अपने से, पर से कभी नहीं पाता है।।४।।
जब तक इस पर नहीं चला तू, होगा उससे पास नहीं है।
अगर लक्ष्य निर्मल है तेरा, करो न किंचित पर का डर है।।५।।
कारण साधक या बाधक तो, अपनी परिणति पर निर्भर है।
ज्ञान भानु का उदय हुआ ज्यों, जीवन ज्योति चमक लायेगी।।६।।
दृष्टि जरा बदल कर देखो, सृष्टि स्वयं बदल जायेगी।
सरस आत्मज्ञान बिना पर, होगा यह आभास नहीं है।।७।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनवाणी माता रत्नत्रयनिधि दीजिये.....

जिनवाणी माता रत्नत्रयनिधि दीजिये।।टेक।।
मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चरण में, काल अनादि घूमे।
सम्यग्दर्शन भयौ न तातें, दुःख पायो दिन दूने।।१।।
है अभिलाषा सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरण दे माता!।
हम पावैं निजस्वरूप आपनों, क्यों न बनैं गुण-ज्ञाता।।२।।
जीव अनन्तानन्त पठाये, स्वर्ग-मोक्ष में तूने।
अब बारी है हम जीवन की, होवे कर्म विदूने।।३।।
भव्य जीव हैं पुत्र तुम्हारे, चहुँगति दुःख से हारे।
इनको जिनवर बना शीघ्र, अब दे दे गुणगण सारे।।४।।
औगुण तो अनेक होत हैं, बालक में ही माता !।
पै अब तुम-सी माता पाई, क्यों न बने गुण-ज्ञाता।।५।।
क्षमा-क्षमा हो सभी हमारे, दोष अनन्ते भव के।
शिव का मार्ग बता दो, माता! लेहु शरण में अब के।।६।।
जयवन्तो जिनवाणी जग में, मोक्षमार्ग प्रवर्तो!।
श्रावक है 'जयकुमार' बीनवे, पद दे अजर अमर तो।।७।।

जिनवाणी मो मन भावे.....

जिनवाणी मो मन भावे, या संशय तिमिरि मिटावे जी।।टेक।।
नव तत्वनि की समझि करावे, स्व-पर भेद दरशावे जी।
मिथ्या अलट मिटावन कारण, स्याद्वाद मय धावे जी।।१।।
चन्द्रभानु मणि नाहिं पटन्तर, बाहिर तिमिर मिटावे जी।
बाह्याभ्यन्तर मैटे वाणी, तीन लोक सिर नावें जी।।२।।
तप व्रत संयम यामें गर्भित, श्री गुरु श्रुत में गावें जी।
या बिन दूजो शिव पथ नाहीं, यातें शुभगति पावे जी।।३।।
रत्नत्रय वाही तै मिलि हैं, या बिन नहिं उपजावे जी।
'पारस' जोलों शिव नहिं हो है, उर तिष्ठो याचावे जी।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनवर चरण-भक्ति वर गंगा.....

जिनवर चरण-भक्ति वर गंगा, ताहि भजो भवि नित सुखदानी।
स्याद्वाद हिमगिरि तैं उपजी, मोक्ष-महासागरहि समानी।।टेक।।
ज्ञान-विरागरूप दोऊ ढाये, संयम भाव मगर हित आनी।
धर्म-ध्यान जहाँ भँवर परत है, शम-दम जामें सम-रस पानी।।१।।
जिन-संस्तवन तरंग उठत हैं, जहाँ नहीं भ्रम-कीच निशानी।
मोह-महागिरि चूर करत हैं, रत्नत्रय शुद्ध पन्थ ढलानी।।२।।
सुर-नर-मुनि-खग आदिक पक्षी, जहाँ रमत नित सम-रस ठानी।
'मानिक' चित्त निर्मल स्थान करि, फिर नहीं होत मलिन भवि प्राणी।।३।।

अकेला ही हूँ मैं.....

अकेला ही हूँ मैं, करम सब आये सिमटिकें।
लिया है मैं तेरा, शरण अब माता ! सटकिकें।।टेक।।
भ्रमावत है मोकों, करम दुख देता जनम का।
करूँ भक्ति तेरी, हरो दुख माता ! भ्रमन का।।१।।
दुखी हुआ भारी, भ्रमत फिरता हूँ जगत में।
सहा जाता नाहीं, अकल घबरानी भ्रमन में।।२।।
करूँ क्या माँ मोरी, चलत वश नाहीं मिटन का।
करूँ भक्ति तेरी, हरो दुख माता ! भ्रमन का।।३।।
सुनो माता ! मोरी, अरज करता हूँ दरद में।
दुखी जानों मोकों, डरप कर आयो शरन में।।४।।
कृपा ऐसी कीजे, दरद मिट जावै मरन का।
करूँ भक्तिं तेरी, हरो दुख माता! भ्रमन का।।५।।
पिलावै जो मोकों, सुबुधि कर प्याला अमृत का।
मिटावै जो मेरा, सरव दुख सारा फिरन का।।६।।
पड़ूँ पाँवाँ तेरी, हरो दुख सारा फिकर का।
करूँ भक्ति तेरी, हरो दुख माता! भ्रमन का।।७।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हमें निजधर्म पर चलना.....

हमें निज धर्म पर चलना, सिखाती रोज जिनवाणी।
सदा शुभ आचरण करना, सिखाती रोज जिनवाणी।।टेक।।
चौरासी लाख योनि में, भटक नर जन्म पाया है।
निधि निज भूल नहिं पावें, सिखाती रोज जिनवाणी।।१।।
ग्रहण करना नहीं करना, कि क्या निज क्या पराया है।
भेद-विज्ञान इसका भी, सिखाती रोज जिनवाणी।।२।।
धनिक निर्धन स्वजन परिजन, कि ज्ञानी या अज्ञानी हैं।
भेद तज मार्ग सुखकारी, सिखाती रोज जिनवाणी।।३।।
जिन्हें संसार सागर से, उतर भव पार जाना है।
उन्हें सुख के किनारे पर, लगाती रोज जिनवाणी।।४।।
सत्य सुख सार पा इसमें, पतित तम पार जाते हैं।
शरण 'दोषी' यही तेरी, है तारन हार जिनवाणी।।५।।
हमें संसार सागर में, रुलाते कर्म हैं आठों।
करें किस भाँति इनका क्षय, सिखाती रोज जिनवाणी।।६।।
करें जो भव्य मन निर्मल, पठन कर शीघ्र तिर जावें।
मार्ग शिवपुर में जाने का, दिखाती रोज जिनवाणी।।७।।

जिनवाणी माता दर्शन की.....

जिनवाणी माता दर्शन की बलिहारियाँ।।टेक।।
प्रथम देव अरहन्त मनाऊँ, गणधरजी को ध्याऊँ।
कुन्दकुन्द आचार्य हमारे, तिनको शीश नवाऊँ।।१।।
योनि लाख चौरासी माँही, घोर महादुःख पायो।
ऐसी महिमा सुनकर माता ! शरण तुम्हारी आयो।।२।।
जानै ताकौ शरणों लीनों, अष्ट कर्म क्षय कीनों।
जामन-मरण मेट के माता ! मोक्ष महापद दीनों।।३।।
ठाड़े श्रावक अरज करत हैं, हे जिनवाणी माता !।
द्वादशांग चौदह पूरव कौ, कर दो हमको ज्ञाता।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

केवलि-कन्ये वाङ्गमय गंगे.....

केवलि-कन्ये वाङ्गमय गंगे, जगदम्बे अघ नाश हमारे।
सत्य स्वरूपे मंगल रूपे, मन-मन्दिर में तिष्ठ हमारे।।टेक।।
जम्बूस्वामी गौतम गणधर, हुए सुधर्मा पुत्र तुम्हारे।
जग तैं स्वयं पार ह्वैं करके, दे उपदेश बहुत जन तारे।।१।।
कुन्दकुन्द अर्कलंकदेव अरु, विद्यानन्दि आदि मुनि सारे।
तव कुल-कुमुद चन्द्रमा ये शुभ, शिक्षामृत दे स्वर्ग सिधारे।।२।।
तूने उत्तमतत्त्व प्रकाशे, जग के भ्रम सब क्षय कर डारे।
तेरी ज्योति निरख लज्जावश, रवि-शशि छिपते नित्य बिचारे।।३।।
भव-भय पीड़ित व्यथित-चित्त जन, जब जो आये शरण तिहारे।
छिन भर में उनके तब तुमने, करुणा करि संकट सब टारे।।४।।
जब तक विषय-कषाय नसै नहिं, कर्म-शत्रु नहिं जाय निवारे।
तब तक 'ज्ञानानन्द' रहैं नित, सब जीवन तैं समता धारे।।५।।

मिथ्यातम नाशवे को, ज्ञान के प्रकाशवे को.....

मिथ्यातम नाशवे को, ज्ञान के प्रकाशवे को।
आपा-पर भासवे को, भानु-सी बखानी है।।टेक।।
छहों द्रव्य जानवे को, बंध विधि भानवे को।
स्व-पर पिछानवे को, परम प्रमानी है।।१।।
अनुभव बतायवे को, जीव के जतायवें को।
काहू न सतायवे को, भव्य उर आनी है।।२।।
जहाँ तहाँ तारवे को, पार के उतारवे को।
सुख विस्तारवे को, ये ही जिनवाणी है।।३।।
हे जिनवाणी भारती, तोहि जपों दिन रैन।
जो तेरी शरना गहे, सो पावै सुख चैन।।४।।
जा वानी के ज्ञानतें, सूझैं लोकालोक।
सो वानी मस्तक नवों, सदा देत हों धोक।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हे जिनवाणी माता तुमको.....

हे जिनवाणी माता, तुमको लाखों प्रणाम ।
शिवसुखदानी माता, तुमको लाखों प्रणाम ।।टेक।।
तू वस्तुस्वरूप बतावै, अरु सकल विरोध मिटावै ।
स्याद्वाद विख्याता, तुमको लाखों प्रणाम ।।१।।
तू करे ज्ञान का मण्डन, मिथ्यात्व कुमारग खण्डन
हे तीन जगत की माता,तुमको लाखों प्रणाम ।।२।।
तू लोकालोक प्रकासे, चर-अचर पदार्थ विकासे
हे विश्व-तत्त्व की ज्ञाता,तुमको लाखों प्रणाम ।।३।।
तू स्व-पर स्वरूप सुझावे, सिद्धान्त का मर्म बतावे
तू मेटे सर्व असाता, तुमको लाखों प्रणाम ।।४।।
शुद्धातम तत्त्व दिखावे, रत्नत्रय पथ प्रगटावे
निज आनन्द अमृत दाता, तुमको लाखों प्रणाम ।।५।।
हे मात ! कृपा अब कीजे, परभाव सकल हर लीजे
'शिवराम' सदा गुण गाता, तुमको लाखों प्रणाम ।।६।।

चरणों में आ पड़ा हूँ.....

चरणें में आ पड़ा हूँ, हे द्वादशांग वाणी ।
मस्तक झुका रहा हूँ, हे द्वादशांग वाणी ।।टेक।।
मिथ्यात्व को नशाया, निज तत्त्व को बताया ।
आपा-पराया भासा, हो भानु के समानी ।।१।।
षड्द्रव्य को बताया, स्याद्वाद को जताया ।
भव-फन्द से छुड़ाया, सच्ची जिनेन्द्र वाणी ।।२।।
रिपु चार मेरे मग में, जन्जीर डाले पग में ।
ठाड़े हैं मोक्षमग में, तकरार मोसों ठानी ।।३।।
दे ज्ञान मुझको माता, इस जग से तोड़ूँ नाता ।
होवे 'सुदर्शन' साता, नहिं जग में तेरी सानी ।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनकी वानी अब मनमानी.....

जिनकी वानी अब मनमानी ।।टेक।।
जाके सुनत मिटत सब दुविधा, प्रगटत निज निधि छानी ।।१।।
तीर्थंकरादि महापुरुषानि की, जामें कथा सुहानी।
प्रथम वेद यह भेद जास कौ, सुनत होय अघ हानी ।।२।।
जिनकी लोक अलोक काल जुत च्यारौं गति सहनानी।
दुतिय वेद इह भेद सुनत होय, मूरख हू सरधानी ।।३।।
मुनि श्रावक आचार बतावत, तृतीय वेद यह ठानी।
जीव अजीवादिक तत्वनि की, चतुरथ वेद कहानी ।।४।।
ग्रन्थ बंध करि राखी जिन तें, धन्य धन्य गुरु ध्यानी।
जाके पढत सुनत कछु समझत, 'जगतराम' से प्रानी ।।५।।

अमृतझर झुरि-झुरि आवे.....

अमृतझर झुरि-झुरि आवे जिनवाणी ।।टेक।।
द्वादशांग बादल ह्वै उमड़े, ज्ञान अमृत रसखानी ।।१।।
स्याद्वाद बिजुरी अति चमके, शुभ पदार्थ प्रगटानी।
दिव्यध्वनी गंभीर गरज है, श्रवण सुनत सुखदानी ।।२।।
भव्यजीव-मन भूमि मनोहर, पाप कूड़कर हानी।
धर्म बीज तहाँ ऊगत नीको, मुक्ति महाफल ठानी ।।३।।
ऐसी अमृतझर अति शीतल, मिथ्या तपत भुजानी।
'बुधमहाचन्द' इसी झर भीतर, मग्न सफल सो ही जानी ।।४।।

जिनवानी के सुनै सौं मिथ्यात मिटै.....

जिनवानी के सुनै सौं मिथ्यात मिटै मिथ्यात मिटै समकित प्रगटै ।।टेक।।
जैसैं प्रात होत रवि ऊगत, रैन तिमिर सब तुरत फटै ।।१।।
अनादिकाल की भूलि मिटावै; अपनी निधि घट-घट मैं उघटै।
त्याग विभाव सुभाव सुधारै, अनुभव करतां करम कटै ।।२।।
और काम तजि सेवो वाकौं, या बिन नाहिं अज्ञान घटै।
'बुधजन' या भव परभव मांही, बाकी हुंडी तुरत पटैं ।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सीमंधर मुख से फुलवा खिरे.....

सीमंधर मुख से फुलवा खिरे, जाकी कुन्दकुन्द गूँथे माल रे।
जिनजी की वाणी भली रे, सीमंधर मुख से फुलवा खिरे।।टेक।।
वाणी प्रभू मन लागे भली, जिसमें सार समय शिरताज रे।
जिनजी की वाणी भली रे, सीमंधर मुख से फुलवा खिरे।।१।।
गूँथा पाहुड़ अरु गूँथा पंचास्ति, गूँथा जो प्रवचनसार रे।
जिनजी की वाणी भली रे, सीमंधर मुख से फुलवा खिरे।।२।।
गूँथा नियमसार गूँथा रयणसार, गूँथा समय का सार रे।
जिनजी की वाणी भली रे, सीमंधर मुख से फुलवा खिरे।।३।।
स्याद्वादरूपी सुगंधी भरा जो, जिनजी का ओंकार नाद रे।
जिनजी की वाणी भली रे,सीमंधर मुख से फुलवा खिरे।।४।।
वन्दूं जिनेश्वर, वन्दूं मैं कुन्दकुन्द, वन्दूं यह ओंकार नाद रे।
जिनजी की वाणी भली रे,सीमंधर मुख से फुलवा खिरे।।५।।
हृदय रहो मेरे भावे रहो, मेरे ध्यान रहो, जिनबैन रे।
जिनजी की वाणी भली रे,सीमंधर मुख से फुलवा खिरे।।६।।
जिनेश्वरदेव की वाणी की गूँज, मेरे गूँजती रहो दिन रात रे।
जिनजी की वाणी भली रे,सीमंधर मुख से फुलवा खिरे।।७।।

वीर हिमाचल तें निकसी.....

वीर हिमाचल तैं निकसी, गुरु गौतम के मुख कुण्ड ढरी है।
मोह महाचल भेद चली, जग की जड़तातप दूर करी है।।टेक।।
ज्ञान पयोनिधि माँहि रली, बहु भंग तरंगनि सौं उछरी है।
ता शुचि शारद गंग नदी प्रति, मैं अंजुलि कर शीश धरी है।।१।।
या जग-मन्दिर में अनिवार, अज्ञान अंधेर छयो अति भारी।
श्री जिन की धुनि दीप-शिखा सम, जो नहीं होत प्रकाशन हारी।।२।।
तो किस भाँति पदारथ पाँति, कहाँ लहते रहते अविचारी।
या विधि संत कहें धनि हैं, धनि हैं, जिनबैन बड़े उपकारी।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन स्वानुभूति से खिरी.....

जिन स्वानुभूति से खिरी, मम स्वानुभूति मधि गिरी।।टेक।।
श्री विमल धारा जैन श्रुत, आनन्द अमृत से भरी।।१।।
समता प्रवाह वहावती, रागादि विकलप तोरि के।।२।।
माँ सरस्वती प्रति भाव वन्दन, दृष्टि निज में जोड़ि के।।३।।

जिनवाणी गंगा जन्म-मरण हरणी.....

जिनवाणी गंगा जन्म-मरण हरणी।।टेक।।
जिन-उर पद्मकुण्ड तैं निकसी, मुख ही मैं गिर गिरणी।।१।।
गौतम मुख हेम कुल परबत, तल दरह बीच में ढ़रणी।
स्याद्वाद दोऊ तट अति दृढ़, तत्त्व नीर झरणी।।२।।
सप्त अंगमय चलत तरंगिनी, तिनतैं फैल चलनी।
'बुधमहाचन्द' श्रवण अंजुली तैं, पीवो मोक्ष करणी।।३।।

वस्तु तत्व दर्शाती जग में.....

वस्तु तत्व द्रर्शाती जग में, जय जिनवाणी माता।
ज्ञानी जन यों करें स्तुति, भक्ति भाव उमगाता।।टेक।।
मिथ्यामति को नाश किया है, जय जिनवाणी माता।
सम्यक् दीप जलाने वाली, है जिनवाणी माता।।१।।
आपा-पर का भेद कराती, है जिनवाणी माता।
शुद्धातम अनुभूति कराती, हे जिनवाणी माता।।२।।
मुक्ति मार्ग दिखावन हारी, जय जिनवाणी माता।
सोये भव्य जगाने वाली, है जिनवाणी माता।।३।।
स्वानुभूति से झरती उर में, है जिनवाणी माता।
ज्ञानामृत का पान कराती, हे जिनवाणी माता।।४।।
निज से निज में थिर हो जाऊँ, हे जिनवाणी माता।
निज में ही पंचमगति पाऊँ, हे जिनवाणी माता।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माँ जिनवाणी मुझ अन्तर में.....

माँ जिनवाणी मुझ अन्तर में, होकर मुझ रूप समा जाओ।
शान्त शुद्ध ध्रुव ज्ञायक प्रभु की, महिमा प्रतिक्षण दरशाओ।।टेक।।
चैतन्य नाथ की बात सुने से, अद्‌भुत शाँति मिलती है।
मानो निज वैभव प्रकट हुआ, सब आधि व्याधि टलती है।।१।।
ज्ञायक महिमा सुनते सुनते, बस ज्ञायक मय जीवन होवे।
निज ज्ञायक में ही रम जाऊँ, सुनने का भाव विलय होवे।।२।।
है माँ तेरा उपकार यही, प्रभु सम प्रभु रूप दिखाया है।
चैतन्य रूप की बोधक माँ, मैं सविनय शीश नवाया है।।३।।

गावो कुन्द वचन अनमोल.....

गावो कुन्द वचन अनमोल।।टेक।।
पर घर में क्यों करे वंसेरा, वृथा कहै तू तेरा मेरा।
रागद्वेष तजकर निरवेरा सिद्धस्वरूपी अपने को लख ।।
मिथ्या ग्रंथि खोल गावो कुन्द वचन अनमोल।।१।।
धनी गुमानी हो मदमाता, बहिरातम हो पाप कमाता।
सिर पर काल खबर नहिं लाता,अजहूँ छौंड़िभज आत्मधरम को ।।
है शाश्वत वे मोल गावो कुन्द वचन अनमोल।।२।।
पाप करम कर माने साता, विषय वासना में लिपटाता।
मिथ्यादर्शन के रंग माता ज्ञानानंद मई हो ज्ञाता ।।
सम स्वभाव रस घोल गावो कुन्द वचन अनमोल।।३।।
राग भाव लख आनन्द माने, द्वेष भाव दुख मय पहिचाने।
नरभव पा हितकर सयाने वीतराग छवि नेक निरखकर ।।
घट के पट अब खोल गावो कुन्द वचन अनमोल।।४।।
चिदाकार मय ब्रह्म सुहाता, विश्व प्रकाशक गुण प्रगटाता।
स्वस्थ होय लख क्यों भटकाता या घट में जगमगा रहा नित।।
देख 'नंद' जय बोल गावो कुन्द वचन अनमोल।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भव तारण शिव-सुख कारण.....

भव तारण शिव-सुख कारण, जग में जगती जिनवाणी।।टेक।।
स्याद्वाद की कथनीवाली सप्तभंग जानी।
सप्त-तत्त्व निर्णय में तत्पर, नव-पदार्थ दानी।।१।।
मोह-तिमिर अंधन को जो, है ज्ञान शलाकानी।
मिथ्यातप तप-तन का जो, है मलियागिर खानी।।२।।
इस पंचम कलिकाल माँहि, जो हैं केवली समानी।
धर्म-कुधर्म, कुदेव-देव, गुरु-कुगुरु बतानी।।३।।
इन्द्र धरणेन्द्र खगेन्द्रादिक, पद की हैं निसानी।
विषयादिक विष विध्वंस कर, सेव सुख सुधा पानी।।४।।
कुमग गमन करता भविजन कूँ, सुद्ध मग जितानी।
जड़-पुद्गल रत 'बुधमहाचन्द' कूँ, निज-पर समझानी।।५।।

ज्ञानी जिनवाणी आधार.....

ज्ञानी जिनवानी आधार, निज को सिद्ध कहाने वाला।।टेक।।
ज्ञानी ज्ञान भाव करतार, जान स्याद्वाद के द्वार।
होकर अनेकान्त से पार, विकलप दूर बहाने वाला।।१।।
पाया रूप आपका सार, है वह चेतन ज्योति अपार।
तीनों कर्म जाल निःसार, पुदगल कृत ही होने वाला।।२।।
यद्यपि एक क्षेत्र आवास, रहता षट् द्रव्यों सहवास।
तद्यपि भिन्न-भिन्न रहवास, देखे ज्ञान नेत्र ही वाला।।३।।
आता कर्म उदय जब जान, ज्ञानी होत नटी समान।
ल्याता रस जब उदय प्रमान, तद्यपि ज्ञान चेतना वाला।।४।।
कर लो निज अनुभव का ज्ञान, ज्ञानी सिद्ध सहज अमलान।
होगा भावकर्म सब हान, मुक्तिपुरी को जाने वाला।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यदि भवसागर दुख से भय है.....

यदि भवसागर दुख से भय है, तो तज दो परभाव को।
करो चिंतवन शुद्धातम का, पालो सहज स्वभाव को।।टेक।।
नर पशु देव नरक गतियों में, बीता कितना काल है।
फिर भी समझ नहीं पाये, यह भव- वन अति विकराल है।।१।।
न जो शुभाशुभ भाव सही, शुद्धोपयोगी ढाल है।
किया तत्व निर्णय जिसने, वो जिनवाणी का लाल है।।२।।
द्रव्य-दृष्टि से समकिती बन, करो दूर परभाव को।
पाप-पुण्य दोनों जग सृष्टा, इसमें दुख भरपूर है।।३।।
इसकी उलझन सुलझ न पाये, तो फिर सुख अति दूर है।
पर विभाव को नष्ट करे जो, वो ही सच्चा सूर है।।४।।
समकित औषधि से अच्छा, भर दो अनादि घाव को।
बीती रात प्रभात हो गया, जिनवाणी का उदय हुआ।।५।।
जिसने दिव्यध्वनि हृदयंगम की, उसके उर में सूर्य जगा।
आत्मज्ञान का देख उजाला, भाग रहे परभाव लजा।।६।।
चिदानंद चैतन्य आत्मा का अंदर में नाद जगा।
समकित की सुगंध महकी है, देखो ज्ञायकभाव को।।७।।

स्वाध्याय करो, स्वाध्याय करो.....

स्वाध्याय करो स्वाध्याय करो, तुम निज पर की पहिचान न करो
सम्यक्त्व करो, मिथ्यात्व हरो, तुम भक्त नहीं भगवान न बनो
तुम जिनवाणी का मनन करो, सत पाठ तुम्हें सिखलाती है
तुम नरकगति से नाहिं डरो, तुम स्वर्गों की मत चाह करो
तुम वीतराग परिणाम करो, निज आतम का कल्याण करो
तुम सत्गुरू की पहिचान करो, तुम निजस्वभाव के परकासी
तुम अमल अखंडित सुखराशि, ज्ञायकस्वरूप निज घरवासी
तुम स्वय सिद्ध पूरणमासी तुम में ही है केवल राशी
सम्यक्त्व करो मिथ्यात्व हरो, तुम भक्त नहीं भगवान बनो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परम दिगम्बर मुनिवर देखे.....

परम दिगम्बर मुनिवर देखे, हृदय हर्षित होता है।
आनन्द उल्लासित होता है हो सम्यग्दर्शन होता है।।टेक।।
वास जिनका वन उपवन में, गिरि शिखर के नदी तटे।
वास जिनका चित्त गुफा में, आतम आनन्द में रमे।।१।।
कंचन कामिनी के त्यागी, महा तपस्वी ज्ञानी ध्यानी।
काया की माया के त्यागी, तीन रतन गुण भंडारी।।२।।
परम पावन मुनिवरों के, पावन चरणों में नमूँ।
शान्त मूर्ति सौख्य मुद्रा, आनन्द धारा में रमूँ।।३।।
चाह नहीं है राज्य की, चाह नहीं रमणी तणी।
चाह उर में एक यही है, शिव रमणी वरवा तणी।।४।।
भेद ज्ञान की ज्योति जलाकर, शुद्धातम में रमते हैं।
क्षण क्षण में अन्तर्मुम हो, सिद्धों से बातें करते हैं।।५।।

हे परम दिगम्बर यति, महागुण व्रती.....

हे परम दिगम्बर यति, महागुण व्रती, करो निस्तारा।
नहिं तुम बिन हितु हमारा।।टेक।।
तुम बीस आठ गुण धारी हो, जग जीव मात्र हितकारी हो।
बावीस परिषह जीत धरम रखवारा, नहिं तुम बिन हितु हमारा।।१।।
तुम आतम ज्ञानी ध्यानी हो, प्रभु वीतराग वनवासी हो।
है रत्नत्रय गुण मण्डित हृदय तुम्हारा, नहिं तुम बिन हितु हमारा।।२।।
तुम क्षमा शान्ति समता सागर, हो विश्व पूज्य नर रत्नाकर।
है हित मित सत् उपदेश तुम्हारा प्यारा, नहिं तुम बिन हितु हमारा।।३।।
तुम धर्ममूर्ति हो समदर्शी, हो भव्य जीव मन आकर्षी।
है निर्विकार निर्दोष स्वरूप तुम्हारा, नहिं तुम बिन हितु हमारा।।४।।
है यही अवस्था एक सार, जो पहुँचाती है मोक्ष द्वार।
'सौभाग्य' आपसा बाना होय हमारा, नहिं तुम बिन हितु हमारा।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संत साधु वन के विचरू.....

संत साधु वन के विचरूँ, वह घड़ी कब आयेगी।
चल पड़ूँ मैं मोक्ष पथ में, वह घड़ी कब आयेगी।।
हाथ में पीछी कमण्डल, ध्यान आतम राम का।।टेक।।
छोड़कर घरबार दीक्षा, की घड़ी कब आयेगी।
आयेगा वैराग्य मुझको, इसी दुःखी संसार से।।
त्याग दूँगा मोह ममता, वह घड़ी कब आयेगी।।१।।
पांच समिति तीन गुप्ति, बाइस परिषह भी सहूँ।
भावना बारह जु भाऊँ, वह घड़ी कब आयेगी।।
बाह्य उपाधि त्याग कर, निज तत्त्व का चिंतन करूँ।।२।।
निर्विकल्प होवे समाधि, वह घड़ी कब आयेगी।
भव भ्रमण का नाश होवे, इस दुःखी संसार मे।।
विचरूँ मैं निज आत्मा में, वह घड़ी कब आयेगी।।३।।

म्हारा परम दिगम्बर मुनिवर आया.....

म्हारा परम दिगम्बर मुनिवर आया, सब मिल दर्शन कर लें।
बार-बार आना मुश्किल है, भक्ति भाव उर भर लो।।टेक।।
हाँ, भक्ति भाव उर भर लो।
हाथ कमडल काठ को, पीछी पंख मयूर।।१।।
विषय आशा आरम्भ सब, परिग्रह से हैं दूर।
श्री वीतराग-विज्ञानी का कोइ ज्ञान हिये विच धर लो।।२।।
एक बार कर पात्र में, अंतराय मल टाल।
अल्पहार ले हो खड़े, नीरस सरस सम्हाल।।३।।
ऐसे मुनिमारग उत्तमधारी, तिनके चरण पकड़ लो।
चार गति दुःख से डरी, आत्म स्वरूप को ध्याय।।४।।
पुण्य पाप से दूर हो, ज्ञान गुफा में आय।
'सौभाग्य' तरण-तारण मुनिवर के, तारण चरण पकड़ लो।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धन्य मुनीश्वर आतम हित में.....

धन्य मुनीश्वर आतम हित में छोड़ दिया परिवार।
कि तुमने छोड़ा सब घरबार।।टेक।।
काया की ममता को टारी, करते सहन परीषह भारी।
पञ्च महाव्रत के हो धारी, तीन रतन के बने भंडारी।।
धन छोड़ा वैभव सब छोड़ा, समझा जगत असार।।१।।
राग-द्वेष सब तुमने त्यागे, वैर विरोध हृदय से भागे।
परमातम के हो अनुरागे, बैरी कर्म पलायन भागे।।
सत सन्देश सुना भविजन का, करते बेड़ा पार।।२।।
होय दिगम्बर वन में विचरते, निश्चल होय ध्यान जब करते।
निजपद के आनंद में झूलते, उपशम रस की धार बरसते।।
मुद्रा सौम्य निरख कर मस्तक, नमता बारम्बार।।३।।

ऐसे मुनिवर देखे वन में.....

ऐसे मुनिवर देखे वन में, जाके राग-द्वेष नहीं तन में।।टेक।।
ग्रीषम ऋतु शिखर के ऊपर मगन रहै ध्यानन में।
चातुरमास तरुतल ठाड़े, बूंद सहै छिन छिन में।।१।।
शीत मास दरिया के किनारे, धीरज घोर ध्यानन में।
ऐसे गुरु को मैं नित प्रति ध्याऊँ देत ढोक चरणन में।।२।।

चलना है कबतक.....

चलना है कबतक? ।।टेक।।
चलना है कब तक? ये तो बता दे, मानव ओ प्यारे!।
नर जन्म ऐसा क्यों गँवाता? इतना बता दे।।१।।
अनादि काल से काल है चलता रुकना कहाँ है।
पल पल बदलती पर्याय चलती स्थिरता कहाँ है?।।२।।
अनादि शुद्ध द्रव्य है मेरा, यह कलंक लगता है।
अस्थिर से अब दृष्टि हटाकर स्थिर में जाना है।।३।।
देखो, दुःख कैसे आते क्षण क्षण पर मरना है।
भव चक्कर में 'कमल' नहीं आना, पक्का वादा है।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जगतगुरु कब निज आतम ध्याऊँ.....

जगतगुरु कब निज आतम ध्याऊँ।।टेक।।
नग्न दिगम्बर मुद्रा धरिके, कब निज आतम ध्याऊँ।
ऐसी लब्धि होय कब मोकूँ, जो निजवाँछित पाऊँ।।१।।
कब गृहत्याग होऊँ बनवासी, परम पुरुष लौ लाऊँ।
रहूँ अडोल जोड़ पद्मासन, कर्म कलंक खिपाऊँ।।२।।
केवलज्ञान प्रगट करि अपनो, लोकालोक लखाऊँ।
जन्म-जरा-दुःख देत तिलांजलि, हो कब सिद्ध कहाऊँ।।३।।
सुख अनन्त बिलसूँ तिहि थानक, काल अनन्त गमाऊँ।
'मानसिंह' महिमा निज प्रगटे, बहुरि न भव में आऊँ।।४।।

श्रीगुरु हैं उपगारी ऐसे.....

श्रीगुरु हैं उपगारी ऐसे, वीतराग गुनधारी वे।।टेक।।
स्वानुभूति रमनी संग क्रीड़ें, ज्ञान सम्पदा भारी वे।।१।।
ध्यान पिंजरा में जिन रोकौ, चित खम चंचलचारी वे।।२।।
तिनके चरन सरोरूह ध्यावै, 'भागचन्द' अघटारी वे।।३।।

अध्यात्म के शिखर पर.....

अध्यात्म के शिखर पर, सबको दिखादो चढ़के।
ये धर्म है निरापद, धारो हृदय से बढ़के।।टेक।।
जड़ से लगा के प्रीति, अब तक करी अनीति।
अपने को आप देखो, आतम से जोड़ो रीति।।
भव-भ्रमण से बचोगे, सन्मार्ग को पकड़ के।।१।।
भव-भोग रोग घर है, पद-पद पे इसमें डर है।
रागादि भाव तज दो, नरकों के ये भंवर है।।
ऊँचे तुम्हें है उठना, माया से युद्ध लड़के।।२।।
ज्यों अंजुली का पानी, ढलती है जिन्दगानी।
मुश्किल है हाथ लगना, ऐसी घड़ी सुहानी।।
'सौभाग्य' सज ले माला, रत्नत्रय की घड़ के।।३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ये शाश्वत सुख का प्याला.....

ये शाश्वत सुख का प्याला, कोई पियेगा अनुभव वाला।।टेक।।
मैं अखण्ड चित् पिण्ड शुद्ध हूँ, गुण अनन्त घन पिण्ड बुद्ध हूँ।
ध्रुव की फेरो माला, कोई पियेगा अनुभव वाला।।१।।
मंगलमय है मंगलकारी, सत् चित् आनंद का है धारी।
ध्रुव का हो उजियारा, कोई पियेगा अनुभव वाला।।२।।
ध्रुव का रस तो ज्ञानी पावे, जन्म मरण के दुःख मिटावे।
ध्रुव का धाम निराला, कोई पियेगा अनुभव वाला।।३।।
ध्रुव की धूनि मुनि रमावें, ध्रुव के आनंद में रम जावे।
ध्रुव का स्वाद निराला, कोई पियेगा अनुभव वाला।।४।।
ध्रुव का शरणा जो कोई आवे, मोह शत्रु को मार भगावे।
ध्रुव का पंथ निराला, कोई पियेगा अनुभव वाला।।५।।
ध्रुव के रस में हम रम जावें, अपूर्व अवसर कब यह पावें।
ध्रुव का जो मतवाला, वो पियेगा अनुभव वाला।।६।।

कर लो आतमज्ञान परमातम बन जइयो.....

कर लो आतमज्ञान परमातम बन जइयो।
कर लो भेद विज्ञान ज्ञानी बन जइयो।।टेक।।
जग झूठा और रिश्ते झूठे, रिश्ते झूठे नाते झूठे।
साँचो है आतमराम परमातम बन जइयो।।१।।
कुन्दकुन्द आचार्य देव ने, आतम तत्त्व बताया है।
शुद्धातम को जान, परमातम बन जइयो।।२।।
देह भिन्न है आत्म भिन्न है, ज्ञान भिन्न है राग भिन्न है।
ज्ञायक को पहचान, परमातम बन जइयो।।३।।
कुन्दकुन्द के ही प्रताप से, ध्रुव की धूम मची है रे।
धर लो ध्रुव का ध्यान, परमातम बन जइयो।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कंकर-पत्थर गले लगाये.....

कंकर-पत्थर गले लगाये, हीरे को ठुकराए, तुझे क्या हो गया है।
पुद्गलं से तू रास रचाये, आतम को विसराये तुझे क्या हो गया है।।टेक।।
कुछ तो समझ बाबरे, जाना कहाँ था, कहां जा रहा।
तरसे जिसे देवता, विषयों में तन वह गमा रहा।।
पारस मणि को हाथ में लेकर उससे काग उडाये।।१।।
जिन दिन खुलेगा पींजड़ा, तेरा पखेरू उड़ जायगा।
ले तू चला क्या साथ, खोले ही मुट्ठी चला जायेगा।।
सोना चांदी महल अटारी, कुछ भी साथ न जाये।।२।।
मकड़ी सरीखा बैठकर, बुनता तू रहता, अरे जालियां।
लेकिन नहीं है यह खबर, सपनों से छल छल, तेरी प्यालियाँ।।
मौत तेरे घर क्या जाने, कब डोली ले आये।।३।।
चंचल अभी भी समय,अन्तर की अखियाँ खोल ले।
विषयों का विष छोड़कर, अन्तर में आतम रस घोल ले।।
यह मानव का दुर्लभ तन; फिर हाथ न तेरे आये।।४।।

जब चले आत्माराम, छोड़ धन-धाम,.....

जब चले आत्माराम, छोड़ धन-धाम, जगत से भाई।
जग में न कोई सहायी।।टेक।।
तू क्यों करता तेरा मेरा, नहीं दुनियां में कोई तेरा।
जब काल आय तब सबसे होय जुदाई, जग में न कोई सहायी।।१।।
तू मोहजाल में फंसा हुआ, पापों के रंग में रगा हुआ।
जिन्दगानी तूने वृथा यों ही गवाई जग में न कोई सहायी।।२।।
सम्यक्त्व सुधा का पान करो, निज आतम ही का ज्ञान करो।
यूँ टले जीव से लगी कर्म की काई, जग में न कोई सहायी।।३।।
चेतो चेतो अब बढ़े चलो, सतपथ सुमार्ग पर बढ़े चलो।
यूँ बाज रही यमराजा की शहनाई, जग में न कोई सहायी।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाथ तुम्हारी पूजा में सब स्वाहा करने.....

नाथ तुम्हारी पूजा में सब स्वाहा करने आया।
तुम जैसा बनने के कारण, शरण तुम्हारी आया।।टेक।।
पंच इन्द्रिय का लक्ष्य करूँ, मैं इस अग्नि में स्वाहा।
इन्द्र नरेन्द्रों के वैभव की, चाह करूँ मैं स्वाहा।।
तेरी साक्षी से अनुपम, मैं यज्ञ रचाने आया।।१।।
जग की मान प्रतिष्ठा को भी, करना मुझको स्वाहा।
नहीं मूल्य इस मन्द भाव का, व्रत तप आदि स्वाहा।।
वीतराग के पथ पर चलने, प्रण लेकर मैं आया।।२।।
अरे जगत के अपशब्दों को, करना मुझको स्वाहा।
अक्षय निरकुंश पद पाने, और पुण्य लुटाने आया।।
तुम तो पूज्य पुजारी मैं, वह भेद करूँगा स्वाहा।।३।।
बस अभेद मैं तन्मय होना, और सभी कुछ स्वाहा।
अब पामर भगवान बने, ये भीख माँगने आया।।
नाथ तुम्हारी पूजा में सब, स्वाहा करने आया।
तुम जैसा बनने के कारण, शरण तुम्हारी आया।।४।।

सम्यग्दर्शन प्राप्त करेंगे.....

सम्यग्दर्शन प्राप्त करेंगे, सप्त भयों से नही डरेंगे।।टेक।।
सप्त तत्त्व का ज्ञान करेंगे, जीव-अजीव पहिचान करेंगे।
स्व-पर भेद-विज्ञान करेंगे, निजानन्द का पान करेंगे।।१।।
पंच प्रभु का ध्यान धरेंगे, गुरुजन का सम्मान करेंगे।
जिनवाणी का श्रवण करेंगे, पठन करेंगे, मनन करेंगे।।२।।
रात्रि भोजन नहीं करेंगे, बिना छना जल काम न लेंगे।
निज स्वभाव को प्राप्त करेंगें, मोह भाव का नाश करेंगे।।३।।
राग-द्वेष का त्याग करेंगे, और अधिक क्या? बोलो बालक।
भक्त नहीं भगवान बनेंगे।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गाड़ी खड़ी रे, खड़ी रे.....

गाड़ी खड़ी रे, खड़ी रे तैयार, चलो रे भाई शिवपुर को ।।टेक।।
जो तू चाहे मोक्ष को, सुन रे मोही जीव।
मिथ्यामत को छोड़ कर, जिन वाणी रस पीव ।।१।।
जो जिन पूजै भाव धर, दान सुपात्रहि देय।
सो नर पावे परम पद, मुक्ति श्री फल लेय ।।२।।
जिनकी रुचि अति धर्म सों, साधर्मिन सौं प्रीत।
देव शास्त्र गुरु की सदा, उर में परम प्रतीत ।।३।।
इस भव तरु का मूल इक, जानों मिथ्या भाव।
ताको कर निर्मूल अब, करिये मोक्ष उपायं ।।४।।
दानों में बस दान है, श्रेष्ठ ज्ञान ही दान।
जौं करता इस दान को, पाता केवलज्ञान ।।५।।
जो जाने अरहंत गुण, द्रव्य और पर्याय।
सो जाने निज आत्मा, ताके मोह नशाय ।।६।।
निज परिणति से जो करे, जड़ चेतन पहिचान।
बन जाता है एक दिन, समयसार भगवान ।।७।।
तीन लोक का नाथ तू, क्यों बन रहा अनाथ।
रत्नत्रय निधि साथ ले, क्यों न होय जगनाथ ।।८।।

जान जान अब रे, हे नर आतमज्ञानी.....

जान जान अब रे, हे नर आतमज्ञानी ।।टेक।।
राग द्वेष पुद्गल की परिणति, तूं तो सिद्ध समानी ।।१।।
चार गति पुद्गल की रचना, तातें कही विरानी।
सिद्धस्वरूपी जगतविलोकी, विरले के मन आनी ।।२।।
आपरूप आपहिं परमाने, गुरुशिष कथा कहानी।
जनम- मरण किसका है भाई, कीचरहित है पानी ।।३।।
सार वस्तु तिहुँ काल जगत में, नहिं क्रोधी नहिं मानी।
'नन्दब्रह्म' घट माहिं विलोके, सिद्धरूप शिवरानी ।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हे कुन्दकुन्द आचार्य कह गये.....

हे कुन्दकुन्द आचार्य कह गये, जो निज आतम ध्यायेगा।
पर से ममता छोड़ेगा, निश्चय भव से तर जावेगा।।टेक।।
क्रियाकाण्ड में धर्म नहीं है, पर से धर्म नहीं होगा।
निज स्वभाव में रमे बिना नहिं कुछ भी धरम कहीं होगा।।
शुद्ध अखण्ड चिदानन्द ज्ञायक, धर्म वस्तु में पावेगा।।१।।
निज स्वभाव के साधन से ही, सिद्ध प्रभु बन पावेगा।
राग भाव शुभ अशुभ सभी से, जग में गोते खावेगा।।
मुक्ति चाहने वाला तो निज से निज गुण प्रगटावेगा।।२।।
जीव मात्र ऐसा चाहते हैं, दुख मिट जावे सुख आवे।
करते रहते हैं उपाय जो, अपने अपने मन भावे।।
राग द्वेष पर भाव तजेगा, वह सच्चा सुख पावेगा।।३।।
पर पदार्थ नहिं खोटा चोखा, नहिं सुख दुख देने वाला।
इस अनिष्ट मान्यता से अज्ञानी भटके मतवाला।।
भेद ज्ञान निज पर विवेक से शुद्ध चिदानन्द पावेगा।
पर से ममता छोड़ भंवर फिर शुद्धातम को पावेगा।।४।।

आकुलता दुखदाई, तजो भवि.....

आकुलता दुखदाई, तजो भवि।।टेक।।
अनरथ मूल पाप की जननी, मोहराय की जाई हो।।१।।
आकुलता करि रावण प्रतिहारि, पायो नर्क अघाई हो।
श्रेणिक भूप धारि आकुलता, दुर्गति गमन कराई हो।।२।।
आकुलता करि पांडव नरपति, देश देश भटकाई हो।
चक्री भरत धारि आकुलता, मान भंग दुख पाई हो।।३।।
आकुलता करि कोटीध्वज हू, दुखी होई विललाई हो।
आकुल बिना पुरुष निर्धन हू, सुखिया प्रगट लखाई हो।।४।।
पूजा आदि सर्व कारज मैं विघन करण बुधिगाई हो।
मानिक आकुलता बिन मुनिवर, निर आकुल बुधि पाई हो।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आप में जब तक कि कोई.....

आप में जब तक कि कोई आपको पाता नहीं ।
मोक्ष के मन्दिर तलक हरगिज कदम जाता नहीं ।।टेक।।
वेद या पुराण या कुरान सब पढ़ लीजिये ।
आपके जाने बिना मुक्ति कभी पाता नहीं ।।१।।
हरिण खुशबू के लिये दौड़ा फिरे जंगल के बीच ।
अपनी नाभी में बसे उसको नजर आता नहीं ।।२।।
भाव-करुणा कीजिये ये ही धरम का मूल है ।
जो सतावे और को वह सुख कभी पाता नहीं ।।३।।
ज्ञान पै 'न्यामत' तेरे है मोह का परदा पड़ा ।
इसलिये निज आत्मा तुझको नजर आता नहीं ।।४।।

आचार्य कुन्द कुन्द जो भारत में.....

आचार्य कुन्द कुन्द जो भारत में न आते ।
अध्यात्म समयसार कहो कौन सुनाते ।।टेक।।
रुचि करके कौन देता आत्मख्याति समयसार ।
ऐसे अनेक ग्रन्थ भेदज्ञान के भंडार ।।
उनके बिना हृदय में शान्ति कौन दिलाते ।।१।।
जलती कषाय अग्नि सहज भाव जलाती ।
कर्मों के महाबन्ध को आत्मा से कराती ।।
शान्ति का सहज प्याला कहो कौन पिलाते ।।२।।
सम्यक्त्व बिना मोह न भवबन में घुमाया ।
सम्यक्त्व बिना आत्मा को उसने रुलाया ।।
सम्यक्त्व आत्मा की निधि कौन बताते ।
अध्यात्म सुधा सार कहो कौन पिलाते ।।३।।
हैं जगत के सम्बन्ध कोई पार न पाया ।
सब अनित्य, नित्य एक भी नहीं पाया ।।
होता न सगा आप जिसे अपना बनाते ।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोहे आतम कारज करना है.....

मोहे आतम कारज करना है।
सुत दारा सब स्वारथ साँचे, इनतें ममत न करना है।।टेक।।
जग के रिश्ते नाते झूठे, साथी सगा न बनता है।
महल अटारी धन-दौलत, ये झूठा जग का सपना है।।१।।
देह विनश्वर मैं अविनश्वर, स्वातम में नित जमना है।
द्रव्यकर्म पुदगल की सम्पत्ति, भेदज्ञान में लखना है।।२।।
राग-द्वेष की परिणति से, पार स्वयं में पगना है।
शुभ्र एकान्त विजन में, शीघ्र स्वयं ही चलना है।।३।।
अक्षत शाश्वत चिर उद्योतित, आतम में नित बहना है।
ज्ञायक ज्योति से ज्योतित हो, बस ज्ञान मात्र ही करना है।।४।।
स्वातम रुचि का दीप जलाकर, केवल द्योतित रहना है।
अष्ट-कर्म की होली जलाकर, सिद्ध स्वयं ही बनना है।।५।।
तन-मन-धन सब अर्पण कर, मोहे शिवरमणी को वरना है।
'चिन्मय' का चिर आश्रय पाकर, 'तन्मय' उसमें होना है।।६।।

तू तो सो जा वारे वीर.....

तू तो सो जा वारे वीर, तू तो सो जा प्यारे वीर।
वीर की बलहैंया लेती, मोक्ष के प्राचीर।।टेक।।
तुझे झूलाऊँ पालने में, तुझे खिलाऊँ गोद।
तुझे सुलाऊँ कैसे, तू तो जाग्रत आत्म विभोर।।१।।
तू तो चेतन की तस्वीर, तू तो सन्मति की तस्वीर।
काहे को है पालना, काहे की लागी डोर।।२।।
धरी-घरी जे वीरा पुलके, होके आत्म विभोर।
रत्नत्रय को पालना है, वीतराग की डोर।।३।।
सत्य अहिंसा के झूले में, हिंसा की झकझोर।
जिन्हें कहे बजरंग शरीरा, रग-रग में है झीर।।४।।
झीर में किल्लोलें करता समता रस गंभीर।
तू तो धरम धुरन्दर वीर, सचमुच नगन दिगम्बर वीर।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवसर आया है कीजे कल्याण.....

अवसर आया है कीजे कल्याण, भवि निज आतम का ।
होगी मोह की सर्वथा हानि, विचारो रूप परमातम का ।।टेक।।
द्रव्य-गुण-पर्याय से जानो अरहंत को ।
वैसा ही जानो, निज आतम महंत को ।।
परिणति में स्वसन्मुखता आन, स्वागत कीजे आतम का ।।१।।
स्वभाव की स्थिरता विकल्पों का नाश है ।
समता के साथ होता आनन्द विलास है ।।
यह आतम रहा सबसे भिन्न, रहस्य अध्यातम का ।।२।।
जिनवर आगम में अर्थों की व्यवस्था ।
जैसी कही है जानो वैसी ही सर्वथा ।।
प्रगटे स्व-पर भेद-विज्ञान, यही मर्म आगम का ।।३।।
अध्यातम को जानो अरु आगम को ज़ानो ।
अरहंत को उनके कहे अर्थों को जानो ।।
'निर्मल' यही स्वागत गान, आतम परमातम का ।।४।।

5268

ज्ञान-स्वरूप तेरा तूँ अज्ञानी हो रहा.....

ज्ञान-स्वरूप तेरा, तूँ अज्ञानी हो रहा ।
जड़कर्म के मिलाप से, विभाव को गहा ।।टेक।।
पन अक्ष के विषय अनिष्ट, इष्ट जान के ।
करके विरोध राग आग, को जला रहा ।।१।।
यह व्याधिगेह देह अस्थि, चाम से बना ।
निज ज्ञान के सिंगार, ठान मूढ़ हो रहा ।।२।।
सुख तात मात् मित्र आदि मान आपके ।
करके अकृत पाप आत्म-बोध खो रहा ।।३।।
कर भेदज्ञान राग आदि, दोष जान के ।
चिद्रूप-ज्ञान-चन्द्रिका, निहार 'जिन' कहा ।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वाध्यायः परमं तपः

श्री दि० जैन स्वाध्याय मण्डल, कानपुर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi